"वर्षे अर्ने शाप्ति।" रविषे रविषे वर्षे भप्ति, अन्य अस आश्रुन।"



स्था किन स्मनाध (DMC 2-69)

भि एभ त अ आ ति वा भ ना त अ म कि

শিল্প কারখানা স্থাপন ও চালু রাখার কাজে শিল্প ব্যাৎকের সাহায্য নিন।



প্রধান অফিস: ঢাকা

माथा व्यक्तिमः छहेशास, धूलता, यश्का, व्राक्रमाहो, मिरलहे ७ कृतिहा

तककृत प्राइक प्रःथा।

वषक्व प्रकाएयी शिवका

७९प्रर्न-भव

নজকল একাডেমীর প্রতিষ্ঠাতা-সভাপতি জনাব আবুল কালাম শামসুদ্দীন গত ৪ঠা মার্চ, ১৯৭৮ শনিবার দুপুর ১২টা ৪০ মিনিটে ইডেকাল করেছেন। (ইলা লিলাহে ''রাজেউন।)

হাসপাতালের রোস-শ্যায় থেকেও, যতক্ষণ তাঁর জান ছিল, একাডেমীর বাাপারে খোজ-খবর নিয়েছেন। যত্তপা-কাতর শ্যা। থেকেই তিনি আমাদের বার বার বলেছেন-এই বিশেষ সংখ্যা পরিকা প্রকাশের সঙ্গে সঙ্গে যেন হাসপাতালে তাঁকেই প্রথম কপি পাঠানো হয়। কিন্তু আমাদের দুর্ভাগা যে, পরিকা প্রকাশের আসেই তিনি আমাদের চিরতরে ছেড়ে পেলেন। আলাহ্ মরহমকে তাঁর অপার করুণা ও অনন্ত শান্তির ছায়ায় আল্রয়

আমরা আমাদের প্রাণের পরমত্য ভ্রছা ও প্রীতির আবেপ সজে
দিয়ে নজকল একাডেমী পরিকার এই বিশেষ সংখ্যা নজকলের
ভেঠতম বছু এবং নজকল একাডেমীর প্রাণ-খ্রাপ মর্থম আবুল
কালাম শামস্থীনের পুণা শ্যুতির উদ্দেশ্যে নিবেদন কর্ছি।

ভালিষ হোলেন সাধারণ সম্পাদক

352 NIB. 3396

फ्लि शक त्यस्य शक पूछि जन्यानरे यथिय



পরিবার পরিকলনা বাবস্থা পাওয়া এখন খুন্ট সহজ। আপনার জন্ত রয়োছ

विवाय्ता (भवा • विवाय्ता भवायमं • विवाय्ता अवायमं • विवाय्ता विवायमं • विवाय्तायमं • विवायमं • विवायमं विवायमं • विवायमं विवायमं • विवायमं विवायमं • विवायम

(यात्रार्यात्र कत्रनः

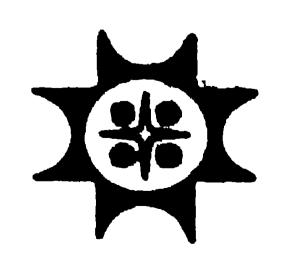
ৰে কোন হাসপাতার ০ যে কোন পরিষার পরিকংপনা কেন্দ্র সা ক্লিনিক ০ সকল মাত্রজন্ত ও শিশু কল্যাণ কেন্দ্র ০ সকল পদ্ধী দ্বাদ্ধঃ কেন্দ্র ০ ইউনিয়ন ও থানা পর্যান্ত কর্মকৃত সকল পুরুষ বা মহিলা পরিবার পরিকল্পনার মঠে ক্লমী।

खनगःबा। निरुष्ठन १६ लिबार लेडिक्छन। कार्वक्रम।

"मुक्षित्र (शास आस सारा वासार शासर तूनपूर्ति""

विस्राशी कवित्र क्षत्रम भूषावासिकोरि कवित्र विरमशे वाजात क्षति वामारमत





(मानानी गाएक

भिवारे जामापन सका

नकका अका उदा पिका विका नाकि गाविक गर्बा

मारङ्गिक आत्मानदात नका क्यागिक आयादमत निर्करमत

(भ व(क) भक्त (शक बक्क व क्षकाएमी व कर्म क्षि

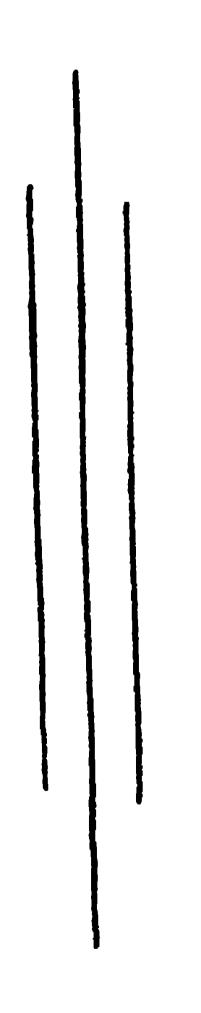
श्वानी गाएक

वानवात्र विश्वत वर्ष

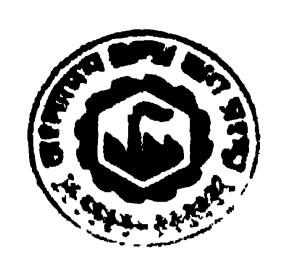
मक्कम बशाहरी अधिका/मक्कम मुनिक मानग



মহাকাব নজকল ইসলামের গবেষণায় আশ্বনিবেদিত নজকল একাডেমীকে আমাদের মোবারকবাদ



वाश्वापिम ष्टिल उग्नाक म लिबिएक छ



वाश्लाम्य मिद्य भाग मश्रम

पायव िषद्यायात तिया किठ

বিশেষ আক্ষণ হিসাবে অল্লোন্নত এলাকায় সহজ শতে ঋণ দেওয়া হয়

অধান অফিন: তাপ্রণী ব্যাংক বিদ্যিং (১ম তলা) মতিঝিল বাণিজ্যিক এলাকা, দাকা।

माथा किमा:

- ১। ৩২, আপ্রাবাদ বাণিস্থিক এলাক।, চটুপ্রাম।
- २। क्. हि. ब. विन्डिर जानम् बलाम स्त्राड, बुकनाः

- ৩। বি-৪৯০, খোৰশাহ্য ছোড়, লক্ষ্মীপুর, রাজশাহী।
- भ। (द्राष्ठ-कृष्टिय, श्रम्भा मण्डा, भिरत्रि।

मक्कन अकारहरी अधिकः निकल मानक मानक

"সাফলোর এক বংসর"

১৯৭৬-৭৭ সালে বাংলাদেশ কেমিক্যাল ইপ্রাস্থীর কর্ণেরেশনের পরিচালিও কার্যানা সমূহে উল্লেখযোগ্য অধপতি সাধিত হয়।

সার, কাগজ, নিউজপ্রি-ট, রেয়ন সূতা, কপ্টিক সোডা, সাবান, বাটোরী, ওড়ো সাবান রবার ও প্লান্টিকের জুতা, বেলটিং, টায়ার টিউন, নিয়াললাই, ঔষধ, চিনামাটির বাসন পর, ডিডিটি সংখ্যর তৈরী সামগ্রীর মধ্যে উল্লেখযোগা।

১৯৭৬-৭৭ সালে সংস্থার পরিচালিত কার্যানা সমূহে ১৮৫ কোটি টাকার পণান্তব্য উৎপাদিত হয় এবং ৩৫ কোটি শৈকার পণান্তব্য নিসেপে রফ্ডানীর বাবস্থা করা হয়।

जरबा अहे सम्भन्न १० (काल हाकान् तन्ते लाख करना

वाश्वामिन (कथिकाव देवाहिक कर्नाद्रमव (मर्नन स्वाग निर्गाष्ट्रिक।

बि, त्रि, **खाई**, त्रि ১৩-৯-১

मक्क्रम अकार्डमीत माक्रिक अकामना अभाष्ट कथि-मगालाहक

चानपुन बाबान रेजबरवन

विक्रम्त इनताय : क्रिक्रा

ভাষার অভিনৰতে, বিশ্বেষণের সমংকারিতে, ভাবনার গভীরতায় এবং প্রক্তনার নিপুপতে বাংলা সমালোচনা সাহিত্যে এটি লেখকের একটি অমর অবদান। হার্ডব্রোর্ডে ক্রচিসম্পন্ন বাঁধাই, খাতিমান শিলী অভিত চিত্তাকর্মক প্রক্তম, বক্ষকে মনোতে মৃদ্ধিত চার শ' প্ঠার বৃহৎ কলেবর এই গ্রভের মূলাঃ ২৫:০০ টাকা।

19 232 --

कर्नायाम: मक्कम अमारक्वी (यज्ञासायाम करमानी, यज्ञासायाम, अका।

वषक्व अकाएयो शिक्या

वि-वानिक अधिका ॥ ५% वर्ष : अक्रका गु।४क मःवाः : २०५४

সূচীপত্ৰ

हिट्ड मजन्म : ज्यानवाय

2145

জাতীয় কাৰ্য ও কনি দককল : সাদেক আলী
স্বালেচক সঞ্জল ও: শংলাবুজীন আছ্মদ
বুৰকেতুৰ ঐতিহাসিক পদিভূবি ৫: ১শ. এন পুংফার বহুমান
স্বৃতি-সভার আলোকে টি. এই প্রতিষ্ট ও: সিদ্ধির বহুমান
বিশ্ব সাহিত্যে নজকল হুইলাম ১০ কেওবান মোহাজদ আজন্মদ
মঞ্জল-সাহিত্য স্মানোচনার ধান ১০৫ ব্রিকুব ইস্বাম

স্ব্ভিক্থা

'ज्लिकान' ७ 'ननलीरिड' ३३० अध्यक्त सध्यान बाग

7:平时日

থাৰাৰ কৰি ১১৫ ডটিয় মাছমুল ছায়ান

चाटमाहमा

मक्करनम् 'निष्टार्डः धगर्ष ३८७ (याराष्ट्रम नार्थक हैवार्

श्वादमा वामिक

मकी एट्ट डाई डाइल ३५० कार्का अञ्चल देशनाव

স্ত্ৰ লিপি

मुकारिय विश्वित किर्यालय १०१ क्ष्मण जानक मार्थक वृष्ट्या विश्व विष्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्व विष्य विष्व विष्य वि

अप अविहिष्टि

नक्षक की बनी 550 वाबून कानाव पावस्कीन निज्ञ-वर्णस्व पद्ध वर्णस्य 550 वाब्यून कावित्र नक्षकरम्य स्वास्त्रक्षाम 55२ नाश्यूमीम वाङ्ग्य गःक्रमस्य मक्क्रम देगमान 555 साश्यूम कारम्य

त्निय मानाय

नाःनारम्य मध्यम् २०० जानम् मुनी छ होर्नुनी जनारणनी मश्याम २:५ डानिम ছোমেন

धळण : शास्त्र नीन

ज~्यां वक

नारानुष्टीन याद्यन

সম্পাদনা পরিষদ
আনুধা কালাম শামসুদীন
আনত্ত কাদির
আনত্ত কাদির
জুব্দর রহমান সরকার
ভক্তর মোহাম্মদ মনিরুদ্ধামান
মোহাম্মদ মাহ্দুক্তরাহ
ভক্তর রিশ্কুল ইসলাম

जाषांचन जन्नाम्य ङानिम (शास्त्रन





ভল বালিচার বুলবুলি আমি রঙীন লেখের লাই লক।। অনুরামের লাল পরাব যোর চোকে কলে কলম্ল।।

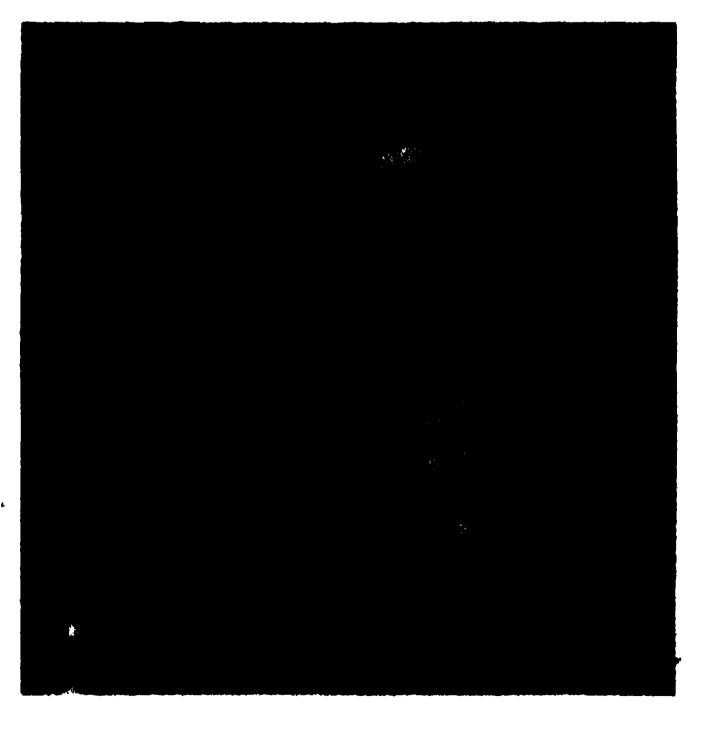
আজ যদি ধরিতীর খেয়ালে হঠাও ওকিয়ে যায় নায়েগ্রার জনপ্রপাত, কোন ফটোপ্রাফারের ছবি পেকে আর বোঝানো যাবে না, সেই প্রচত প্রবাহের জীবত গতিবেপ কি বিস্যায়কর হিল।

আত বাংলাদেশের গোতের সামনে ষাঁদের কবি বলে জানি, পায়ক বলে জানি, সুরকার বলে জানি, তাঁদের জীবনের পতি ও ধারা থেকে বোঝা যাবে না, কবি নজকল ইসলাম কি ভিল!

প্রচন্দ্র বন্যার মত, লেলিছান জলিখিলার মত, পরাধীন জাতির তিমির ঘন অঞ্জারে, ভাতির ভাগাবিধাতা নজকলকে সম্পূর্ণ এক অতম হাতে গ'ড়ে পাঠিয়েছিলেন।

न्र्भक्क खड़ीकार्य





ठेनर्यत्र इतिहै कथित नवन नाम बहनाकारमङ। कथित यहम वर्षम २७।

वार विस्कृत इतिहै क्कानन (पर्य कनकाछात्र श्रेखा)-वर्श्टरम्य नववर्षीकारमय-कवित्र वदन वदन ३२।

> व्याचात्र गरमक व्योच (व्याचात्र भाषाम कृषित मूम हेटी कार. एम व्याच करम (व्यय-निक्साम कृषित व्याच स









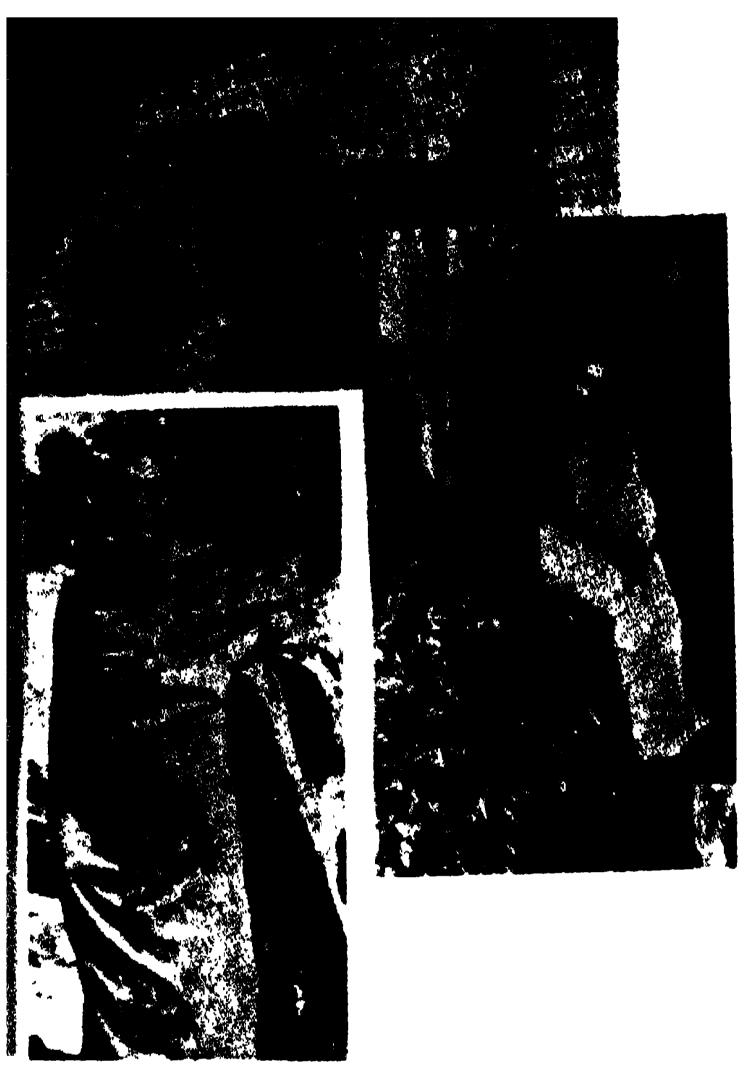
উপৰেম বাদ বিকেব ছবিটি কৰিব ২৫ বছৰ বছদেব। বে কামানটিৰ পাৰে কৰি কেলান বিবেশ ডিবে আছেন সেটি বাকুড়ার অধানত বিকুপুৰের বলবাদ। কামান।

डेनरबर डाम बिरम इतिहै रिनिस्मर लानाम निविध २) रहरवर महम्मलार। ८० मः राक्षामी नम्मेन छ्या लक्षाम नर कवि उपन कराडी (परम कम्माडाय मना लजापर्डन करवरहम। नगर ১७२९ नारम देखा गम। वी विरम्भ इतिहै असन रहनार नर्षे शामरश मस्मरनर।

वै। विरक्ष ६विष्ठै अकन वष्टनाव भूर्षः वानवश्च सक्करनदः। कवि छवन वान कविद्यान कृकनत्रदः।

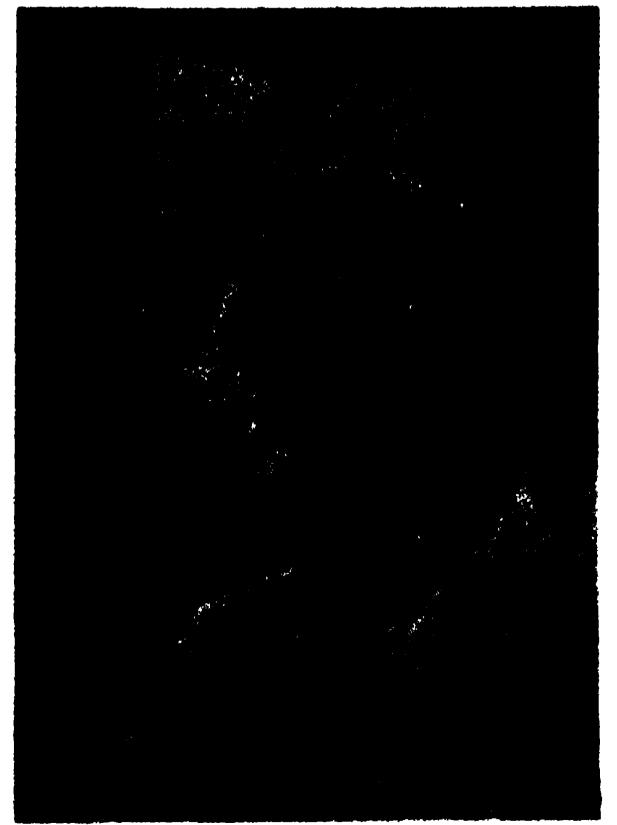
कान भारतय गृक्षेत्र वाम निरम्य इतिकास कवित हरेश्चाम समस्यत्य करम विरम्य ग्र्न जि । यश्चिक स्था वास कवितक वयस्यत्यत्य अक्ष कवतापृष्ठ व्याचात कथितक व्यावधीरमञ्ज मक निरम्धान श्विष्टिज । काम विरम्य केन्द्रिय इतिक्र कवित केवन स्थानस्य । नीरक्ष इतिक्र स्थानस्य स्थान्ति-मरगुत्र ।

बाव निवासीय त्याम काठ वरी मानी गाड़ हुत्य बाबाय गाम विका गामिस वरत गार करत-सूत्र । बारी कोड बाजार कवि मात प्रमा प्रक-गामा ।

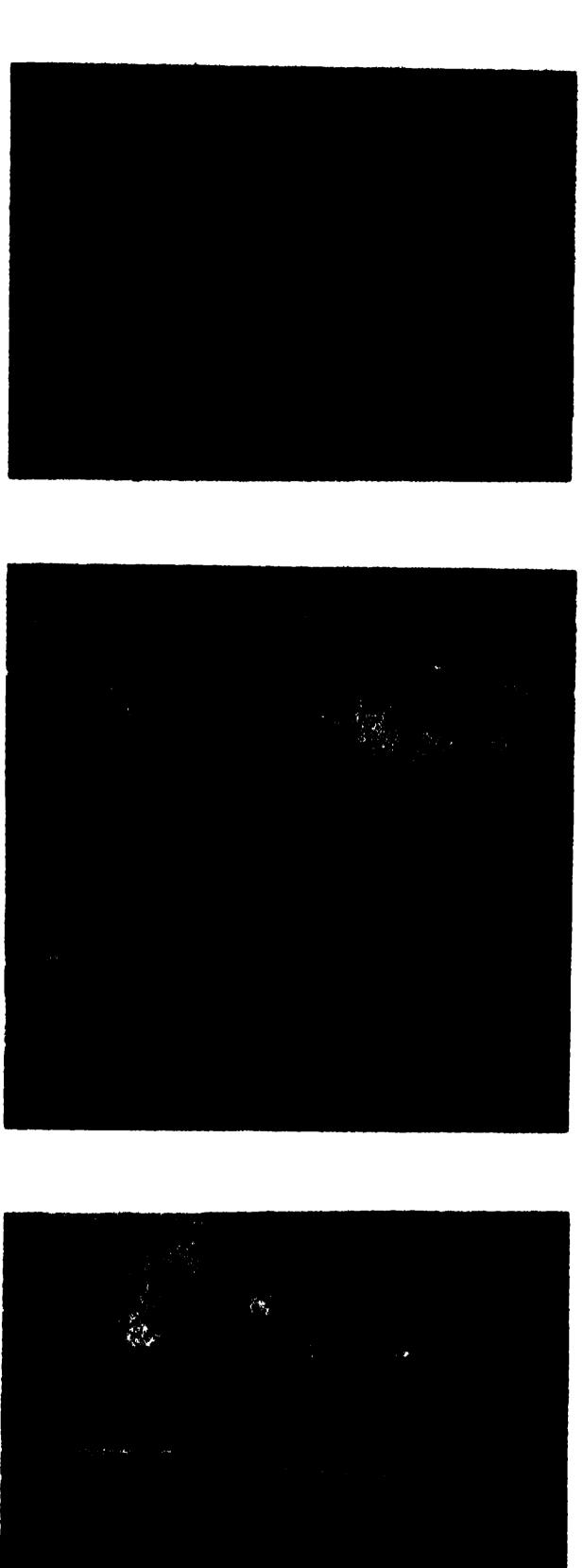












वान विरुक्त इतिहै किर्भाव कवि मककरवट । कवि छवन निवातरमान बाक हारे कूरवह हात । हान विराय हैनार्यय इविक्रि त्ये नक्ष्यम्, निश्च नक्ष्यम् (स्वारम क्यांचन क्यांचन) अवाम त्यत्म कृति नियु शांपविक नान करवन। वाक्यात्मक क्विक्क कृत्रनिवास स्की कविरक्ष वाकात। अक्क व्यक्त का कवि-कीवरमव वाशाञ्चिक छडमार डेरम क्यि। मीटिक इविक्र भीवनुकूर, मृक्ष्माद्भार समित्या। धरीनात्र मशरिक वरेवात्य।

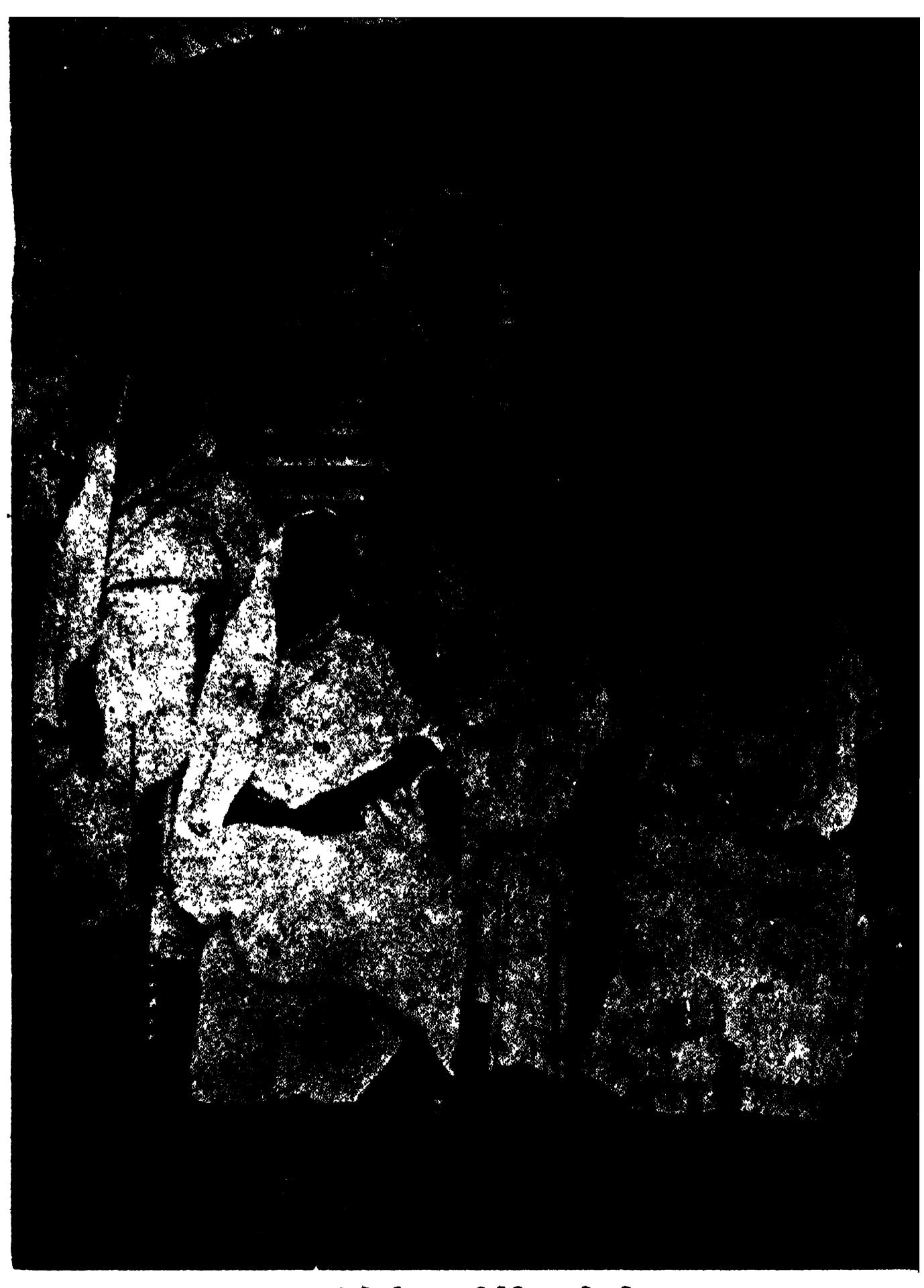


व चारमाण डिज्ञिंड करिर (वोस्ट्यर (मार्थि-मरगुर।) >>>> मार्थ करिय स्थम स्थम ३२ छन्म विना । डिज्ञिनिमनी भविषम (बाचारी वर्ड कार्थियार स्टब सार्थम।



डेनरत कविष जीवनगणिनी जानाजा (नगजन्छा एत्ररक ध्रमीना। नीरह ३२ मर करनक गृहीरित तम्हे विद्यांछ थाड़ी, 'बजीव मूननमान नाहिजा निर्शित जाक्म दिन याव (माजानाव। जय जान निर्कत द्यांच्याय क्लाहिज ३३२९ नारमय रेडज मारन क्लोक (बरक किरत कवि मूक्कमय जावनरून नरक बान कवर्णन।





स्वती (बर्फ क्कन्तर बर्णन करि ही धरीमा ६ गांक्डी निविद्यमा स्वीरक निर्देश । स्वारम बन्ध्रप्त क्या वृत्रपूर्ण । इति कृत्रपूर्ण । वाद्य क्रियोश निविद्यमा (स्वी द्यारम क्रियोश धरीमा। वाद्य क्कान्यमा कृत्रपूर्णय পविद्यामाविदी स्विद्या। निकास वृत्रपूर्णय क्षा व्यापाविदी स्विद्या। निकास वृत्रपूर्णय क्षा व्यापाविद्या स्वीर्थण ।

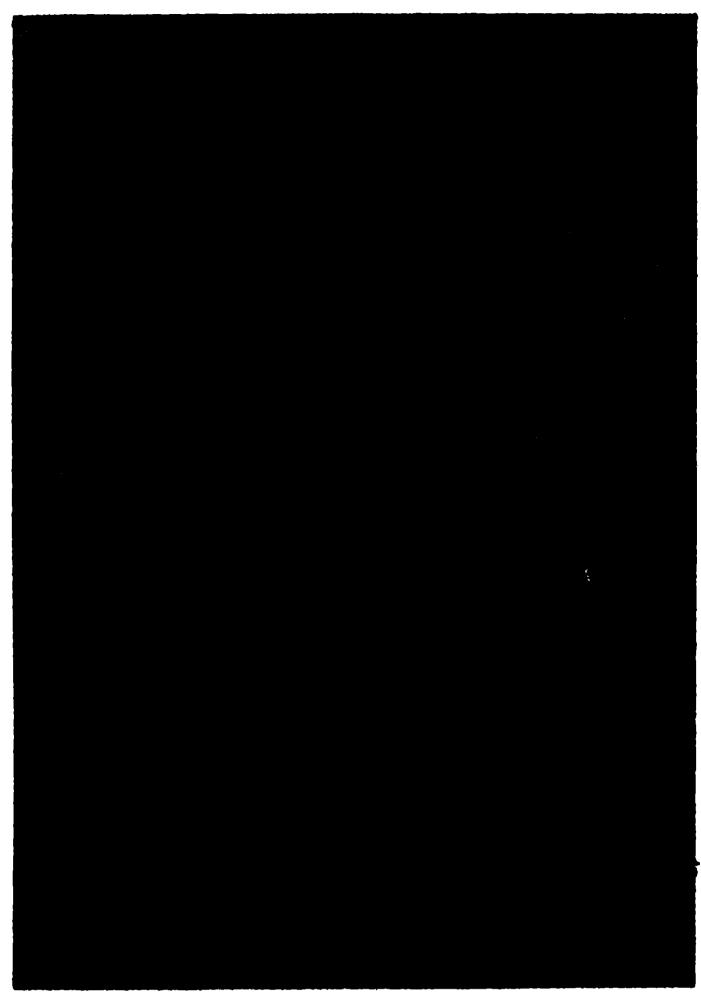
स्थित अपि मार सिस् केमी-आद ॥ क्षि कारा (क का अपित वर्षेत्र स्थ. अस्मि अप्रवास कारा (का क्षिम अप्रांत) त्य क्ष्म भा कारा (का क्षिम अप्रांत) का क्ष्म भा कारा (का क्षिम अप्रांत) का क्ष्म भा कारा (का क्षिम अप्रांत) का क्ष्म भा का अप्रांत (का क्षम अप्रांत) का क्षम ला में दूरी राम मारा ॥ का क्षम ला में दूरी राम मारा ॥ का क्षम ला में दूरी राम मारा ॥

sally mal

hours a

क्वि-विष्ठि पृ'ष्ठि भक्क भारम्य भाकृतिभि । मीरक मःबीरक ख्वारवाभकावी खबवन् कवि ।





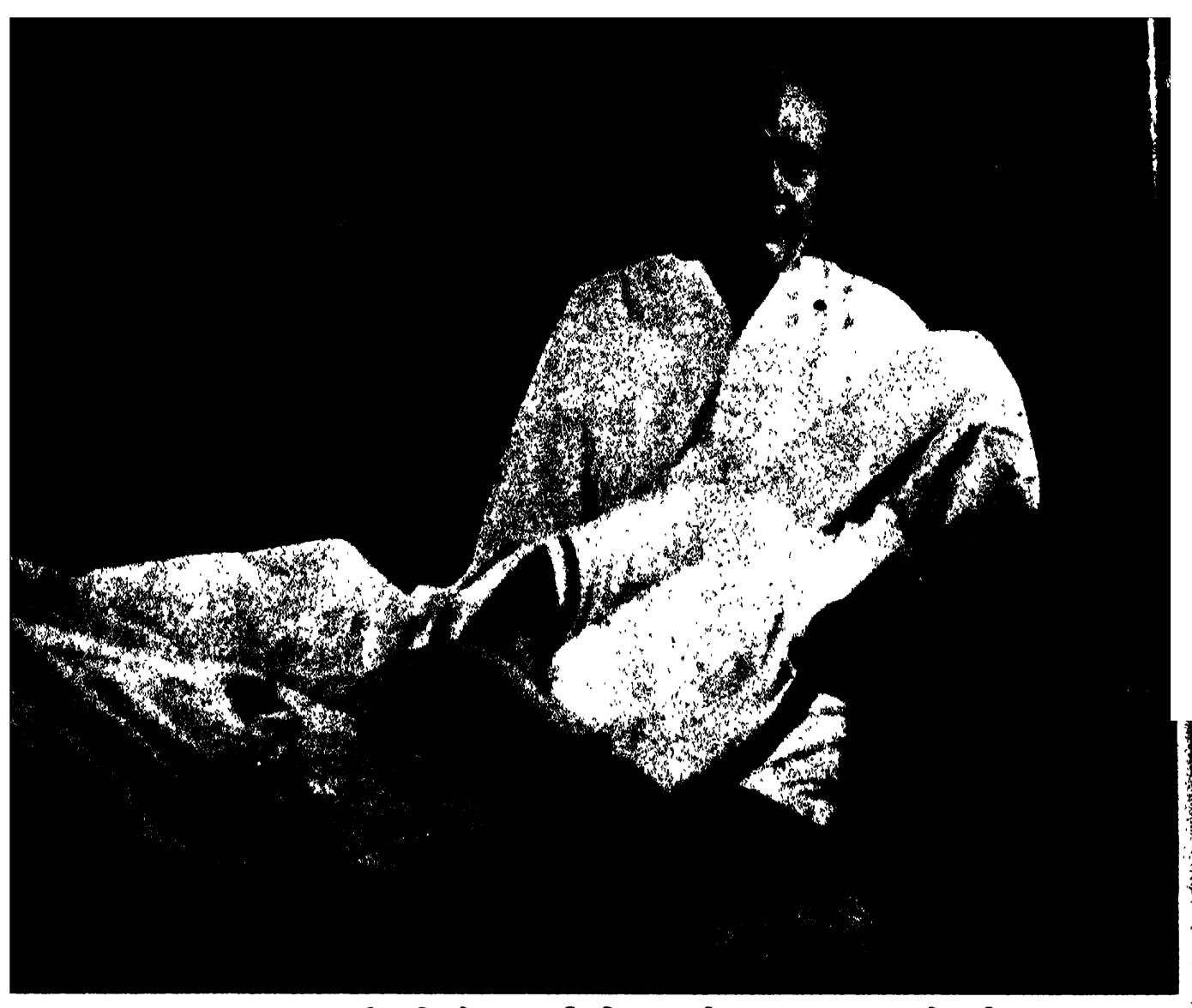


अ विशेष विष

मीरक्ष कविर्छ वायनिस्य ठेन विष्टे अवानिस्य स्वयक्त नवकार, जामनिस्य सक्कम । वायबारम महावयान का वियुक्ताक वाकार ।

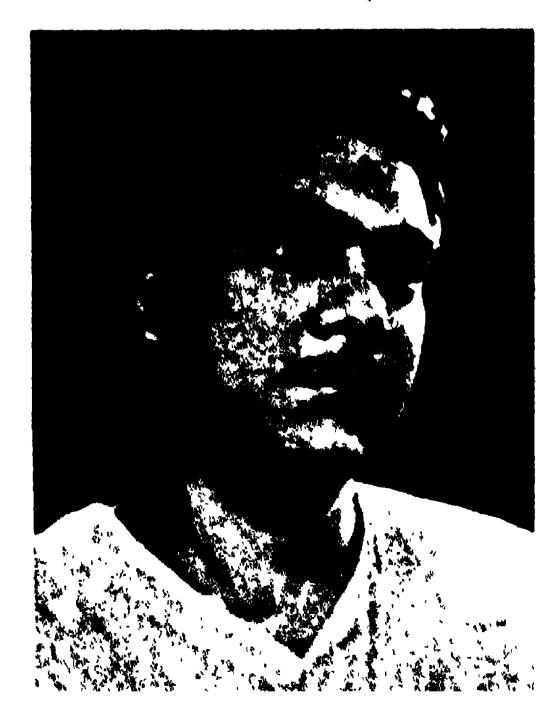
कवि वद्य इत गर्छन ३३८२ मालन बुनार जारम।
२३७३ माल कविरक रेडेरबार्थ आहेग इत। हारम पृक्षेत्र इतिहै कवित वदम वयकाम कारम बुम जारम मारम कहरम रहामा।



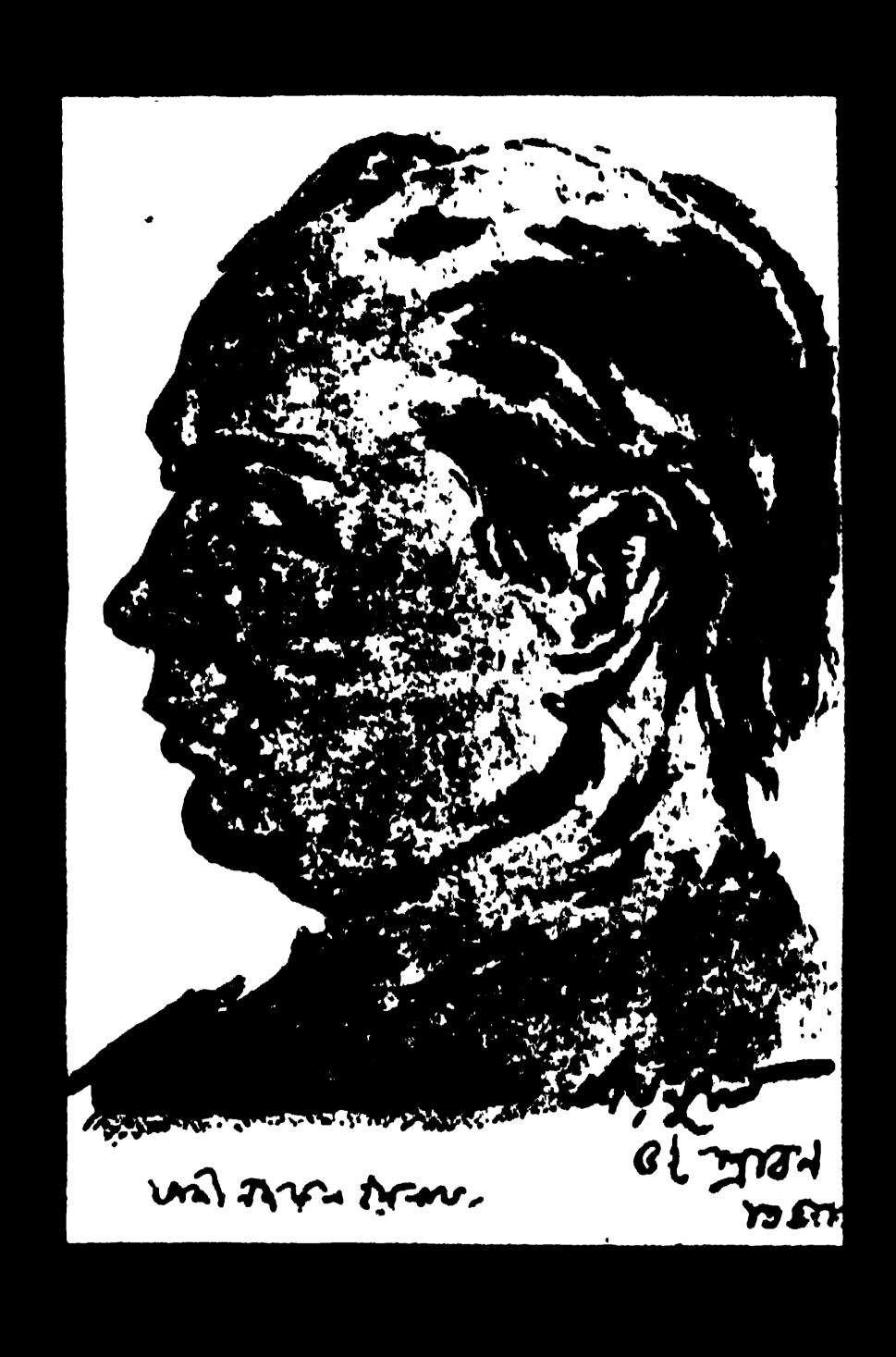


मक्ष्म कार अका रामि। श्री श्रदीमाध मध्य निर्देशमा। कवित्र हम बाका व्यवसाय श्रदीमाध निर्देशमा मक्ष्माध्यक्ष हम। कवि माधाधीछ डिक्शिमा कवित्र किष्ठ काम कम श्रदि। व्यवस्थ कवि क्ष्मा श्रीष्ठ निर्देश अवित्र क्ष्मि कंपा मुद्दा मुद्दा मुद्दा मुद्दा मुद्दा मुद्दा कवित्र हिन्दा हिन्दा कवित्र क्ष्मि क्ष्मि क्षम् । अवित्र क्ष्मि क्षम् । अवित्र क्ष्मि क्षम् ।

नीरकः वारम कविष अप नृत्व काकी नवानाकी देनवाम अवः कारम कविष्ठं गुत्व काकी व्यक्तिक देनवाम ।











'निर्द्धव क्षमा निर्द्ध' विणुनि महिक्किया मक्कम-महिक्काक व्यवस्थान वृद्ध सामरक्षमः। मक्कम विग्युक्त संद्धम निर्द्धम निष्क्षम संग मक्करम्बः। व्यवस्थान मक्कमरक स्वीत्र-मन्द्रम अदम शुक्कानि क्षा संग। सन्दर्धम साम्बद्ध स्विति त्यस व्यवस्थानि मन्द्रपत्रः। स्वारम वार्ष्य स्विति त्यस व्यवस्थानि मन्द्रपत्रः।

वारक इविष्ठ कविवाकृत्नुनाव। ১৯२৮ नारम कवि वयन हाकाव चारमन क्यम वर्षे किनूबी विवास मरत्य कविव शविष्ठम दव। व्यव विवास वाजा हैनवरक कवि बहना करवन ''वाविरम शाक्य कि त्या माठ करि हन्या चारम'' मानक वान।



हाकाष्ट्र तबक्रल

३৯३৯ नाम चन्न बाकाकानीय त्यवारक वट हाकाव अरमिहानय मुक्ता ३৯६९ नाम छावछ विछक्त वर्ष । नाकिशास्त्रव नृक्तात नृक्षं वर्ष्णव व्यविवानी शिव कविरक हाक्ष्म त्यवाव हेक्का त्यावय कवत्वक तम त्योखाना छात्यव वर्षाय ३৯९३-अव वाबीयछा मह्मास्यव नव वाह्मास्यव श्वीय व'त्य कवित्र वाह्मास्यत व्यागाय नव श्वाच व्यव ३৯९२-अव ३०३ त्य वाह्मास्यत व्यवकाव कविरक हाकाव विरव अरमय । हेन्द्रव इविष्ट कवित्र हाका व्यवकाव हेन्यत्व वर्षाय व्यवह मन्द्रवा छान्यत्व व्यागा विगुत्र व्यवम्यान्यव नृत्य । छात्र नात्यव व्यविक्ष के मन्यवय ।





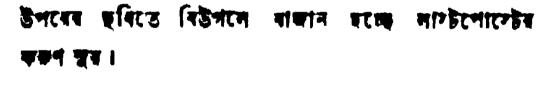


ज्ञन्यं स्थानश्री त्व मृष्टिम्म स्थान कवित यान-महीच वामज्यतः कवित्क राज्यतः यान। इतिहै (य-मस्टिम)



कविव जन्म जिल्ला अकरी जात-निष्ठ पृष्ठं। ठाण विद्याव इविट्ठ जविव गृष्टे भूजवन् हेना काजी छ जनानी काजीस्क एका बार्ट्स।





নীচে ইস্ট বেজন বেজিবেণ্টের এক পুটুন দৈনিক পুভার নিবর্ণন শব্ধপ অবন্যতি করছেন 'বেজিবেণ্টান কলোর', প্রদশন করছেন গার্ড অব অনার।

निक्यता, मन्नावता ९ हिज-निविहित्ति : नावाबुकीन बार्यक

वक्तका : हार्यं वाम

वारमाक्डिजनिश्ची :

वरहर हारियुद्राण् याहात. भीनविक्य स्त्राधारी, स्त्रावार वाद्या, काराक्रकात्राम, नानित बाजी वान (सार्म) अवर बनामा।

करवक्ती इवि रेगिक मःवान, रेगिक वाःना ७ वाःना बकारक्रमीत जवः कवित वक्षम वान पृष्टित दक्षनिनि बनाव मारकृत्यूत वस्तान वारमत मोक्षरमा श्रीक्ष ।





वस्य अस्रात्मा श्रीका

विमानिक भक्तिका : ७ई वर्ष : >म मःपााः जीच-वर्षाः >०४८

ভাতীয় কাবা ও কবি **নজকুল** সাদেক ভালী

জাতীর ভাবা বা বাজুভাবার নিবিত হংলই ভা জাতীর নাহিত্য হর না। অথবা একটা ভৌগোলিক চৌহকির বব্যে একই ভাবার দিবিত নানা বকর প্রভের সংপ্রহই কোন বাজির বাজীর সাহিত্য নর। বে সাহিত্যের বব্যে জাতির ধন এবং চরিত্র বুংগ বুংগ ক্রম-উশ্বাচিত ধন, ভাকেই লাজীর সাহিত্য ধনা বার। বুগরানস এবং বুগচরিত্র পরিবর্তনবীন। কিন্তু এই পরিবর্তমেন্ত্র ববোগু জাতীর সাহিত্যের বিকাশবারা অবাছত খাকে। অর্থাৎ এই সাহিত্যের মধ্যে প্রভের উল্লোচন বটে—তা যতই বিভিন্ন বা বিচিত্র হোক না কেন। আবার, কোন আভিন্ন বিশেষ বুংগর বুংগর বুংগর বিভিন্ন বাংলা এবং চরিত্রের উল্লোচন বটে—তা যতই বিভিন্ন বা বিচিত্র হোক না কেন। আবার, কোন আভিন্ন বিশেষ বুংগর বুংগর বুংগর বুংগর বুংগর বাংলা এবং কাজিবত বৈশিষ্টা বিদারান। তাঁগের বাংলা এবন একটা সাহারণ নৌনিকতা বাংক, বা উল্লের বন্ধনে একটা অবিচন উৎসাধেক্র থেকে উপজাত। এই জাভিনত প্রাবহিত্য করি বাংলারিত করে। একনিক্রার ব্যার্থ আভিন্ন বাহিত্যেকর এবং জাভিন করে। এবনিক্রাবে বুংগ বুংগ আভীর সাহিত্যেকর এবং জাভিন বাংলার বাংলা

व्यक्ति द्यानदिनिष्ठा निर्दार वान्या द्यद्याको व्यक्तिक क्रियाका हिम्दछ नानि। वान्न, वर्ष क्रिया क्रिया क्रिया व्यक्ति व्यक्तित माहिएकाम सामादेगर महावनम १५। वान्या मन्न वीक माहिका, ইংরেজী সাহিত্য অথবা করাসী সাহিত্যের কথা ধলি, তথ্য গ্রীক, ইংরেজ বা করাসী জান্তির বন ও চরিত্র, প্রতিন্তা ও প্রাণ, জীবন ও জীবনদর্শনের কথাই বলি। একটা জান্তিকে সম্পূর্ণভাবে চেনা তার ইতিহাস দিরে হয় না। কেননা ইতিহাসে থাকে তার বাহিরের ক্লডান্তা, তার বহিজীবনের ধরন-ধারণ এবং তার বাত্তবের ক্তর্নার্ত্তা বা বার্তার কারিনী। কিছ তার বানসিক ও নৈতিক বৈশিষ্ট্র, অন্তর্জীবনের রহস্য, ভাবাবেগ-পঠিত পঞ্চি এবং বৃদ্ধিক বা জান্তিক জীবনের কথা তার সাহিত্যের মধ্যে থেকেই জানতে হয়। জন্য জান্তির থেকে কোন একটা জান্তির জীবনপৃষ্টির পার্বক্য ধ্যা পন্তে তানের সাহিত্যের তুলনাবুলক অসুশীননে। এসবই, অর্থাৎ একটা জান্তির জান্তীর সাহিত্যে জানতা বিশেব বা-কিছু পাই, ভা তার প্রাণ ধর্ম বা প্রাণ-বৈশিষ্ট্যের জনাই পাই।

ধাঙালী-গ্রাপেরও নিশ্চর এখন একটা বৈশিটা আছে, যা নিঃসলেছে বাঙালীকে অনা জাভির থেকে আনাদা করেছে এবং তার প্রাণ-বৈশিষ্টা দিরে যদি আবরা তাকে সঠিকভাবে চিনতে চাই, তবে তার জাতীর সাহিত্যের বাধারেই তা করতে হবে। তার জীবনবোধ নিশ্চরই অনা জাভির শীবদবোধের থেকে কিছু না কিছু পৃথক এবং তার অবশাই একটা ভিনু জাভিসভা আছে। বাঙালীর এই জীবনবোধ এবং জাভিসভা যুগে বুগে তার জাতীর সাহিত্যের বধ্যে বিশৃত, বার এক অভিনধ্য প্রতিবিশ্ব আহরা দেখতে পাই ইংকেজ আমনের বাংলা সাহিত্যে।

ইংরেজ আমলে বাঙালী নতুন করে তার জাতিসতা লাভের সাধনা তরু করেছিল। রাজনৈতিক এবং সাংস্কৃতিক পরিবেশ-পরিক্তিতি তার মনে এই বাসনার উদ্রেক করে। পাশ্চাতা সভাত্য-সংস্কৃতি এবং ইংরেজের ঘনিষ্ঠ সানিধা থেকেই এর সূত্রপাত হয়। কর্বে এবং চিন্তায় এব প্রাথমিক কাম ওরু হরেছিল উনিশ শতকের প্রায় গোড়ার দিক থেকে। সাহিত্যে, শিকার, রাজ-नौजित्त. नमासक्दर्भ, धर्मानुनीनत्न এवः ঐতিহ্য ও সংখৃতির চর্চার বাঙালীর নিজস্ব সভার উরোধন, थकान এ२: প্রতিষ্ঠা ক্রমবর্ধ ধান তীশ্রতা লাভ করেছিল। তীবনের বিভিন্ন ক্ষেত্রে ভংকালীন **বাঙালী** बनीबीरमत्र नाना प्यमान এর ভাজ नामान चाकत। वांक्रानी-महात्र প্রতিষ্ঠা-পর্বের শেষ পর্বারে কবি নঞ্জলের প্রাণে এই সন্তাবোৰ স্থতীব্র উন্যাদনায় বংক্ত হতে বাকে। বে বোৰ স্পষ্টভাবে দেখতে भा**ख्या शिर्या**ष्ट्रिंग विप्रांगांशव, यःकिम, मयुग्पन, मनावयक शारान, शिवीन स्वाय. ইंगबाईन हारमन, नवष्ठक, विरक्षक्रमान, कांग्ररकावान, व्रवीक्रमांचे अवः चारवा चरनक वृत्र-श्रेडिनिवि माहिज्ञिक यः तीथी (प्रत्र यथा, जावर ठवन এवः ठ्रांख जमूत्रभग भागा शिरब्रिंग मणक्रमत जर्म कांबायः कारत। ७४ अह मह, अपकानीन वांडामी अवः जावजीव नकन क्लिक्मी, नवाब्दमबी, क्रिजानावक अवः स्नाम-एभचीत बामना गणकात्मव च्रात मूर्ज दय। तम् **धवः चा**डित्य मिरव बाडामी, उपा खांबडीवर्यय चनु मक्कम कार्या यथार्थ बालीवृष्टि लाउ करत्। युगेबानना, युगेबानन अवः युगठविराजन काश्विक स्राम्य अक्ष्याज नक्ष्मम रमनार्यम ब्रामार्ट्य पूर्वण निरम कृति ७८५। अग्य कामर्य नक्षम कांवा यथार्थ कांडीय कांवा शिगार्य कडिनिनेड श्वांत्र योगा।

বাস্তবিক পক্তে, সাহিত্য হচ্চে যুগোর কর্ম এবং ভাষধারাক বর্মী প্রকাশের একটা দিক্ষাত্র। এ সম্পর্কে হাস্ত্রসনের একটা কথা প্রথিধানবোগ্যঃ

Literature is only one of the many channels in which the energy of an age discharges itself; in its political movements, religious thought, philosophical

speculation, art, we have the same energy overflowing into other forms of expression.

আই সাহিত্য বুগের ভাববার। এবং অনুভূতির স্পর্ণে সভীবিত, বাজবারিত এবং জীবদানুগ হছে ওঠে। জাতীর সাহিত্যের বেনন একটা জাতিগত চারিত্রা বাকে, তেননি বাকে বুগচারিত্রা—নেকবা প্রবাহর প্রভাবনাতে বলেই। বুগলীবনের বহিঃপ্রকাশ দাদা কিছুর ববো দিরেই বটে, আর ভার প্রভিক্ষণন হর জাতীর সাহিত্যে। কোন শ্রেই সাহিত্যিক তাঁর বুগ এবং জাতিকে এড়িবে বেতে পাঙ্কেন না—তাঁর ভারতিতা বতই বহুনুধী বা নর্ণত্রগারী হোক না কেন। গোটের বত অনুসারে প্রভিটি বানুধ তার বেশের তবু নর, ভার বুগেরও নাগরিক। স্বভাবে প্রভিতাবান নেবকদের প্রকাশভালী দার বা-ই হোক, সরকালের প্রবান ভারত্যোত বা জাতির স্বভ্রেক্ত জীবন বাসনা তাঁকের মচনার ববো প্রবাহিত্য হতে বারা। এইভাবেই তাঁকের সাহিত্য জাতির জীবন-স্পাদনের সজে স্পাদিত হবে, তার নাটার সঙ্কে বুক হবে সজীব, সভা ও চিরতান জাতীয় সাহিত্যের শ্রেণী ভূক হয়। এই কারণে কোন সাহিত্যিকক বুকের সাহিত্যিক বনে নিলা করা সাহিত্য সম্পর্কে বুচতারই পরিচারক। এতে করে তথাকবিত চিরতনবাদী বা করা-কৈবন্যবাদীদের বাত্রাভিগে অহ্যিকটি তব্য চরিতার্য হব, আর কিছু নয়।

बाडीव महार्त्वारबन्न भनिभून এवः मार्थक स्नभावन एरविष्ट्रन मकक्षम कारवा। जैम এই बाब अवन अक्षे बच, वा चांजीव जीवरनव नाविक बााम-बाबना (धरक **ड**ब्ज--- ७४ बांबरेनजिक बा वर्षरेनिष्ठिक, किर्वा नावाधिक-नार्ष्ठ्रिक निक अन्न अक्ष्वाख श्रेष्ठमक मय। डाप्टे কাৰো ৰাঙালী জাতির একটি সৰ্বাজীন শালুত মৃতি রচিত ছরেছে দেখা যায়। বাঙালীৰ চৰিত্ৰ, श्चन, यन এवः यनीवान এयन এकि गयन्त्रिष्ठ ज्ञान जीन कारना कुरहे छैर्छएए, यारक अनुवाज बाबरेनिङक कर्मनात्र कम्पुण्डि बना मन्त्रव भय। छ९कामीन क्यान बाडामी माथिङिएकत्र बहनाह षाजित এবন চিরম্ভন বানশ- বৃতি খাবরা পেখতে পাই না। তাই নজকল-রচনাসম্বার্থে কেট যদি उपुराज बाबरेनिक ध्वत्रना-मञ्ज এको। बहादी माहिका नतम बानायिक करवन, करन किनि निरम्ब महिज्ञिक बृहिरीनजारक चांकु कवर्ष श्रीवर्यन मा। मस्करमय माभगरमारक बांक्षामीय व बीख जारनवा ठिकिन हिन, जाबरे अक करनवास बहिबबय क्रान जाकराब नारकात्र निरक ভাৰ সাহিত্য সংক্তেত। নজক্ষ-কাৰ্যে দেশাৰ্থনাৰ, জাতীৰতানোৰ, জাৰ্থিপুৰ্বাস, আৰ্ডাসা, উন্যাদনা, তেজ, বীৰ্ণ, প্ৰেৰ, উনাৰত৷ ইত্যাদি জীৱ বানসমূত শাখুত বাঙালীৰ উচ্চুল ও বিচিত্ৰবৰ্ণ जनन्यात्रात्र । এই जनन्या भिरद, अजनन-कार्या विषयम बांधानीय जनकर्मना य जीक छ नानिक लोकन-मुक्तिक सन्। निरम्रदक्, ভारक चन्ना सन्नान-नियरभक् वक्ता मर्वक्रमीनकात्र वक्ष बारक। वरे यह महरकरे विवाकि कामारक भारय-महन हरक भारत. वरे यह यह विरम्भ स्वरक कायमानी, वर्षे यानुष युचि 'त्कान् निरम्नी' नाष्टिया' क्यि मन्त्रा क्यात्म (मन्। यादन, এই यानुद्रमा शारा काम विराजी माख मिरे, अब वर्ष बारबाब नाम-निष्मित विश्वकात वर्ष, अब नामधारक मिनीश्वनि चार्ज यमवायु-चर्ट्य मधीय-बुठाम । खात्र मर्यवागीम प्रत्याप मधाप अधीम पृष्टि अञ्चात्र मा । अधीर बाह्मजीय हिन्द्रकत सर्ग-धर सर्पाई रम विमुद्यांहर, विमुक्तीन।

क्षि मक्किन्यात्वा क्षेत्र मांकितीय कामा क्षेत्र वयपीय यामम-मृष्टि यक्तिक वर्गक छात्र यामम-क्रिक्या वा क्षिक्यात्वात्व काम क्षेत्रके विकास क्षेत्र शावाना भाग नि---मांविककार्गके का भूर्व ন্ধপানণ সাত্ত করেছে। ভার মন, অর্থাৎ ভার ব্যান-বারণা, কলপনা, অনুভূতি, আবের ও চিয়া গেমন নির্দ্দেশভাবে কুটে উঠেছে, তেননি ভার চরিত্র সকল পূর্ব বভা-জাটি-অক্সজ্য সহকারেই রাপায়িত হরেছে। এবং এভাবেই বাঙালী ভার অ-শররের পূর্ণায়ত ও পূর্ণাল বৃতি লাভ করেছে—যার মর্বো ভার চিরভন নানন বৃত্তিটি সহজেই পৃত্তিরহা। বাঙালীর বল এবং চরিত্রের যথার্থ প্রতিবিহনে নজকল কারা ভাই বাঁটি আজীর কাব্যের মর্বানার অন্তিবিভা। প্রস্কাত্তর আর একটা কথা সাম্পরীর। ভর্মত্রে সাবীসভ্য-কামনার একটি বেলস্ত্রে ভিনি বছলাতিক ভারতের নানা ক্ষতি, প্রথণতা, সংভার, আচার ও অভীন্সায় একটি সংহত বছরর্থ আজীর বৃতি অংকন ক্ষতে পাছেন নি। ভাই ওান্ধ চিজার এই ভারতীর আভিনা যে বৃহত্তর পণচাংগট প্রসাহিত হরেছিল, ভার ওপরেই ভিনি বাঙালীর চিনভন রূপচিত্রনাটি স্বাপন করেছিলেন। ভার অব্যক্ত ভারতীর আভিনার মন্ত্র ভারতীর আভিনার করালী। ভার অংকার, বাঁলীয় ত্বর ভারতীর মন্ত্রান্তরহালীর জনা, কিছ তা ভনতে পেরছে ভবু বাঙালী। ভার ওংকার, ভার কাংসাংবনি নদ-নদী-অরণা-পরিবৃত্ত বিশাল ভারতের বুসর কাভারে প্রতিহত হরে এই বাংলারই সমুজ কুটিরে প্রতিহিবনির বজনিনাল আগিয়ে তুলেছে। বাঙালী ভার নিজের কর্পের ভারত বাঙালীর আন্তর্নীর আন্তর্নীর আলি ক্ষত্রেছিল, উছেল, উন্সন্ত হরেছে। এইভারেই নজকনকারা বাঙালীর আন্তর্নীর আন্তর্নীর আন-কর্পন করে কেবা বিরোহ।

বাঙালীর এই নিজস্ব সভাবোধ, শাসুত বাংলা এবং চিরন্তন বাঙালীর রূপ-ক্ষণনা—এসবের প্রেরণা নজকল পেরেছিলেন সহসাবরিক যুগ-প্রতিনিবিদের নিকট থেকে। অবশ্য পাঁচাড়া আঁবনচেতনা তাঁকে অনুপ্রাণিত করে নি, তা নর। তবনকার যুগচিন্তার পাঁচাড়া অনুপ্রাণনা অবশৃষ্ট বিশেষভাবে গণা। এই যুগচিন্তার বে যুগচিন্তার তবন গড়ে উঠেছিল, তা-ই সেকালের সকল মনীবীকে এক গোস্তাভুক্ত করেছিল—তাঁলের সকল বত ও পথের পার্থকাকে অভিক্রম করে একই থাসনা বা লক্ষ্যের ঐক্যে তাঁরা বিশৃত; অর্থাৎ কবি শেলীর কথার বল। ধার বে, তাঁলের ছিল, "a general resemblance under which their specific distinctions are arranged." কিছ তাগের স্বান্টক অভিক্রম করে সজকল তাঁর হচলার বাঙালীকে স্ব-সন্তান্ত সর্বাধিক উচ্জ্বল ও পূর্বাক্ত বৃত্তিতে প্রতিষ্ঠিত করেছিলেন। একারণে সক্ষয়ক-কাবাকে বাঙালীয় সর্বশ্রেই আতীর কাব্য বলে আধ্যারিত করতে হবে।

জাতীর সাহিত্যে বা কাব্যে একটা জাতির বুপবুগ-গঠিত চারিত্রাধারা উদ্যোচিত হর। তবু তাই মর, একটা বিশেষ বুগের পরিবৃত্তিত জাতীর প্রাণ-বৈশিষ্ট্যও এতে পূর্ব অভিবৃত্তি লাভ করে। এজনা জাতীর কাব্য বা সাহিত্য দিরেই আবরা কোন জাতির চিরকানীন বৈশিষ্টা, বাত্রা এবং গৌরবকে উপনত্তি করি। রানবজাতির আন্তিক এবং বানসিক অবগানের ভাঙারে কোন বিশেষ জাতির কতথানি অবগান ব্রেছে, তা তার জাতীর সাহিত্যই পেবিরে পের। জাতীর সাহিত্য জাতির হানস মুকুর এবং ভার প্রাণপ্রবিশের উজ্বৃত্তন শিবা। এটা সম্পূর্ণ বৌলিক বস্তু এবং জাতির সভাজার ঘর্তীর সম্পান। অন্য কোন জাতির নিকট খেকে বাপ নিরে অথবা তার প্রাণবৃত্তি থেকে আনোক নিরে এর উজ্বৃত্তাকে বাড়ালো বাব না। তা করতে গেলে এর উজ্বৃত্তা মান এবং সন্তা ক্ষীণ হরেই গক্তে। এক ব্যরণ করানী আবোকসজার আবলানীতে ইংবেজীর প্রাণ-প্রবীপটি প্রায় ভিনিত্ত হবে পত্তেছিল। সেটা সভেবে। পত্তকে

বিতীয় পাদ থেকে আৰম্ভ কৰে আঠারো শতকের বেশিরতার অংশ কুছে। তথ্য এবন অবদা হরেছিল বে, করানী সাহিত্য থেকে উদ্ভি বা উল্লেখ ছাছা ইংবেলী সাহিত্য বুধবার উপার ছিল না। সেই বক্ষ আর্ঠান সাহিত্য-ও করানী সাহিত্যের চাপে অতিঠ হবে উঠেছিল, যার হাত খেকে ইংলগু আর্ঠানীকে রক্ষা করেছিল আঠারো শতকের বিতীরার্থে। করে আর্ঠান প্রতিত্য আরম্ব হয়ে বকীর এবং সভাকার ভাতীর সাহিত্যের ক্টিডে আবার অনুপ্রাণিত হবেছিল।

भूर्व छक्ति करब्रि, बाबारमंब **डिल्न नंडरक्य बूल-डाबनाव भा**न्डांडा अनुशायना हिन। यह कनुशापना रमबुरभन्न बन्गाना बुभ-श्रिजिनिधनन बाबारम वर्षना माबाख्यि भाग्नाजा-मः मबक्रम रेमनारमम मर्था मक्समिङ रस्वित्। এই विस् मः स्थारभेरे जीव शानवित्र पूर्न উঠেছিन এवः जीव ৰছিৰীণা নানা ৰাগিণীতে ৰূপান্তৰিত হয়েছিল। কিছ এই ৰাগিণীগুলি কোণাও আচ্ছাৰ্যু ছৱে পড়ে নি—তাদের আলাপে-বিতারে ধিহাডীয় কিছু নেই, অনুকরণায়ক অধবা অসংষ্ঠ ছবছ কিছু तिहै। छोटे पिनि, नक्कन-कारवान बारनाम्नाव करना-छन्रहेन्नान-बरेहेगान निडाउरे धरक्रेन। बिजिनु (म्राप्त পরিবেশ পরিশ্বিতি ইতিহাসের কাল-বাৰধানেও অনেক সমম অনুরূপ প্রকৃতি দাত करन। এই चनुक्रभ चनवान मिरे गन म्यानन मुश-প্रতিনিধিদের চিন্তা এবং কর্মেও কুটে ওঠ मानुना, श्रकारने এरम याम मनाजनाम चित्राणि। अदे चित्राणिएक श्राठीय वरम बरम कना याम ना। कवित्र कोन्।न्जुजित्र sincerity धनि चीरक---धनि छ। चौछित्र थ। कवित्र चीनरमत्र चौछव ঘটনাগুলি বা অভিজ্ঞতা খেকে উপজাত হয়, কাখোর অনুভূতি খলি সভোর অনুভূতি হয়, তবে তा প্রভাবের অপবাদে কলংকিত হতে পারে না কর্বনো। প্রভাব বলতে থা বুঝার, নজকল-কাবো তাৰ অনুষ্প স্মালোচনার ৰেকারৰ নামে অভিহিত ছবাম যোগা। নজক্ষ-কাৰোর কোৰাও sincerity-র এডটুকুও অভাব নাই - বিজোহ-ভাবাদক, বিপ্লবাদক, প্রেবড**ক্তি-**মূলক এবং প্রকৃতি বিষয়ক কবিতার, গানে বা গলনে। অনুক্ষণ অনুভূতির তাড়গার ডাড়িড, আমুগত ও আতিগত ভাষাবেশের দোলার-দোলার চঞ্চল, অম্বিরচিত্ত ক্ষরির মানসলোকের গোপন ক্লবে **অপচরণের ভূ**টি-चान विचारबन चनकाम छिन ना এडहेकू—कविन चौबन, बाचन পরিবেশ এবং कांवा-गांबनान निविनित ইতিহান একধারই সাক্ষা দেৱ।

নম্মক্ষণ-কাৰো আতিসভাৰ অপাৰণে এবং আতিৰ বিশেষ প্ৰাণৰৰ্গেৰ অভিবাজিতে মেকিছ দেই—কোনা, আতির বৃহত্তৰ এবং বৃগ-নালিত ভীবনচেতনা থেকেই তা উৰুত। আবাৰ, এই ভীবনচেতনা কবিব বাজিছের সজে ওতপ্রোত, অভিজ্ঞতার সজে অলালী—বাজিগত অভিজ্ঞতা, বাত্তব ভীবন-পরিবেশ এবং আত্মপুজি থেকেই কবি এই জীবনচেতনা লাভ করেছিলেন। তাই তাঁর জীবন দর্শনেও কোন কাঁকি নাই। স্কুতরাং নিজ্ক তত্ত্ব হয়ে বা একটা পোলাকী চালচিকা নিয়ে তা কাৰো অপারিত হয় নাই। তাঁর প্রাণাবেশের অবারণ উচ্চদতা এবং উন্সাদনা সহজ্ঞ জীবন সভোৱই ভব-নিবয়ন অহি:প্রকাশ। তাঁর প্রজু এবং সবল প্রকাশ-ভলীতে তাই তির্বক ও বর্ণানী রাশ্যুভাল বিকীর্ণ হয় নাই। কিছু ভাতে করে কাব্যসাজ্যের প্রকাশ নিজ্জ হয় নাই—বজ্জর প্রবং তাৎপর্ব, বজ্বর সজে আবাদের সম্পর্ক এবং আর্থ অবলীনার অনির্বচনীয়ন্ত্রশে উন্বাচিত হয়েছে—বৃহত্তর জীবনসত্য বছত্তর কাব্যসাজ্যে ব্যক্তিত হয়েছে।

কৰিছ কাৰো বা কাৰাৰূপ লাভ কৰে, ভাৰ গদা মচনায়, ৰজ্বায় বা আলোচদায় অনেক সময়ই ভাৰ ভাজ্বিক পরিচয় কুটে ওঠে। এজদা কাৰা আলোচনাৰ পৰিপুৰক ছিসাৰে প্ৰথমে কোন কৰিব গদা সচনার অনুশীনন প্রয়োজন, অথবা কাব্য এবং গদা রচনার বুগণৎ আলোচনার প্রয়োজন।
নজকন ইননাবের গদ্য সচনাগুলির বিশেষতঃ প্রবন্ধ এবং সম্পাদকীয় সচনাগুলির মধ্যে তাঁর জীবনচেতনা তালুরপ লাভ করেছে এবং তাঁর জীবনদর্শন-রূপেই প্রভিভাত ইরৈছে। বাঙালী জাতি সন্ধার
বোধ এবং বাঙালীর প্রাণ-বৈশিষ্ট্য এক বলিষ্ঠ, স্মুম্পাই এবং অনন্য সাধারণ প্রকাশভালী লাভ করেছে
এঞ্চলির মধ্যে। স্মৃত্যাং প্রথমতঃ কবির প্রবন্ধ জাতীর রচনাগুলি এবং অতঃপর তাঁর কাব্য-পরিক্রার
উদিষ্ট লাভই বক্ষায়াণ প্রবন্ধের লক্ষ্য। অবল্য কবির উপন্যাস এবং নাটক শ্রেণীর সচনাগুলির
মর্ব্যাও তাঁর উলিবিভ জীবনদর্শন বা জাতিসন্তার বোধ শিলপারপ লাভ করেছে। কিছু সে আলোচনা
যে এর আর্ডাধীন নার, তা প্রবন্ধের শিরোনাত্রে স্ম্পাইভানেই স্চিত।

[12]

কৰিব জাতিগভার অনুভূতিকে নামর। গভালুগতিকভাবে জাতীরভাবেশ বা জাতীরভাবাদ বনে জনেক সময়ই উল্লেখ করি। কিন্তু, রাজনীতি-পান্তে বাকে জাতীরভার বা nationality বনে, নজকনের জাতীরভার চেতনা ভার চেয়ে ব্যাপকতর ছিল এবং ভা জাতীরভার বুল করেকটি উপাদানের মধ্যেই সীবিত নর। তাঁর এই অনুভূতির সজে বিশ্রিত আছে ঐতিহ্যপ্রীতি, সংভারবোধ, বুগচেতনা, ধর্মজান, ভাবাবেশ, বিশ্বানুভূতি, ন্যায়নীতি-চিন্তা এবং ঐক্যকামনা। এসবের সন্মিলিত চেতনাবোধ তাঁর জাতিসভার চেতনারূপে কাব্যের আবেগমনিত বাণীরূপ লাভ করেছে। কলে এর আবেদন জাতীরভার পর্তগুলি সম্পর্কে ধারণার মধ্যেই আবদ্ধ থাকে নি—এর আবেদন সম্পূর্ণ আন্ধিক ও চিরক্তন ছরে কুটে উঠেছে এবং ভা একটি পুর্জয় ও পুর্মর অনুভূতিরূপে প্রভিভাত হয়েছে। রাজনীতিবিশ্ রোজ জাতীরভা সম্বন্ধ যে কথা বলেছেন, ভা নজকন-কাব্যের জাতীরভার অনুভূতি সম্পর্কে বিশেষ-ভাবে প্রধ্যালা। রোজ জাতীরভাকে বলেছেন:

it is a union of hearts, once made, never unmade—it is a spiritual conception, unconquesable, indestructible.

হালবের সন্দে হালবের বছনে, আরিক ঐকো বা একাছভার আতীরতার বছন সুষ্ট হা, অবরভালত করে। নজকল-কাবো আতীর চেতনার উবুছ, আছিকভাবে ঐকাবছ, আতিকে আবীন-ভার ভোরণে পৌছিরে দেবার সুষ্ট প্রভার বোষিত হয়েছে। বাছবিকপক্ষে, আতীর চেতনা বুলতঃ একটা আছিক চেতনা—সকল, রাজনীতিবিদ্ সম্ভতঃপক্ষে একবাটা একবাকো বীকার করেছেন, বিদিও ভারা স্বাই রোজের ক্থার স্বত্তনি বানেন না। রাজনীতিবিদ্ আস্কৃতিবিদ্ আস্কৃতিবিদ্

ultimately, that is, the purity of that corporate soul we call a nation is only maintained when the forces of the spirit are the masters of its life. It is only debased when it lends itself to other forms of power, and debasement is always easier than elevation.

আছির জীবনে আয়ার আবিপত্তা যওকণ থাকে, ততকণ তার আতিবের এবকর বা অবংপাত বঠে না। আর, সারিত্য বা শিক্সের বাব্যবেই আয়ার আবিপত্য আতির জীবনে সর্বাধিক বিশ্বারিত এবং বৃচ্চ হতে পারে। অপরপক্ষে, আতিসভার বোধ একটা শিরিচুরাল ব্যাপার বলেই জা কার্যিক গোরণা হতে বেবা দের এবং চরৎকার কার্যিক অভিবান্তি লাভ করে। তাই কার্যপারে এটা বেশপ্রেম বা আভিপ্রীতি নামে একটা সঞ্চারী ভাব হিসাবে স্থান লাভ করেছে। বলা বাহুল্য, সম্বন্ধন-কার্যে এর আশ্বর্য সার্থকভারতিত অভিবান্তি ও বাশীবৃতি কেবতে পাওরা যার।

নজকনের আতীর চেতনা বা আতিসভার অপুতৃতি বেষন রাজনীতি-পাজের সংস্থাবাকিক আতীরভার পঠীতৃক্ত নয়, তেননি তা একটি বৃহৎ পটভূনিতে স্থাপিত। বাঙালী আতির সন্থাবোর বলিও তাঁর কবিবানসে প্রশ্ন হবে অংকিত ছিল, কিছ তাকে সর্বভারতীর আতিসভার পটভূনিতে স্থাপন করেই তিনি দেবেছেন। রাজনৈতিক বিক থে ক তিনি বাঙালী আতীরভাকে ভারতীর আতীরভার অভীতৃত করে দেবেছেন, অবচ তাঁর চিন্তা অনুভূতি-ভাব-আবেগ উদ্বেশ হবে উঠেছে এবং প্রেরণা নাত করেছে বাঁটি বাঙালী আতিসভার অনুভূতি বেকে। তিনি আনতেন, স্থাধীনতা, ভবু বাঙালীর জন্য পূর্বকৃতাবে আসবে না—সমগ্র ভারতের স্থানিতার সক্ষে বাংলার স্থাধীনতা ওতপ্রোভভাবে অন্তিত একনা প্রকৃতাবে আসবে না—সমগ্র ভারতের স্থানিভার সক্ষে বাংলার স্থাধীনতা ওতপ্রোভভাবে অন্তিত একনা প্রকৃতাবে আসবে না তাঁকে ভারতীয় আতীরভাবাদের ধারক এবং বাহক বলেই বনে হবে। কলে নজকন বে আতির মুক্তি কারন। করেছিলেন, তা ছিল অবণ্ড ভারতীয় আভীরভাবাদের প্রবন্ধা বলে তাঁকে কবি আন্তর্বিকভাবে প্রদ্ধা ক্ষতেন এবং তাঁর মতে তিনিও ভারতে এক অবণ্ঠ বছাজাতির স্বপু দেবতেন:

আৰম্মই ভাৰতে আৰার অৰগু আভি গড়িয়া ভুলিব। বে রক্পশীল বৃদ্ধ এতটুকু 'টু' করিবে, ভাষার পর্যান বরিয়া এই বৃদ্ধির দিশে বাহির করিয়া লাও। যে আযাদের পরে বাড়াইবে, ভাষার টুঁটি টিপিয়া ধরিয়া কেল। (ছুঁৎসার্গ)।

লোক্ষানা ভিলকের মৃত্যুতে সমস্ত ভারতবাদীর শোক্ষ্ণোর নধ্যে ভারতীয় জাতীয়তা বোধের উপলব্বিতে তিনি উর্বেল হয়েছেন:

হিন্দু-বুগননান—নাড়োরারী—বাঙানী—হিন্দুখানী কোন ভেলাভেদ ছিল না, কোন আডবিচার ছিল না,—তখন তবু বনে হইডেছিল, আজ এই বহাপগনতলে দাঁছাটয়। আমরা একট বাধার বাবিত বেদরাতৃত্ব নানবারা, দুটি পুেহলার হোটভাই''। (লোকমানা তিনকের বৃত্যুতে বেদনাতৃত্ব কনিকাভার দুলা)। সক্ষম ছিলেন বৃহত্তর অর্বে আভীয়ভাবারী, বিভিত্ত বাঙারী আভীয়ভার কবা ভিনি পৃবক্ ভাবে চিত্তা করেন নাই এবং তিনি সকল ভারতীয়ের মধ্যে ঐক্য কামনা করেছিলেন—এগুলি সবই সম্পূর্ণ রাজনৈতিক কামণে। কিন্তু কবির বৃহত্তর আভীয় চেতনার মধ্যে বাঙালী আভীয়ভাবারের বীক্ষমাট সবস্বরই আগ্রভ এবং সোক্ষার ছিল। ক্ষণেকণে তা বিদ্যুৎ বালকের বভাে তীমু-শুতি ছড়িরে আর্থাকাশ করেছে। বাঙালী আভীয়ভার বাসনা একটি চিব-লালিত অনুভূতিয়পে কবির প্রাণে প্রেরণার উৎসমুর অবারিত করেছিল। বাঙালীতে পাগাতে গিলে ভিনি বলেছেন:

ওবে আমার ভারতের সেরা, আঙন বেলার সোনার বাঙলা। কোণার কোন্ অপুনিরিয় তবে ভোর বুকের অপ্রিসিদ্ধ নিজন লিশাল হতে পড়াল। কোন্ অলস-করা কঞ্পার দেবতার বিশীর সূত্রে সুয়ে ভোর উদ্ধান অগ্রিতর্জমানা তর নিবর হতে পড়াল। (আমি সৈনিক)। रामगबूत कातानुष्टिएंछ छातिछ एएत छिनि बांक्षानीत मृष्ठ कःकाला शांकी मङ्गारवत बना छीएक बांक्षान बानिरंत्रहरून :

लिए कि जीवन बृबकुक्ती कैठिए बाइनाइ जानान-बाजान ছেয়ে। यन विवि, 'बाइनाइ बाहि, बाइनाइ जन, बाइनाइ बारू, बाइनाइ कन भूना इक्क, भूना इक्क भूना इक्क, हर उन्नान।' এन विविक, केकाइन कर नय-नाथनाइ यह। এই नरबद बार्च निय जानार्क इरव। भारत !—जरब এन।'' (जानज)।

শাখুত বাংলা এবং চিরন্তন বাঙালীর জনা কবি-প্রাণের গোপন কলরে বে একটি কোষল অনুভূতি সবন্ধ-লালিত কুমুখ-গছ হুড়াতো, তার পরিচয় আছে 'জাগরণী' শীর্ষক রচনাটিতে। এবানে 'বকুল'-এর উধোধন উপলক্ষে তিনি বলেছেন:

তুমি যেবানে কোট, সেই পদীতেই আছে আমাদের সত্যিকার বাঙলা—বাঙালীর আসল প্রাণ। আমাদের এই পাণুত বাঙালীর স্বযুগু, যুবে-ভরা খলস প্রাণ জাগিয়ে তোল তোমার জাগরণের সোনার কাঠি দিয়ে।

কৰির এই শাশুত ৰাঙালী আবাতে-সাবাতে জেগে-ওঠা আবাগুরু বাঙালী। এই বাঙালী বিদ্রোহী, বিশ্ববী, কল বাঙালী। সৃত্যুর বাঝে সে উবুজ। গৌলর্বের নর, বীতৎসভার দীক্ষার সে দীক্ষিত। সে প্রের-ক্ষ্ণপাল উপাসক নর——তিক্ততা, দাহনজালা আর কর্মশ কাঠিনোর উপাসক। জীবনের গৌরবে, বৌবনের শক্তিমদে দে দৃশ্ব উচ্ছৃংখল। তাই কবি কোমল ক্ষেহমায়া দিয়ে, নিজেজ শুলুয়া দিয়ে প্রাপহীন, তল্পাবিষ্ট, আর্থিভোল জাতিকে বাঁচিয়ে তুলতে চান নি – তাকে প্রলয়-শিক্ষার আহ্বাদে, বৃত্যুপথে ধান্তার-থান্তার ঠেলে দিয়ে বাঁচাতে চেরেছেন। তার জন্য তিনি চান বুজংদেহি বন্ধ-এই বোধনমন্ত্রে জাগ্রত বীর বাঙালীই ছিল তাঁর শাশুত বাঙালী।

মজকলের জাতিসন্তার মনুত্তি বা জাতীয় চেতন। তথুমাত্র বৃহত্তর ভারতীয় জাতীয়তার পটভূমিতেই স্থাপিত হয় নি, বিশ্বাশ্বতা বা মহামানবতার মিলন তীর্ণে তার সংকীর্ণতা অপনোদিত হয়েছে। মহামানবতার মহাজাগরণে বিশ্বাসী কবি মনে করেন, আজ নবসুগের নবস্টির ভাত মুহূর্ত সমাগত। এখন বিশ্বে উৎপীড়িত জনগণের মুক্তির পর্ব। বিশ্বমানবের মুক্তিকামী কবিও দৃষ্টিতে তাই:

--এফই দু:বে দু:বী জনগণ দেশ, জাতি, সমাজের বহির্বন্ধন তুলিয়া পরশার পরশারকৈ বুকে ধরিয়া আলিজন করিল। আজ তাহারা এক, তাহারা একই বাধার ব্যবিত, নিপীড়িত স্তা মানবাছা। (নবযুগ)।

কৰিব জাতীয় চেতনা এইভাবে আন্তর্জাতিক চেতনা বা বিশুবানবের অনুত্তিতে সর্বজনীন ও সর্বকালিক রূপলাভ করেছে। এই বিশাশতার অনুত্তি বেকেই কবি শুবজীবী মেহনতী নানুবের অর্থনৈতিক মুক্তির কথা চিতা করেছেন। তিনি ভাবলোকবিহারী আন্তর্নালী বানবভার পূজাবী ছিলেন না—সভাবার গণভাবিক জীবনবাবস্থা এবং শোষণহীন স্বাজের বরা দিরেই তিনি যানবভার মুক্তি চেরেছিলেন। এই আন্তরিক অনুত্তির জন্য তিনি সক্ষ রক্ষ শোষণের হাত থেকে মেহনতী মানুবের মুক্তির জন্য তিনি সক্ষ রক্ষ শোষণের হাত থেকে মেহনতী মানুবের মুক্তির জন্ম কেবছেন। 'বর্ষবাই' শীর্ষক প্রবন্ধটিতে এই 'পতিত উপেন্দিত নিসীজিত হতভাগাদের' জন্য তাম বেলনাবোর চুড়ান্ত আক্ষানে প্রকাশ পেরেছে। সেধানে করনাবনির কুলিকের সম্পর্কে তিনি বলেছেন:

क्यानानी क्ष खरात्यके कोनाउ गण गण होना हैभावन कवित्कत्वन, क्षि व क्षक्रानीत्यक्ष बाका, बाह्यक श्रेक्त पिटक कृत्वक हाक्ष्टक ना। वह कृतिवित्तक हहाबाब विदक खर्काक्षा क्ष्य कर्नाम हिनिष्ठ भावित्यन ना (य, देशांचा बानुष कि द्यांक्रत्वाक-क्ष्यक वीक्ष्य मक्षक-क्षांच।

ৰুক্ত বাদৰভাৰ পূজাৰী কৰিব জাতীয় চেতনা এইডাৰে বিশ্ববাদৰতা ও সৰ্ব বাদৰিকভাৰ বজ্ঞগুৰ্ণৰ পৰিস্তম হয়েছে এবং উদায় যহিবা লাভ করেছে।

নজনল জাতির জন্য রাজনৈতিক বুক্তি বা স্বাধীনতা চেরেছিলেন। সেবুপে ভারতের বুর্টবের বে ক্রজন স্বাধী জাতির স্বাধীনতা ওবুজির জন্য নিজের নিজের ক্ষেত্রে পূর্জর সংপ্রামে নিজ ছিলেন, নজনল তাঁকের জন্যতম। তীল্র ও পূর্কমনীর জাতীর চেতনা থেকেই ডিনি এই সংপ্রামের প্রেরণা ও পঞ্জিলান্ত করেছিলেন। কাল্য জাতীরভাকে বাস্তবাহিত কর্যতে তবসই ইংরেজের দার্লপাশ থেকে বুক্তি লাভ বা রাজনৈতিক স্বাধীনভাই ছিল তাঁর প্রধান সক্ষ্য। তাই তাঁর সাহিত্যে স্বাধীণভার বাশী বুরু ও উলাত্ত স্থারে ধ্বনিত-প্রতিধ্বনিত হরেছে প্রায় সর্বত্র।

অৰণা এই স্বাৰীনতাৰ চেহারা সহছে কৰিব নিজস্ব ধাৰণা ছিল স্থাপট এবং সহজ। স্বৰাধ বা স্বাৰন্তপাসনের মতো বেসৰ বাষ্ট্ৰীর বাৰস্বার মধ্যে সার্বভৌন স্বাৰীনতা গেই। আছে সীবিজ স্বাৰীনতা কৰিব তা কাষ্য ছিল না। পূর্ণ আছনিবন্তপাধিকার, পূর্ণ স্বাৰীনতা এবং সার্বভৌনস্ব ছিল তাঁর লক্ষা। স্বাৰীনতা, সার্বভৌনস্ব, ৰাষ্ট্ৰ, আতীর সরকার ইত্যাদি জাতীরতাবাদের বৌল পর্তগুলি যে তাঁর সানসপটে প্রায় হবে স্থাকিত ছিল, তার স্থাপট অভিবাজি স্বটেছে এই ক্ষাগুলিতে:

गर्नद्यपन 'यूनरक्जू' ভাৰতের পূর্ণ স্বাধীনতা চার।

স্বরাজ-টরাজ বুরিনা, কেননা, ওকপাটার বানে এক এক বহারথী এক এক ধকর করে থাকেন। ভারতবর্ধের এক পরবাণু অংশও বিদেশীর অধীন থাকবে না। ভারতবর্ধের সম্পূর্ণ দারিষ, সম্পূর্ণ স্বাধীনতা-স্ক্রা, নাসনভার, সমস্ত থাকবে ভারতীরের হাতে। (ধূবকেত্র পথ)।

তিনি জাতির পূর্বৃদ্ধির তন্য ধেরম শর্তবৃষ্ণ সীমিত স্বাধীনতা চাম নি, তেননি এব্যাপারে বিবেশী সরকারের নিকটে আবেদন-নিবেদনের পক্ষ্পাতীও ছিলেন না। কাতন-কাকুতির রারা বা কলা-কৌশনের পরোক্ষ পছতিতে স্বাধীনতা লাভ তাঁর লক্ষা ছিল না। একারণেই তিনি রবীক্রনাথ অথবা মহান্তা গান্তীর সঙ্গে একমত হতে পারেন নি, যদিও তাঁলের বাগনার সঙ্গে তাঁর বাসনার কোন পার্থকা ছিল না। স্বাধীনতার ব্যাপারে তিনি ছিলেন আপোবহীন। প্রতাক্ষ সংগ্রামের মান্তাকেই তিনি কেশ স্বাধীন করতে চেরেছিলেন-—বিদেশীর দরার দান হিলাবে স্বাধীনতা চাম নি। কেলনা, ভালনে ভালের কাছে থাকতে হবে কৃতক্ষ এবং তালের প্রভাব বা ইক্ষাকে অভিক্রম করাও হবে না সন্তব। আতিকে আসন বীর্বে স্বাধীনতা অর্জন করতে হবে; এর জন্য রক্তলান, মৃত্যু, ধ্বংস বা বিপর্বরে কাতর হলে চলবে না। কেলনা এইভাবে অজিভ স্বাধীনভাই সভ্যকার স্বাধীনতা —এই ছিল তাঁর মন্ত।

डीन वरे मर्छत्र मरण छ९कामीन मनीबीरमय मरछन निम एम नि। श्रीबीमी, जनविन्न वनः नवीक्षभारचन्न नाजरेनिङ्क मछानर्दम मरण डीन मछानर्दम शार्थका वनः छीन छिछाबानान प्राच्या मन्नर्दक एकिड निर्द्ध भिरत छिनि बरमर्द्धन। আনি যতটুকু বুরতে পারি, ভার বেশী বুরবার ভান ক'রে কেন কারুর শুদ্ধা বা প্রশংসা পারার লোভ না করি। ভা সে বহাদা পারীরই নতু হোক, আর বহাঁকবি দ্বনীপ্রনাধেরই বভ্ হোক কিংবা বাবি অরবিশেরই নতু হোক। আনি সভিন্ধার প্রাণ থেকে যেটুকু সাজা পাই দ্বনীপ্র, অরবিশ বা গারীর আলোন ঠিক ভঙ্টুকু সানব। ভাঁদের বাণীর আলোন বিদি আনার প্রাণে প্রভিন্ধনি না ভোলে, তবে ভাঁদের সানব না। (বুসকেত্র পর্ব)।

किन वार छिन्दिक व्यान विकास करें। छानधन किन व्यवहीन व्यानिकात ठाँ। या व्यान कर्ता करना निवास करना वार जान नारा मूना एन नारे। रम्पूर्ण व्यानकार मुना व्यान व

ভাতির সেবা, দেপের কাঞ্চ, নিংস্বার্থ কর্ম ও ত্যাগের ছারা যে দেশের বা ভাতির কল্যাপ ছর, তা তিনি মানতেন, কিন্ত সংগ্রাম, রক্ত আর বিপ্লব ছাড়া যে সত্যকার মুক্তি আসতে পারে মা, সে সম্পর্কে তিনি ছিলেন বির নিশ্চিত। পরোক্ষ পরীদের পথে যথার্থ স্বাধীনতা অভিত ছতে পারে না—তাই তাদের অভিভাবানুতা, সংগ্রামতীকতা এবং কাপুরুষতাকে তিনিও প্রত্যাঘাত করেছেন ব্যক্ষ ও বিজ্ঞপের কপার। গান্ধীর অহিংসা-নীতি রাজনৈতিক স্বার্থসিন্ধির একটা নিশীব কৌশনমার। এতে স্বাধীনতা আসতে পারে কিন্ত তা স্বারী, যথার্থ এবং গৌরবদীপ্ত স্বাধীনতা নর। অহিংসবাদীদের এই নিরীর্থ স্বাধীনতা কার।

यांपी छ:नात यांपि (शष के विश्वा-त्वान नाकि-नाकि, वें।छात्र त्करि कृत्य। धिनाम नामू:मरकत छारवत कें।कि शन् छान्छत्रवात, यान्य। ममत्र, यावत श्वात वह त्यां। यांपी छान्यात कृत्या भूकर, तह राष्या, तह राष्ट्री।

(जानन्यसीत जागबरम)

त्रवीक्षभार्षत्र श्रेषिका (य काठीय यू क्लि क्लियों) हिन ना, এत विश्वकीनका (य कात्रकामी वा वाडानीय जन्मकीमका व्:वन-स्थाहरन कक्षम, निस्त्रीक क्षिकाट का मिथून स्थितिक कठिवाकि गांड करवरह :

> विश्व निथा एछिए। भएए पिक एएड पाक निर्मात्त , एम क्व एथू भंगरमा मा या यह कावाब वह परत। शंशम-भएथ विन्तारथेत माछ मात्रथि दीकाव खाछा, यएड मानव बागथ-भिद्ध मुख्याब एक मात्रए क्लिए।

> > (2)

বাছবিক পদে, জাতিব বাজনৈতিক বৃদ্ধিৰ বাগোৰে নজকল তৎকালীন বনীবীদেৰ বাবা প্ৰজাবিক হন নি, বনিও জাঁবেৰ দ্বা দিবেই জিনি জাতীবজাৰ জপুতুতি দাভ কৰেছিলেন। পূৰ্বে পানাই, জাঁৱেৰ আকাৰজাৰ সংক্ষ জাঁব মৌল আকাৰজাৰ পাৰ্বকা ছিল না, কিছ জিনি নিক্ষ আকাৰজাৰ নজে জাঁব মৌল আকাৰজাৰ পাৰ্বকা ছিল না, কিছ জিনি নিক্ষ আকাৰজাৰ নজ্জাবোৰেৰ থাকাই পৰিচানিত কৰেছেন। তিনি কেশের নামুৰ এবং তালের জীবনাকে বাজনীজিব কুমিন কুমিন চোনো অবান উপৰতনাৰ বৃষ্টিপাতে নেনেন নি—নাজৰ অভিজ্ঞাতা এবং জপুতুতি নিকেই কেবেছিলেন এবং লেশ ও আভিক্ষে আপন করে পেবেছিলেন। এই আপন করে পাওৱাতেই জীব মধ্যে বাঁটি আভিনজান বোৰ কেবে উঠেছিন, আর এই সভাবোৰই তাঁকে দিবেছিল সভাবোৰ। বাঁটি আভীব চেতনাজাত এই সভাবোৰ তাঁকে উবুদ্ধ করেছিল বিজ্ঞাহীৰ বন্ধনিশানতলে আজিকে সংখ্যক করতে, বুলাবান আবীনভাকে আপন পঞ্জিতে বিনেশীর হাত থেকে ছিনিবে নিজে। জাই আজীবন ভিনি আবীনভাব জন্য নংগ্রাব করেছেন, বিজ্ঞাহী হবেছেন, বুলিন গান গোবেছেন, বাজননীতি করেছেন, নেজৰ দিবেছেন, ব্যাহিজ্যের সাধনা করেছেন।

আপন বীর্ষে স্বাধীনতাকে জন্ম করার পক্ষপাতী ছিলেন ধনে তিনি বিপুরী বীরের জুবিকা গ্রহণ করেছিনেন এবং আতিকে বিপুরের মৃক্তিনন্ত দান করেছিনেন। প্রথমতঃ বিজ্ঞোহের বাধারেই তিনি এই বিপুর সাধন করতে চেবেছিনেন, এইজনা প্রধানতঃ তাঁকে আননা বিজ্ঞোহীন্দপে শেখতে পাই। পূর্ব স্বাধীনতার জনা তিনি এই বিজ্ঞোহকে সর্বাধিক গুরুষ নিরেছিলেন। এ সম্পর্কে তাঁদ বক্ষা স্থানীই:

''পূর্ণ স্বাধীনতা পেতে হলে সকলের স্বাগে স্নামাদের শিষ্টোই করতে ছবে, সকল-কিছু নিয়ৰ-সানুন, বাঁধন-শৃংগল, স্নানা-নিষেধের শিক্ষকে। (ধুসকেতুর পথ)।

विद्यारी हिमादि कवित्र युक्त क्रिन त्यम कर्तात एजानि क्रानीम। क्रिनि क्रीन विद्यारी-मूर्णि चन्न परकन करवरक्त এইভাবে:

चार्डित चनुष्टबाहन चार्यात नय, चार्यात त्रनेष्ठ्यं। चार्यि श्रन्तरात, चार्यि श्रिट्यं भरें। चार्यि कर्डित, चार्यि क्यून्यं भरें। चार्यि त्रियात नरें, चार्यि वृद्धतः। धार्यि त्रवक नरें, चार्यि त्रियाति ।चार्यि क्यून्य भरें, चार्यि वीखरमः। चार्यि वृद्धक निर्देश भाषि ना, चार्यि चार्याक करित। चार्यि क्यून्य भरें, चार्यि वीखरमः। चार्यि वृद्धक निर्देश भाषि ना, चार्यि व्यापिक करित। चार्यि क्यून्य भरें, चार्यि वृद्धित वार्यः, चार्यि चार्यिक भरें। चार्यिक विद्यापिक भरें।

क्षित वह विद्यादी-कर्ण विविधित, वर्णूर्य । 'डीनु क्षाडीय हिन्छन। धनः क्षाडिमहान वापनावरमय व्यवसः वाकारकार डीटक वह रहिकाला विद्यारी युक्ति माम करविक्रिय।

বাৰীনতাৰ জনা নজকন বিভ্রোহ বা বিপুৰকে অপরিচার্য বলে মনে ক্ষেট্রেন। কিছ এক ক্ষ কে কেবে এবং কারা এই বলে বৃদ্ধি আন্তেব ? তিনি সন্তঃ নিজ্ঞোধীনাপে মন্ত্রপাতাৰ তৃষিকা প্রকাশ করেছিলেন। আন, যাবা এই মন্ত্রনিজ বৃদ্ধিনালক, তারা তাঁৰ কাথো বনিষ্ঠ প্রতায় এবং মনোজ্ঞ চিত্রেশে কার্য্রপাত করেছে। কবি জানতেন, তাঁর পথ বজা-সংকূল, মন্ত্র-পিছ্ল, কণ্টকমন্ন তাই এপবে বৃদ্ধি জানতে উৎসর্গ চাই বীর্ষ্যান, ত্যাসী ও বিপুরী আরাম। যাবা কেপের বীন সভাস সকল ক্ষা-আজ্ঞাকে জন্তান মূবে বিনর্জন কিয়ে বানা বৃংধের ভাগনান জীবন উৎসর্গ কর্মের, জীবনেন বিশেষ সক্ষর বিবলিন্ত, জানাই আসারে বিপুর,

কর্মনে দেশ খাবীন, গঠন কর্মনে জাতি। যার। রক্তচকু কাশানিক, শ্ব ও রক্তের নারনা থাকের, ক্রিয়ামের মতে। কাঁগীর ধক্তু কর্শেঠ নিত্রে বারা। নীনকণ্ঠ, ভারাই দেশ ও জাভির বুর্ত্তিনাজ্ঞ, পরিয়াজা। এরাই দেশবাত্ত্বার যোগ্য সন্তান। নির বা কল্যাগকে জাগাতে বৌরদের লক বরিনাম থারোজন। ছিলুমন্তার পূলায় বলি হতে হবে বারের এই সন্তানদেরই—তবেই আবার জাহানুয়ামের নরেয় পূমেশর হাসি কূটবে বৃত্যুর বাবে জাগাবে জীবন, হা-ক্রাণের মধ্যে বেজে উঠরে মঞ্চল শংক্ষবিদ। এদের মধ্যেই রব্রেছে কবির চিরশ্বন বাঙালী—চিরকালের বাঙালীর নিকটে বারা পূজনীর, নরণা। দেশবাত্ত্বার বুপকাঠে আন্তর্বালিলানে উবুছ, তক্ষণ বিপুরী শক্তির অবিকারী এই শাল্ত বাঙালী না জাগাবে কবির আশা পূর্ব হবে না—কেন খাবীন হবে না। তাই এদের জাগানোই ছিল কবির প্রধান প্রত। কিন্তু নানিও মধুর ছবে আহ্বান করনে এরা জাগাবে না কর্বনো—কঠিন আবাত হেনে, খুনজীর্ব দিন্যাণতাকে চুর্ণ করে জাগাতে হবে এদের। পরাধীনতা, জণবান আর নাছনার যারা অনুইকে তথু বিভার দের, বারা আন্তরিশ্বান ও আন্তর্ণাক্রীন, তাদের ভীর আবাতে, জনির মহণার জাগিয়ে তোলবার জন্য কবি ক্যান্সেক্তাকে আহ্বান কর্মতন:

কৌথায় আথাতের দেবতা। আথাত কর, আথাত কর তাদের, যারা চোথের সাহনে থারের অপরান, দেখে তবু ক্রন্সন করে, প্রতিকারের পথার অনুষ্থে উন্তর্যন উপ্লাসে কিপ্ত হরে ওঠে না। স্বরানিত হরে থাকের চোথে অপ্লিস্কুলিক নির্মন্ত না হয়ে অপুস্কন নির্মন্ত হর, তাদেরে আথাত কর, আথাত কর, হে আথাতের দেবতা। (ক্রন্ত-ব্যান)

কৰি 'তুৰ্তী বাঁশীৰ তাক' দিনে এই সাহত কাল-কেউটেদের বিবন থেকে বেরিনে আসতে আহ্বান জানিবেছেন। তালের বিশ-নি:পাসে বারণ-ছোবনে বিশ্ব জর্জনিত হোক—তবেই বিধাতা তাঁৰ জুল সংশোধন করে বিশ্বকে আধান লতুন করে গড়বেন—আসথে দুজি, স্বাধীনতা। দুজিকানী কবি এইভাবে দুজ-বিশ্বের জজনে জাতির পুন:প্রতিষ্ঠার স্বপু দেখেছেন। তাঁর 'ভাঙার গানে'র জন্তবালে আছে জাতীয় বুজি-চেতনার অকুরস্ত উৎসধার। ৷ 'দুদিনের যাত্রী' এই স্বাধীনতা সংগ্রাম ও মুজি-সাধনারই গদনের সাহিত্যরূপ।

নজক ছিলেন সত্যকার বিপুরী বনে প্রাণে বিপুরী। পুরাতনকে তেঙে তার বুকে নতুনকে প্রতিষ্ঠিত করার অপু দেখেছিলেন তিনি। 'অপুরীপা'র গাহনজালা 'বিবের বানী'র বিষতান এই কারপেই, 'যুরকেতু'র ধ্বংস নিশান ইড়িয়ে এই কারপেই তিনি বিজ্ঞাহী হয়েছিলেন। এওলি তাঁর সৌরীলতা বা একটা গেরালাত্র নর, অথবা জোর করে বাঙলা লাছিত্যে একটা চরক-লাগালো ভারধারার স্মষ্টিও নর তা। তিনি পোশাকী বিপুরী ছিলেন না। জাতির যুপেরা জীর্ণ অবস্থাচাকে বস্তবাদীর চোবে দেবতে পেরেছিলেন তিনি এবং ভার ধ্বংসোনমুর পনিত্ত জীরনবারবার জারিকু-তাকে মর্থেরর্থে উপরবি করেছিলেন। ভাই মনেপ্রাণে এর ধ্বংস কারনা করেছিলেন এবং এই ভগুজুপের ওপরে নতুন জাতিসভার বুনিরার স্থাপন করতে চেরেছিলেন। কবির চোবে এক নবো-বিত্ত নবীন জাতির উক্ষুল বহিষা বির জ্যোত্রিনামা বিকীর্ণ করেছিল। জাতিসভার এই ভারত্র বাদক-বৃত্তিকে তিনি এক স্ববৃচ্ প্রতিষ্ঠান্ত্রির ওপরে স্থাপন করতে চেরেছেনঃ

्र अरमर्पत्र माडीएड-माडीएड कविनकात रा भठन गरबर्छ, डांस्ड अत अरक्वार श्वरम मा शरम मजूम बांडि गरड़ डेंडरन मा। योत डिडि भरठ स्मर्ट, डांस्ट अम्बन डेमरड़ क्टम मकुन करन छिकि मा भीषरम छोत अभन देनोबक वजनोब बोका क्या बारम, कळनावदे का भ'रक बारम। (चारान भग)।

कि विकरणां और निर्धियान, चलुम्बून चाि-द्राञ्जात तथा शैनना छ्वाकविछ 'छा-लाक'एम निर्मा यान हिन मा। कृतिन नक्ष्य मानुमारे चािछ मह। यान लिएन माहित नद्ध नरमश्री, लिएन नृष्ठत चीचन श्रेनार्थन प्रथा माहित कीचन निर्धा-मानिछ, तमेर छ्वाकविछ 'छािरमाक'एम नाम निर्दा चािजा कर्मामा क्या यात मा। এएम्ब नम्मार्क चक्काछ अन्त हिंगाचा-छात्म चनारे चानमा चांद्या अरु टाई मंकिमानी चािज्य मंत्रिन इर्छ मानि मारे। किछ अवारे चािछ-अरमन निर्दाणांत्र मानुस्म नर्वाण मिर्छ इर्न, अरमन पूछ मंकिरक छाश्रेष्ठ क्याछ इर्न अन्त अरमन मृक्ति चना नर्श्वान चनुस्क इर्न। किन्न छान्।

দেশের অবিবাসী নইবাই তো দেশ এবং ব্যক্তির স্বস্টিই তো জান্তি। আর দে-রেশকে, দেশকে, দেশকে, বিদ্যালয় বালি দেশের, জাতির সকলে বুর্বিতে না পারে, তথে তাহার উনুতির জাশা করা আর আকাশে অটালিকা নির্বাণের চেটা করা একই করা। জোরাদের এই আজিজাত্য গবিত, তথ্, বিশুক্ত তা সম্প্রদার বারা (বাহাদের অবিকাংশরই দেশের, আজির প্রতি সত্যিকার ভালোবাসা নাই) সনে কর কি দেশ উদ্ধার হইবে, জাতি-প্রক্রম হইবে ? (উপেন্দিত শক্তির উর্বোধন)।

এই উপেন্দিত বিপুল জনপজিকে তালোবাসার বন্ধনে আবদ্ধ না করতে পারলে বেবন আতি-গঠন সভব নর, তেমনি একের উবানেই মুক্তি সন্থয় বলে তিনি বিপাস করতেন। তাই মুক্তির জন্য তিনি সকল প্রেণীর মানুদ—কৃষক-প্রমিক, মুটে-মজুর, ছাত্র-সৈনিক, নারী-পূজবাকে বিপুরের পথে আজান করেছেন। সমর্য্য আতির মুক্তির মধ্যেই তিনি সত্যা বা কন্যাণকে উপলব্ধি করেছিলেন এবং এই সত্যকে প্রাণ্য করে নিজের পথ স্পষ্ট করে নিরেছিলেন: "দেশের পক্ষে বা মজলকর হা সত্য, তবু তাই সক্ষা ক'বে এই আগুণের বাগু। গুনিরে পথে বাহির হলাব।" (আমার পথ)। গানীজী জনতাকে বাবলরী হতে, আরপজিতে ও আছনির্ভরতার উবুদ্ধ হতে প্রেরণা নিজেন বলে তাঁকে তিনি প্রদ্ধা করতেন। 'আমার পথ' প্রবৃদ্ধে তার পরিচয় আছে। এসব থেকে বুঝা হার, নজকলের আতি-চেতসার সংকীর্ণতার কোন স্থান ছিল মা এবং ওার মানবভাষোরও কলসলোকের বন্ধ হিল না। আতিকে কেন্দ্র করেই ওার মানস-চেতমার তা স্থান নাড করেছিল,। আতির মুক্তি-সপুর্বী তাঁর মানবভাষোর উৎসারিত হরেছে।

এতকণের আলোচনা থেকে একথা শান্ত ইরেছে যে, বুপা-জীবনের নতুন পাঁডুনিতে জাতিসভার তীব্র অনুভূতি, প্রথম সাধীনতা-আলাঙকা, বিলোধ ও বিপুবের জনতা সাধনা—নজকান-বানসিক্তার একনি প্রধান স্থান অধিকার করেছিল। নজকান ইননাম নেবুপো সাহিত্য-সাধনার শুতী হুম, সে বুপোর বুপরান্দেন ঐকনি ব্যাপক জালোহনের স্প্রী করেছিল এবং জাতি আলালু মুক্তি-প্রতীক্ষার অধীয় মুবুর্ত বাপন কর্মছিল—একথা ঐতিহানিক সত্য। বুপজীবন ও বুপানান্দের নির্বৃত্ত এবং নিপুর প্রতিবিশ্বনে তাই নজকান সাহিত্য জননা সাধনার বৈশিটোর অধিকারী। নজকান্যান্দ বুপতিকার চিক্তিত পথেই পরিক্রমণ আরম্ভ করে এবং বুপার্মী ক্ষরতারতে ক্ষাভিক্ত লক্ষো উপনীত হয়। নেবুপের জাতির বন ও বানসিক্তা, প্রাণবর্ষ এবং জীবনদর্শন নজকান-সাহিত্যে এইভাবেই নার্মক অপার্যন লাভ করেছে।

রবীয়ানাথে বেষন আধুনিক জীবনচেতনা, পরৎচক্রে বেষন সমাজ-ছেতনা, নলকনে তেমনি জাতীর চেতমা তাঁলের সাহিত্যকে নিজ নিজ বৈশিটো অনমর লান করেছে। নিজ সলকনের কাজ তাঁলের বজে ভবু জানারপেই—জাভিসন্তা, জাভির মন ও চরিয়েকে জানারিত করার মধ্যেই সীরাবর বিজ না। তাঁকে এই মন এবং চরিয়ে অনেকাংশে পঠন করতে চরেছে, জাভিসন্তার নত্ম বুভি বছলা করতে হরেছে। জাভিকে বুজির পথে প্রেরণা দিতে হরেছে, জাভাঁরতার ময়ে লীকা দিতে হরেছে, লাভাঁরতার ময়ে লীকা এবং জীবনে প্রজিলিও করতে হরেছে। এসং কারণে লিকারি তানুর সাধনা, নিলিপ্ত একাগ্রতা তাঁর পক্ষে সম্ভব হম নাই। লিকাকে ছালিয়ে লিকাকি আমানের কাছে দীপ্ত হয়ে কুটে উঠেছেন—লিকেনর মধ্যে আছপোপন করতে পারেননি তিনি। তাই কবি নককনের মধ্যে ব্যক্তি-নককন, বিজ্ঞানী নজকন, লেণপ্রেরিক নককন, বীর নককন অভান্ত প্রকট। কবি তাঁর কবিতার মধ্যা দিরে তবু আরপ্রকাশই করেন নাই, আমানের কাছে সম্পূর্ণভাবেই বরা দিয়েছেন, দ্যু আনিকানে আমানের আরম্ব করেছেন। এইজনাই তিনি এত জনপ্রিয়, এত আমানের কাছের মানুষ।

প্রজ্ঞান বুগানিয়ানক শক্তি বুগানের পুরুষদের প্রজ্ঞানের প্রতিতার মধ্য দিরেই বাছপ্রকাশ করে। নক্ষান-প্রতিতার বধ্যে বে যুগা-নিরাক শক্তি নিহিত ছিল, যুগাচরিত্র নির্বাণে এবং তার সংকারে তা নিরোজিত হরেছিল—বরণা, তা তার কাব্য বা সাহিত্যের মধ্য দিরেই অভিবাজি লাভ করেছিল। সেকালের যুগাচরিত্রে একদিকে বেমদ পৌরুষ, সাধীনতা-শৃহা, বিপুরী চেতনা এবং গর্প-ভারিক থোন ছিল, তেমনি আবার হীনমন্যতা, কাশুরুষতা, অমানবিকতা, আর্থসামানবাধের অভাব, অনৈক্য এবং গোঁড়ামিও ছিল প্রচুয়। নক্ষান জাতীর চরিত্রের উনিবিত পূর্বনতা এবং আর্টিগুলি বিভাঞ্জিত করে একটি হক্ষ সমল, বলিষ্ঠ, নির্ভীঞ্জ, সংকারমুক্ত ও ক্ষেপ্রামিক জাতীর চরিত্রে গঠনের প্রভ প্রহণ করেছিলেন। এই কাক্ষে তাঁর ক্ষিত্র-শক্তির চেয়ে আন্ত-শক্তির প্রবাজন বর্বেছিল বেশি। তাই আন্ত-শক্তিতে বনীরান তাঁর ব্যক্তি-চরিত্রেই আ্যান্সের কাছে বেশি প্রোক্তিন। এই আন্ত-শক্তির প্রবাজন করেছিল। একারণে নক্ষান-কর্তার নির্বাণে নক্ষান-কর্তার বর্বিক সার্থকভার পরিক্রন দিরেছেন। একারণে নক্ষান-কর্তার আভিন নির্বাণ নক্ষান-কর্তার তালিক সার্বক্রার পরিক্ত লান করেছিল। তাই, বার্তানীর শেষ্ট আতীর সাহিত্য ছিসাবে নক্ষান-কাথোর মুন্য অপরিনীর।

বুগ-নিয়ামক শক্তি কৰিব নেধনীকে আশুর কবে মানায়পে প্রকাশিত হয়েছে। আজির চরিত্র গঠন বা পুনর্গঠনের জন্য তাঁর নেধনীয় কশাবাত তার সংখ্য জন্যজন। এইভাবে তিনি আছবিজ্ঞন আডিকে আছবর্বাদা ও আছবিখ্যানসম্পন্ন করে ভোলবার চেটা করেছেন। পোনারী বা দাস-মদোবৃত্তিকে তিনি বৃণা করেছেন এবং তীল্রভাবে কিন্ত্রপ করেছেন। বিশিত্য সম্প্রদার এবং চাকুরীজীবীদের হীনমনাভার তিনি বাধিত হরেছেন। আধীনচিত্রতা এবং আছসম্মানবোরকে তিনি আজীরভার পর্ত বলেই প্রায় বনে করতেন এবং বা-কিছু এঞ্জনিকে বর্ষ করে ভার নিশা করেছেন। তাঁর ভারার:

वानमा वाक डाम्राड এक वर्षक काडि महिमा जूनिएड हिनाडिं, वाम वारका विन वानारक वाक्रममान ना कारम,—वारका विन वानमा वाक्षिमारम उम्र कविमा निर्वय मनुवाक ७ भूक्षकारका रकारम वाक्षा हैं है कविमा विरम्भ मूक्त भर्ष हिनाटिं मा भावि, ख्टर वांगामा वाजि-अठम एक मृत्या क्या, मुक-स्वर्ण वाता क्रम क्या वांगामा क्रिक वांगामा वांगामामा वांगामा वांगामा वांगामामा वांगामामा वांगामा वांगामामा वांगामामा वांगामामा वांगामामा व

ভাতীর বিশেষক্রক নজকন জাতীয়তার একটি বড় জজ বলে মনে করেছেন। জনাকে জনুকরণে যে বনুষ্যার হারাতে হর, বিজাতীরতা যে জাতীরতার পরিপন্থী, তা তিনি স্থশইভাবে বাজ করেছেন:

विकाडीय अनुकरार्थ जायता कार्यर जायामय कार्डीय विराधिय श्वास्थित। क्विमाजिश । जायामय अर्थ जायामय अर्थ जायामय श्री कार्य जायामय श्री कार्य जायामय श्री कार्य जायामय विद्यास विद्यास अर्थ जार्डीय प्रजारिक त्याम्य विद्यास वि

আবাদের জাতীর অনুত্তিতে কোন প্রকার আবাতও ডিনি সহা করেন নি। এপেবাসীর প্রতি ইংরেজের বুণা এবং উপেকার বিরুদ্ধে ডিনি বিবাস্থার করেছেন। ভারতীরদের বনুষারদের বীকার করতে ইংরেজর। যে কুন্ঠিত, ইংরেজের এই বর্ষরাচিত শভাবকে কবি তীগ্রভাবে তিরভার করেছেন। এওলিকে ডিনি আবাদের জাতীর চেতনার প্রতি আবাত ও অধ্বাননা বলে বনে করেছেন।

বর্ষ এশেশবাসীয় চরিত্র এবং যনের একটি নিয়ামক-শক্তি। নজকল-প্রজিতা তাই বর্ষ সম্পর্কে উলসীন বা নিবিকার থাকতে পারে নি। ধর্মের জন্তনিছিতে সতা এবং শক্তি দিরে তিনি বুগলীবনকে সমৃদ্ধ করতে চেয়েছিলেন, যুগচরিত্র এবং বুগলানসকে পরিমাজিত ও ক্ষম করতে চেরেছিলেন। নজজনের যথো বুগ-নিয়ামক শক্তির এ এক জনাতম বহিঃপ্রকাশ। বর্ম বা বর্মের বাহিরের কাঠামোটাকে তিনি জাতীরতার জল বলে বীকার করেন দি। বে মানবর্ধে বা মানব্র ধর্মের মর্মাতা, তাকেই ভিনি জাতীরতার শর্ত বলে মনে করেছিলেন। বে জোন ধর্মের গরীর ভেতরে থেকেও যানুষ এই মানব্রান্ধ ময়ে উষুদ্ধ হয়ে এক জাতিরে সংহত হতে পারে। তিনি বলেন:

हिन्तु शिन्तु थाक, मूननमान मूननमान थाक, छथु এकवात এই महाअंशनङक्षत नीमाशात मूक्ति माटब माँडिया—मानव!—टामात करण्ठ मार्ट महिन पानिम वानी कृति मिन । वन क्षित्र, 'पानाव मानूम वर्म'। क्षिरिय, भनिष्ठ मार्व छोतिक माड़ाम पाकृत मानम कालिया छेडिएङ्ह। (हूँ थार्म)

वर्ष क्वरता महाकात वानववर्षत्र विद्यावी घटल भारत ना। क्विप এटक यात्रा वार्वमिष्ठिय हाजितात्र हिमारव कावहात्र क्वरल ठात्र, छात्राष्टि अटक वानवछात्र विक्रस्क माश्रिरव स्वतः। छिमि ছিলেন এই वर्वीत चार्ववार এवং পৌঞ্চানির সম্পূর্ণ विद्यावी। वर्ष সম্পূর্ণ তীন্ন এই উপার পদ্ধ নির্কেশিত ছবেছে 'বুরকেডু' পত্রিকার সক্ষা সম্পূর্ক বক্তবোর কৰে।:

alu-uti | 3368 Ulterpere Jelkriebne Public Librere vous auteult album | 36

'शूनरुषु' रकाम मान्धनानिक कानक मन। मानूम-वर्गेष्ट नगरहरत कह वर्ष। विमू-मूनन-मार्ट्स निम्हान करनान या कैंकि रकान्धारम छा रक्षित किर्त क्षेत्र क्षेत्र कृत क्षा क्ष क्ष्माछ्य छर्मना। मानूर्य मानूर्य राबीर्ट्स श्रीपन निम्हा राबीर्ट्स वर्षित रेपया विर्मास मून्यनीत छाव कार्ट्स मा। यात निर्द्धत वर्षि विम्हाम कार्ड्स, राजीर्ट्स वर्षित महारक्ष हिम्हास, राम क्षीरमा क्षमा वर्षिक वृत्री क्षार्ट्स ना। (क्षामा अर्थ)।

এই উদার বানধর্য বা বানধ্যবিদের উন্মুক্ত প্রাঞ্জণতলে নঞ্জল হিন্দু-শুসন্বানকে বিনিত্ত করতে চেরেছিলেন। ভারতে হিন্দু-শুসন্বানের বথা বিভেদ, বিবেদ এবং হানাহানিকে তিনি সহা করতে পারেন নি। ধর্মের বুন শিক্ষাকে উপেকা করে ধর্মের নামে উন্মন্ততা, নৃশংসতা এবং কাণ্ডজাদরীনতাকে তিনি বৃণা করেছেন। ধর্ম ধদি রানুদকে পশুন্ধ শিক্ষা পের, বানধ্যবিকে বিসর্জন দিরে বাহিরের লাচার-বিচারই বদি তার কাছে বড় হয়, তবে তা প্রকারাজনে অধর্ম ছাড়া অনা কিছু নয়। সতাকার জাতীয় চেতনা বা জাতীয়তাবোর বেকেই এই উদার বানব্যবির অনুভূতি কবির বনে জেগে উঠেছিন। তিনি এটা সঠিকভাবেই বুরেছিনেন বে, হিন্দু-শুসন্বানে বিভেদনীতিই এতদিন ধরে বিদেশী সাম্রাজ্যবাদী শাসকদের উদ্দেশ্য সকল করেছে, এলেশের রান্দ্যকে অনুচূ একজাতিন্তের বুনিরালে বাঁছিরে ঐক্যবদ্ধ বুন্ধি-সংগ্রামে জরী হতে বের নি। তাই, তথু, ধর্ম, গোরী বা শ্রেণীগত সংক্তিতিকে অভিক্রম করে বৃহত্তর এবং বহন্তর বানব্যবি বিশ্ব মুন্নমানের বিনিত একটি অর্থও জাতিসভা পুন:প্রতিষ্কিত হবে এবং তর্থনাই ভারা চির-ছারীনতার সন্দেহ উপনীত হবে—এই ছিল কবির বিশ্বাস। তাই হিন্দু-মুন্নবানে বিভেদ, ধর্মীর দৌড়ানি এবং বানব্তাবোধের অভাবকে তিনি জাতীরতার বিরোধী বলে বনে করতেন এবং এগুলির বিশ্বতে তাঁর নেধনীও ছিল সংগ্রামেনুবর।

এই মহামানবভার উপানত্তি কৰির প্রকৃতিসিদ্ধ এবং কৰিপ্রাণের সম্পূর্ণ অনুকুল ছিল। মানুষের জন্য প্রাণজরা দরদ এবং ভার আবেগমর প্রকাশ অনেকস্বনেই অভান্ত সভঃস্কৃতিভাবে জাঁব কাবো প্রকাশ পেরেছে। কৰিস্থনভ সরলভা, মানবপ্রীতি এবং বিশুবোধ ভার কাবো আনাভ্যমভাবে প্রকাশিত হয়েছে। কিছ কবির মানবপ্রীতি এবং আভিশ্রীতি একই অনুভূতি সঞ্চাত—অবিভাজা, অচ্ছেদ্য। আভিকে ভালোবেসেই তিনি সর্বমানুষকে ভালোবাসতে নিবেছিলেন। নানা ধর্মের ও শ্রেণীর মানুষে গঠিত ভার জাভির প্রতি উপার প্রেমই ভাঁকে মহামানবভার পূজারী মানবপ্রেমিক কবি হিসাবে শ্রেষ্ঠ মর্বাদা দান করেছিল। ভাঁর 'ক্লেমক্সন' প্রক্রে 'মন্দির ও মসজিদ' এবং 'হিন্দু-মুসলমান' শীর্ষক প্রবন্ধ দুইটিতে একখাগুলির মাধার্য বুঁকে পাওরা যার।

সতাকান জাতীয় চেতনার পরিপরী বলে নজকন ধর্মের ভণ্ডামিকে সহা করতে পারেন নি। জীবনে এবং ধর্মে ভণ্ডামি, কৃত্রিমতা এবং কুটিনতা এগেশের জীবনকে কন্তবানি পলু করে কেনেছে, ভার নিবুঁত চিত্র তিনি তুলে ধরেছেন। কেননা তিনি কেবতে পেরেছিলেন:

----- गात्रा (ग्नो) जत्रा जाव এक वित्रार्ध छेन्। धन् विज्ञादिन वित्रार्थ केन्। (वर्षात्म वर्ष व्यापानि), वर्ष-मःगात्र, माव-मद्यात्म, मक्तवा वार्ष अत्र वित्रार्ध ज्ञाति, वर्षत्र पार्ट्य केविकालि। (जाव हार्ष कि)।

जिहें धेने करबिहरमन, खनवारनय नाम मूर्य এरन याद्या नेवडारमक छारव बीनम नूर्य क'रव स्थलन क्रमेंडेजंब, धनकनाब, भूषा मोकिकछाव बव्य बाहिय करब, विवादाय विश्वश्वरणी क्युनिर्देश बाबाउ डारमब ब्यहःकांबरक हुर्य, गिरम्भिष्ठि करब ना ? এ बमारवय भाषकीमा और बामुर्येश क्रमेंटेज, और रमवडाब डांबरेड बाब क्रडमिन हमर्य' ? (अ)।

व्यक्तारम जरमामीम मुनेबीनरमम क्रमान विकृष्ट क्रम जीम बठनाव निर्मुण्डारम कृति जर्ठछ। वीमरमम वर्षे विभा, भाभ वयः भःकिनजारम भृष्ठिरय-छं जिरव स्थ-मनम, निरमम्ब कीमन गर्फ जूमर्ड हरन—जोरे श्राताकन रामाहिन जीम निरम्राक्त, निर्मुश्यतः। जोरे जिनि ठाषीम क्रभरक मामाहिरमा :

ওপো আবার ওতাদ চারী, তুমি ভোষার সাধের জমিতে সোনার ক্ষমণ ক্ষমানার আকাওকা বদি করে থাক, তা'হলে ভোষার সেগানে আবর্জনা ক্রনিক দুইকীনের বাসা পুষে রাখনে চলবে না। সব সাক্ষ করতে হবে। সব জমি গুড়িয়ে পিছে ফেলতে হবে, তবে জো কলবে তাতে পরিপূর্ণ নবজীবনের পরিপুষ্ট ক্ষমল। (এ)।

তার এই রূপক-স্টির নধ্যে যে বিদ্রোহ বা বিপুষ্ণের ইজিত ধ্বনিত ছারছে, তা নিছ্ক রাজনীতি-চিন্তার কল নর। তিনি একটি মুক্ত, উণুত, বলিষ্ঠ, কুসংভারমুক্ত, তাাগপ্রমুক্ত,জাতীর জীবন কারনা করেছিলেন। এই জীবনের পরিপর্কী বা-কিছু, তার বিক্লকেই চিল তার বিদ্রোহ—কুমুমাত্র বাজছোহ তা নয়। এই বিদ্রোহ, তথা বিপুষ্ণের মাধ্যমেই তিনি জাতিকে তার প্রকীয় সভায় স্থপতিষ্ঠিত করতে পার্বেন বলে বিপাস করতেন।

নক্ষরনের নের্থনী ক্ষাত্রীয় চরিত্রের পোষণ্ডণ উদ্যান্ত থেষণ তৎপর ভিল, তেমনি তাকে সভাকার জাত্রীর চেতনার ভিত্তির ওপনে অপতিষ্ঠিত করতেও সঞ্জিয় ছিল। উপার ধর্মবোধ, মকীয় জাত্রীর বিশেষত, নিম্কর্ণুয় পেশপ্রেন, বলিষ্ঠ মাবীনিচিত্ততা এবং ত্রীক্ষ আন্তর্মধালালানে সমুদ্ধ একটি উনুত ভাত্রীয় চরিত্রের গঠনে তাঁর কবিক্ষরতা নিয়োজিত ছিল। এইভাবেই তাঁর মুগন্ধর প্রতিভাব মুগ-নিয়ামক শক্তির অভিবান্ধি মান্ত। তাই, যুগমানস ও সুসচরিত্রের রূপায়াপেট শুনু নয়, মুগের মন ও চরিত্র নির্মাণে তাঁর সাহিত্য সর্বাধিক শক্তির পবিচর দিয়েছে। শাশুত বাঙালীর চরিত-মানসে বিশে শত্রের এই সংখোজন নক্ষল-কাব্যের মাধ্যমে যতান সন্তর্ম ও সার্থক ছয়েছে, অন্য আর কিছুতে তা নয়। বাঙালীর প্রতিভা ও জীবন পর্যনের এক বিশেষ বিশে শত্রীয় বৃহিপ্রকাশ শেষ্ঠ অভিব্যক্তি লাভ করেছে নক্ষরণ কাব্যে। তাই, বাঙালীর জাতীয় কাব্যের আয়ুনিক পর্যে নক্ষল কাব্য উক্ষুলত্ম জ্যোতিয়েকর মতো দীপাসান।

[**S**]

ভারতে ব্রিটিশ শাসনের শেষ পর্বারে স্বাধীনতার জনা যে উন্যাদনা এক' পরাধীনতার জন্য বিশেত, নজক্রত-কাব্য ভারত একটি শৈলিপক বাণীরর প্রকাশ। আধুনিক কালের ভারতীয় বীৰণ-প্রসায়র প্রধান দিক, যা তৎকালীন চিম্বানারক, ভারবাদী, জাতীয়ভারাদী, ফেপপ্রেমিক,

নিপ্লনী ও করীদের প্রাণ আনোড়িত ও রখিত করেছিল, তারই প্রান্ধর অভিবাজিতে সক্ষত-কারা পরিপূর্ণ। স্থতনাং উপনহাদেশের জীবনধারার সজে গভীরভাবে সম্পৃত হয়ে সক্ষতন কারা ইতিহাসের একটি স্বারী ও বুলাবান সম্পন। সেই বুসের ইতিহাস ও পরিপ্রেক্তি জার আপ্তর্ম পাণিত ও দীপ্র বাজিব পড়ে তুলেছিল। তাঁর স্বানীনচিত্ততা, নির্তীজ্ঞতা, বলিজ্ঞা, ত্যাপ ও সংগ্রারী চরিত্র তাঁর কার্যকে এবন এক বীর্ষপৃথ্য বৈশিষ্ট্য দান করেছে, বা ভারতীর জন্য কোন করিব কার্যে জনুপরিত। তাঁর 'বিদ্রোহী' কবিভার পুনিনীত উত্ততা, উচ্ছ্ংবল উন্মালনা এবং বিশুল আন্ধার অগ্নিগ্রারী বিচ্ছুরণ তংকানীন পরিবেশ-স্পষ্ট তাঁর জননা বাজিকেরই বহিঃপ্রকাণ। 'বিলোহী' কবিভার ক্ষির আবোপনত্তি বা অহংবোধ কোন আব্যান্তিক জীবনকর্ণন, কিংবা বোধি বা নিজক কবি-চেতনা কি ?—বরং তা বহিবিশ্যের পট-প্রেক্তিত কবির জাতীর জনুত্তি বা বুগচেতনারই প্রতিক্রিয়ানাত্র। জাতির পরাধীনতার অসহনীয় বেদনা, তার চির-বলীদশার তীব্র ক্ষেত্ত কবির বধ্যে অপরিসীম আরপজ্ঞ জাগিরে তুলেছিল। এই শক্তিবলে পরাধীন বিশ্বকে বিংবল্ড করে নতুন স্বাধীন জগৎ গড়ার জন্যই কবির এত বিক্ষোভ এবং উন্যান্ততা, প্রচণ্ডতা। তিনি বর্থন বনেন :

বহাবিশ্বের মহাকাশ ফাড়ি'
চক্র-সূর্ব-গ্রহ-ভারা ছাড়ি'
জুলোক-শালোক-পোলোক ভেলিরা
খোলার আসন আরপ ছেলিরা
উঠিয়াছি চির-বিশুর আমি বিশ্-বিধানীর!

তথ্য একখা যনে করা যায় না যে, নিছক তজুজ্ঞানীর মত্যে তিনি সেই আবাছিক জানের 'আছানাং বিদ্ধি' প্রচার করছেন। তাঁর এই আব-ফাগৃতি, অহংপ্রচার একারণেই, —'আবি উপাড়ি' কেলিব অধীন বিশ্ব অবহেলে নব-স্টের মহানন্দে'। একারণেই কবির এই আরশক্তিতে প্রোক্ষ্বন ব্যক্তিবের এখন অত্যুক্ত্বল বিশ্বাৎ-বিকাশ, অথবা তা 'থেরালী বিধির বন্ধ ভিনু' করার জনাই—বে থেবালী বিধি তাঁর জাতি এবং দেশের নলাটে চির-পরাধীনতার জনপনের করংক লেপন করেছে।

প্রাণধর্ষের দিক থেকে নজকল একজন শাস্ত কৰি। বানবতা, তথা জাতির বৃদ্ধির জনা পরিল সাধনাকেই তিনি অবোধ বলে মনে করেছিলেন। শক্তির ঘারাই পরাধীনতার শৃংধল বোচন করতে হবে, বিলেশী শাসকদের নিকটে মনুযার বিজ্ঞার ঘারা অথবা করুপ কাকুতির ঘারা নর। এইজনা ভারতবাসীর বা বাঙালীর ভাগা বিপর্বরের প্রতিকার করতে গিরে তিনি এই শক্তির ঘারা পরাধীন বিশ্বের রূপ পরিবর্তন করতে চেরেছিলেন। কিছ এই বহাকলপনার রূপারণে ইহাপ্রলারের প্রবোজন এবং এমন একটি বিজ্ঞাহী চরিত্রের মাধারেই তা সন্তব, বে সকল বৃপের উদ্ধত ও পুরিনীত মানবপজির পুত্রীভূত বহিঃপ্রকাশ। আই হিন্দু ও মুসলির ঐতিহ্যের সকল পঞ্জিত কলপনাকে কবি তার বিজ্ঞাহী-শুতি রচনার বাবহার করেছেন। 'বিজ্ঞাহী' এবং 'বৃরকেতু' কবিতার ডিদি এই চরিত্র কলপনার আশ্রের সকলেও পরিচর কিরেছেন। জার বিজ্ঞাহী বিশ্বজ্ঞাহী—বিধাতার বারবেরালে বে বিশ্ব পূর্ববের করু, অবহেলিত-অব্যানিত্রের অনির্বার ব্যাবারী, বিশ্বজ্ঞাহী ভার বিজ্ঞাহী।

শ্রণের পরিকলনা ওড়গ্রোড--শুবুনাত্র বাজনৈতিক চেডনা এব বুলে নয়। এইজনা বিরোধী পৃষ্টের মজে বিশ্বমানের অঞ্চল পাঁড পিরে হিঁড়ডে চার, নবক্ষীর বহামশে অধীন বিশ্বকে উৎপাটিড করে কোন্ডে চার, বিশ্বভোরণে বানব-বিজয়কেডন উড়িরে দিডে চার। ডাই বিরোধী কলে,—

> जानि जानि ये गुरान कैनि, स्टिन ये ठाउँनी निवि ७ निवरन मानि स्टिन ठूँकि विवाजन नूरक बाजुछि! जानि जानि ये जुरान केन्य भिरम वा श्वनि श्रम जां । जारि निन्न जानि, निर्माद किन, स्टिट स्मार विदे औरक जां ।

(युवरक्षु : व्यश्चि-बीना)

विष्य मिन्न मानना कवि विष्यू वा विमान वर्षत्र प्रावा स्वारित यात्रीक लाभि, वीषव, त्नीर्थ, वामवला, मारनाव महान त्यरित्र लाक्ष्य कारनाव स्वार्थ मिन्न कर्त्राह्म। जिनि क्षेत्र-त्यराव विकास वर्षः मारनावनीनारक श्रीवाना किर्यार्थन, त्युल्वमना चनुर्वृतिक विकासिवी, क्ष्यावनवादिवी-कर्ण वावावन कर्त्राह्म। महारनव वर्ष्ठ भाग करव वर्ष-भिभाग निवृत्तिव बना जिनि क्षाप्ती ववावालारक वाक्षान करवर्ष्यन:

जितक भौठा दाव (बरहिक्त, ताकरी टाव याहित क्या : जात भावानी, धवान निवि जाभन एएएनम तकस्था। नूर्व नएमय बनि भिरव डीक्स ध हीन भक्ति भूजा नूर करब एम, बन् या, एएएनम तक मार्ग मा मण्डूला

(यागणवदीक जानवर्भ)

এই ছিনুসন্ধা চাৰুপ্তার বব্যে তিনি দেশমাত্কার প্রতীক খুঁজে পেয়েছিলেন, তাই বুনসমান মধ্যেও তাঁকে মা বনে ডাকতে তাঁর এতচুকু বিধাবোৰ হয় নি । দেশ-মাত্কার জাগরণে এবং তাঁর সন্ধানদের আছবলিখানেই আগবে বৃহত্তর কল্যাপ, মুক্তি বা আধীনতা—এইডাবে তিনি হিলুধর্মের ঐতিহাকে কার্যের উপাদান হিলাবে ব্যবহার করেছেন। ঠিক তেলনি বুনসির ঐতিহাও তাঁর কার্যা শক্তির প্রতীকে ব্যবহৃত্ত হলেছে। ইবের কোরবানীকে তিনি বিজয় আগবেশ বলে চিক্তিত করেছেন। তাই বলেব: "ওরে হজ্যা নয় আল 'সভা-গ্রহ' শক্তির উরোধন।" (কোরবানী : অগ্রিবীনা) । করির বৃত্তীতে বিনি 'রহ্মান'; তিনিই 'ক্তম'। পজিব সাধনাতেই র্যেতে মুক্তি। কেননা, জম্মী হাজের। প্রবাদ বৃত্তিকে বলির পরিত্র বসন পরিধান করিয়ে এবং ইগ্রাহীন পুত্রকে কোরবানী দিরেই সন্ধা এবং মুক্তি লাভ করেছিলেন। করির বারপার—''সভা মুক্তি আধীনজা পেবে এই-সে ঝুম বোচনা।" (ঐ)। এই ত্যাপা, এই আরলান, এ-ও শক্তিরই সাধনা। রোহন্ত্রর কবির চোবে সেই জ্যাপা ও বীর্থের প্রতীক, তাই বলেছেন:

क्रिय अरमा चांच गिर पाङ्ग्य गाहिया, क्यान ठारे, योगवा क्यान ठारि मा।

(बार्यमः चार्-वीमा)

नवका क्लाइमी नविका | >>

নোহর্বনের তাৎপর্য তুরে ধরে কবি মুসলমানকে ভার দারা অনুপ্রাণ্ডিত করবার চেট্রা করেছেন— ঐতিহার পথে তাকে ভাক দিয়েছেন—নে পথ ভ্যাগের, পৌর্বের, স্বাধীনভার সংগ্রাবের অর্থাৎ এককথায়, শক্তির। যেবনঃ

> जारमा, अर्फा नूननिन, दाँदना दायनाती दाँक भदीरमंत्र मिर्ग गव लारन मान द्राप्त वाक्। नक्ष्मात्र माज नाक भूग-बंठा जाकीन, नम्रभारस मुहोएंड ता नाम धंदे बागू भिन।

> > (E-E)

किन मूननमान अवारन अकता डिलनकमाज — जिनि शाति काजिरकरे अरे निकमाज डिब्ब करबाइन। गःशीय এ**यः सक्षणाः नय मधा भिरम्**दे भवागी। नात्र मृत्येन उत्त वार्यात वागी। नात्र व्यान्पञ्चा छित्जानन नम्रा इर्न। এই भेष भक्तित भेष এनः এই भेर्षिय जागरन जाउीय जीनरान मुक्ति। छिमिनिङ देगनाम 'अ दिन्तु भार्यत्र ঐতিহ্যাকে তিনি তথু कारवात्र উপাদান করেন নি, ছিলু धार नुगमनागरक गिक्र गिक्र गार्मन धे छिटा चिरक निक्र वादन करत এक निक्रनामी, चानीन ও অর্থণ্ড আতিতে পৰিণত করতে চেরেছেন। ধর্মকে ভিনি আউয়ৈভার অপরিহার্য অঞ बला चीकांत्र ना कदाना धर्मन मून वांभीन बान्ना छेबुक ছरा हिन्तु-मूननमान नकन नःकीर्नछान्न উধ্বে বৃহত্তর এক-জাতীয়তার সূত্রে জাবদ্ধ হতে পারে, এনাই ছিল তাঁর বিশ্বাস এবং এই জর্ঘেই তিনি ধর্মকৈ তাঁর কাব্যে স্থান দান করেছেল। এই কারণেই উত্তয় ধর্মের ঐতিহা তাঁকে কাব্য-ध्यंत्रण मान करत्रिक। এই धर्मीय वाब এवः ঐতিহাচেতনা তাঁব कविधर्यत्र माक मानक्षमापूर्व ছিল বলেই তাঁর বৃহন্তর ভাষানুভূতির অনুষদী হয়ে কাষো এক নতুন তাৎপর্য লাভ করেছে। बाजि बनएज नककन विरोध धर्मीय शंजीन यादा मीबिज कोन मञ्जूषायाक कि:वा निषिष्टे जाठात्र-विठारतत पाता मःकीर्व कान शाहित्व मरन कत्ररजन गा। माम्थ्रणात्रिक्जारक जिनि मरन-প্রাণে ঘুণা করতেন। তাই এদেশে হিলু-মুসলমানের মিলিত এক মহাছাতিকে তিনি এক-ছাতীয়তার সূত্রে আৰম্ভ করার প্ররাসী ছিলেন। কিন্ত তথকো জাতীয়তাবাদ এদেশের মাটিতে বৃহৎ বনশিতি-রূপে পূর্ণ-বিক্ষণিত ছয় নাই। তার নবোদ্ভিনু স্তক্ষার বৃক্ষতন্টি যেন মুক্ত বাতাস ও বিশ্ব (बोजिकितरभेव क्या याज भीर्ष উर्छान्य करविष्ट्रन । जान नित्मेव भनिष्ठवीष्टे ष्ट्रिन जर्बन श्रवान काक। **এই काटक उर्थन रयमय बनीबी निर्छार** न्य शिर्मिषडार्थ निर्माष्टिङ करब्रिहिस्सन, नक्कम हिर्मिन उालिय जनाज्य। कान (जोरगानिक जनवारनय मर्या मः कृष्डि-कीवनहर्या-महय्यिज्ञाय जेकायक, সাধীন ও সার্বভৌষরপে কোন ভাতিব ব্যধাস করতে চাওয়ানিট তার ভাতীরভাবোধের বুল পরিচয় এবং এই আকান্তকা তীব্র, অধবা এবং সংগ্রাবসুৰী না হওয়া পর্যন্ত তার লক্ষা দুরপরাহত। रमयूर्ण बाबरेनिडिक (नडुनेन, मबाबकर्यों ७ बुद्धिकीवीवा यथामध्य माकलाव मरक अपे नास्काव भित्क अशिर्य চলেছিলেন, किन्न कार्या, नाहिला ও नाःबाण्किलाय नकक्रम काडीयलाबाल्य स्वरक यको। क्षत्रात्या এवः मः त्यानीम करव जुरमज़िलान, अको। यात्र कान जात्वर मञ्च हव नारे। विर्णबन्धः बोडानीरक जिनि এই यद्भ बज्बोनि উब्होबिज, मकित्र ७ मधीबी क्वरज পেबिह्रिकन তাম কোন জুলনা নেই। ভাতীয়তাবোৰ এমন একটি ৰম্ব, যা সম্পূৰ্ণমণে ভাবের ওপরেই প্রতিষ্ঠিত;

তা বক্তা লিবিছুবান, ততাঁ। কিজিকান নয়। স্তবাং বাজনৈতিক কর্বকাণ্ডের জাজীবভাব্যের স্থানিন্তিত ও স্থাবিতাৰে ক্লপ পেতে বতবানি বেগ পার, সাহিত্যে তা নর। ক্লেন্যা, রাজনীতিত আবেদন বানুবের কার্বকলাপের নিকটে, আর, সাহিত্যের আবেদন বানুবের আরার, প্রাণে, স্করে। এই কারণে তবু সক্তরের বারা নর, সেকালের প্রাণ্থ সক্তন কবি-সাহিত্যিক—পিল্পীর বারা জাতীবতাবোর বতটা বাঙালী-প্রাণে বৃদ্দুল হতে পেরেছিল, ক্লান্য ভারতীর্গের প্রাণে তা পারে নি। তাই আব্যা এই উপমহানেশে বাঙালীই একটি বাত্র জাতি, বাকে স্তিয়কার অর্থে জাতীর-তারাদী বলা বেতে পারে। এর বুলে বাঙালীর উন্তত্তর সাহিত্য এবং সাহিত্যিকশের অবলামই বে স্থাবিক ক্রিয়ালীল, ভাতে সন্দেহের কোন ক্রেকাণ নেই।

সেকানে ভারতীয় অপর কোন কৰি তাঁর কবিকর্ষের ভেতর দিয়ে ভাতীরভাবোধকে এতটা আগ্রন্ত ও সকল করে তুলতে পারেদ নি। এদিক খেকে নজকল নি:সন্দেহে অননাসাবারণ। 'বিষের বাঁপী' কাবোই তাঁর ভাতীরতার কাবনা সর্বাধিক পরিস্কৃট হারেছে। এই কাবো তিবি জ্বালানরী, উন্যাদনাররী বাণীতে ভাতির প্রাণে তীগ্র প্রেরণা এবং অক্রন্ত পঞ্জির সঞ্চার করেছেন, ভাতিকে প্রচ্ছ আকর্ষণে নিয়ে চলেছেন—বেখানে তার জনা রয়েছে পূর্ণ স্বাধীনতা, বৃদ্ধি ও প্রগতি। এবানে তাঁর ভাষা এবং প্রকাশভর্তীর অবারণ উচ্ছেংবল বিচ্ছেরণ অনেকান সংহত ও পরিপক্, কিছ আবেদন সূচীমূল তীক্ষ এবং স্বায়ী, স্বস্থনের নিনিভ্তায় স্পর্ণক্তার এবং স্বার্থ-নজা। বেরন:

'বলী থাকা হীন অপবান'। ইকিবে যে বীর তরুণ,——
বির্ণীড়া বার শক্ত তাজা, রক্ত যাহার অকণ,
সত্য-বুজি, স্বাধীন জীবন লক্ষা শুধু মাদের,
ধোদার রাহায় জান দিতে আজ ডাক পড়েছে তাদের।
কেশের পারে প্রাণ দিতে আজ ডাক পড়েছে তাদের,
সত্য-বুজি স্বাধীন জীবন লক্ষা শুধু মাদের।

(लवक: विषय वीणी)।

কৰির এই সংৰত অথচ উদ্দীপ্ত ভাষা তীক্ষ-শাণিত বছদীপ্তি ছড়িয়ে দিয়েছে, যথন তা অত্যাচারী শাসক-শক্তির ওপরে বড়্পাঘাতরূপে হয়েছে উনাত। কঠিন প্রভাষাতের দারা শাসক-শক্তিকে পরাজিত ও বিভান্তিত করবার দ্যু সংকলপ ধ্বনিত চয়েছে সেই ভাষার:

> नृष्यितिछा ता जनतीय राथा राजिया এ कीन मृत्क जिन्न इत्त या जुत्तिहित्त पून, विष छैठिहित मृत्व, नृष्य न-हाना ज्ञाहावीय नृत्क राज्ञभाषी गय निह्या छोहात्व हिंहिएछ ह्याहि हि:गा-मन्द्र यय,— (हें ९ गर्न : ये)।

कालिय वृद्दात वार्ष कवि मिर्नाहारक्य कठिंग युष्ठ अद्यश् कर्यक्रिया। এই क्या छीरक कीवरन्य मकन व्यवनाति विगर्कन मिरम, स्वद्ध-स्थानि व्यक्षात्र किस्तृत्विस्य भविष्ठाण कर्य छिस्त्र पुरस्य भव व्यवन्य क्या द्वादिन। कीवरम्य अयः कार्याय दूषा-भाषकात्र कवि काठीय कीवरम्य वयः व्यक्तिकात प्रमाण्य योगाना ध्रामी हित्यतः 'वित्यत योगीकं सुविका कविसामित क्यि छीत्र योज्य कीयत्यत वर्षे पृष्ठ-कठिन सुविका मन्मदर्क मन्महे मरदक्त मान कदबर्स्य :

> ভোৰ তবে নর শীতল ছাবা, পাছ-তক্ষ প্রেয়-আসার, তুই যে বরের শান্তি-শঞ্জ, ক্ষম্র শিবের চণ্ড যার। প্রেয়-ক্ষের তোৰ ছারার যে বে

> > কণাই-কটিন তুই পানাণ। আমৰে চিম-ভিক্ত প্ৰাণ।

व्यक्तिय कांवा विगादन नवकत-कांद्या बाजीबलाद्याद्यत ७५ हर्षायन, बाजनेन, विकास वा **পূर्वका** मानन घर मांधे, এই कारनात ऋत्व कवि बाजित धार्प ऋडेक बापा, डेकीपना, पृष्ठठा ७ पांचित्रांग मधाब करबर्एम। किन्न जा एम् कारवाब कनारकोनरन या याहिनी बाबारज्ये मञ्ज बस बि, छात्र मस्य बरबर्ध जाँद वाक्तिनंड बीवरनंत मु:मद मून्छ्य उनमा। बाछित धडि बक्जिय ভাষোবাদার্থ তাঁকে এই ভপদারি শক্তি भিরেছিল। তাই সংগ্রাবের কণ্টকিত পথে নেবে ভিনি अल्डेप निवान वा भिवीर्ष हम नि, जीव नाथा क्लिक्स कमाछ अल्डेप् क्रांकि वा विवक्ति कार्य मि। প্রাণের অনির্বাণ দীপালোকে তিনি জাতিকে লক্ষ্যের দিকে পরিচালিত করেছেন, অন্তর-ৰমে, বিজয়-ৰমে তাৰ ৰধো দুৰ্বৰ আশাকে সঞ্জীবিত রেখেছেন। তাঁৰ এই আশাবাদেৰ হুর ধ্বনিত श्रदारक 'निरमत बीमी'त्र 'र्वाथन', 'अङ्ग-नज्ञ', 'बायनक्ति', 'काशृशी', 'वन्नी-बन्नना', 'बन्नना शीन', 'बुक्ति-त्यवरकत्र भाभ', 'निकल-भन्नात्र भान' हेडाापि कविडाय। डिनि कल्पनाय प्रत्येहन, यन ख्ताखरतत बृद्ध — विभुक्-विभवत-त्रक्रभारज्य बेर्या फिर्य अञ्ज-मक्तित्र भवाषय এवः फ्य-मक्तित्र जब बरबरक, विवाहे श्वःरमव बृरक नवश्ष्टै (जर्भ ठेर्छरक्ष। त्र्यवाङ्कांत्र व्रथहातुकांत्र जावान-धकानरक এवः विकारतम भारत जीम कनाांभी ऋभरक जिनि 'वरण माज्यम्' वरन बणना करम्राङ्ग। 'আগৃহি' কবিতাটিতে কবিদ্ৰ আশাবাদ এইতাবে অপক্ষপ রূপ-কল্পনায় মুর্ত হরেছে। কৰি নক্ষলের কলানান নবীন ৰাঙালী ভাতিসভার, একটি মৌলিক ও স্থলাষ্ট ৰূপ প্রতিভাত क्रिन। এইम्रेन गर्जूर्व चित्रन धरः चनभाक्तिषठ। এই ভাতিসভা बाबो,निजिक क्रेटिकोननबाढ मब ्यादार्थ प्रविद्याश्चर्य उत्रःक्त्र श्वःगाष्ट्रक धनत्र-गब्छ। थ्वार्ष विञ्चरीत वर्छा जिनि जाहे हिर्मिश्त (construction after destruction) भीडिएंड विद्यामी हिर्मिश এবং এই পথেই যে জাতির সত্যকার কল্যাণগ্রসূত্র স্থায়ী সুক্তি সম্ভব, তা মনেগ্রাণে উপদক্ষি করেছিলেন। জাতির এই প্রলয়-সমূত নবসন্তা লাভের বানসিক প্রস্তুতি হিসাবেই তিনি জাতিকে **এই नारेज-वज्ञ निरविद्यान**:

> भ्यात (मर्थ छत्र (कन (छात्र)—धानत मूखन ककन (वनन) चात्र मर्वीन—कीवन हात्रा चन्न्यात्र कत्र छ (छनन) छात्र (म अवस (कर्ष्य (वर्ष्य धानत मंद्राक चान्य (हर्ग्य—कृत (हर्ग्य)) एक्ट चान्य पहरू चार्ष्य (म किन-स्पर्य)

তোষা সৰ জনংখনী কৰ। ঐ ভাঙা-গড়া খেলা যে তাম কিসেম তথে ভৰ। स्यूषा প্ৰশীৰ তুলে ধন। কাল ভয়কম্বেম খেলে এবাম ঐ জালে মুলন।

(धनरबाह्मान : चिन्दीना)

বিশ্ববেশ্ব বধ্যে দিয়ে আজিন নৰজনা সম্পৰ্ক কৰিব স্থগভীন অনুভূতি উন্নিবিত ভবকে নিপুৰ অভিযান্তি নাভ কৰেছে। অভ্যাচানী পাশৰ শাসক-শভিকে ধৰংস কৰে স্বাধীন আজিন প্ৰনাৱোতিত নৰসভাকে কৰি অবলোকন করেছেন সিংহবাহিনী বহিষ্যদিনী বহাৰাভাৱ অনুসূৰ্ব বৃতিষ আসমনীতে। 'আসমনী' কবিভাৱ স্থনা-স্থাবন বৃত্তৰ মধ্যে এই প্ৰনাৱেশ কাৰ্কপনা আপকাশ্যাৰে চিত্ৰিত হবেছে। বনুষাৰেন মহিনান ভাষর নতুন আজিন নৰ-উবাদ যেন মহামাভাশ্ব স্থাভাগ-শাশীতে ব্যক্তি হবেছে এইভাবে:

নাই দাগধ নাই অসুন— চাই নে সূর, চাই বানব।

নতকল আতিকে আতীগ্রতাবোৰে উৰুদ্ধ, স্বাৰীনতার মত্রে উজীবিত, লক্ষালাভের আপার উলীপিড এবং সংখ্রাবে অভয়-মন্ত্র দান করেছেন। আতীর জীবনের ক্লেম-গ্লানি দুর্ব লতাকে অপসারিত করে, চির-পুঞ্জিত অভ্যান্ত ক্লীবনের পাষাপভার বিগলিত করে তিনি কাব্যের স্থানে ভগীরবার মত্তে আতীর জীবনকে সকলতার মহাতীর্থে আকর্ষণ করেছেন। এইভাবে আতীর জীবনের অক্ষা মঞ্জীবন-উৎস হয়ে সক্ষাকার্য আভিয় অমুদ্ধা সম্পদ হিসাবে পরিগণিত।

নজ্জন-কাৰো ৰূপজীৰনের সৰস্যা, সংকট, অক্ষরতা ও বালিনোর চিত্র মাদা ভাষে প্রথকট। এগুলি তীর বনে তীব্র প্রতিক্রিয়ার স্মষ্ট করেছিল, কেননা সেগুলি আতীর জীবনকে করেছিল পজু, নিন্দ্রাণ ও অর্থহীন। তাই, তাঁর কবিপঞ্জির বীর্থপূর্ণ প্রকাশ ঘটেছে বুগ-জীবনের এইসব ক্লেন্ড চিত্রারণে এবং তার অপসারণে। নজ্জল-কাব্যের এই বুগচিত্রণ একদিক থেকে তাকে বাঁটি আতীর কাব্যের চারিত্র লাম করেছে। তিনি সরল ও সুস্পষ্ট ছলে উচ্চারণ করেছিলেন:

> (बाक) कारक-काशा-विवाजात रूपक क्षम-जाकता-लावानकात, बार्जियार वीकिष्ठ सकीय,—एक करत यूनिकत बातान कार क यांच्य बाकि बनीय कार्य, विकिक्त कीज नका, यह कह बादीन बावान वांची, नहि-यहरत कनीत कील, शकीत बाहि-बह्मात। वीकिष्ठ मकीय,—एक महाक्रम, हुई क्षा १६ व क्रशांता।

(क्र्य-मिनान : विरुव्य वीची)

खरकानीन बाडीय हित्रदात बदकाताकानुं निकृष्टि बरकान कतित नामन ७ गडा पृष्टित खिक्नाखें बात्रवा नका कति, वर्षन किंग वर्षन :

> দাসম্বের এ যুণা তৃপ্তি ভিন্দুকের এ লক্ষাবৃত্তি, বিনাপ জাতির দায়ণ এ লাজ, দাও তেজ দাও যুক্তি-গরব।

যুচাতে ভীক্ষ নীচতা দৈদা প্রের হে ভোষার ন্যায়ের সৈনা, শৃংধনিতের টুটা'তে বাঁধন আন আবাত প্রচণ্ড আহব।

निरीर्व ७ एडण:-मूर्व मीछ कत्रदा बश्चि-बीर्व, लीर्व, देवर्व, यदाधान माठ, माठ चाबीनडा गडा विडव।

(উर्दायन: विरयत वीमी)

यू अ-जीवरनत এই गव श्रांनि এवः छाडी । চतिराजव पूर्व नाठ। ७ जान्यात छाला। करारे छरकानीन तालारेनिक तन्तुर्गन प्रांवी । जान प्रांवी । विद्यात हितन । क्ष्रुवाज तालारेनिक प्रांवी किलानिक किलानिक प्रांवी किलानिक किलानिक

পূর্বে বলেছি, জাতীয় চরিত্রের অংকনই নজকলের একরাত্র কাজ ছিল না; তাঁর প্রধান কাজ ছিল তাঁর গঠন। তাই সকল দুর্ব লতা বোচন করে তিনি তাতে শক্তি সঞ্চারের মন্ত্র উচ্চারণ করেছেন। কবি বলে তিনি এই দুর্ব লতার প্রতিষেধক পুঁজে পেরেছিলেন—জাতিসভাকে নিয়ে সমস্ত ভঞ্জানি, ফলী-ফিকির ও রাজনৈতিক জুরাবেলার আভ্তাধানাকে ভেঙে চুর্প করতে চেরেছিলেন। সমস্ত কাপুরুষতা, হীনমনাতা ও লুকডাকে পদাবাত করেছিলেন। এবং অভংপর সভ্তা, ন্যার ও স্বাধীনতাকে প্রতিষ্ঠিত করতে চেরেছিলেন প্রত্যক্ষ সংখ্যাবেশ্ব স্বাধ্যরে। তৎকালীন, হাজনৈতিক চিন্তাধানার পরোক্ষ বা ধক্রপতি তাঁর এই পথ থেকে তাঁকে একচুনও বিচলিত করতে পারে নি। তিনি উন্থীৰ আকাঙ্কার সেই বহাবিপুরীর আগমন প্রত্যাশা করেছেন, বে এই জ্বোনখানা চুর্ণ করে আনবৈ তাঁর চির-আকাঙিকত সভ্তাকুছি। ভাই বনেন:

तिरे कि त्र क्टि गडा-गांधक यूक बूत्म जान मेंडाव !---निकंगधामा विकास करत शास्त्रत छनात्र माडाव,---क्ट्रशास्त्र जिल्लात्मत के जिल्लिगोरक माडाव!

नामाज-भरवंत्र चाषाम-नामव दनरे किएम रक्छ वैछा, ভাঙতে भारत जिथ रकाछ और नाम्य रवर्षय वैछा !

(त्रवक: विषय गाँभी)

जना नक्कन मुक्ति नकन नठा श्रीक्षित भूका जानिएत्र एन। वहाका निष्ठीय मुक्कि जीव जीव निष्ठीय निष्ठ होत्र निष्ठित क्षित्र क्षित्य

कर्छ। इतात गर्थ भवात्रहे, चत्राक-स्वाक छ्न (क्ष्यन कांका श्राह्म कुम्-बचन, यूथ भवन चात वन नवन

44;

(बिद्धाधीत वाणी: बिरवद बांगी)

তথু স্বরাজ-প্রচেষ্টার ভঞারি ছাড়াও ধর্মের ভঞারি বা ভড়াং, শান্তের অনুশাসন, হিন্দু-মুসজ-বানে ভেলাভেল, বানবভাবিরোধী কার্যকলাপ, প্রভু-ভোষণ, অভ্যাচার-অবিচার, শাসদ-আসন ইন্ত্যালি
-বা-কিছু জাজীর চেডনা এবং জাজীর জীবনের পরিপদ্ধী, নজকল তার উপরে ছিলেন বড়ু গছন্তঃ
'বিবের বাশী' এবং 'ভাঙার গানে'র কবিভাঞানতে তার এই সংখ্যার-কারনা শুনিতা লাভ করে-ছিল। পেরুপে নরজারত জাভির আবচেতনা এবং আন্ত-প্রতিষ্ঠা সাধনাকে অনেক আর্থানেসুধী চজ্জ্য ব্যক্তি নিজেনের স্থাবিধার বিনিরোপ করার কুটকৌশন প্ররোপ করেছিল। করি সজজ্জা তানের এই কুট চজারতের গোচার কর্ণেঠ প্রবাশ করেন এবং তাদের বিবজ্ঞাকন হন। সভ্যক্ষার লেশপ্রেমিক কবি ছিলেন বলে তার সরল ও বলিষ্ঠ উজিওলিতে জাভির মুল আকাঞ্জন। শুনিত হরেছে সক্তিকভাবে। উপন্দেশের হলে বে কথাগুলি ভিনি জাভিকে গুনিরেছেন, গুনিত তার এবং বুপের বাসনাই স্থপরিস্কুট হরেছে। সত্যা, ন্যার ও কল্যাবিকে প্রাণ্ড জানীগতাই তার কার্যাছির। এই সংগ্রামে জাভি বে বিশ্বিত জারী হবে, ভাতে তার বিশ্বজ্ঞার সপ্তেছ ছিল না। ভাই ব্যবছ্রের:

डीय-वर्षा । ३०५8

महा यि वय श्रम्य हात.

सर्व यि ना वय हन.

वर्ष-मूख मा वय हन,

महाम हिन्दु मा वय हन,

महाम हिन्दु मा विन्दु हन।

हाल मय कान विन्दु कन।

(गडायद्य : विरयद वांनी)

ৰুপের বানসিকতা এবং যুগচরিত্র অংকলে নজকলের 'আনশ্যবীর আগবনে' কবিতাটির তুলনা নেই। জাতির বানসিক হানতা এবং জাতীয় চরিত্রের নানা দুর্বলতা কবিকে বিশুদ্ধ করে তুলেছিল। তিনি বাজ বিভ্রূপ এবং কঠোর তিরভারের বারা এগুলি দুর করার চেটা করেছিলেন। কেননা, এসাবের থেকে নুক্তি না পোলে সত্যকার মুক্তি সমূরপরাহত বলেই তিনি মনে করতেন। পরাধীন জাতি সকল মানসিক ও চারিত্রিক শক্তি হারিয়ে আজ দীনতা হীনতার অতল গরেরে নিপতিত—তার মুক্তিচিন্তা কবিকে ব্যথা ব্যাকৃল করে তুলেছিল। কবির একটা কবা থেকে জাতির তংকালীন দুরবন্ধার করুণ চরমতা আমন্ত্রা নিংসন্দেহে উপলব্ধি করতে পারি:

वाक जानत्वत्र तः महात्म (छितिन क्यारि स्थाका शालाम लाभि भाग बाब ठेगाठांग छम्, 'स्लाहार्ड छक्न, यनाम मनाम'।

(जामन्यसीत जानंबरन)

কিন্ত কৰি নিরন্ধ বা নিরাশ ছন নি। তিনি দেশের সংগ্রামী সৈনিক, নিংমার্থ করী এবং নিউকি তরুপদের উৎসাহ-উর্দীপনা দান করেছেন। তিনি জাতির জন্য আসনু মুক্তর বিজরগাধা রচমা করেছেন, তার আন্তর্পক্তির উরোধন করেছেন এবং তাকে ত্যাগাও সহিক্তৃতার প্রেরণা দিরেছেন। করির পথ ছিল স্কৃচিছিত, গ্রাক—জাতির জন্য অপরিসীন বনববোৰ তাঁর এই নিজন্ধ পথ থেকে তাঁকে বিচুতে হতে দেয় নি। পরাধীন, লাভিত ও নিমেপন্ধিত জাতির জন্য তাঁর প্রাপের বর্ষান্তিক বেলনাবোৰণ তাঁকে বিল্লোভীরে থাওা তুনে দুর্গন পথে দুসাব্য সাধনার ক্রতী করেছিল। ক্রিয় জাতিসভার অনুভূতি রাজনৈতিক, ঐতিহ্যিক এবং সংক্ষারজাত বন্ধে, কিন্তু এই অনুভূতি তাঁর তাঁপ্রতা তাঁকে উন্তর্ভার করে তুলেছিল—তাঁকে বিরচিত্তে কান্যবোকের জন্য প্রেন্থ ও সৌলর্বের বন্ধু আহম্বর্প করতে দেয় নি। তাই নিজের কবিপ্রতিত্ত। সম্পর্কে সচেতন থাকা সন্ত্বেও তিনি তথাকান্তি চিরন্তন কান্যদিলেপর সাধনায় আন্তনিবোগ করতে পারেন নি। যুগুর দাব্যীকে উপেন্সা করে এবং জাতির বিষক্ষতের উপদ্যা না করে তিনি মুহুর্তের জন্যও শান্তি পান নি। তাই নিবিবার তিদি বন্ধতে পেরেছেন:

भरताशा कतिना बाँछि वा मा वाँछि बूटभंत हजूभ करते छाटा। याचाय छेभट्य कतिरहन तथि, तरवरह मानात मेठ रहटा। धार्चना कंद्रा—यात्रा करह चीध रडिय काछि बूटबंद धाम, यन क्यो इस जावाद सक्रमचार जारम्य मर्वनाम।

(थावात देककियर: नर्वकाका)

बाजिर बना এरे बाङ्गिक नगर এनः जुगंजीत (नगरमारमाय महिल्लाभुजारन दीप कागारक बीडि बाडीर कारवात्र वर्षामांव खुविङ करबर्छ। अथे र्वलनार्याय कविष बाउरक्ष वर्ष्यापरक विक-क्लारब পरिवेख करविष्य अवः खाब छेश्यवादा छीत्र यक्ष कविकर्धिय जातुरक बाहरक मकाविज हरह-क्ति। छाटे छीत्र बाडीर छिडनावृतक गकन कविटार छीत् क्षिपारी सवात्र गर्या बब्ध शामिनीय व्ह्या, डिनुड चररवारमञ्चलक चन्नडनरक वर्ग एक्षी राशकायन्यनि त्यरक छित्रेरछ । वर्गरकारमञ्ज এই डिल-हीदमाम विषयेनावरे जीव कांवायेनारव जवाबन छेना छ बात्काव कांकिएत जुरमरूछ। এই विभनाव चन्नान, अब लागन छेरागब महान बाबका भष्टि खीत 'माबाबार्गा उ 'मर्वहात्रा'त कविडाक्षणिरङ । कवि त्रवर्ष পেৰেছিলেন তাঁৰ চাৰদিকে অসহায়, গৰীৰ, নিৰ্ণীড়িড, পতিত, শোষিত ৰাম্যেৰ ভীড়। অথচ এবাই তাঁৰ আতি—এদের ভাগ্যের সজে তাঁর ভাগ্য ওতপ্রেত, এদের মঞ্চনারার সজে তাঁর বঞ্চ একট बाएक প্রবাহিত। তাই এই 'বরণীর ধুলিয়াবা অসহায় সন্তান'দের আনন্দ-বেলনার অনুভূতির मक्त कवित्र व्यमुक्तिक कांन भाषिका हिम ना। छात्मक वाना, चभू, स्रवं ७ यानतमा मत्क कवित्र कान बिर्फ्यम छिन मा क्यान। क्यान अस्पर्ध क्रकन। **जा**जिस मर्ज करे क्यांच क्यांच्छारबाय নজকলের জাতি-চেতনার বর্মকথা। তার এই চেতনার মধ্যে ডাই কোন ক্তিমতা, গতমুগতিকতা তা बद्याक्ত किছু নেই। बनुज्जि ও প্রেরণার এই অক্তির, মডিজতালত এবং শতংক্ত বহি:-প্रकार जीव काजीव ভाষধাৰাৰ কবিড। छनिक धर्यार्थ काव। छाप विशेष्ठ करवाछ---- गडाकाव कावा-সতো ও यहरस् यहियान्तिङ करबरङ्। सान-कारनव बाता मीतिङ, तासनीडि এश्वनिव स्वोतिक कावा युष्याव अवः निम्नेश्वर्ण रकान कविरकत्र वाजिना द्याक्रण कत्ररू भारति। अवैद्यारकी अश्वी বৰণাৰৱিক্তাৰ ভূচ্ছভাকে অনাবাস-ভলিষার অভিক্রম করে শাপুত মহিমার গৌৰনাখিত।

ভাতির জন্য কবির তীব্র ও বর্ষদাহী বেগনাবোর তাঁর প্রকাশতদীকে শীক্ষরার ও পাণিত করে তুনেছিল, কিছ কর্কণ বা নীরন করে নাই। ভাতির বুর্রাগ্যের জন্য যারা গারী ডানের প্রতিপ্রচিত ক্রের এবং প্রাসরোধী শাসনবাবরা ও তাঁর বাণীকে ক্রেরার করে তুনেছিল। কবিভার একটি চরপে করি জ ক্র্নাইভাবে বাজ করেছেন: "ক্রেরারোর করে বাণার কোঁপার প্রাণে ক্রেরালী।" (পবের দিনা: কনি-বনসা)। তাই দেবা যায়, কবি ক্রেনে করে বাণার কোঁপার প্রাণে ক্রেরালিক তির্বিক পথ ছেড়ে দিয়ে সোজায়তি আঘাত চানতে ওক ক্রেনেচন। কবির প্রাণের কথা ভাই সোজায়তি নেবনী মুবে আছপ্রকাশ করেছে—অসংকরণ কিংলা মঞ্যক্ষাই আপুরে তা চিরাচরিত কার্যকান্তি নাভের প্রাণী হন নাট। কিন্ত কবিষ্যানের ক্রিয়া মনের্বালিক ক্রিয়া প্রনির্বালিক করিছেন ক্রিয়া প্রনির্বালিক ক্রিয়া প্রনির্বালিক ক্রিয়া ক্রিরালিক ক্রিয়া ক্রিরালিক ক্রিয়া চির-নবীন। করির 'ভাঙার গান' ক্রিয়া 'বুণাভরের গান' গুলাসমে বক্রপান, 'বিরন্ধ-পান', 'বিবের বাণী' খানোর 'সেবক', 'অভ্যন-বর্ম,' বুণাভরের গান' এবং 'অগ্রি-বীণা'' কাব্যের 'বেলপারের ভরণী'ও আবো অনেক ক্রিতার এট স্বভ্যস্কূর্ত কাব্যগুণ কর্প্র হরে ক্রেট উঠেছে।

धनकाः छहाबरमाना तः, नाकित्वा गीमा विश्वसम्बामाः दीमा क्या निम्नानाः पृत्तम कवि निम्नानाः पृत्तम कवि निम्नानाः प्राप्त कवि निम्नानाः प्राप्त कवि निम्नानाः प्राप्त कवि निम्नानाः प्राप्त क्या निम्नानाः प्राप्त क्या निम्नानाः प्राप्त निम्नानाः निम्नानः नि

নাত করেছিন—যা তাকে অনুপ্রাণিত করেছিল, আনপ্রবৃদ্ধ করেছিল, সংগ্রামী চেডনা দিরেছিল— সে আতি কি পৃথিবী থেকে একেবারে অবনুপ্ত হরেছে, না আরাদের মধ্যে আছো বেঁচে আছে আতি বানের বারা নীমিত বটে, কিছ কালের বারা মর। আতীর চেতনাসম্পর্ন আভিন্ন প্রাণের মাধীনতা, কল্যাণ আরু সংগ্রামের মন্ন কোনদিন বিলীন হরে যায় না। যতদিন সে আভীরতার শ্রুমা করবে, আতিসভার টিকে থাকবে, ততদিন তা চিয়-প্রেরণার উৎস হরে বইবে তার ভাছে। যুগে যুগে সেথান থেকে সে আর্থাক্তি সংগ্রহ করবে, সন্তাবোধ আহরণ করবে এবং নিজৰ আতীর সভার বহিমান্তিত হবার সাধনার নিশ্র থাকবে। কোন আতীরতারানী বাঙালীর কাছে সক্রমনের এই কথাগুলি কোনদিন পুরাতন হতে পারে না:

> जुष्टै निर्कत कर् जाभनात भन्न,
> जाभन भठाका काँच जूटन बन् अत, य भाग गांक् तम, जुष्टे अपू वन 'जामात द्यान नव।' वन् 'जानि जाहि,' जानि भूकरवास्त्रम, जानि जित-पूर्णन। वन् नादि जन्न, नादि जन्न, वन् मोटें: मोटेंड:, जन्न मरजान जन।-----

> > (जडर-नद्र : विर्यय वीनी)

এগুলি কোন দর্শন বা তর্কণা নয়—নজকলের যতে বাষ্ট্র নিয়ে যে সমষ্ট্র, ব্যক্তি নিরে যে আতি, সেই ব্যক্তি বা আতির বর্ষে আশা, শক্তি এবং আশুবোরের সঞ্চাবমাত্র। প্রেরবোধ যেরন চিরন্তন, এই আশুবোরও ব্যক্তি বা আতির যনে তেরনি চিরন্তন—এটাকে ছাড়লে ব্যক্তির ব্যক্তির আতির খাকে না, যেরন প্রের ছাড়লে থাকেনা বনুষার। জীবনের সঙ্গে সাহিত্যের যোগ আবরা এসব ক্ষেত্রে মেরণত পাই, বাস্তব বজিত ভাবলোকের মধ্যে নয়।

পৃথিবীতে সমস্যার রূপান্তর-পরিবর্তন যটে, অনেক প্রয়োজন কুরিয়ে যার, আবার সতুন প্রয়োজন আনে, কিন্তু সত্যে আর নাারের প্রয়োজন কুরায় না। সত্য আছে বলেই বিখ্যাও আছে, বিখ্যার সঙ্গে সংগ্রাম আছে। নজকল সেই বিখ্যার সঙ্গে সংগ্রাম করেছিলেন সভ্যের জনা, সভ্যক্তে প্রতিষ্ঠিত করার জনা। এর বধ্যে চিরস্তনর আছে কিনা, এটা চির মানবের মনোগত বাসনা কিনা, তার হৃপরানুভূতি কি না, মনে হয় তা প্রস্থোর অতীত। নজকন ব্যাহিনেন:

अम विद्रादी विचा।-मूनन जायमंकि-नुष बीव। जारना छनक मछा-क्भांन, विक्रमी सनक भारत-जनित।

(वाष्ट्रनिष्ट : विरम्द वीनी)

নজন্মনের এই সতাবোধ জাতীর সন্তাবোধ থেকেই উপজাত। তাঁর বাঙালী বা ভারতবাসীকে সন্তা, নাার ও কন্যাবের প্রতিষ্ঠা ভূমিতে প্রতিষ্ঠিত করেই তিনি তাকে চিরন্তন মূজি নিতে চেরে-ছিলেন। তাই তাকে আছম, আমনির্ভরনীন এবং সতাবোধে উমুদ্ধ করেছেন। কৰিব এই বাঙালী জাতির সন্তাবোধ ভারতীয় জাতি-চেতনার এবং জালো প্রসারিত হতে বিশ্বচেতনার পরিণত্ত হরেছে। এজনাই জাবরা বাঙালী বিজ্ঞাহীর বিশ্বজনীন বা চিরন্তন মণের

नविष्ठव नाहे 'नित्त्राही' कविष्ठव। कि अहे नित्त्राही ए मुनजः बाडानी, छ। हिन्नटा ना मुन्नटा खुम इत मा, यथन जिम्बारम्य मेंनी नारम्य हार्छत्र मेन्द्री हरत राचा रमत. यथन रम 'भावन-প্ৰাৰন बना। হয়ে আদে, बर्बन দে ঘৌৰনভীতু পদীধানাৰ আঁচৰ কাঁচনিৰ বোছিনী বাহার আকৰ্ষ करन। अवैज्ञारि कवि अरे ऋराम ऋगरक बांडांनी काजिमहारक बांबीन विगु-काजिमहान बांग हिनार्य, योक्टानीय कीयनरक विणुकीयरमय अकृति विर्लय भिक यरन छेलनकि करबर्छम।

শাশুভ ৰাঙালীয় মতো শাশুভ বাংলান ক্লপকল্পনাও কৰিন জাভিসভাৰ অনুভূতি খেকে ठेभवाछ। এই ऋभक्ष्ममात्र (स्थायुकात वानमनती, कमाभिनती ऋरभन भविष्ठा वार्छ। कि यूत्र ७ बाजित श्रीकारन कवि छीत्र क्रजानी, बनिन-नानिनी मुख्तिरे बाबारन करवरण्न। भूविवीत्र भानन-मक्ति, बारमरबर बजाहार, निर्वीर्धिय कानुक्वजा, उरक्ष रेजरजा वरः वार्षभरतय मीहजा চূर्य कराज-बाजिनहार लानवृक्त, कन्वशीन, निर्वत वृज्ञि बहना कराज लनवाजार हजी छन्।विनी निक-मुख्यि द्याताक्षम मक्रमनाजी, अञ्चयममा मन्याजात्र क्रमानी क्रालंत्र भूकाती कवि जारे तकावत बाबिनी मानव-मनमीरकष्ट जीव श्रार्थित छेपठात 'गरम बाजवब'-बर्ड रेनरबमा निरबद्धम। बिथु-নন্দিতা, জগৎ-তামিণী ভারতবাতার বিশুবোহিনী মাজরাণী স্কাপকে কবি খেন কবি-কল্পসায় প্রভাক করেছেন। এই উদারহদরা ভারতগন্দীর অংকে কণ্ড বিভিন্ন আভি বুগে বুগে বাশ্রম नांड करबर्फ्-- जिनि निरक्षक निःच करब, जांग-जिजिक।-मृःरवेत्र मोशरन मक्ष शरब जीव नजांनरम भानन करब्राञ्च। जाक এই जनिया भान-जनाँदि मःश्वादनीनीय हिःमा-विय-विकासी पूर्व हर्य व्यानात्र भूर्यात्र व्याजित्ज, ऋरवत्र व्यानत्म भृषित्री भूनं इत्य। व्यापि क्याप्तत्र भाषभीठे এই भनिज डीर्प बानरबन्न हिन्न-कमानि, हिन-नान्ति निहिन्छ। कवि এইडार्य शीनवनीक्ष बेडिरहान बाजनरने (मन-कननीय नागुछ ऋभ-देवडव कःकन करबर्छन।

কৰিব আভিদন্তার উৎসভ্বি ভাৰভবর্ষের পালে তাঁর চির-আদরের চির প্রিয় স্থানরী বজ্জনদী व्यवनान क्रवाह्मन। बुरक डीव व्यनःना व्यन् निमानी नवननी, निष्त्र स्वय-हिन्द्रम, हन्नरन সাগৰ-निश्चिमी। ডিনি कान-देवभावीएड উন্মান্তা, প্রবাধ কর্মানা ক্রন্সদী, नवर् हामावरी, रहबरक नामानिमानिनी, नगरक वानवन-कछिछ। 'क्न-नव्'। कवि এह विश्वविद्यादिनी नाशुक ञुलबी बळवाकांत्र धनेषि शिखरह्न :

> नवः नवः नरवा छित्र बरनावतः

गंडना (एल यब ि विश्व मध्य ।

वर म्हान्य गाहि वि वन वि ख्या ष्यान अप्टे नुरक

जम ७ क्ला करम, नाषि ज्यक्रान, **बरे बारबर बुरक** श्राप्त श्राप्त সপাত্ৰ।

(यरमनी भाम'ः यमगीछि)

नवक्रम अकारहरी शिक्सा | २३

कि बारमा बारबब धेर भागिकिमी ऋत्भ मुद्ध, छिर छिनि बरमनः

वामान भागिना यथ्न बांडमा बारबव

क्रम एएटचे या, व्यायटन कांड।

निवि मनी बरन बार्ड शास्त्र क्रम छानिरह बाद।

(५१भः शाम: सूत्र-मानी)

कवित्र ट्रिटिंग अहे मात्रिय-वहाँगी तिनवाछ। कवरना छैनिति। देवहांशिनी, कवरना श्रावनिव-विद्यांतिमी छीक वालिका, कवरना वर्छत गर्ण छाउवन्र छो छैनु छा, कवरना वरनत वरना मान-वाव-छानूक निरंद की छोत्रछ। हितर नरा छोत्र काँछन स्मारत, विक्रिएड मून्त भारक, मह्याजातात हिन् खुल, छोछितानी वाछन खुल ग्रावन मानार कानात छोत्र वृक्ष छारम थात्र। 'की द्वान-मागत-कन्छा' अहे स्मनेशांछ। छीत्र मह्यानश्यात छित्रकाम की तन्त्र मिर्टा, नवीन थारनत वक्षति। मिर्टा, भारा खुल। मिर्टा भारान करता छन्।

কৰি নজকলের কাৰ্যে এমনি করে শাশুত ৰাঙলা ও বাঙালী, বাঙালীর যুগরানস ও যুগচরিত্র, তার ধানি-কল্পনা-অপু-আশা, তার জীবন ও জীবনদর্শন, তার প্রাণ ও প্রতিভার যাক্ষর সর্বাধিক উজ্জ্বলাে ও কারাগুনে সমৃদ্ধ হরে প্রকাশিত। বাঙালীর জাতীয় সাহিত্যের আধুনিক পর্বে নজকল কারা তাই সর্ববৃহৎ ও সর্বশ্রেষ্ঠ অংশ অধিকার করেছে। বাঙালীব নিজস্ব সম্পদ্ধপে নজকল-কারা শাশুত মহিনা ও গৌরবে ভাসর, অধিনশুব।

जिसारिक तक्करण नाशाक्षीन जाश्वन

নজ্জন ইনদাবের অপরপ ব্যক্তিবের প্রকাশ তাঁর প্রবন্ধ সাহিত্য। সেধাদে বে প্রতিতার সংগে আরাদের পরিচর হর তিনি একাবারে কবি, চিন্তাবিদ বনীবী, রাজগীতিক, সরাজ-সংভারক, জাতি সংগঠক, সংভৃতি-নির্বাতা এবং সর্বোপরি আত্মসচেতন তীক্ত চোঝ স্বাদোচক। সজ্জনের এই প্রবন্ধসমূহের বধ্যে বে-ওনি তাঁর 'বুগবাণী', 'পুদিনের বাত্রী', ও 'ক্ষত্রকল' এই তিনটি প্রবন্ধ গ্রেছ হাপা হরেছে তালের সংখ্যা বোট ৩৬টি। এই প্রবন্ধতানির অধিকাংশ সাদ্ধ্য দৈনিক 'নববুগ', ও পাক্ষিক 'ধুসকেতু'তে নিবিত সজ্জনের সম্পাদকীর প্রবন্ধ। হুটি প্রবন্ধ 'আগ্রবণী', 'আমি দৈনিক', 'মন্দির ও বসজিদ' 'হিন্দু-মুসলবাদ' এবং 'নোহর্রম' ও 'বিদ-বাণী'—ব্যাক্রমে ১৩২৭ সালের আবাদের 'বকুল' ১৩২৯-এর কাজিকের 'বুমকেতু'তে, ১৩৩২-এর ভান্ত-আগ্রিণের 'গণবাণী' এবং ১৩২৯-এর ভান্ত-আগ্রিণের 'বুমকেতু'তে প্রবন্ধানীর প্রবাদির প্রকাশিত হয়।

গ্রন্থকারে সংকলিত নয় এখন প্রবন্ধগুলি ছ'ল: ১. তুর্ক বহিলার ঘোষটা থোলা, ২. রাজধর্ণীয় জনানবলী (ক্ষুদ্র পুলিকা হিলাবে প্রকাশিত), ৩. বড়র পিরীতি বালির বাঁধ, ৪. বর্ত্তরান বিশ্-লাহিতা, ৫. ওমরের কাব্য ও দর্শন, ৬. বর্ধারন্তে, ৭. আজ চাই কি, ৮. আমার স্থান্ত, ৯. সভারাণী, ১০. বার্ধতার বার্ধা, ১১. ধূরকেতুর আদি উপয় সমৃতি, ১২. ধর্ম ও কর্ম, ১৩. 'ক্লাইরাং-ই-হাকিজে'র মুব্বন্ধ, ১৪. বুলবুল-ই-পিরাজ ১৫. কাব্য আন-পারার আম্বন্ধ ও ১৬. বাঙ্কলা ও বাঙালী। এ-ছাড়া তাঁর লিবিত ক্ষেকটি প্রশংসামূলক পুল্কক পরিচিতি আছে। বেমন: আবুল মনস্তর আহমদের 'আয়নার প্রেম', মুহম্মদ মনস্তর উদীন সম্পানিত 'হারা-বিশি', বেনলীর আহমদের 'বলীরে বাঁণী', আব্দুল কাদির-এর 'দিলক্র্যা', যোগাম্মদ কাদেবের 'আগানীবানে স্বাপ্য', বোহাম্মদ স্থলতান অনুদিত 'শেকওর। ও জবাবে পেকওরা', স্থক্ষিয়া কামানের 'গাঁবের বারা', বর্ষাচ্রণ বজুম্বদারের প্রথারার পর্য' ও' গিরীণ চক্রবর্তী সংগৃহীত 'স্থলনের গান'।

এ-ছান্তা তার পার্চস বিজ্ঞান ও জীব বিজ্ঞানের উপর তিনটি প্রবন্ধ আছে: ১. জনবীপের প্রতি, ২. পশুর বুঁটিনাটি বিশেষর ও ৩. জীবন বিজ্ঞান।

ৰনা বাছনা উপৰোক্ত প্ৰবন্ধসমূহ ভাড়া নজকলেৰ অভিভাষণগুলোকে প্ৰবন্ধ হিপাৰে গণা করা যায়। কৰি আৰণুৰ কালিব সংকলিত ও সম্পাদিত নজকল বচনা সম্ভাবে এগুলি বুলিত হ'বেছে। এই অভিভাষণের সংবায় ১২টি: ১. ১৯২৯ সালে এলবার্ট হলে প্রদত্ত প্রভিতাষণ, ২. ১৯১২-এব সিরাজগঞ্জের অভিভাষণ 'ভরুপের সাধনা', ১. ১৯২৯-এ চটগোনের বুলবুন সোগাইটির বানপত্তের প্রভিতাষণ 'প্রভিতাষণ', ৪. ১৯২৯ প্রীটান্দে চইগোনের একুফেশন সোগাইটির প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে অভিভাষণ 'মুসনির সংস্কৃতির চর্চা', ৫. ১১৪১ সালে করিলপুর জেনা বুলনির হাত্র সন্মিননীতে প্রভাষণ অভিভাষণ 'বাঙনার মুসনিরকে বাঁচাও', ৬. ১৯১৮ প্রীটান্দে দৈনিক কুষক

পত্রিকার অকিনগৃহে জনসাহিত্য-সংসদের গুড় উরোধনে অন্তিভাষণ 'জন-সাহিত্য', ৭. ১৯৩৯ খ্রীটান্দে উন্তাদ অবিক্রমীন খার মৃত্যুতে অনুষ্টিত শোকসভার সভাপতির অভিভাষণ 'উন্তাদ অবিক্রমীন খার, ৮. ১৯৪০ সালে কনকাতার বলীর মুস্নরান সাহিত্য সমিতির ইন্দ সম্বেদ্ধে প্রদন্ত সভাপতির অভিভাষণ, ৯. ১৯৪০ খ্রীটান্দে কনকাতার নিরাজী পাবনিক বাইব্রেরী ও জি বিভিং ক্রম-এর হারোন্হাটন অনুষ্ঠানে প্রদন্ত অভিভাষণ 'শিরাজী', ১০. ১৯৪০ খ্রীটান্দের ১০শে ভিসেম্বর করকাতা মুসনিম ইনসিটাট্টট হলে কনকাতা মুসনিম ছাত্র-সন্মিননের অভিভাষণ 'আলাহর পথে আর্সমর্বণ', ১১. ১৯৪১ খ্রীটান্দের ১৬ই মার্চ বনসা সাহিত্য সভার চতুর্ধ বাধিক সন্মিননে প্রণত্ত সভাপতির অভিভাষণ 'ম্পুর্ম'। একসাত্র 'ইন্মাইন হোসেন শিরাজীর উপর প্রদন্ত ৮ সাইনের ভাষণটি ছাড়৷ প্রভারনটি প্রবাদ্ধানের দীর্ঘ অভিভাষণ। স্বতরাং এওলিকে প্রমান প্রণা করাই বৃদ্ধি সংগত।

প্রথম, পুস্তক আলোচন। ও অভিভাষণ নিলিয়ে নম্বরুলের গদ্য রচনার সংখ্যা বাঁড়ার (গম্প-উপন্যাস, পত্রোপদ্যাস বাদ দিয়ে) ৭০টির উপর। এই দেশাগুলিতে ব্যক্তি, জাতি, ধর্ম, দেশ, সরাজ, সংশীত, সাহিত্য ও সংস্কৃতির উপর নজকলের স্বালোচক স্থলভ মনোভংগী প্রকাশ পেয়েছে। এ-ছাড়া এ পর্বন্ত প্রকাশিত তাঁর চিঠিপত্রে তাঁর ঐ স্বালোচক দৃষ্ট অনাবৃত।

নজকলের প্রথম স্বালোচক প্রলভ মনোভার লক্ষ্য করা যায়। ১৩২৯-এর কাভিকে 'সওপাডে' প্রকাশিত ভার প্রথম প্রবন্ধ 'ভূর্ক মহিলার বোমটা বোনা'য়। এটা ছিল ১৩২৫-এর বৈশাবের ভারতবর্ষে শ্রীহেনেজকুমার রায় লিখিত ভূর্ক মহিলার রূপ সম্পর্কে বিরূপ আলোচনার প্রতিবাদ। বেশ শাখালো তীব্র সাহসী ভাষায় নঞ্জল ঐ আলোচনার প্রতিবালোচনা করেন। এই ভাষা ভঙ্গীর একটু নরুনা এখানে দেওয়া যাক:

তবে ও সন্ধরে এ গরীবের যৎকঞ্জিৎ বন্ধবা আছে। প্রথমতঃ, New York Herald নামক আমেরিকান সংবাদপত্রের অচিন লেখকের তুর্কদের সন্ধরে অভিজ্ঞতা নিয়েই আবার একটা বঁটকা বেধে গেছে। আজকাল অনেক লেখক যরে বসেই পুনিরার বে-কোনশানের অমপকাহিনী অসজোচে লিখে খাকেন, এ একটি নিদারুপ সন্তিয় কথা। তাঁরা হয়ত বিখ্যাত অমপকারীর কাছ থেকে তনে, নতুবা কোন অমপবৃদ্ধান্ত পড়ে এবং তাতে কিছু ঘরের তেলমসালা সংযোগ ক'রে আবান্দের সামনে এনে হাজির করেন এবং আমরাও ক্তার্থ হ'রে যাই। আমিও ঐ লেখা পড়েছি, তাতে তিনি যে তুর্কদের সন্ধরে অভিজ্ঞা, তা কিছুতেই বোঝা যায় না। হতে পারে তিনি কিছু দিন বা বুব বেলী দিন সেখানে ছিলেন, কিছ তিনি, আবার যতকুর সন্ধর বারণা, সাদা চোঝে কিছুই দেখেননি। সাহেব তুর্কদের সন্ধরে যে-সব বাজে বক্তেছন, সে সন্ধরে কিছু না ব'লে আমি কেবল তুর্ক মহিলার সৌশর্ষ সন্ধরে যু-চাথাটী কথা ব'লে এই নীরস গল্যের অবসান করব।

এই ভাষার সাহেবের নাবে শুদ্ধায় আড়জিড বাঙালী স্থলড কোন হীনবনাডা নেই। ২০ বছরের মজকল বে যথেষ্ট আছসচেডন এবং আছবর্বাদাসম্পন্ন ব্যক্তিৰ তাঁর এই লেখার সে-বিক পরিস্কৃট। সাহেব হ'লেই বে সে দেবভা হবে এবং ভার বাকা হবে বেলবাকা নজকল ডকল বরুস বেকেই ভা खाबरक ब्लंदिन नि। खाँहे 'बारक बरकरहन' अवन कथा बनारक जिनि माहनी ७ मरकाहबीन। जीव अहे निकृष्ठे माहरमद क्षेत्रां १५वि जीव 'बङ्ग निरीक्ति बावित्र बीव' नावक क्षेत्ररहा स्वयोग जिनि वरीक्षमांबरक भवित्र कृत्रवाद जावाद जाक्रमन करवरहन:

बीबाहे ब्लाङा भाव बाब हाएड, डांटकड माठि घुनाएड स्थित मू:बंड हव, हामिड भाव। भारमाबानी बाडाबाडिएड कि व कब बान, डा ड बना मुहक्का।...

আজকের 'বাওলার কথা'র দেখলায— থিনি আর ধৃতরাংশুনি লড পুত্রের পক্ষ হ'রে পক্ষপাঞ্চকে লাজিত করবার সৈনাপতা গ্রহণ করেছেন, আমাদের উভয় পক্ষের পূজা পিতাবছ ভীম্ব-স্ব সেই বহার্থী কবিগুরু এই অভিযন্যবধে সায় দিয়েছেন। বহার্যজন ভীম্ব এই অন্যায় বৃদ্ধে সায় দেননি, বৃহত্তর ভারতের ভীম্ব সায় দিয়েছেন এইটেই এ-বৃশের পক্ষে সবচেয়ে পীড়দায়ক।

এই অভিনন্ত क्षी मान क'त्र कथिक जामात्र वान नित्कल क्राए ছाएएननि। बालएएन, जामि कथात्र कथात्र 'तक'त्क 'बून' बाल जनताम करबाहि।

কৰির চরণে ডক্তের সমুদ্ধ নিষেতন, কৰি নিজেও টুপী পারজায়। পদ্ধেন, অবচ আহরা পরকেট তাঁর এত আফোশের কারণ হ'বে উঠি কেন, বুখতে পারিনে।

এই আৰবী-কাসী শব্দ প্ৰয়োগ কৰিতায় ওধু আমিই কমিনি। আমান বছ আগে ভারতচন্ত্র, রবীক্রনার্ব, সভ্যেক্রনার্থ প্রভৃতি ক'রে গেড়েন।

....এ একটু ভালো শোনাৰার লোভেই, ঐ একটি ভিন দেশী কথার প্রয়োগে অপূর্ব রূপ ও পতি দেওয়ার আনক্ষেই আমিও আরবী-ফাসি শব্দ ব্যবহার করি। কবি-গুরুও কডেলিন আলাপ-আলোচনার এর সার্থকভার প্রশংসা করেছেন।

व्याप वात्राप्तव वरन इंटप्ट, वाक्यरक्त वनीतानाथ धात्राप्तव राई हिन-रहना वनीतानाथ नन। डीन र्ल्फटनव रेवबोक्वथ পश्चिष्ठ এ-गर्व बनारक्ट डार्फ।

'ৰুন' আনি বাৰহার করি আমার কৰিতার, নুসলমানী বা বল্পেডিকী রং দেওয়ার জনা নয়। হয়ত কৰি ও-পুটোর একটারও রং আজকাল পড়শ্দ করবেন না, ডাই এত আচ্ছেপ তাঁর। আনি শুদু 'ৰুন' নর—বাংলায় চলতি আরো অনেক আরবী—ফাসি শন্দ বাৰহার করেছি আমার লেবার। আমার দিক থেকে ওর একটা জবাবদিহি আছে। আমি মনে করি, বিশ্ব-কাবারশ্বীরও একটা মুসলমানী চং আছে। ও সাজে তাঁর শ্বীর হানি হ'য়েছে বলেও আমার জানা নেই। স্বানীয় অজিত চক্রবর্তীও ও-চং-এর ভূয়ণী প্রশাসা ক'রে গোছেন।

बारना कांचा नक्षीरक पृष्ठि देवानी 'स्मध्य' পরালে তার জাত নাম না, यतः তাকে আরও 'बुब सुवर्ड र ज्योव।

खाकरकत कना-नक्षीत थीय व्यर्थक यनकात्रिंड यूगनवानी हः-এत। वांधरतत এ कर्मत शरहाकन ७ भोक्तार्थ गकन निम्भीट चीकात करतन। भश्चिट यानित्या चीकात क्यरह ना भारतन, किन्न प्रवीक्षनार्थ ७ व्यवनीक्षनार्थ चीकात क्यरहम।

छ। ছাজা यে 'बूरन'त्र जना कनिश्चम त्रांग क'रत्रछन, छ। पिनताड वार्यछ ह'राष्ट्र जाबारमत्र क्वांत, कानात बरक्र (Colour box) এব: छ। बून-क्वा, बून-हश्या हैडााणि बूरमाबूनि वालाराइड नव। हमरत्रवश 'बून-बाबाबी' ह'रड स्पनि जारका।....

.... কৰি-গুলু ৰদে কৰেন ৰজেন মানেটা আৰও ব্যাপক। ওটা প্ৰেৰেৰ কৰিভাতেও চলৈ। চলে কিছ তথন ওতে ৰাগ নেশাতে হয়। প্ৰিয়াৰ গালে যেমন 'ৰুন' কোটে না, ভেমনি ৰজ্জও কোটেনা—নেহাৎ দাঁত না কোটালে। প্ৰিয়াৰ সাথে খুনা-খুনি হয়ত খেলিনা, কিছ খুনস্থাড়ি হয়ত কৰি।

কৰিগুল কেন, আজকালকার অনেক সাহিত্যিক তুলে থান যে, বাংলার কাব্যলস্থীর ভক্ত অর্থেক মুসলমান। তারা তাঁদের কাছ থেকে টুপি আর আচকান চার না, চার বাবে বাবে বেহালার সাথে সারেজীর স্থর শুনতে, ফুলবনের কোকিলের গানের বিরতিতে, বাগিচার বুল্-বুলির স্থর।

এই সমালোচনাটি আক্রমণান্তক নি:সন্দেহে। হয়ত বা উগ্রভায় বুল। কিন্তু এই লেখাটি থেকে অনুমান করা থায় নকর্মলের শিলপী-সভার পিছনে এফটি ছতি-প্রথম অতি-সচেতন সমালোচক-সভার দৃষ্টির প্রহরা ছিল। নিছক আবেগের দাসহ করার মত উদাসীন ভাবুক তিনি ছিলেন না। প্রতিটি কাজের পিছনে তাঁর চিন্তা কাজ করত।

সমালোচকদের কাছ্ খেকে আমর। প্রারাই একটা অভিযোগ গুলি যে নজকলের সাহিত্য সাধনার পিছনে তেন্ন কোন পাঠের প্রস্তুতি ছিল না। এ-ছনো নজকলের শিলপ-দক্ষতাকে অনেক আধা শিক্ষিত সমালোচক 'অশিক্ষিত পদুর' বলতে সজোচ করেননি। এখানে বলে রাখা দরকার যে কোনো শিলপকলাই বিনা শিক্ষায় অর্জন করা যায় না। প্রতিত্তা যতই দৈবী ছোক বাস্তব শিক্ষা ভাবে গ্রহণ করতেই হবে। অবশা শিলপী যে সর্বল এই শিক্ষা প্রকাশাভাবে পাঠশালাম, বিদ্যালয়ে অপবা বিশ্ববিদ্যালয়ে গ্রহণ করেনেন তেনন কোন কথা নয়। জগতের অনেক বড় বড় কবি-শিলপী তেমনভাবে শিক্ষা গ্রহণ করেননি। কিন্তু তাঁলের এক উপারে শিক্ষালাভ হয়েছে। যেমন ধরা যাক শেকস্পীরারের কথা। স্বাধিউ জার্নকড বলছেন:

Shakespeare was no deep reader. True, but in the Greece of Pindar and Sophocles, in the England of Shakespeare, the poet lived in a current of ideas in the highest degree animating and nourishing to the creative power; society was in the fullest measure, permeated by fresh thought, intelligent and alive. And this state of things in the true basis for the creative power's exercise, in this it finds its data, its materials, truly ready for its hand;

নজক্ষনের বেলায় এই কথাটা সমাদভাবে প্রযোজা। নজক্ষন, মধুসুদন, বজিমচন্ত্র, রবীক্রনাথ, সভ্যোজনাথ, শরৎচন্ত্র প্রমুখ পূর্ব সুমীকে যে তাঁর ভাষার মাধ্যমে পেরেছিলেন তাই নর, তিনি তাঁর সমাজ পরিবেশের জনা, সৈনিক জীবনের পরিবেশের জনা করেকজন জগরিখ্যাত পারসী কবিকেও আত্মান করতে সমর্থ হরেছিলেন। এছাড়াও পেরেছিলেন বিংশ শতাব্দীর উচ্চ মধ্যবিত্ত বাঙলার শিক্ষিত বুজিজীবী সমাজ। ধেলাকত আলোলন, বলশেভিক আলোলন, অসহবোগ আলোলন, সম্মান্থাত এবং তালের কর্মীদের সহবাস নজক্ষন পেরেছিলেন। এই সহবাসের শিক্ষা নিছক মানুলী ব'লে ভাবা জনুচিত।

এ-ছাড়া चार् किवित पर्छक्रिया निका। वर्ष वृष्टिय महारया कि शक्कित व्याक छाष।
वृष्टि भारतन। अरे बद्रानय अविते क्या भौगिष्ठीन कद्राक निवित्र नक्किरमा এकि विवित्र स्वाकि विवित्र स्वाकि विविद्य स्वाकि मिक्कि विविद्य स्वाकि स्वित्र स्वाकि स

क्षेत्र इति निक्कृति प्रशासना अधिकाति धाराधन पर्छ। कायन नार्वत वाकारव निक्नीत जनवा कथित छडावनी निक्कित्वि भारा। এই नार्वा पछात्र श्रीष्ठ अनुश्माठी छित्तन नत्त जार्नेन्छ उत्रार्धमध्यार्थस्य म्यात्नाहना क'त्त वनरङ्गः

Wordsworth cared little for books, and disparaged Gfoethe. I admire Wordsworth, as he is, so much that I cannot wish him different, and it is vain, no doubt, to imagine such a man different from what he is, to suppose that he could have been different. But surely the one thing wanting to make Wordsworth an even greater poet than he is—was that he should have read more books, among them, no doubt, those of that Goethe whom he disparaged without reading him.

এই বিষয়টি যে নক্ষকলের জান। ছিল না তা নয়। বেগৰ শাসম্প্রাপ্তার বাহৰুপের কাছে লেখা চিঠিতে নজকল বলছেন:

বড় বড় কবির কাব্য পড়া এইজনা দরকার যে তাতে কলপণার ছাই বুলে যায়, চিন্তার বন্ধবাবা মুক্তি পায়। বনের বাবে প্রকাশ কবতে না পারার যে উর্বেগ, তা সহজ হ'য়ে ওঠে। বাচির বাবে যে পত্র-পুষ্পের সন্ধাবনা, তা বর্ণপের অপেক। বাবে। নইকে তার স্তিব বেদনা বনের বাবেই ওম্যের বরে।

खमा এक ठिठिएड जिनि नीमिठीन कराक निर्वाहन :

পড়া চাড়িগনে তুই, তা'ছলে তোকে শেগায় গাড়াবে। অৰশা পণ্ডিত হ'তে আনি বলছিনে, কিন্তু আনাৰ আনন্দকে প্ৰকাশেৰ পুঁজিও আনাৰ পাৰা চাই।--- জৰুলগাৰেৰ মত তোৰ পেনিটা গজগাল কৰুক বিদ্যোয়, এ আনি বলছিনে: তাই ব'লে জানতে শুনতে যতিকু জানা শোনাৰ দৰকাৰ—তা থেকে নিজেকে আনালা কৰে নাৰ্থি কেন!

এই উপদেশ যিনি দিবেছেন তাঁৰ পাঠাত্যাস একেবারে ছিল না। এমন মনে করা সম্বত্ত অসকত। এ-প্রসংগে নংক্ষানের বর্তমান 'নিপু-সাহিত্য' প্রবঙ্গানি উল্লেখযোগা। এখানে আবরা একসকে যে কজন কবি-সাহিত্যিকের নাম উচ্চাবিত হ'তে দেখি, তাঁলের সাহিত্য আলোচিত হ'তে দেখি, তাঁরা হলেন: মিল্টন, শেলী, নোগুটি, ইরেটস, রবীক্রনাথ, গুরিং বোহান বোরার, বার্নার্ভ শ', বেনাতাঁতে, নিউনিন আন্তিত্ত, নুটে হামস্থান, ওরাদিশ্ল বের্মান, আনাত্যেল ক'লে, কীটন, হুইট্ন্যান, বেরেনকোড্রি, পুশ্কিন, দম্বর্জনি, টল্টর, কার্নার্ক্স, ইবনেন করেত, ব্যানজাক, জোলা, প্রাংশিরা দেনেকা, শুলোননভ্নিও, কিপলিং।

गर्मार्याणीया रवेड बनर्यन (व राजंर्यन शर्म श्रंष्ठ शांठ मा क'रबंध छारमंत्र मार्यंब छानिका पिछता महन। जिन्न (नभवछवा (नारहिन्दान नकक्रतम मनव क्लाबाव हिन (य जिनि अंड क्रे পড़रबन। ए'एड भारत छा; এর সমন্তটা যে ভিনি ऐন बिहुदेन नाहेन भ'ড়েছেন ভেমন ভাষাপত धवाप (पश्या वृष्टित। किन्छ नाजिनम निःएइव "नककत क्या" (पाक जाना यात व नककन এক সময় মুদ্ভি-মুড়কির মত বিশ্ব-সাহিত্য পাঠ করেছিলেন। ভাছাড়াও নজকলের করেকজন वक्रक बबु फिरमन विभू गोशिरछात्र चमुत्रांगी भार्तक। छीएम महम बारमाहनाम छिनि छिपिर-গতিতে ঐ সৰ সাহিত্যিকদের আদ্বসাৎ করেছেন। নজক্লনের স্মৃতিশক্তি যে অসাধারণ ছিল তার তথাগত প্রবাণ পাওয়া গেছে। ব্ৰীজনাথের বছ কবিতা, গান এবং পোটা গীতাঞ্জনি নককণের बुबंद हिन। এक्यात्र बरनारगांश जिरस जबरन चवना छन्एन नककन एव छ। जुनछ। ना नककरनद बागःचा हिन्-भूत्रान अ बुगनिय भूत्रान धाराण (बाक जा वाबा याय। किन्न सक्कन भी बन्त्रच त्रावरक रमना এकि विकित्त नमाइनः 'जामात्र मत्नत्र क्रित्व कार्यत्र मृत्रने निक अके रनी।' অন্তএৰ উদ্বৃত্ত লেখকগণের সাহিত্য যে তাঁর চোধের দৃষ্টিতে ধরা পছেছিলো তা ধলা যেতে भारत। बना यात्र बात्र अधिकता या मककरनत्र वे श्वकारि कान शान्का माहिला भविष्य मत् बीडियङ विश्वनाष्टिरङाव विद्भावनाषाक नयात्नाहना। भडीव भांठ डिन् ड्ननायुनक विहास मञ्ज वस ना। 'बर्ज्यान विभूमाधिजा' ध्रवहाँहै এकहि जुननायुनक माधिजात्नाहमा। छैनविः विश्व শতাক্ষীর বিশু-সাহিত্যের সাহিত্যিকদের তিনি দুটি ভাগে ভাগ করেছেন। ইব্রাহীর বার কাছে দেবা **डिडिएड भक्कम बरम**िएसनः

(वननाव गान (गार्य) बाबाएक नवीन माहिजा-ग्रहोएक बना नृजन मिरहामन गंदि जून्ए हरन। जाता यि कालिमाम, हरवित्म, त्रवीक्षनां अज्ञि क्षेत्रग्रहोएक भीटन बगर्ज ना-हे भाग, भून्किन, मखग्रज्कि, हहोत्रान, शिक, योहान वागार्वक भीटन बृनिक बागरन वगवात अधिकात जाता भीटवरे।

'বর্তমান বিশুসাহিত্যে' এটাকেই তিনি বিপদতাবে আনোচনা করেছেন। আলোচনার শুক্ষ করেছেন তিনি এইভাবে:

বর্তমান বিশ্ব-সাহিত্যের দিকে একটু ভালো ক'রে দেখনে সর্বাথ্যে চোঝে পড়ে ভার দুটি রূপ। এক রূপে সে শেলীর Skylark-এর মত নিল্টনের Bird of Paradise-এর মত এই ধূলিমলিন পৃথিবীর উঠেই উঠে অর্থের সন্ধান করে, ভার চরণ কর্বনো ধরার মাটি স্পর্ণ করে না, কেবলি উঠেই—আরো উর্থেই উঠে অপন লোকের গান শোনার। এইখানে সে অপনবিহারী।

আর এক রূপে সে এই বাটির পৃথিবীকে অপার ব্যতায় বাঁকড়ে ব'রে থাকে।---এইথানে সে বাটির দুলাল। বুলি-বলিন পৃথিবীর এই কর্ণবাঞ্চ শিশু যে স্থান্তক অধীকার করে, সে বর্গকে চার না তা নর। তবে সে এই দু:খের ধরণীকে কেলে স্থানরের অর্থালোকে যেতে চার না। সে বলে: স্থর্ম যদি থাকেই তবে তাকে আবাদের সাধনা দিরে এই ধুলার ধরাতেই নামিরে আন্ব। আবাদের পৃথিবীই চিয়দিন তার গাসীপনা করেছে, আরু তাকে এদে আবাদের বাটির বারের দাসী করব। এর এ উক্তাত্যে স্থান লোকের দেবজারা হালেন। বলেন: অন্তরের অহন্তার, কুৎসিতের বাতনারী। এরাও চোর্ব পাকিষে বলে: অভিযাত্তার আস্কানন, লোডীয় নীচতা।

भेज वहांबुरक्त भरवर वहांबुरक्त धावस धरेबान स्थरकरे। उर्धालारक स्थान सूच्छि एक्टन बरनन, रिम्हणात ध क्षेत्रजा स्थान कारण होस्कान।

নীচের দৈত্য-শিশু বুদি পাকিরে বলে: কেন যে টেকেনি, তার কৈফিনতেই ত চাই, দেবতা।
দুই দিকেই বড় বড় রখী বছারখী। এক দিকে নোগুচি, ইযোল, রবীজনাথ প্রভৃতি
গ্রাক্ত্যেতাঃ অপুচারী; আর দিকে গকি, ধোহান ধোয়ার, বার্নার্ড প', ধেনার্ভাতে। আজকের
বিশ্বসাহিত্যে এ-দুটো রূপই বড় হরে উঠেছে।

এই দুটো ৰূপের পরিচর দিয়ে, নজকল কান্ত ছননি। তিনি আর একটি তৃতীয় ৰূপের ক্ষা बर्त्नाह्म । এই তৃতীय ऋणिव वाँवा गुहै। তাঁवा উপৰেत्र ঐ मृहि extreme ऋणिव वांबावांबि अकृति कार्य। त्य कि करवा कि विवाहणन—'त्य এই बाहिस बाह्यस कारण अहस चार्लस काहिनी लिएन।---- त्र जोत्र बाहिन बादक जीनवारम, जिप्त ब'रम चर्मन विकास विकास विकास करमा।' निस्मिन, चौक्रिंड, नार्रे द्यायम, स्वापिनन स्वयमैक डिनि এই भनजुरू करवर्षम। छीत्र मण्ड, 'बार्मार्छ म' जानार्ट्यान क्वीम, स्थार्टीएडम मङ इनाइन श्वान भाग करमरहान, जेनाव नीनक्फे, उत्य रम इनाइन भीन कंद्र এवा नियब श्रीश इंद्यराष्ट्रन, रम इनाइन छम्भाव क्रावनि।' वर्षार अंत्रा विष्टादी परनत नन अंत्रा स्नःमञ्जी नन। नक्ष्मम ननाष्ठन, मूद्रे उतायम मायांचीरमय नाहिजिक्ता जित्विहरूनम नवारणव तिकर्व करव केट्डानिडिनम शिएम क्षि वसवानीया जित्विहरूनम विकर्ष देखानिष्ठनेन भिरत हरन ना हरन 'मस्मान। मिर्जामिष्ठनन भिरत।' जीमा भड़न पुनिवा मही कबरड किरबिएमम श्रव 'बीम नमरह पृष्टे बपरम। 'डीवा किरबिएसम 'मड्न मही महून मुहै।' स्टिक्टि। এই मत्न क्षेत्रियान, बार्नाछ न', रबनाडीएड फिरनन। किन्न सक्कम এই मरनव नावक बरन बरन करब्राइन गीकरक। नकक्ररलब भावना ग्रेप्ट गिक्त गुष्टा प्रवासकि, भूनिक्त छ (निर्मेष क'त्र मखग्रङ्कि। ১৮२৫ श्राष्टीराज्य अपे छिरम्बन अपे मजुन गुष्टा-मण्डिन षिन ब'रन बरन करतन नषकम रथिन 'वर्षत्र क्रम महारि निर्द्शनारमय पश्चात्र' 'नलाबिक क्रि ও সাহিত্যিকের' নির্বাসন হয়। এই নির্বাভিত্তের মধ্যে ছিলেন দম্বয়ভিছি। নির্বাসন খেকে क्ति धरम जिनि ब्रह्मा करबन Crime and Punishment। नककम बनएइन, "Crime and Punishment-এत्र 'त्राक्रमनिक्ञ एयन वश्चक्रक्षित्रहे पु:एवत्र छेन्त्राप मूकि, लानिया एवन 'विचिक्त क्रिनिवाबरे প্रতিমৃতি।' नक्षकरमय बावबा 'यिकिंग बाकमिक्छ এই बढ পৰিচ্ব। बडा गानिवाब পায়েৰ ভনার প'ছে ৰনলো,—I bow down not to the but to suffering humanity in you! त्मिन मनत बननी बिमारक बाधाव निक्ठरन डिंग्रतमा। निवित्र जानरक बरन छेश्लीक्टिक रक्षना भूबीक्छ र एक व्यक्तिक छेंद्रेरण। हेन्द्रेरक God अव: Relegion क्लापाय एउटन अन अरे व्यवसाय बहान्नावरम। नकत्रम यदन करवन अरे वराष्ट्रावटनव रही शकि। छाटे छिनि वदनन ''छावलव এम अरे वराष्ट्रावटनव धभन जुर्मातन गठ, खनांक गरिकातन गड (बर्ग गाम्रिम गनि। (नक्टम नारेक खर्ड निष्ठम, त्म बिमार्ड विविद्य क्रम क्षेष्ट बाह्य बहुरक चित्रियामा क्याम। दामनाव श्रीम मच्चक्रहि यनत्न: তোৰার স্টের জনাই আবার এ তপদ্যা। চালাও পরত, হানো ত্রিপুল।"

নজকলের থারণ। বিপু সাহিত্যের সত্যিকার প্রথম ডাঙার গান গাইলেন পরি। কার্নরার্কস বে বারণময় উচ্চারণ করেছিলেন, গেই 'কার্ন মার্ক্সের ইক্নমিক্সের অন্ধ এই বানুক্রের ছাতে প'ছে আজ বিপুর অন্ধনন্ত্রী হ'য়ে উঠেছে। পাধরের ছাপ ফুলর ডাজনহলে পরিণত হ'রেছে।' নজকলের থারণা মার্ক্স অর্থনীতির নতুন ব্যাখ্যা দিয়ে সাম্যবাদ ও সাম্যাজ্যবাদের শোষণের যে কাঁকী দেখিরে কেন—সেই অন্ধনান্ত্রের সূত্র সাহিত্যের রূপ পরিগ্রহ করে গরিব হাতে। ভাই গলি বনলেন—''লুংব বেদমার জরগান গেরেই আর্রা নিয়ন্ত হব না—আব্রা এর প্রতিশোধ নিব। রাক্ত নাইরে অন্ধতি পৃথিবীক্ত ভতি করব।'' নজকল বলছেন—''এডদিনে সে ভক্তকের বেশে এসে প্রাসাদে বুজারিড শক্তকে দংশন করলে। আর গেল—আরের রাজ্য গেল—বন্ডান্নিকের প্রাসাদ হাতৃড়ী শাবনের যায়ে চুর্ণ-বিচুর্ণ হয়ে গেল।''

এই ধ্বসমুতী সাহিত্যিকরা ধনতন্ত্রবাদীদের বারা নিশিত হন। নজন্ত্রল চসৎকারতাবে এর ব্যাখ্যা করেছেন:

দশৰুও দিয়ে খেরে, বিশ হাত দিয়ে লুণ্ঠন করেও যার প্রবৃত্তির আন নিৰৃত্তি হ'ল না, সেই Capitalist রাবণ ও তার বুর্জোরা স্বন্ধ-সেনারা এদেরে বলে হনুবান। এই লোভ-রাবণ বলে, ধরণীর কন্যা সীতা হবে ধরণীর শুর্ঠ সন্তানের ভোগ্যা, ধরার প্রজারপাইন ফররাজা পুটোর হবে সেবিকা।

প্রসংগত উল্লেখযোগ্য ১৯২০ থেকে ১৯২৭ সালের নজফল নিজে এই রম্ভ-বিপ্লবকারীদের দলে ছিলেন। তিনি ছিলেন ধ্বংসপ্রতী—তার সাধনা ছিল 'খোল নল্চে বন্দে' 'নতুন স্ষষ্ট সতুন প্রতী' স্ষ্টি করার। তিনিও বাংলা-সাহিত্যে এসেছিলেন 'মহাপ্লগনের ওপর তুকানের মত, ভয়াবহ সাইক্রোনের মত বেগে।' গনির মতই নজফলেব বদ্ধা ছিল—''দু:ব্বেদনার জয়গান গেরেই আর্রা নিরম্ভ হব না—আ্রারা এর প্রতিশোধ নেব। রক্তে নাইরে, স্কুচি পৃথিবীকে ৬% করব।'' এই চিন্তা খেকেই নজফল 'কারাল পালা' ক্ষিতার লিখেছিলেন:

হিংশু ওবা হিংশু পশুৰ দল!
গৃধু, ওবা, সৃদ্ধ ওদেৰ সক্ষ অসুৰ ৰল. . .
হিংশু ওবা হিংশু পশুৰ দল।
ভালিৰ ওবা অভ্যাচাৰী।
সাব জেগেছি সভা বাহা হত্যা ভারই!!

'ওরা অন্তাচারী জানিব' হতবাং ওদেব হতা। করাই উচিত। কাবাল-ব্যবের কারণ হ'ল কাবাল পাশা এই সাত্রাজ্বালীদের 'উচিত সাজা' দিবেছিলেন। এই চিন্তা বৈকেই সজজন বিবাতে 'কোরবানী' কবিতাব লিবেছিলেন—'ওবে সতা মুক্তি স্বাধীনতা দেবে এই সে বুল-বোচন।' अहे छिका (बटकरे 'मृ:बागटनव बक्त भाम' कविजान बटनक्टिनम:

वन ता वना हिर्म बैंस,
नू:नामरनय ठाँव कवित ।
ठाँव कथित बक्त ठाँव,
तारमा निरम निरम और कपाँव
नू:नामरनय तक ठाँथे।

এই কৰিতা লিখেই শিক্ষিত বুর্জোয়া বাবু সরাজের কাত্ থেকে নজক্ষন-কাৰা 'লম্ক-ঝন্পা' উপাধি পেরেছিল। উল্লেখ করা থেতে পারে ববীক্র সপ্তর্থীরা নজক্বের কারাকে 'যার বার কাইকাই ও অসির ঝন্ঝনার ববো রূপ ও রূসের প্রক্রেপট্টুও হারিরে গেছে' ব'লে বন্ধ্য ক্রেছিলেন। বন্ধ্যা হ'রেছিল—'এ অসির ঝন্ঝনা জাতির বনের আাবেগে ভাটা পড়ার সজে সজে নজক্বনী কাবোর জন-প্রিক্তাও বিলিবে থাবে।' শুধু তাই নম র্থজেনাথ পরোক্ষে নজক্বনী কাবাকে 'লাঙেটা পরা গুলি পাকানো ধুলে। বাধা আধুনিকতা', 'বাধুর্বহীন রূচতা', 'পালোমানির রাভারাতি', 'পারভারা রাবা পালোমানি, 'সার্কাসের 'বেলোমাড়' ইত্যাদি ব'লে স্বালোচনা করেছিলেন।

এই সৰ কৰাকে উপলক্ষ করেই বস্তবাদী সাহিত্যকলের প্রতি হ্রপবাদী সাহিত্যকের বনোডাৰ বাাবায় করে নজকল বলেছেন—'Capitalist রাবণ ও তার বুর্জোয়া রক্ষ-সেনারা এদেরে ধনে হনুষান।' বস্তবাদী এই সাহিত্য সমর হ'তে পারে না এই অভিমত ছিল বুর্জোয়াদের। কিছ 'মুব্রপোড়া হমুমান'-বে সমর হ'তে পারে তার উলাহরণ রামায়ণের হনুমান। সীভাকে রক্ষা করতে গিরে ভার মুব্রপুরুজিল। কিছ ঐ মহৎ আশ্বত্যাগের জন্য হনুমান পূজ্যাম্পদ হয়েছে। সম্ক্রেল সেটাই শ্বাব্যা করছেন এইভাবে:

नीजात छवाद यात्र (य उपाक्षिक इन्त्रान, त्रक-राना भिष्ठ जात्र माध्य माध्य माधित। उपाक्षिक इन्त्रान वरल, नाएक यि पाक्ष्य नानालि, पात्रात्र प्राक्ष वर्ष पाक्षित । - उर्व जात्र वर्ष वर्ष भिष्ठात्र । वर्ष कि भाषा भाषा ।

याबरकत विश्व-माहिएक। এই हन्त्रान्छ नाकारक এवः मार्च मार्च पर्ममणा पृक्षक —— এ प्रापनाता (व-८कडे पिवाहरक पर्वरण्न (वाव एत्र।...

व्यक्ति छात्रा पृष्टा भारत व्यत्त हरत रक्तना 'तृष्टभाष्ठा'त त्रभगरित व्यक्त छात्रा वहर कुर्जना भारत व्यत्त व्यत्ति व्यत्त व्यत्त व्यत्ति व्यत्त व्यत्ति व्यत्त व्यत्ति व्यत्त व्यत्ति व्यत्त व्यत्ति व्यत्त व्यत्ति व्यत्त

আবাৰ ৰক্তৰা হ'ল এই যে নজকুল যাই পাঠ কক্ষুণ তাকে গভীৰভাবে উপলব্ধি কৰেছিলেন। এই উপলব্ধি ছাড়া এই ধৰনেৰ ভুলনাৰূলক বিচাৰ সম্ভৰ লয়:

बानिया निराह revolution এর বর্ণান্তিক বেদনার অসহা জ্বালা। জ্যান্তিনেন্তিরা নিরেছে অরন্তদ বেদনার অসহায় দীর্থপাস। রালিয়া নিরেছে হাতে রক্ত তরবারি, নরওরে নিরেছে দু'চোবে চোর্ব তরা জন। রালিয়া বলে: এ বেদনাকে পক্তম শক্তিতে অভিক্রম করব,—
ভুজবনে ভাঙৰ এ দু:বের অন্ধরারা! নরওয়ে বলে: প্রার্থনা করে।; উর্বেষ জাবি ভোল।
সেখায় সুলার দেবতা চিরজাগ্রত—তিনি কর্বনো তার এ অপ্রান সহা করবেন না!

নজক্ষণ বিশুসাহিত্যের আজিকগত কলাকৌশন, প্রকাশভঙ্গী ইডাাদি নিরে কোন আনোচনা করেননি অথবা বিশুসাহিত্যের ক্রমাগত পরিবর্তিত মন্তবাদ নিরেও আলোচনা করেননি, যে মর্ম্মূল বেকে সাহিত্যের ভাবের উত্তর, যে উৎস মূল পেকে সাহিত্যের বৃক্ষের উৎপত্তি সেই আইভিয়ার অগতের পাশুলা বৈশাদৃশ্য তাঁর আলোচ্য বিষয়। বিভিন্ন দেশের মনীখা সাহিত্যিকবৃদ্ধ সমকালকে কি ভাবে গ্রহণ করেছেন, জাবন ও অগৎ সম্পর্কে কিভাবে চিন্তা করেছেন সেইগর বৈপুরিক চিন্তা-সমূহকে তীক্ষশৃষ্টি দিয়ে বিশ্বেষণ করেছেন। নথা দুনিয়ার বিপুর্বের চিন্তাধারায় রালিয়ার অবদানকে নজকল দেখিয়েছেন। কিন্তু একা রালিয়া নয়—রালিয়ার সংগো সংগো বৈপুরিক চিন্তাধারায় অন্য দেশের দাবীও যে অগ্রাহ্য করার মন্ত নয় সে-কণাও তিনি বলেছেন:

আইডিয়ার অগতে বিপ্লবের অগ্যন্ত ব'লে দাবী রাশির। যেমন করে—তেমনি নরওয়েও করে। ফ্রান্স-আর্মানীও এ অধিকারের স্বটুকু পেতে দাবী করে। আজকের নরওয়ের সুটেহামস্ন—যোহান বোগার—শুধু নরওয়ের ও রাই বা কেন বলি, আজকের বিশ্বের ছোট-বড় স্ব Realistic লেখকই বুঝি বা ইবসেনের সানস-পুত্র।

পার্ব কার্য কীতাবে নিরূপণ করেছেন। নজকন বনছেন যে রাপিয়া দিয়েছে revolution-এর বেদনার আদা আর স্কান্তিনেভিয়া দিয়েছে বেদনার দীর্মণাস। রাপিয়া দিয়েছে রক্তজরবারি, নরওয়ে দিয়েছে চৌর্বভরা জন। রাশিয়া শক্তিবলে দুংখের কারাগার ভাঙতে চেরেছে আর নরওয়ে চির-জাগ্রত স্থানর দেবভার কাছে প্রার্থনার সজনচোর্থ তুলে ধরতে বলেছে। নরওয়ের দু'জন বিখ্যাত সাহিত্যিক হ্যারস্থন ও বোরারের সাহিত্য সম্পর্কে তাঁর অভিনত:

হ্যাবস্থন ধোয়ানের প্রত্যেকেই অর্থক Dreamar অর্থক উপন্যাসিক। ধোহান ধোরানের Great Hunger-এর Swan বেন ভারতেরই উপনিবদের আনশ। তাঁর The Prisoner Who Sang-এর নায়ক বেন পাপে-পূর্ণো অবিশাসী নিবিকার উপনিবদের সচিধানশ। হ্যাবস্থনের Growth of the Soil-এর Pan-এর ছত্ত্বে বেন বেনের রবিদের বভ্ত ত্তবের আকুতি। বে করুণ স্থানর দুংবের যে বানবভারার বেদনা এঁদের লেবার সিন্ধুতীরের উইলোভরুর বভ দীর্ঘুাস কেলছে ভার তুলনা অগতে কোন কালের কোন সাহিত্যে নেই।

मक्कम बनहान महिक्जात এই जाविक बुक्जिकिक बुक्कि कृतिन, विकालन जिन्दारात निर्वय शामिएछ छिद्धिय निएउ क्रियहिन 'बोर्नार्डन'—बामार्ट्डान के मि—स्किमिर्डा (बनोर्डोएड)। अक्सि नर्निम स्क्र (१४० वर्ष वर्ष १८ वर्

क्षि और श्रमीय रेपेंस्नेविक बंधानत्वित्र मार्ति जात्र अक वयरभद्र गाहिए। विवास क्षेत्रः। यदि वर्रया हिन्हें क्रिय जाकृष्ट क्षेत्राय मेथ्विल हिन्दमार्थ त्यर जार्रह क्यांकिरक्ष मीत्रय क्षेत्रश्चारं। शक्केम नगरहमं १

अति शांत्य व्यायाय भीतः त्वाकः हूल क'त्व क्यान व्यायत्म स्थ-मृ: त्यतः क्या य'तम र्यातस्— र्डातम्ब अक्यम छवानिमन् त्वयन-लानिन व्याय अक्यन शार्थनेशा त्वरमंसा देखानीशांता।

কিছ গল্প শোনা হয় না—হঠাৎ চৰ্কে উঠে ওমি, আৰাম ৰুদ্ধ ৰাজনা ৰাজছে—এ যুদ্ধ-বাদা বহু শতাকীয় পণ্চাতের। দেখি, তালে তালে পা ফেলে আসছে সাম্রাজ্যবাদী ও ফ্যাসিস্ত সেমা। তালের অথে ইজানির শুজোনন্ত্সিও, কিপলিং প্রস্তুতি।

ভিনু ভিনু এই চিন্তাধারার সংঘর্ষ—কবির যথাে সানসিক ঘণের সূত্রপাত হয়। কোন্টি ঠিক, কোন্টি বর্ধার্থ সামুদ্ধের সজনের জনা ওভঙ্কর কি?—এই অন্তর্ধন্দ প্রত্যাক্ষ ক'বে কবি যথম ক্লান্ত তর্থন তার কানে আর এক সাহিভিয়েকের বাণী—নোগুচির বাণী। নজক্ষানের ভাষার :

ক্লান্ত হ'বে নিশীখের অভকাবে চুলে পঞ্জি। হঠাৎ শুলি দুয়াগন্ত বাঁশীয় ধ্বনিয় যত খ্ৰেষ্ঠ ব্যানচাৰী নোগুচির গভীষ অভকভাৰ বাণী—'I'he sound of the bell, that leaves the bell itself!

পীট পৃঠার একটি কুদে প্রবর্থ বিপুসাহিত্য সম্পর্কে নজকল তাঁর কুন্সট বারণাটিকে ব্যাখ্যা করার টেটা করেছেন। এ-কথা ঠিক বে বিশ্বের করু দেশের বরু ব্যাতনামা সাহিত্যিক তাঁর আলোচনা থেকে বাদ গেছেন। কিছু বাদের সংপে তাঁর পরিচয় হরেছে, এবং তাঁলের অলেকেট সে দেশের প্রাণ্ড প্রতিনিধিবনুলক সাহিত্যবাজিক, তাঁলের সাহিত্যের একটা মোটাসুটি ধারণা এতে তিনি দিতে পেঁরেছেন। এই কালাট সামান্য হ'লেও পুর সমস্ক নয়। পরিপাক পজির অসামান্যতা ব্যাতীত বিশ্বুৎ-কাঁতিতে বিষয়টিকে উদরর এবং কালার ক'রে পরিবেশন করা দৈবপ্রতিতাবাদ ব্যক্তি তিয়ু সম্ভব নয়। তাঁলৈর আনোচিত প্রকর্মী ছাত্তা কেবল সাহিত্যের উপর লেখা নজকলের পাঁচটি প্রবন্ধ চোবে পড়ে। এই একটি 'বাঙ্গা সাহিত্যে নুসলমান', 'জনসাহিত্যে,' 'জনাইরাৎ-ই-চাক্তিজ'র বুরবন্ধ; 'বুনকুল-ই-

^{*}वर संबंधि वंश्वरंगत वंशि प्रतिविद्य रक्ष्या। वर निविद्य स्थान कर्तत्र कवि प्रीवर्ण क्षित्र प्रवेश क्षित्र प्रवेश पनुरंगिक निर्धाः শিরাজ' (হাফিজের সংক্ষিপ্ত জীবনী) ও ওমরের কাবা ও দর্শন।' এইসব প্রবন্ধ বে প্রবেশক্ষে নিষ্ঠা নিয়ে নিথিত হয়েছে তা নয়। কিন্ত এই প্রবছেও নজকলের সাহিত্য-বিচার দৃষ্টির আলোকশান্ত ঘটেতে।

প্রথমে 'ৰাঙলা সাহিত্যে মুসলম।ন' প্রবছানৈ কথা ধরা যাক। গোটা প্রবছে তিনি বাঙালী মুসলমানের সাহিত্যের স্বরূপ উপ্রাচন করার চেটা করেছেন এবং তার তবিষ্যাৎ প্রকৃতি সমছে তাঁর ধারণা ব্যক্ত করেছেন। মাত্র তিন পৃষ্ঠার ছোট প্রবছে তিনি সাহিত্য, লিল্প সম্বছে তাঁর নিজম্ব ব্যাল-বারণার যে ছবি কুটিয়ে তুলেছেন তা নিঃসল্পেং চমকপ্রদ। এপেকে তাঁর সাহিত্য-সাধনার পিছনে পাহারারত তাঁর সজাগ মনটিকে বোঝা গায়। নজকলের মূল বজবা ছিল যে সাহিত্য হবে উনার সজীব, আন্তর্নিকতাময়, প্রাণময়, যানলময় এবং সৌলর্যময়। এতে তিনি নিম্প্রাণ অমুদার জড়তাহান্ত সাহিত্য নয় ব'লে মন্তব্য ক'রেছেন। তিনি প্রবছটিতে সাহিত্য ও লিল্পের উদ্দেশা সম্পর্কেও তাঁর বজবা রোধছেন। এতে তাঁর বজবা রোধছেন। হ'ল:

- ১. যে সাহিত্য জড়, যার প্রাণ নাই, সে নিঞীব সাহিত্য দিয়া <mark>আমাদের কোন উপকার</mark> হইবে না, আর তাল স্বায়ী সাহিত্যও হইতে পারে না।
- २. माहिरछात्र नृष्टभात्राय पाकिर्य हलात यानक, शाहित राहित वर्ग এवर हिंछ-এव कलगान छ हक्षण्डा।
- ৩. যে সাছিতিকের স্বাস্থ্য মন্ত ভাল, দিনি যত বেশী প্রকৃষ্ণ চিত্র, তাঁর দেখা তত বেশী স্বাস্থ্যসম্পানু তত বেশী কলমুখর।
- ৪. 'পুঁনো নারা' পিলে রোগাঞান্ত গাহিত্যিকের নেবাই দেখিবেন অমুস্থ (morbid) ; হহাই গাহিত্যের স্বত্য ধারার আধিনত। মানে।
- ৫. লেখকের লেখা হইতেছে তাঁহার প্রাণের সতা অভিব্যক্তি। যেখানে লেখা সতা, তাহার লেখাতেও সে-সতা সতাভাবেই ফুরিয়া উঠিবে; যেখানে লেখক বিখা। সেখানে সেই বিখ্যাকে তিনি হাজার চেষ্টা করিলেও ল্কাইতে পারিবেন না।
- ৬. সাহিতিকেন, কবিন, লেগকের প্রাণ হইবে আকালের মত উন্মুক্ত উদার, ভাছাতে কোন ধর্মবিষেণ, জাতি-বিষেণ, বড়-ভোট জ্ঞান পাকিবে না। বাঁধ-দেওয়া ভোৰার ভলের মত যদি সাহিতিকেন জীবন পঞ্চিল, সন্ধীর্ম, সীমাবদ্ধ হয়, ভাহা হইলে ভাঁহার সাহিত্য সাধনা সাংঘাতিকভাবে বার্শ হইবে। তাঁহার স্ট সাহিত্য আঁতুড় ব্রেই বারা যাইবে।
- প্রাহিত্যিক নিজের কথা নিজের বাখা দিয়া বিশ্বের কথা বলিবেন, বিশ্বের ব্যথার ছোঁয়া দিবেন। সাহিত্যিক যতই কেন সুক্লাতত্ত্বের আলোচনা কক্ষন না, ভাছা দেবিয়াই যেন বিশ্বের যে-কোন লোক বলিতে পারে, ইহা ভাঁহারই অন্তরের অন্তর্গ্রহর কথা ;---- এই রূপেই বিশ্ব-সাহিত্য কটি হয়, ইহাকে বলে সাহিত্যে সার্বজনীনেতা। --- আমাদিগাকেও তাই এবন করিতে চইবে সাহিত্যে সার্বজনীনতা কটি। অবলা নিজের আতীর ও দেবীয় বিশেষদকে না এড়াইয়া, না হারাইয়া।
- b. जिनिहें बाहि है, विनि बार्ड क्रिकिश जूलिएड भारतन। कार्ड-এর वर्ष मरङाब श्रेकान (execution of truth), এবং সভা নাত্রেই সুক্র, সভা চিরফলনর। कार्ड क्

स्ट्रिं, ज्ञांनन या योग्य এवः প্रकृष्ठि (man plus mature) हेडापि ज्ञामक किছू यहा यादेख शास्त्र : ত24 मटडाय श्रमांश्री ध्रोटेड्ड ध्रमाय काराज्य हिस्सी।

১৯২০ সালে नवकरनित वयम यथन २२ वछन नाज छथन छिनि और भारवंश। समे वयस्य माहिछा नित्न मन्नर्स अक्टि निवास मछापर्न शंद्ध गाउता कम कथा नग। भवन शैकारण नवकरमित्र निर्वास माहिछा अहे जान्न वहनारम क्रमायिछ हर्षाछ। वना बाहना अहे म्मिर्छ छात महारमाछमा नृष्टि जाक्क्रन हर्षा निर्वास वर्षा। निर्वास वर्षा वर्षा

সাহিত্য হইডেছে প্রাণের অভিব্যক্তি, যাহার নিজের প্রাণ গাই, যে নিজে জন্তু ঘইনা নিমাছে, সে নেবায় প্রাণ দিবে কোথা ছইডে । যাহান নিজের বুকে রসের আদিশনা ফুটে না, সে চিত্রে রঙ ফুটাইবে কেনন করিয়া । আমাদের অবি≱াংশই ছইয়া নিমাছে জন্ত, কেননা আমাদের জীবন একবেঁরে, ভাহাতে না আছে কোন বৈচিত্রা, না আছে কোন গৌশর্ব। ভাহাড়া, নোঝার উপর শাকের আটির মত আমরা নাকি আবার জন্ম ছইতেই দার্শনিক, কাজেই বরস কুড়ি পার না ছইতেই আমরা গাঁটার ছইয়া পান্ত আবানা বিদ্যা বিদ্যা পারিবেত হইবে। এই যে চলার আনশ ছইতে বঞ্জিত থাকিয়া জন্ত ভারতের মত বিদ্যা পাকা, ইহাই আমাদের প্রাণশক্তিকে টুটি টিপিয়া মারিতেছে।

उनन नित्नुष्य षात्रा व्यात्षाधनस्थि श्रेटिश लका ना कंद छेथांग थात्क ना। वन भन्न 'कन नाश्चित्र।' 'कनमक्षित्यां यून यक्षना कनिन कथाग--यना गाकः

क्रमाहिएडाव डिएक्ना ह'न क्रमणर्भन बड्नाम करि क्रमा এवः छाएम क्रमा न्राप्त भिन्नित्वन्त क्रमा। --- छाएम बड्र क'रव छाएम क्रमा, छाएम शक्य बन्नुम। छात्रा छा बूबएड भीतरव। क्रिक्र नावबान, बार्निनाएम बूक्रवियानात छान एम श्रम्भ मा भीत- -- क्रमणर्भन नार्भ नवस्ट हरन छाएम वाष्ट्रीय ह'एड हरव।--- क्रमणाहिएडाव क्रमा क्रमणर्भन नार्भ स्वाण बीका छहि।

मखन्छः क्षरकत जान, श्रामिकत जान अवः बीनाइत जाएन किन अधे भन्नीका छानिएसछिएसम्। छीत भन्नीकारम् अरक्षाद्य बार्ष इर्ट्यस्क बना इर्ल्यना।

वनारत ''क्रनारेगाए-रे-राक्टिक'-त्र 'नृत्रनक' ३ 'नृत्रनृत्र-रे-निनाक' भनक मृंदित्र नथा बना मान । এर मृति शनकरक शक्तिक्व Critical appreciation नका एगएड भारत । उनु अन मर्गा नवरित्राहरूक्व बाहनरहरूका रहता नाय । 'नृत्रनहरूं डिनि कलएडन :

सूर्व कारत दी जिंदछ (वर्षाण्या दिंदक। जातात ज्ञूबारक जाते जिंद नवत क्यांके-छ श्रीकार्ध व'रत वरम छत्र। (क्यांता श्रेषव मू'वांश्वरतय गार्थ (वरम्ब मू बांक्वरतय द्वांन क्रिक्क (ब्रेंन), अवर छत्र क्यांन वारमछ छत्र ना। मिरनत छेदरम जाजि गर्डवडी छर्चन, अ जात्र विनि नियुन—शक्तिक विश्वरक शक्तिक ना।

'अवरतम कांका अ पर्वम' श्रवास ३ (क्या वाग नकस्य नकस्य :

जानि अन्तरम क्रमशिशाप न'तम श्रामणिक शाम এक शामान क्रमशि (परक्षे क्रिकिमिन मू'न क्रमशि (परक्ष मिरतिक); अन्य क्रामणिक क्रमशिशाप (परक। क्रमणि जामान पिरविक्रमान अवेकिम क्रामण गानी क्रमशि अन्दरम श्रामणिकी मा क्रोशियम गरक अरक्सारम मिन् नाम मा।

अन्य चारम कि । विद्यार्थानगणानु मयारमाठनम्बित हीकृषि (व वावक्छ ह'रतरह छ। मछवडः दमा बाह्या ।

शक्तिका कविजान शनिष्ठत कविद्य मिएड शिर्व नकक्षण बरमस्टन:

হাকিজের গান অতন গভীর সমুদ্রের মত। কুনের পণিক নেমন তাহার বিপানতা, তরজনীনা দেখিরা অবাক্ বিশানতা হাহিরা থাকে, অতন-তনের সদ্ধানী ছুবুরী তেমনি ভাহার তনদেশে অজনু মণিমুক্তার সদ্ধান পার। তাহার উপরে যেমন ছল-নর্ভন, বিপুল বিশালতা; নিম্নে তেমনি অতন গভীর প্রবাস্থি, মহিরা।

वना बाहमा द्राक्तिक प्रमान मन्नार्क ध-थ्रद्र कान विद्याद्विक विद्याप्त क्रिन कर्द्वन नि। ७५ अमि वार्का जिनि वरम्हिन 'द्राक्ति कर्द्वन जिन थ्रद्रक जिन थ्यद्रक जिन थ्रद्रक जिन थ्रद्रक जिन थ्रद्रक जिन थ्रद्रक जिन थ्रद्रक व्यवक जिन थ्रद्रक अपन थ्रद्रक व्यवक थ्रद्रक व्यवक व्यवक थ्रद्रक थ्रद्रक थ्य

---- বাবাবের কাছে, বিংগ গ্রাবের জন-বিজ্ঞানপুট কারণভিজ্ঞান্ত হনের কাছে, ওবরের কবিতা বেন আনাদেরই প্রণা, আনাদেরই প্রাণের কথা। আররা জিল্পানা কবি কবি করেও খেন সাহস ও প্রকাশ করতার দৈনাবপতঃ তা জিল্পানা করতে পারছিলান না। বিগত বহাবুছের কর্মেই আনাদের আজকের জীবন বহাবুছ ক্লান্ত। অবিশ্বালী বৰ জিল্পান্ত ক'বে ওঠে—কেল এই জীবন, বৃত্যুই বা কেন ? স্বর্গ, দবক, তথবান ব'বে সন্তাই কি কিছু ভাছে? আবলা ব'বে কোথার বাই ৷ কেন এই হান্য-ছানি ৷ এই জন্পান, শুবে, পোঞ্চ ৷ এবলি ওব অগুন্তি প্রণা, বার উত্তর কেউ থিতে পারেনি ৷ বে উত্তর দিবছেছে, বে তার উত্তরের প্রবাবে কিছুই দেখাতে পারেনি ; তবু ববেছে ৷ বিশ্বান করে । তবু আলাদের বন বিশ্বান করেছ লান প্রাণ্ড বিশ্বান করেছে লান বাই জ্বল সংখাছের সংগীত, বিন্তান, গর্মান, তন্তে পাই ভার বড়ই লোন দিবছিল। সেই জ্বল সংখাছের সংগীত, বিন্তান, গর্মান, তন্তে পাই ভার ক্রাইবাছে।-----

अनत नगरज्ञ छान, यह श्रेरपूत्र छाज अङ्ग्रिस सना कज सन्द्रांत भन्नशासत अरमन, एतू त्य श्रेपू रमहे श्रेपूर्वे तरम रोग। मानुर्वेद पूर्व अस जिनक सर्ग ना। आहे जिसि स्वर्यन, अन्यस निया, वृतिकी विशा, वर्ष विशा, भाग-भूग विशा, कृषि विशा लाहि विशा, वश्वा विशा, विशा,

कार्या अरु वार्या गर्यात्माच्या । त्य-खार्य छेन्छ्य छेन्छ ब्रःय गर्यात्माच्या किन्न खान्छन् छ स्थ-कर्यक गर्यिका निकार्यपरिर्य त्य गर्यात्माच्या अष्टि छ। अस । त्य गर्यात्माच्या और श्रेष्टक गर्यक्य करवास्त्र करूप का श्रम्परक यह कीम चन्यांक्य किनेकियांक्य श्र कीम गर्यक्रत्य । ज्यक्य बन्नतस्य ।

ওৰৰকে তাঁৰ কাৰো প'ছে বাঁৰা তাঁকে Epicurean ব'লে অভিচিত কৰেন, তাঁৰা পূৰ্ণ সন্তা বলেন না। ওৰৰকে Epicurean বলা যায় তথু তাঁৰ 'কুক্ৰিয়া' শ্ৰেণীৰ কৰিতাৰ জনা। ওৰৰেৰ কাৰো পাৰাৰ সাকীৰ চড়াছছি ধাকলেও তিনি জীবনে ছিলেন আশ্চৰ্য ৰক্ষেত্ৰ সংযবী। জাঁৰ কৰিতাৰ বেৰন ভাবেৰ প্ৰপাদতা, অধৰা সংযবেৰ আট্নাট বাঁধুনি, তাঁৰ জীবনও ছিল তেমনি।

वर्षा किविवारण्य अन्तर क्याँगार्ट बनुवान भार्ठ अन्न नगर र वकी। इनुइहा नानिवरीन क्यांकी स्वाकिवानी बानुर्व विद्य होर्थ सार्य सार्य सार्य अन्य अन्य श्वाक राष्ट्र हेर्स क्यांक, राष्ट्र क्यांकिवार स्वाक विद्या क्यांकि सार्य अन्य श्वाक व्याक विद्या क्यांकि सार्य अन्य श्वाक व्याक क्यांकि सार्य अन्य श्वाक व्याक क्यांकि सार्य अन्य श्वाक भारत अन्य भारत अन्य भारत अन्य भारत सार्य अन्य श्वाक सार्य अन्य क्यांकि सार्य अन्य क्यांकि सार्य अन्य सार्य सार्य अन्य सार्य स

বাক ও-সব তজুকথা দিয়ে আবাদের প্রয়োজন নেই; কেননা আবরা তত্ত্বজ্জির নই, আবরা রসপিপাস। ওবর কবিতা নিধেছেন এবং ডা চমংকার কবিতা হরেছে, আবাদের পক্ষে এই যথেই। আবরা ডা প'ছে অভান্ত আনন্দ পাই;

কৰিতা সম্পৰ্কে এটাই কিন্তু বসজেন পেন কৰা। দাৰ্শনিক কৰিতা নেৰেন না, সৰিতা নেৰেন কৰি। স্তেরাং বা কৰিতা হ'বেছে তাৰ দৰ্শন নিয়ে এত বাধাৰাখা কেনং কাব্যানুত্তি স্বভাৰ বিশেষে এক একজনের কাছে এক এক মৃতি নিয়ে দাঁড়াকে। নক্ষকনের কাছে ওসরের ভাৰমূতি একজন প্রভাষান বিশ্বন্ধ কৰিয়।

সাহিত্যের উপর নেবা নরকানের প্রবছাবলীতে তাঁর রসন্ত বৃষ্টির আলোচনা করা পেল। এবার তাঁর অভিভাবণাবলীর বক্তবা সম্পর্কে সংক্ষিপ্ত আলোচনা করব। এই অভিভাবণে তাঁর সরাজ, সংকৃতি ও সাহিত্য সম্পর্কিত নিজ্পর বারণা বাক্ত হরেছে। বেতার বাংলার নঞ্জল-সংখ্যা, ১৯৭৭-এ বং রচিত 'সরালোচক নজকল' প্রবছে তাঁর এলনাই হলের প্রতিভাগণ থেকে তাঁর সাহিত্য সম্পর্কিত ধারণার কিন্ধিৎ আলোচনা করেছি। বলা বাহলা এই অভিভাগণগুলিতে তিনি তাঁর সম্প্রতার সরাজ সংকৃতি সম্বন্ধে শেষন তেমনি তাঁর নিজেব সাহিত্য সম্পর্কে আলোকপাত করেছেন। সরাজ সংকৃতি সম্বন্ধে শেষন তেমনি তাঁর নিজেব সাহিত্য সম্পর্কে আলোকপাত করেছেন। সরাজ সংকৃতি সম্বন্ধে শেষন তেমনি তাঁর নিজেব সাহিত্য সম্পর্কে আলোকপাত করেছেন। সরাজ সংকৃতি সম্বন্ধ শেখানে তিনি রাগক আলোচনার সূত্রপাত করেছেন। সংক্ষিপ্ত পরিস্বরে তার বিশ্বেষণ সম্ভব নয়। তবে প্রতিটি অভিভাগণে তিনি যে বন্ধবা করেছেন ভা যে একজন স্বালহিতিখী, দেশপ্রেমিক এবং উদার বানবপ্রেমিক মহাপুক্তবের চিন্ধা তাতে কোন সন্দেহ নেই। বোঝা যায় বিংশ শত্রাকীর তৃত্যীয় সম্পর্কে বিশ্বাকাপ সাহিত্য তাবে পিজনে নজকলের অনলান অসামান্য। তিনি বুসন্মানদেব ব্রীয় গোঁডারী, কর্মবিমুর্বতা, প্রগতি বিনুর্বতা, নিলপ্রচা-বিনুর্বতা, কুসংছার, কুপ্রভুক্তা, আর্থপারতা, অসাহিক্তা, অনুগান্ধতা, রজপানীলতা পরশ্রীকাতরতা, ইবাপেনাবেতা, শ্বাকতী, ভঙারী প্রত্তিকে কঠোরভাবে স্বালোচনা করেছেন। তাবে তাঁর এই স্বালোচনা ধ্বংসালীর নর, সজনালীর। তিনি সজে সক্তে কি উপায়ে, কুপ্রভুক্তা এবং অন্ধতা পেকে বেবিয়ে যালোকে আসতে হবে তারও নির্দেশ দিয়েছেন। ১৯২৭-এ ইব্রাহীয় বাঁকে লেখা প্রত্নেত্বে তিনি ব্রেছিনেন :

बांडमात्र यूगनबान गयांक बांग कांडाम कि ना क्रांनिएंग, किन्त यांन एवं क्रांडान, व्यक्तिवाद्यांव कांडान, जा बांबि दिनभाव गएक चनुज्य कोर्य चांगिछ् व्रक्षित छोएछ।

नक्करलन এই गर्नात्नाहना छिल बनी मूनल्यान गर्नात्वन প्रति, धर्माद चार्षभन्न जीहा मूनन्यानल्य थिछि---गाँचा कवित्र काता-श्रिक्तिक चीक्षि (ए९ग्रा छ मूत्वन कथा डीएक 'कारक्य' 'नवडान' देखाकि नर्मन थिएनेस्स डिव्हान कवरड अर्थेष्ठ दिया कर्नाति।

কৰি এ দেব তিরক্ষানের গঠনসূদক সমালোচনা করেছিলেন এট বলে বে ইন্দাম ধর্মক যোমা বৌলুবীকা বে-ভাবে গ্রহণ কবেছে সভিয়োকার ইন্লাম তা নর। গেই চিঠিতেই তিনি জানিরেছিলেন বে 'ইন্লামের সভাকার প্রাণশক্তি: গ্রশক্তি, গ্রন্তর্যাদ, সার্বজ্ঞনীন প্রাভূত্ব ও সমানাধিকারবাদ।' নক্ষলের বিশাল সাহিত্য-জীবনে ইন্লামের অনুপ্রেরণাধ মুখ্য ভূমিকা বে আছে ভাতে কোল সন্দেহ নেই। ইন্লামের সার্বর্য ভিনি জেনেছিলেন বলেই ভার পক্ষে লেখা সন্তব হ'রেছিল:

আবুৰকর, উসহান, উহর, আলী ছাইপার: লাড়ি যে এ তরণীর নাই ওয়ে নাই ডর লাড়ারী এ তরীর পাকা হাঝি হালা লাড়ি বুখে সারি গান লা-শবিক-আলাহ!

ইসনাৰ বে পৃথিবীতে আজও টিকে আছে প্ৰধানতঃ উনিধিত পাঁচজন সহামানবের অচিন্তনীর আছভাগের আদর্শের ভিত্তিতে। ঐপুর্যভাগ করার ক্ষরতা থাকা সংস্কৃত এঁবা কোন দিন লোজ-রাক্ষ্যের
বারা পরাজিত হননি। রাজা হ'বেও এই বে জ্ঞাসজিতে আছবলিপান এই আদর্শের অটল নিদর্শন
ইসলাবের আরুকে চিরঙীব করেছে। কবির বক্তবা ছিল এই আদর্শের ভিত্তি যে ধর্মের আছে তার
কথনও মৃত্যু হ'তে পারে না। দুংখের বিষয় ইসলাবের এই মর্মকথাটি গভীরভাবে উপদন্ধি করেদনি
ভার বর্মবাহকেরা এবং ভাই ধর্মপূজা ক'বেও ভারা বার্মিক হ'তে পারেন না—ভারা জ্ঞামিক থেকে
নান। ১৯৪০ এ কলকাতা মুসলিম ইন্টেটিউটের ভাষণে এই জ্ঞামিক ধর্মবারাী রাজনীতিকদের
ভিনি এইভাবে স্বালোচনা করেন:

যার অন্তর বাহির সমন্তা। রইল আছত্প্রির কুধার পূর্ণ সেই কুধিত মূতি আজ বাইছে ত্যালের গেল্লা ও কেল্কা পরে কৌনের দেশের জাগরণকে নিয়ে চনেছে মৃত্যুর পথে, জাছানাবের পরে। - - - আলাহ্কে বে ভয় করে—-আলাহ্ব রভানের প্রতি এতটুকু শুদ্ধা ধাকে বে মুসলমানের—কোর মান মজিদের এক হরকও যারা হাদয়জম করে—ভারা জাত ভাইকে জাতিকে এমন বিধ্যার পথ দিয়ে দিয়ে যার না। এদের পেশ্কার ভিতরে, এদের চোগা চাপকানের অলার—বাদের অন্তর্গ হি যার, তারা দেশবেন—এর। অদর্শের কাব্রীয় চেরেও ভীষণ—বৈভার চেরেও ভারতর।

১৯৩२ श्रीम्होदल्य मिन्नाक्यास्त्र नाहे। छ्वरनत छापर्य दिन वर्यन :

আনালের বাঙালী মুসলিনদের মধ্যে যে গোঁড়ানি, যে কুস'খার, তাহা পৃথিবীর আর জোনো দেশে, কোনো মুসলনানের মধ্যে নাই বলিলে বোধ হয় 'মড়াঞ্জি হউবে না। আনালের স্বাজের কলাধিকারী যে সব নৌলানা সাহেবান ধাল কাটিয়া বেনো-জল আনিরাছিলেন, তাঁহারা বলি তবিষ্যৎদলী হইতেন, তাহা হ'ইলে ধেবিতে পাইতেন—বেনো জলের সাবে সাবে বরের পুকুরের জলও সব বাহির হইয়৷ গিরাছে। উপরছ সেই ধাল বাহিয়া ভুসংভারের অজ্যু কুরীর আসিরা ভিন্ত করিরাছে। যৌলানা মৌলবী সাছেবকে সওয়া যায়, বোলাও চক্তুর্কর্ণ বুজিয়া সহিতে পারি, কিছ কঠিবোলার অত্যাচার অসহা হইয়৷ উঠিরাছে। ইসলাবের কলাবের নাবে ই হায়৷ বে কওমের আতির ধর্মের কি অনিট করিতেছেন, তাহা বুজিবার বত শুলার কর শার বিলিয়া ইহাদের ক্ষমা করা ধায়। ইহারা প্রত্যক্ষেই 'বন-মন শাহ-ক্ষমীদ, কাল রে ইট।' ই হাদের নীতি 'বুজি দোজধ-মে যায় য়া বেহেণ্ত বে ধায়, বেরা হালুয়া কটি সে কাম।

কুনংভারত্তনো কি । তা নাম ক'রে ক'রে তিনি অবন্য দেবাননি। তবে একটা কুনংভার পর্বা প্রধার প্রতি তিনি ইজিত করেছেন :

यात्रारात शर्थ विद्याद्य स्था विद्याद स्था विद्य स्था विद्याद स्था विद्य स्था विद्याद स्था विद्य स्था विद्याद स्था विद्य स्था विद्य स्था विद्य स्था विद्याद स्था विद्याद स्था विद्य स्था

আল বেকে আগন্ত ক'বে পঞ্চাপ বছর আগে বঙ্গার বুসন্মান সর্বাভ শিকা, সংশৃতি ও শিক্ষাচর্চায় নিগাঞ্চপ পণ্টাৎপদ ছিল। আর এর মূলৈ ভিল বোঁরা-বোঁনবীলের ধর্ম-বাাধ্যা। সে-ধর্মব্যাধ্যা
দেখা গেছে সমাজের আর্থের চেয়ে আন্থর্যাধ্যুখী। নজরুল ভাই প্রায় ক্ষেত্রেই বোরা বৌনবীলের ক্ষ্মা
উল্লেখ করেছেন ভাঁদের 'কভোরাবাল' ইভ্যাদি বলেছেন। প্রস্কৃতপক্ষে ধর্মীর বিবিনিবেরের দক্ষ্মা
বাঙ্গার মুসন্মান সমাজ পার্শু বর্তী ছিল্ম্ সমাজের খেকে অনেকখানি পিছিরে ছিল; আর কারণও
ছিল ধর্ম-পুরোহিতদের বিদ্যাচল সদৃশ্য শামীয় ব্যাধ্যার নিষেধ। নজরুল জরুণদের এই নিষেধ অমান্যা
করার আহ্বান জানিরেছেন এইভাবে:

नकी जिल्ला विकृत्य (विक्रास्त्र करें) अर्थ (नाक्यक्रक वननाइत्य क्रम्प्य वाद्यान करें। क्रम्प्य विविध्य विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या क्रम्प्य क्रम्प्य व्यापन विद्या विद्या क्रम्प्य क्रम्प्य व्यापन व्यापन विद्या विद्या क्रम्प्य क्रम्प्य व्यापन व्याप

আজ ৰাঙালী বুসলবানদের বধাে একজনও চিত্রশিলপী নাই, ভাতর নাই, সজীভঞ্জ নাই, বৈজ্ঞানিক নাই, ইহা অপেন্দা লক্ষার আন কি আছে ? এইসবে বাহারা জন্মপুত্র শ্রেরণা নাইরা আসিরাছিল, আবাদের গোঁড়া সরাজ ভাহাদের চুটি টিপিয়া বারিয়া কেলিয়াছে ও কেলিভেছে। এই অভ্যাচারের বিক্তমে আবাদের সমন্ত শক্তি লইয়া বুর্বিতে ইইবে। নতুবা আটে বাঙালী বুসলবানের দান বলিয়া কোন কিছু থাকিবে না। পশুর মত সংব্যাগরিষ্ঠ হইয়া বাঁচিয়া আবাদের লাভ কি, যদি আবাদের পৌরব করিবার কিছু না বাঁকে ?

नूमभवनिर्दान छैम् छित्र जात्र अक जंजेत्रात्र छित्यदा निर्दाणका नरना अक्छान जेखान। माल्यम छारे ১৯৬৬-এ कंत्रिनेपृद्धि क्षेत्र छाषर्टन नरेसन :

(छात्रारम्य कर्ज्या मित्रिक इक्षा, मश्यक इक्षा। य इवक्षार मार्क्कतीय बांक्ष्य, य क्रिक्त दिन तूमित्रिक जामनं, याद क्षार्य यूमित्र क्षांक्र क्र न्छानीय यदा भ्विती क्ष्य क्रिक्ति, जाक जावारम्य रम अक्षा स्वरूप्तिक्तिम् विक्रिम्। क्षित्रिक्त भी क्ष्याम जूर्य जावता एकविर्ण्डस्य क्षिमानवामा मही क्रिक्तिः क्ष्य छाव माय-मित्रा, मृत्री, स्वर्थ, रमप्तम, यामन, शांक्रांम, हामानी, नाकी, हाहनी, वारक्की, मा-व्यक्षानी, ध्यांची ७ प्यांच क्छ क्छ क्यांच । এই क्या क्यांच अवस्थि (वाष्टांच, अवस्थि वृत्यात्मच क्यांच क्यांच

चानि बरमहि नककन छोष गराधारक गरारनाछना कत्ररमाछ रा गरारनाछना हिम गर्छममूमक। छेलेरबर पृष्ठि छेब्छ छोत्र धराप। এইডोर्स जित्रकारसम गरक गरक छिमि गराधारक अलिएस स्मध्यान लक्ष-छनिरक्छ चानिरम किएड छोरनम मि।

অনুশরের সাধনা আমার নয়, আমার আপ্লাছ্ পরম স্থান । ডিমি আধার কাছে মিডা প্রির-বন্ধ স্থানর, প্রেম-খন স্থানর, রদ-খন স্থানর, আনাশ-খন স্থানর।---- আমার সর্ব অন্তিম্ব, জীবন-মর্থ-কর্ম, অভীত-বর্তমান-ভবিষাৎ যে তার্বই নামে শপথ ক'রে ভাকে নিধেবন করেছি। আজ আমার বনতে বিধা নেট, আমার ক্ষমা-স্থান প্রিরন্তম আমার আমিষকে এছণ করেছে।

'बश्रि-बीना', 'विरयत बानी'त युर्श महक्तरतत बर्मा 'बाबि'रक्त छान माना विर्मिष्ट । जिमि 'बाबि'रक्त वाना। विरविद्यान विदेश वे देश रामि 'बाबि'रक्त वाना। विरविद्यान विदेश वे देश रामि 'बाबि'रक्त वाना। विरविद्यान विदेश विद्यान विदेश विद्यान विदेश विद्यान विदेश विद्यान विदेश विद्यान विदेश विद्यान विदेश विद

जानन वन-वन वर्षवर्धन এक ना-जाना जाकान त्यंत्व त्य निक्क जावाव वन कवरऊन-जात्त्रीर वरमञ्ज्ञ, जिक्कि बहात्युजाबरन नात्व वात्व हत्व यान नविषा। जर्बन जाविश्व हं त्व यह नीवन, जावाव बानी जाव बात्ज ना।

পৃথিৱীর অনেক ভাৰবালী শিলপীর সত নজকলের ধারণা ছিন যে এক অপকা শক্তি ভাকে শিশ্রপ করে। ভারই ইচ্ছা শক্তিতে তিনি কর্মশক্তি পান, কাব্য স্কৃতিত সক্ষম হন; তিনি সেই প্রেরণারূপ শক্তি হরণ করলে ভার পক্ষে কোন কিছু রচনা করা সম্ভব হয় না। এতে ভার সাহিত্যসাধনার উল্পোপ্ত ব্যাখ্যাত হরেছে:

हिन् यूगनबारन जिन बांड हानाहानि, जान्डिट जान्डिए निर्म, यूप-निर्मं, यानूरम्य जीनरम् अक जिर्म कर्दान पातिज्ञा अप प्रकार —यमानिर्म गान्डि। जमूरम्य यरक्त मार्ट्स काडि क्वांकि क्रोका श्रीषांव खुर्शन यह क्या ह'रत कार्ड्स-এই क्यांमा এই ख्याका वृत्र क्यांक व्यांत्रि अरम्बिनाय।

. त्नर्थ जिनि वनस्थिन :

সাহিত্য ব্যক্তিকেই প্রকাশ। আমি সাহিত্যে কি করেছি, তার পরিচয় আরার ব্যক্তিকের ডিতর। পদ্য যেমন সূর্যের ধানি করে, তারই জন্য তার দল মেলে, আমি আরার ব্যালের প্রিরতবের দিকে চেয়ে গড়ে উঠেছি।

মঞ্জল-সাহিত্যের আলোচনা ও বাাধ্যার উপরিউক্ত বক্তবা সম্ভবত: চানির যন্ত ব্যবস্ত হ'তে পারে। তাবে এ-কথা যথার্থ যে তিনি তার প্রবন্ধ, অভিভাষণ ও পত্রে যে-কথা বলেছেন যে আলোচনা করেছেন সে-কথাওলাই তিনি তার কবিতাতেও ছলে গেখেছেন এবং এইভাবে গণো-কবিভার তিনি আনাদের ব্যক্তি জীবন ও সমাজ জীবনকে সমালোচনা করেছেন।

ধুমাকচুর ঐতিহাসিক পটভূমি

७न. ७म. न्रक्त त्रमान

वाहेरमंत्र दक्षणागरे

উপনিবেশিক ভারতের বাধুনিক রাজনীতির প্রেক্ষাপট আনোচনা করনে দেবা বার,—উনিশ শতকের শেবভাবে ব্রিটিশ ভারতে রাজনৈতিক চেডনার সূচনা হয়। তৎকারীন ভারতীরদের প্রথম রাজনৈতিক প্রভিত্তান—স্বরেজনাথ বন্দ্যোপাধানের (ইণ্ডিয়ান নিভিন নাভিন থেকে বহিন্দৃত) প্রচেষ্টার ভাশিত, ইণ্ডিয়ান আনোদিরেশন'। কিছুকাল পরে এই সংগঠনের অনুকরণে গাগাভাই নোমোজী গঠন করেন 'বোষাই আনোদিরেশন'। তারপর ১৮৮১তে 'রায়াজ রহাজনসভা' ভাশিত হয়।' এ শব্দ প্রভিত্তান রাজনৈতিক সংগঠন ছিসেবে বিশেষ গুজরপূর্ণ নয়। সংগঠনগুলোর কোন সর্বভারতীর রাজনৈতিক রূপ ছিল না। শাবা-প্রশাবা ছিল না। সেইজন্য আনোদন হিউবেল প্রচেষ্টার ১৮৮৫ ব্রীষ্টা-শের শেবভারে ভাগিত 'ইণ্ডিয়ান ন্যাশনাল কংগ্রেস''-কেই উপনিবেশ ভারতের সর্বপ্রথম রাজনৈতিক প্রতিত্তান করতে হয়। এ প্রতিত্তানের বৈশিষ্ট্য সম্পর্কে বলা হরেছেঃ

It began as a body not unlike the Indian Association, bur it had its committees ecettered over the different provinces, and it was this fact which made it into an organisation worth capturing when nationalism had become more effective.

কিছ কংগ্রেগকে কৈন্ত করে রাজনীতি ক্ষেত্রে বে জাতীয়তার উন্নেষ ছতে পাকে—তা ছিলু জাতীয়তা। প্রথানতঃ ছিলু অভিনাত, চাকুরীজীবী, বানসারী ও বুর্লোয়াদের স্বার্থের মন্দক ছিলেকে কংগ্রেলের অনুসর ছর। বুলনানদের পদ থেকে সামি দৈয়দ আহ্মদ কংগ্রেলের নিরোধিতা করা ডক্ত করেন। তিনি এ-প্রতিষ্ঠানের দক্ষে বুলনানদের বোলাবোল স্বাপদ না করার অনুবার জানান। ১৮৮৭ প্রীয়ান্দে নজীতে 'বোহামেতান এন্তুকেশনাল কনকারেন্দেশের বাদিক সভার কংগ্রেলের রাজনৈতিক কর্মবারার বিক্তমে তিনি দু'টি অভিনোল উপ্পাপন করেন। সামি নৈয়দ বলেন—''কংগ্রেলের স্বানান্দক্ষি ও বাহামক্য সামার প্রকৃতির নর; ইংবেল পালকদের সঙ্গে এই প্রতিষ্ঠানের সম্পর্ক যতটা বনিষ্ঠ ও উত্তর হওবা উচিত ছিল, তা নোটেই হরনি। ছিটায়তঃ সংখ্যাসমূদের স্বার্থের প্রতিও এ সংপঠনের

>. See, A.B. Keith, A Constitutional History of India (London-1936), p. 176.

२. (बाषाचन क्यानीविवाद। जानारमय मुक्ति-मरकाम (हाका -- मरियबिक विकीष मरकाम-- >४६५). पूर >६৮।

^{2.} B. Thompson & G. T. Garrat. Rise and fulfilment of British Rule in India. (Allahabad—1962), p. 543

विराग मचत्र (गरे।''' । व महामा गङा। कात्र चना पर (परकर कराजन 'काङीव वेरमान वर्गा-क्रिक ममूर्यक मर्ग्य क्यां व केरकरणाः

...demanded inter alia the presence of elected members in the councils, the right to discuss the budget and to ask questions, the reference to a standing committee of the House of Commons of issues between the councils and Governments simultaneous Examinations at a latter age for the civil service, the limitation of military expenditure, and the abolition of the Secretary of State's council.

এসৰ দাবী স্যাদ্ধ সৈত্ৰৰ আছ্ৰদেৱ প্ৰীতিপ্ৰদ মনে হয়নি। সেকালের মুসলমানদের কংগ্ৰেস বিয়োধিতাৰ মুদ্ধান্তৰ ছিল অধনৈতিক প্ৰেণী আৰ্থ। প্ৰতিটিত বুৰ্জোৱা-মভিজাত হিলুদের বিৰুদ্ধে উদীয়মান বুৰ্জোয়া অভিজাত মুসলমানদের প্ৰেণী আৰ্থগত হন্দই ছিল স্যান সৈয়দ আছ্মদের সৰকাৰ-তোৰণ ও কংগ্ৰেস বিয়োধিতার আসল ধনিবাদ। পরবর্তীকালে মুসলিম দীগোৰ জনম ও পরিণামে 'পাকিস্বাম' প্রতিষ্ঠান্তও ডিক্টি ছিল এই অধনৈতিক শ্রেণী হন্দ ও প্রেণী আর্থ।

करणारंत्र निषय खुनिका बीरत्र बीरत्र व्यष्टे घरण बीरक। ए नानी निर्वरङ्गः

A few Muhammadans indeed attended the early meetings, but as years went on, the Congress became more and more Hindu in character.

এবনি অব্যাহত সম্প্রদায়িক আতীয়ভাবাদের ননোভংগি সমূহকে সংহত ও বিকলিত করে ভোলার সাথে প্রতিষ্ঠানটি সরকারী কর্মনীতির প্রতিও আক্রমণ ক্রমণ িয়া করে তুলতে থাকে। ১৮৯২ খ্রীষ্টাকে থোলাপুলি কংগ্রেস নতুন 'কাউন্সিল আটি'-এর স্বালোচনা করে এবং ভারত শাসদে কভিশব ভারতীবের নিয়োগ বাতীত, সরকারী নীতিনির্ধায়পের ক্ষেত্রে মংশ লাভেব দাবী আনায়। এ সমর থেকেই সরকারী কর্মচারীদের পক্ষে কংগ্রেসে ঘোসদান নিষিদ্ধ করা হর। কংগ্রেসের দাবী শতিষ্ঠা আধারের ক্ষেত্রে ক্রমণীদের আবির্ভাব ঘটে। ১৮৯৬ খ্রীষ্টাব্দে বালগভাবর তিল্ব-এন নেতৃষ্বে কংগ্রেসে চনম্বলীদের আবির্ভাব ঘটে। ১৮৯৬ খ্রীষ্টাব্দে বালগভাবর তিল্ব-এন নেতৃষ্বে কংগ্রেসে চনম্বলীদের আন্তর্ভাব করে। করে ক্রমে কংগ্রেসের মুসলিন সংস্থাদের সম্প্রের ও চরমপ্রীদের বিরোধ তীল্লতা লাভ করতে থাকে। বন্ধতক্ষ আন্যোলনকে ক্রেল করে ১৯০৫ খ্রীষ্টাক্রেম্ব মধ্যে অবিকাশে বুসলবান সদস্য কংগ্রেস থেকে ভালের সদস্যাপদ প্রভাহার করেন। মান্ত সভ্রেম্বন মুমন্তন্ত নান তথ্যতা করেন।

^{8.} श्वामीडिवाच, मूर्त्वाच, मृ: ३७०।

e. Keith, Ibid. P. 177.

^{4.} L.S.S. O'Malley. History of Bengal, Bihar & Orissa Under British Rule (Calcutta-1925), p. 518.

q. Thompson. Ibid, p. 544.

৮. जीविविधानका वाव छोत्ही। जीवविच (धवन मरकान, कविकाछा-->३७७), पृः २८०।

[.] Thompson. Ibid, p. 544.

বিদ্ধ অসমান কৰ-আন্দোলনের ভিনক বাবণ করে বিশ শতকের অনুসর হব। ব্রিটিশ ভারতে প্রবিদ্ধ শ্রেণীয় প্রথম বর্ষিষ্ট দেখা দেৱ—১৮৭৭ প্রীষ্টানের নাগপুর এনপ্রেশ্ নিগশ্-এ। ভারণর ১৮৮২ বেকে ১৮৯০ প্রীষ্টানর অবধি সমগ্র ব্রিটিশ ভারতের বিভিন্ন ছানে 'করলকে পঁচিশাট বর্ষাই কার্যে পরিশত হয়।'৯০ এসন ধর্মবাটন প্রথম চারিত্র্য—ক্ষ্বিধেজনক পর্ত আলার সালেকে নাজিক পরেক্ষ সজে আলোর। কিন্ত সুর্বোধা-অভিনাভ প্রেণীয় বাজনৈতিক সংগঠন অপেক। সক্ষ্মকের ধর্মবাট সাম্প্রধাবিকভা বৃক্ত ভিন। সমগ্রভাবে তাঁবা প্রথম ক্ষান্তর বার্ষের প্রতিও পৃথিশাত ক্ষতো।

এই ব্যবস্থার বিরুদ্ধে কংগ্রেস প্রবল আপতি উবাপন করে এবং ৭ট আগস্ট সাধারণ ধর্মট আজান করে। জনসাধারণ কংগ্রেসের আজানে বিপুল সাড়া দেয়। কিন্তু সমকারী সিদ্ধান্ত অপরিবতিত বাকে। কনে বজ্ঞজ চালু মধার দিন ১৬ই অটোনর কংগ্রেস কলকাতার পোক সিবস পালনের আজান আলার। ঐদিন হয়তাল, শোভাষাত্রা এবং রাধী বছন উৎসব পালিত হয়। ভিসেমর মাসের শেষ দিকে আপোলন কিছুটা ভিষিত হয়ে আসে। তবন লগুনে মন্ত্রীসভার রগবদল হয় এবং উবারশীনীতিকবাপ সমকার পঠন করেন। যিং মলি ভারতের জন্য 'সেকেটারী অনু স্টেট' নিমুক্ত হন। কংগ্রেমু আলা করেছিল তিনি এ-বারস্থা রহিত কর্মেন। থিত বজ্ঞজনক বিং যদি 'সেটেমন্ত্র ক্যান্ট' বলে বিবিধা ক্ষার আপোলন আবার তীব্র হয়ে ওঠে। বিনেতী পণ্য বর্জন ও বিনিতি কাপড়

DO. शीरबळनाव बूरवानावाचि, छावछर्व ४ पार्कनवाच (कनिकाछा -- DASD), पृ: ४D।

>>. O'Mally. Bid. P. 466.

१९. से, पूर्वाक, पृः ४५०।

पदम सर्भ मानकामुक्तक कार्य छन्दक्ष बादक। 'करकति' भवाकता वानवादक अवनका वृद्धि वाह्य। अहि पारमामनरक परभनी पारमामनक बमा हव। चारमामन पद्मावक बाका प्रवास करछन् ५७०५ वीटोरक ''क्याक'' हारी करवन।

দত্বন বোৰণা হার। কংগ্রেলের ভাজ্যন্তরীণ নয়ম ও চরমণরীনের বিরোধ সামরিক্তানে বৃদ্ধে পাছ। 'হারাক্তানে করে নার। দেশে আন্দোলনের চেউ ছজিরে পজে এবং বুসল্যানরাও কংগ্রেলের পজাকাতনে দরীক হয়। অনোন্যপার ব্রিটিশ সমকার—"ন্যান্তন তেন-নৈতির আশ্রর গ্রহণ পূর্বক হয়। স্বান্যাপার ব্রিটিশ সমকার—"ন্যান্তন তেন-নৈতির আশ্রর গ্রহণ পূর্বক হয় বুসল্যান স্যান্তের কাঁনে ভার করেন। বুসল্যানদিপকে বুরান হাইতে নাগিন, পূর্ব বন্ধ ও আসার একটি হতম প্রদেশে পরিণত হাইনে তথার সংখ্যান্তক হিসাবে ভারান্তেরই প্রান্যান্য প্রক্রিটিত হাইবে।" চাকার অনিদার নভ্যান থাজা সনিব্রাহ্ সহকাই কাঁলে পা দেন। শীর্ই ব্রিটিশ সমকারের সাথে কিছু সংখ্যক সামন্ত অভিস্থান্ত ও বুর্জোরা বুজিলীনী বুসলির নেভাগের আঁতাত গড়ে ওঠে। ভাইসম্বর কর্ড বিন্টো ভাঁদের রাজনৈতিক স্বার্থনায়ার প্রভিশ্রণতি দেন।

অনুরূপ আবহাওয়তেই ১৯০৬ প্রীষ্টান্দে 'সর্বভারতীয় মুস্নিম নীলে'র অনু হন। কংগ্রেসের বিপরীত, সাম্রাজ্যবাদী আর্থের ধনজানারী প্রতিষ্ঠান হিসেবে নীলের রাজনৈতিক কর্মুটার মূল লক্ষ্য হন—'ন্রিটিশ-মাজের অধীনে দেশের নিরেবভারিক উনুতি (The orderly development of the country under the imperial Crown.) মুস্নিন নীল প্রতিক্রিরাশী নরাজনৈতিক ধারা অনুসূত্রণ করতে থাকে এবং রাজনীতি ক্লেব্র বুর্জোরা অভিজাত-সামস্ত আর্থ সংবাদক কংগ্রেসের বতই, বরং অধিকতর অনুধারতা ও পালটা সাম্প্রদায়িকভাসহ, বুর্জোরা-অভিজাত-সামস্ত আর্থ সংবাদক সাম্রাজ্যবাদ-সহযোগী প্রতিষ্ঠানে পরিণত হয়। কাজেই পূর্ব বজীর মুস্নির জনতার আর্থে বজ্জক করা আক্রাক্ষ বলে পেশক্ত সরকারী বুক্তি ছিল বিভেদমূলক ও বিভাজিকর।

শীগ্রই কংগ্রেসের অভান্তবে নেভাদেরবর্বো অন্তবিরোধ দেখা দের। মুরেজনাথের সলে বজিনান বারের এবং বিপিনচজ্র পালের বিরোধ তীব্র আকার ধারণ করে।' 'তর্বন উল্লেজনাকে আপ্রম করিয়া বাংলার তরুপদের মধ্যে দলগড়ার প্রেরণা দেখা দের। ... 'অনুশীলন সমিতি', 'গ্রাডী সমিতি', 'আম্বোনুডি সমিতি' প্রভৃতি নানাদল ধাংলার চতুদিকে বুবক শক্তিকে আগাইয়া ভূলে। নেভাদের সহিত ইহার বৃদ্ধ সম্পর্ক ছিল না।'' ব মতিলাল রায়-এন এই উক্তি সম্পূর্ণ সভ্য বলা বার না। সমানবাদী দলের সঞ্চে কংগ্রেসের কোন সম্পর্ক ছিল না একখা পুরাপুরি সভ্য নর। বছতঃ কংপ্রেসের চরবপরীর্থি সমানবাদী দিবিতি সমুদ্ধের, সর্বক্ষেত্রে দা হউক, মবিকাংশ ক্ষেত্রে পরিচালক ছিলেন।

১৯০৭ খ্রীষ্টাব্দের প্রথম দিকেই পান্ধান, নাজান্ধ, বোষাই ও বাঙ্লান্ধ সন্ধাননাশীৰের বোনার আবান্ধ ও পিন্তলের গর্জন গুরু হয়। ১৯০৮ খ্রীষ্টাব্দের 'নিউল পোণার আটি' অগ্নিতে যুজাহুতি দের। সন্ধান-বাদী কর্মিকলাপও বৃদ্ধি পেতে পারে।

धनाभित्य युगनिन नीत्र, बनाचन त्यंत्र छवाभिछ यूगननामस्य धना चळा निर्वाहन ७ सम्बद्ध हित्रशारी क्यार भारीएड जात्मानन हानित्य त्यएड पाट्य। ১৯०१ श्रीहोर्ट्यय क्याही चित्रावर्णन,

၁၁. कुंग्निकाष्, मूर्याक, मृ: ३१०।

^{38.} O'Mally. Ibid, P. 561.

३६. नीविक्रांन वार । चरवनी बृत्वर म्युक्ति (- >>>>), पृः >२०।

ভাষতে তথ্য বুসনিব নীপ পুষোপুরিভাবে সরকারী স্বার্থকে নিজেপের স্বার্থ তেবে প্রবন্ধ উৎসাছের সজে কংগ্রেসবিরোধিতা, সরকারী কর্মনীভি সর্যথন এবং রাজনৈতিক কর্মতৎপরতা চালিরে থেতে থাকে। মুসলমাধ-দের বাদসিকতা সম্পর্কে স্থার ভ্যাবেশ্চীইন চিরল ''উর্বেন ইণ্ডিয়া'' (India Unios) প্রয়ে লেখেন :

It may be confidently asserted that never before have the Muhammadans of India as a whole identified their interests and their aspirations so closely at the present day with the consolidation and permanence of British Rule. 3 9

क्षि ১৯১১ श्रीहोर्क्य बागू वांदी वारम मर्छ हाछिएक्ष्य मरण स्वातक्षमार्थय शामम मयरबाखाय करण नीर्म-स्वयुक्त्यत बरभाहरत ১२१ छिरमस्य बज्जक वश्चि क्यांत्र कथा व्यक्ति हथ ।

১৯১২-তে जागावत्क जानामा करत माजिनिः जानामः गवश वाढमा जाना-जावी जक्षम भिरत बाङ्मा जान भूनर्गछेल हव। जान विद्यान, ह्यां भागभूत ७ छेलिया गववारत जानाम। श्रीमन कर्ष करा हत। वाङ्मात भागमा अवस्त भित्रक हम गर्ज कावमाहित्कम। मूमनिम मीश अवहेनात्क विद्यामवालक्ष बर्म जर्ज कावमाहित्कम। मूमनिम मीश अवहेनात्क विद्यामवालक्ष बर्म जर्जिक करत। जीरमत बाजरेमिलिक मःकर्णिय भविष्ठस भिरत शिरा जंगानि निर्माण्या ।

It seemed that the Muhammadan support of Government throughout that agitation had gone for nothing, and the conservative section found it difficult to meet the argument that more was to be got from active agitation than from passive acquiescence. > 1-

কলে, ৰুদানিৰ লীগেৰ নিকট সমকাম সমৰ্থনেৰ বৌজিকতা আৰ মইল যা। কায়দে আজম নুহন্তৰ আগী জিল্লাছ কৰ্ত্বিক কংগ্ৰেস ও মুদানিৰ লীগকৈ ৰাজনৈতিক ক্ষেত্ৰে ঐকাৰ্ছ কৰাম প্ৰয়াস এ সময়েম নিশেষ ঘটনা। কিছ জ নিকন হয়। একদিকে বু'টি সম্প্ৰদানের বুর্জোয়া অভিয়াত-সামস্তব্যের পারস্পত্মিক আর্থের ল্লাছ বর্ষন এইনিভাবে অপ্রসম ইচ্ছিল তবন অন্যদিকে প্রসাম লাভ কমছিল সমাস্থাদ ও মজুর আন্দোলন।

गत्नाच बद्धव भिक्रुट्च ३५०१ गाम विष्ठे देखिया व्यक्तम এक काववानाय वर्षपि इय। এ बहुव विचिद्धित कांभरहार करण व्य वर्षपि वावधिकांभ करत छात्र भगवरम भदानुकृष्टिमूहक विचित्र (३म महित्म वर्षपि (१४) व्यव १३० वावभी छित्र भरक वर्षपि भव्दक्ष धंछाक व्याभ छिन। छीत्र धंवान---

वानुम कानाव नावस्वीत । ननानी (बरक नाकिसान (झका — ১৯৬৮), नृ: ১२०।

^{31.} O' Mally. Ibid- P. 561,

३४. वे, पूर्वाक, मृः ६७३।

३३. पूरवानावास, नृत्याक, मृः ५७।

2006 श्रीहोर्ट्स विमर्क्य हैं यहत कारांगरका श्रीकिशंटर स्थापेट्रिय श्रीकिशंक्य हम विस् सामी पर्वचि ।

विरुप्त चमाना मिर्पें धर्म मधून चार्णानम गार्थिक कर्ण गांड करन। चार्निन ७ अनिहास श्रीविक मर्त्राठम रेबश्रीविक मरवास भविषेण करे। ১৯৩१ व्यक्त ১৯১१ श्रीक्रीक करेबि कि, बार, मिन रेडेरबार्ट्स बिडिनु चारन पांचरनांभन करत स्परक चराम छ विस्तर्भन प्रतिक पार्ट्सावरक वार्कगीय थेनांनीएड ज्ञारबंक करत्र गर्छ ट्यारबंग। थेपेन नहानुरक्त भूर्व, खानकीय सहस्र खानी ७ बिगुणुनिक जार्लागरनम् रेनप्रनिक छात्रिज्ञा गल्नार्क जनिविछ वत्र। ১৯১० श्रीहारक एसविद्यान ''कांक्ज़ोन विख्यर्थक गर्छ।'' नामक मजूब गर्य भुनिकराय छरगार्थ श्रीस्त्रीत वस । ३० किस श्रेथम विश्वयुक्त त्येव द्यांत्र भूवं भवंक अरमत्यंत्र व्यक्त त्युनी वर्षष्ठे चाक्यरहत्यम वरत एट्रिकि। ১৯১৪ श्रीहोरक माम्राकारांकी बाकमरक हकारत धका विश्वयुक्त एक व'रम, किनु मुनिक जारमानम विराक-खार्च गिष्निंग हरत छर्छ। युक्त गर्नाश्चित्र जनावश्चिमरत्र अरमर्गन मजूनरमम मरमाञ्ज सामरेमिष्टिक मुक्ति वर्षात्मस क्या मःगठम रेज्यीय ट्यमना थनम स्य।

পরবর্তী অবস্থা

र्गुजियांनी ताक्षमत्र। ১৯১৪ श्रीहोरम शृथियी यांनी श्रंपम माम्राज्यांनी युक्त यांगव। युक्तम जना পণা, অর্থ ও লৈদা সংগ্রহের প্রচেষ্টার ব্রিটিশ সরকার ভারতীর বুর্জোরা লিচ্পপতি ও সামত রাজনা-बर्णिय निक्ठे महत्याभिष्ठात जात्यभग जानाय। चित्रिन खान्नजीवरणय भिक्ठे त्वत्क विभून माहा भार । উপमिर्द्य-डाय्रड गाँग्राकावारी चिष्ठिभरक वर्ष, रेगमा अवः निम्भव्या सामीन स्वर ।) > बुक्त एक दबाब अक ब्हरबर बरना डाबडीन ब्राक्टनिकिक जारणानन नडून पंक्ति मकत करन। ১৯১৫ श्रीहै। त्या वाषा है व्यक्तिकार कराया ७ वृत्रानिय में लो वायक्ष्मीत्र वर्ष वना अक्रि निषिष्ठे वर्षत्रिका खिखिएक क्रेकावक बन्न। क्र-विधिवन्ति गान्नि क्रिन, भि. भि. भि. विश्व खानाक्र वानीनका मन्नदर्क चिक्रिन সরকারের মনোভাব कি তা প্রকাশ করার দানী জাদাদ।^{১১} বিসেস জ্ঞাদি বেসান্ত পরবর্তী করুর 'ভারত ভারতবাসীদের' এই দাবীর পরিপ্রেক্ষিতে 'হোমকল লীগ' প্রতিষ্ঠা করেন। 'বরাক্ষ' ভবন जान এक्टो जन्नेट बान्ने बाज हिन मा। क्टन, च्रिटिन मनकारतन भटक जास अक्टो मार्का बानी **डेकान**ने क्या जाननाक हरत नेकात। वर्ष क्यन् कार्ड छन्न त्रिक्ति नामारकात जाने हिरास खात्रज्य चात्रच भागन मार्गत প্रতিশৃতি দেন। युष्टमारम खात्रजीय युगनवानरम्ब महानुज्जि भूमत्राव লাভের অদাও সরকারকে ভুরভের ভবিষ্যত সম্পর্কে প্রতিশ্রুতিবছ হতে হয়। কারণ ধনুকান বুছের भव विज्ञभक्ति गुविजादि ग्लेट शरव **एडाव ज्वद गण्यार्थ जावजीत गुगनवामगर्भव गरवा र्था**ड स्वी लय। मनकाम এ-अवसाम जीएमारक छोरे প्रक्रिया कि निर्देश नामा सम रम, मुस्सम मनम खाना जितिन बाबरक मार्थाया क्यरम जुनी विनाकरण्य केरळून मायन कवा शर्व मा ; जुनक नर्यन क्या शर्व मा। चानुारम পविज्ञ मुमलिम मीन्न भूमबार मनकार मनर्पक नीजि श्रम् करव अवः मुक्कारम करवारम माम मीर्ग ७ विष्ठिम माञ्चाबाबाबरक मर्वश्रकारत महातका बादन वर्धमत हत।

Reich, Ibid. P. 240.

^{,ं} १२. वे, मूर्याण,मृश् १८२।

किंद्र क्षत्रमुद्दमार्क मान्य शिक्षाप्रक विनामा क्षत्र—पूर्णाक कांत्रक महकाप क्षत्र-विक्रिमिनामा कांक्रिमिनाम, क्षत्रा बार्क क्षत्रीय श्रीकिमिनिक्षय मर्था। पृष्ठि, श्रेनामम निकारम मर्था। पृष्ठि अपर वाद्यम भविषयंग्रक कांत्रम मर्था। पृष्ठिय व्यना कांत्रिम वाद्यमा वाद्यम व्यवस्था वाद्यमा वाद्यमा

विनुबुद्ध गर्नाक्षित्र भेत्र छाई 'कर्मात भविषर्छ बुट्ना'--चर्नारकत्र भविषर्छ बर्ट्नेश रहनम्दर्गर्छ चीक्क <u>जिबिक मरकति (बांबन) क्या हव। करधिम ७ यूमिय मीन व डेनहास धाजानाम करव। बाहिय</u> विशेष अर्क 'छित्रश्रोती भागक' भारत चांजिहिन करत बरणन या, अक्त्रोत विशेषक बांबारी अ-जनश्रोत व्यवगाभ बढ़ीरमा यात्र। ३४ ३३३१-८७ क्रस्थम ३६ बङ्ख्य बरवा पूर्व गाविष्यीम प्रशास वार्ख्य कर्बन्ही धर्ष करन । ১৯১৯-এम बांडेनां पाडि अरमरने मार्करेमिक बारमानगरक बारमा डरककिक करन ट्यान । भाषाम अन्यारेरभग विकास जीत क्यार करते भएत । करन भीति स्मारम भाषास्य जारेंग काती एता। धा-होन-किमीने शिक्षात्थम विष्मान्तक श्रेकांना विष्मान बदम वानेंगा करम। विनाक्छ श्रेट्रो नुगनमानवास উषिशु श्रव ७८ठेन। शाबीजीत मछा।श्रह चार्त्मानन वामवत सक इस। विधन बारम कनकाजांत्र रवजानरक रक्छ करत्र माम्ध्रणाविक वाका स्वर्धा स्वर्ध। रमभावाधिनीय माधारमा गरकात्र भविश्वित्रि व्यास्टर व्यादान। जुन्नरकम প্रति श्विष्ठिरनेत्र नक्षणामुगक बरणाणांच श्रकान स्मान स्टि परिका বোভকা কামাল পাণার অভ্যাদরকে ব্রিটিশ সরকার গমদের প্রধাস পায়। সারে**ভ ভর্জ** कर्जुक बोलाबुनि जुबक आग कवाब कवा कांग हरव भछाव ১৯১৯ ब्रीहेरिक मजाश्रदक मानाभावि र्गनगंभांभ विनाय ५ चारणांभभक एक करत्र। अत्रिक्षांत बुक्कांत्व महकारात स्थल महल প্রতিশ্রুতি পালিত হওরার পরিবর্তে দেশবাসী লাভ করে একটি দাসবমূলক শাসণভান্তিক সংভাষ, गांवश्विक पाएंन ७ निनीएन—उपा विद्यानवाङ्कङा এवः छएनष्ट बुरहाव नकन वक्ष कुकन ७ (बामा। अगमसकात्र व्यवचात्र वर्षमा भिएक जिएस स्माटक निष्टक :

A better sense of humiliation and a passionate anger filled our people. All the unending talk of Constitutional reform and Indionization of the services . Was a mockery and an insult when the manhood of our country was being crushed and the inexorable and continuous process of exploitation was deepening our poverty and supping our vitality. 3 4

এবনি অৰম্বায় কংগ্ৰেশের পরধর্তী কার্যক্রম; অনহবোগ আন্দোলনের পটজুনি-তৈরী হন।
প্রথম বিশুবুছের পর এবেশের শ্রমিক আন্দোলনেরও অপ্রগতি মটে। শ্রমিকনের রাজনীতি ব্যাপকতঃ
ও গতীরতা লাভ করে। বুছোভনকালে শ্রমিক জনভার আন্তর্জাতিক সংহতির ভিত্তি স্বপূচ হয়।
শোভিয়েত জন-প্রজাতর উন্জুত হয়। দালিরার বলপেভিক সরকারের প্রতিষ্ঠার সর্বহারা শ্রেশীর রাজনৈতিক বোগ্যতা সপ্রমাণিত হওরার ভার চেউ সারা নিশ্বে ছড়িবে পজে। ভারতবর্ষও তা থেকে
বাম যারনি। তর্বনও এবেশের শ্রমিকদের কোন পজিশানী রাজনৈতিক সংগঠন ছিল না। শিলপ-

^{49.} Keith. Ibid P, 242.

to. Sec. O'Mally, Ibid. P. 576,

^{30.} Jawaharial Nehru. The Discovery of India (India, Reprinted-1964). P. 378.

কার্যনার তাঁলের অবস্থা ছিল অবর্থনীয় গুর্থনারন্ত। মক্ষ রক্ষ আরক্ষ শ্রমিক থেকার হবে পঞ্চে।
কিনিল পত্রের লাব হঠাৎ বৃদ্ধি পার। কিন্ত সাধারণ বাসুষের আর বাড়েনি। এ-অবস্থায় কোন্ধ বর্থনীয়
গক্ষর হতে পারে না। ২% তথাপি ১৯১৯-এর প্রথম দিকে বোন্ধাইরের বর্বনটে প্রায় ১ লক ২৫
হাজার শুনিক বোর্গদান করে। ১৯১৯-২০ খ্রীষ্টাবেল বোন্ধাই, যাপ্রান্ধ, আহ্বেদাবাদ প্রভৃত্তি ভাগে
শুনিক জালার্য কোন্ধান করে। ফালপুর পশ্রমকরে, জাহালপুর রেন্ধ-কার্যানার কলকান্ধা পার্টকরে,
শোলাপুর কাপছের করে, জারপেলপুর টাটা কার্যানার শুনিক বর্মনট বন্যার যত হড়িবে পড়ে।
১৯২০ খ্রীষ্টাবেলর প্রথম ছ'মানে ভারভবর্ষের বিভিনু স্থানে প্রার্থ পাঁচ লক্ষ শুনিক ২০০টি ধর্মবটে
আপে প্রথম করে। ১৯১৯-এ পুর্বান্ত রাউনাট আইনের বিক্তমে শুনিকরা বার বার হমভান ও
শোজাবান্তা পান্যন করে। ২৭ ১৯২০ খ্রীষ্টাবেলর ১১শে অক্টোবন লালা লাজপত রাবের সভাপতিকে
কোন্ধী বহরে "নিধিন ভারত ট্রেড ইউনিয়ন কংগ্রেস-এর" প্রতিষ্ঠা হয়। শিলপকার্যানার শুনিকদের
এইটিই প্রথম রাজনৈতিক প্রতিষ্ঠান।

পুঁজিবাদী শ্রিষ্টাশ শাসকদের নিকট তাংকালীন ভারতের এ-সব বর্ষচ তথনো ববেট গুরুবপূর্ব বনে বনে ধরনি। প্রক্রিকদের উপর গুলি চালনা, ভাবের গ্রেক্ডার, কারাগারে নিক্ষেপ প্রভৃতি রক্ষর নির্বাভনে ভারা অবশ্য কর্বমো অলীয়া প্রকাশ করেনি। তবে, 'ক্ষিউনিঅমের সংক্রমণ বেকে ইউলোপের বাস্থা রক্ষাভেই শ্রিষ্টাশ বুর্জোরারা সর্বাধিক উর্বেগ অনুভব ক্ষরছিল। ১৯১৯ খ্রীটাকে লাক্সে অর্জ, উত্তরো উইক্সন, ধর্বিট ছভার প্রভৃতির নেবার ও বক্তৃতার ''ইউরোপ বলশেন্তিক হয়ে বাক্সে'—এই আশংকা প্রকাশ পেতে থাকে। ১৯২৩ অবধি ইউরোপে সমাল বিসুবের ব্যাপক্ষ আশংকা অব্যাহত থাকে। ইভোববো শ্রিটাশ বুর্জোরাদের 'গোদের উপর বিবর্কোভার বত' তুর্বক্ষেক্ষাক্ষাক্ষাক্ষালাল আরাক্ষালার হয়। ব্যাবিচ্যার ক্ষেত্রকার প্রাথাক করে। আরার্ল্যাকেও বিজ্ঞাহতাব করে। ভারতেও রাজনৈতিক আন্দোলন এক নতুন পর্বারে উপনীত হয়।

नश्रमांना जावून कामान जाजान-এর প্রशासिक जगहरयोग-नीकि এবং তার जरिएक्सा जर्भ तर्म प्रशास निवास नि

^{46.} See. Nehru. Ibid. P. 374.

२१. बृद्याणायाव, मूर्वाण, गुः ४८-४०।

२४. क्याजीकेतार, जूरवीक, जुः २०१-'०४।

¹ O' Malley. Ibid, P. 584.

बद्धावा, विश्वविद्यांक्रा अवर मनकारी (पंजावशारीका एवंजाव वर्षण कराव श्रीक्रिक बंदन वद्यांक। क्रिक कार्यरक्टक शारमिक चारम भविषरमय मिर्चाररम ७० मक खालारम मर्था थाव कृषिनक जल्बहर करहा। ^{७०} बूब कर गरवाक जहिमकाकी जानावाठ वर्जन करहा। रवेडाव जानि करवान साह्य अक्षम। जात्र करतक्षम जरेगछमिक शाकिराक्रि ७ मुजिन जिन्नाय अक्षिरा विका राजा। क्षकाळाच 'रमोडीच नर्विकारवजन मार्टन अक्षि राजीच किनुविकालस ७ वक्टकरम्ब निष्टिनु कार्टन रमनीय निकारकन श्रीकिष्ठिक रव। ১৯२১ श्रीहोरम्बन वार्ड बारन वराका नावी बावक जवा वर्षम्, बच्य श्रीकाम ७ हर्न। नावहारवय चारवरन चामाव। चर्डानत्र बाटन जिनि नावविक ७ रवनाविक छन्न शकांत्र क्षांत्रजीय क्षांत्रांत्रवंदक এ व्यार्त्मानारम वर्ष्य अध्य क्यांत क्षांत्र क्षांत्रांत्र क्षांत्रांत्र हिराधक जिनि गरकारी करेज अनः गरकाम ७ जान चारिएन चनगण पर्नारमा चना राजावनिक चडापीरनंद পदिक्ष्मिन। त्येन करत्र। 🔧 बर्लोनिएड क्य परद्यंत निवास रम्म। क्यि 📲 निवायिक পविकल्पना कार्र्य পविभेज इन्नि। यहांद्या शादी पहिःम छेपारम प्रमुख्यारख्य पना पक नाबात्रनरक नाम बाद जनकिछ कत्ररम् जारणामान नीधुरे नक्तिन नरपं ना बाह्यत् । ১৯২२ श्रीहै।राज्यक (क्युग्बादी बार्टन क्राधिन व्यक्त्रारनक्ष्मन बुक्त धर्मरमंत्र भीतकनुत्र (क्रमान छोबिरहोना बाम) बाक्यव कंदा २० कम करमगोरनगर भारताशास्त्र भूक्तिय बारत। ३३ महेनाय बाक्सकिक शरत वर्शका साहि वारणांगम श्रेष्ठाविष करत्रन। अ नवर अकति बाबरबावन्त्रक बढना श्रेकारणेश व्यवस्थि व्यवस्थि ७ वह्य विनापुत्र कात्राम् ७ ध्रषान कता हत। छाङ्का • • •

Proceedings taken against local leaders guilty of lawlessness, and the breakup of organizations pursuing methods of intimidation and violence.

डरन विकारन वाक्टनिडिक त्नडा ७ कवी कांबागारत निकिश्च इन्द्राय गवर्य ताक्टिमिडिक वाट्यामटक विवर्षय त्याद्र कारम । नावराज विश्वक्क वाट्यामन जनगढ कार्ट वीरक । किंद पुगनवानरक ताक्टिनिडिक श्रिडिशनम्ब्रहत बर्सा मण्डांच मा वाकाय केरकाय व्यक्ताय कार्ट्याम क्वेंम्डी ७ श्रिडांच च्यमहरवान वाट्यामटन वान विकास क्यांड शांदिश करन व्यवस्थान वाट्यामड्ड इन्द्राय ७ विमायक वाट्यामन विकित इर्स श्रुष्ट स्थानी वाक्टमिडिक पूगाङा, इल्लेग ७ देनवाना स्था स्था ।

भूषिक बार्त्णामरानव रक्षात्र 53२० श्रीष्टीरमत्र र्लच छ'बारम निम्मकाषयोगात्र स्वार 50% वर्षके बनुष्ठित हता। छारछ 5 मक १० हाब्यात्र भूषिक व्यर्ग श्रहण करन । १० मत्रवर्षी वहत्र व्यामाराव हान् वामारानत्र भूषिकत्रन वीर्ष बाह्यवे वाम बाम्मी वर्षके हानात्र। वर्षकि भूषिकरमत्र छैमत्र बाह्यवे निर्वाष्ट्रम हरना वामिक भक्षकि हानात्र। छन् वर्षके व्याहात बारक। छारमत्र मत्रवर्षण वामाव-रक्षम सम

^{30.} Keith, Ibid, P. 227.

^{33.} O'Malley, P. 585.

^{32.} Sec, O'Malley. Ibid P. 603.

^{33.} weidisme, greis, 7: 1331 au Keith, Ibid. P. 283.

^{38.} O'Malley, Ibid, P. 612.

De. के, पूर्वाण, पु: eve i

প্রবিদয়াও সহানুত্তি-সূচক ধর্মট পালন করে। এবছর তথু যাত্র বাহ্ছা সেশে ১৪২টি ধর্মটি কর্মিট পরিণত হয়। ২ লক ১২ হাজার প্রবিদ ধর্মটে বোলদান করে। ট্রেড্ ইউনিয়ন জালোনন সাংগঠনিক ক্ষপ হাত করে। ১৯২১-এ অধিয়াম অধিবেশনৈ তার প্রথম বাজনৈতিক ক্ষপ প্রত্যক্ষ করা হার। ইউনিয়নিস্টনা অবাজের দাবীতে প্রভাগ পাশ করেন। ১৯

এসবর ক্ষাবেত বুক্ত্রক আহ্ববের নেতৃতে নিবিদ ভারত করিউনিন্ট পার্টিও গঠিত হর। ১৯২২-এ রেদ এবং কারণানার প্রবিক্ষা দেড্বাস বালী বর্ষট চালার। ক্ষাই ইতিয়া রেলওরে ক্র্যারীদের বর্ষট করি করি করিছিলের বিশ্বাস্থান্তকভার নির্বাচীত হল। তথালি ব্র্বাটে সরকারের দেড় কোটি টাকারও করিছ লোকসান হয়। নিবিল ভারত ট্রেড ইউনিয়নের করিছেলন এ-বছর ক্ষাকভার বসে। তাঁরা বিনিতি ক্রমা বর্জন, চর্কা প্রচলন ও গান্ধীবাদের প্রতি আনুগত্য জানায়। অসহবাস আন্দোলন প্রভাক্ত না হওরা পর্বত্ত স্বভারতীয় করিউনিন্ট পার্টিও ক্রিটিনিন্ট আর্কাভিকের ভারতীয় বিভাগের ক্রক্তাদের নির্বেশ কংগ্রেস ও বিনাক্ত আন্দোলনের সমর্বনে সামন্ত বুর্জোরা নেতৃক্রের পতাকাভলে কাল করতে থাকেন। ৩৭ ১৯২২ প্রীষ্টাবের কলে বুর্জোরা-অভিজাত লামন্ত শ্রেণী, রবাবিত্ত শ্রেণী এবং শ্রমিক ক্ষম্ক জনসাধারণ তথা সকল শ্রেণীর-ই বানুব সেকাকে বেল চোৰ বাঁবানো আলোর বন্যা থেকে হঠাৎ জনাবল্যার বেলছকারে ভূবে ধায়। সামাজিক-রাজনৈতিক জীবনে আলো, জাণা, উকীসনা, কর্মপ্রবাণ, চাঞ্চন্য প্রায় একেবারে লুপ্ত হয়।

দেশকাৰ ও সমাজের এই শ্রেকাণটেই জ্বল কৰি কাজী নম্বক্ত ইস্নামের সম্পাদনার বিপুরী বাঙ্নাক মুখপত্র হ্বপে 'ধুরকেজু'র প্রকাশ। 'বুরকেজু'র বুকে একালের প্রার সক্ষণ লক্ষণ শাইরূপে অভিযান্ত। কিন্ত 'ধুরকেজু' হজাপাকে নালন করেনি। সকল নিরাপা, নিজিয়তা ও বিমূচতা কাটিরে বাঙালী জনতার যনে জাবার জাববিশ্বাস সকারপের ব্রুত নিয়ে 'বুরকেজু'র উপর হয়। জনন পাসকের সঙ্গে পাসিতের বিরোধই শুবু দেখা দেরনি; পাসকশ্রেণীর বিপুরাপী পুঁজিবাদী মৈত্রী সংবের মধ্যে জাববিরোধ, পুঁজিবাদের সজে সাম্যাদের বিরোধ; স্বাধীনতার দাবীতে জনতার সজে স্ববিরোধীকের বিরোধও জীব্র হরে ওঠে। এ সমর বাঙালা দেশের বির্ধরা রাজনৈতিক আবহাওরার জীবনের সর্বক্ষেত্রে আবর্ত রচনা করে ''পূর্ব স্বাধীনতা'' লাভের রাজনৈতিক দাবী-ই 'বুরকেজু'র কাল পরিচরের ছারকা চিছিত বৈশিষ্ট্য। পূর্ববর্তী ও সমকালীন জপর কোন পত্রিকা এ-কৃতিরের অধিকারী সর। রাজনৈতিক কেত্রে এ-বলিষ্ঠ ও সোজার কর্ণেঠন জন্মই 'ধুরকেজু' সাজও জুননার হিত্রীর রহিত।

^{36.} O'Malley. Ibid P, 608.

७९. भूगम्ब (कानी। क्राम ७ क्विनिग्हे (७४ ध्यम, क्विकास, ३८८८), मृत ৮।

शृष्ठि-जणार व्यालाकि है अञ अलिश्ष्ठे

निष्क्त त्रश्यान

এলিরট-এর কবি-যাদন ও তাঁর শিক্পবোধ আলোচনা করার আগে একটি নিময়ে সুস্টে ধারণা দেরা দরকার যে তিনি কোনো প্রকার অস্টে জীবনবোধ কি:বা আবচা দৃষ্টিওল। নিমে কাব্য বচনা করেন্দি। জ্বাব ও জীবন তরাচ তাঁর কাব্যের বিষয়বর সম্পর্কে তিনি সঞ্চাগ। শ্বীকার্য, তিনি কাব্য রচনায় জবিকাপে ক্ষেত্রে Contrapuntal method-এর আশ্বর নিমেছেন। কিন্ত এ প্রসালে এও বলা দরকার উক্ত বের্যন্ত-এর যথায়র বেব্যার জবাধারণ কবিদের হারাই সন্তর্গণ ।

ভাছান্তা আবেকটি নিশ্ব রয়েছে যা যে কোনো কৰির আনো আদর্শ ছওয়া উচিত। কবিতা নচনান্ধ জনো প্রচুর পঢ়াশোনা থাকা দরকার। এনিয়াটের স্বষ্ট জগংকে বুঝতে ছলে বিশ্বের সঞ্চিত জান-ভাঙারের সাথে বোটাবুটি পরিচয় থাকা প্রয়োজন। কবিতা ভার কাছে বুহুর্তের উচ্চারণেই কেন্দ্রীক দর। এর সাথে রয়েছে বানবিক সভার জাগ্রত প্রয়াস যা বিনা বিশেষ বুহুর্তের উচ্চারণেই সীবিতা দর। বানুষের ইতিহাস সভাতা ঐতিহা কবিতার শন্দাবলী গাগ্রে যেখে অপূর্ব সৌলর্ম চরমে নির্ধারিত। জার এথানেই এনিয়াটের স্বষ্টি-নৈপুণা।

लालिमहात (১१৮৮-১৮৬০)-এর প্রের্ছ গ্রন্থ The World as Will and Idea প্রদাণিত হরেছিলো ১৮১৮ বৃষ্টাব্দে। এ গ্রন্থে বিশৃত তার চিন্তাধারা দর্শদের কপতে আলোড়ন স্বাচ্চ করেছিলো। তিনি বলেছেদ, সব কিছুর প্রাথমিক করে যা নিংশব্দে কাল করে থান তা হাজে ইজাশক্ষি। তিনি বোঝাতে চান, ইজাশক্ষির সাথে কড়িত রবেছে বানুদের সম্পান সুলসুত্র। এবং ওই , Will হতে ব্লত: বশু প্রকৃতির।

लिलिभहाति नागूरम्य महजान पूर्वमन्त्रात्म श्रीमाधा मिरवरहा। जात व पूर्वमन्त्र (परम मुक्क हाज्या) मानुरम्य भरक श्रीव जमन्य वाभित।

छोत्र गानूरवन जमनम मजनङ ४४ वस्थात मानवडा छेलम्बि करत वज्र दर्गण वरमहित्सम, क्लिम्बि करत वज्र दर्गण वरमहित्सम, क्लिम्बि करणी जूक मत्र वर्णाने जूक हर्गण मानूब भीत-- Nothing is insignificant to so insignificant a creature as man.

এলিয়টের চিন্তাবার। প্রায় কাজাকাজি হলেও একটু ডিনু ব্যবেষ। চিনি তাঁব Essays Ancient and Modern প্রয়ে লিবেছেন We must apply the whole history of our civilization upon our particular emergencies.

মানুষকে জিনি বাঁটো করে দেখেননি। অগুন্ত শক্তিম সাথে মানুষের সংবাত চিম্বন। আর ওই অগুন্ত অসুস্থ অকল্যাথকর প্রতিক্রিয়া ভার মাননিকভার বিপর্বরের সূচনা করেছে সভিচ কিন্ত ভিনি কর্মকা বিয়ান্ত হয়ে পড়েনদি।

विनिष्ठे वन्द्रमः

The knowledge imposes pattern and falsifies, For the pattern is new in every moment And every moment is a new and shocking Valuation of all we have been.

["East Coker," II]

এলিয়টের কাব্য স্টির সাথে অন্তিববাদের প্রণু বিজড়িত। তবে তা কভোবাদি, এবিষয়ে সিদ্ধান্ত দেরার আগে অন্তিববাদ সম্পর্কে কিছুটা ধারণা নেয়া যাক।

শ্বে, এন, স্পাইয়ার সন্তিরবাণের সংজ্ঞা থিরূপণ করার প্ররাশে বলছেন, Existentialism is a philosophy of crisis—Christianity and Existentialism, স্পাইরার সংকটের দর্শন প্রস্তাক করছেন জ্বিরবালে। আর এ দর্শনান কি তার প্রতি ইন্সিত দিতে গিরে বলছেন বৃষ্টবর্ম ও অক্তিরবাদের ক্থা। উত্তরের মধ্যে বিরাজনান বন্ধে অভিন্নবাদের মূল উপাদান রয়েছে বলে তিনি মনে করছেন। তবু সংকট কেনো এবং কোপায় তার স্থাপট জবাব উল্লিখিত বক্তবো অনুপশ্বিত।

'गःक्टिस पर्नन' क्षोति ज्ञान्छात्व वार्षा। क्रत्र्य्य तात्क् यात्रभात छात्र Existentialism, a Theory of Man श्राप्त। यात्रभात वन्यक्तः

Man is on the operating table, naked, ashamed, worried; he faces pathologists rather than surgeons Man's nobility as well as his misery is on display.

बांनूब जाजानहारतम हिनियन नाविछ। छनक नविछ्छ जनहार। প্রয়োজন হলো Surgeonera जनह छात्र नाविय ने विछा त्र प्राया प्रताह pathologists। करन এक जिर्क स्वयं बांनूरवत्र वहर्ष्ट्व श्रीकान वहर्ष्ट्र छात्र मुल्ले योजान वहर्ष्ट्र । अपने वहर्ष्ट्र । अपने वहर्ष्ट्र । अपने वहर्ष्ट्र ।

यपित 'जभारत्रोहिः हिनिम' এत्र मार्च 'नामकाहै। पहत्र'त एउमन कारण এकहै। बिन हम्हे, उनु खीनमामन भाग-अत्र 'जाहे राष्ट्रत जारणंत अकणिन' करिडांत ज्ञांभ विरामन अभारत छात्रान करा नाव :

> ल्यांना
> छन् এ-मृट्छत शन्भ ;—कांना
> नातीत्र धंगरा नार्भ इत मारे ;
> विनाहिछ खीनरमत गान
> कांगां त्रार्थिन खीनरमत गान
> कांगां त्रार्थिन खारमा नाम,
> गमरातत छेवर्डरम छैर्छ अरग नम्
> म्यू—यात ममरमत मन्
> पिरतर्छ खानिरङ;
> हाङ्हाङारङ्च ध्वानि स्वभात नीरङ अ-खीनम कारमा बिम क्टेल छट्छ गाहै,
> छारे
> मानकांक बरत

सामि-छन् सामि

गानीय स्वय-दाय-निष्ठ-गृष्ट-गत नवनामि;

सर्व सत्र, कीष्ठि भव, गळ्नछ। मय
साद्या এक विभन्न विगान

सावारमत स्वर्भछ बद्धम छिडदा

दोमा क्दा;

सामात्मन क्रांच क्दा,

मानेकारे। यदा

छिद ष्ट'दन छद्य साद्ध देनिवर्सन 'श्रास ।

[यहानृषियी]

ना, व्यक्तिकारणय कथा वलिहरन। छक्छ वर्ण कीथनामण प्राण्य महर कथा शिक्किकि विद्या करता। किन्द 'मानकाते। परव' कीवरनय थिनवार्य अविश्विकि किश्या कर्त वर्षा विद्या क्षावमान नरवा विश्विक नरे। वर्षाभित्र किन्दिन मुमूर्य वार्णीय किन्दिरमाय किन्द क्षाव क्षाव वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा किन्द्र क्षाव क

अनिवरित कविजात जन्मजा, गापि म्ड्रात्र विज्ञकण पर्याश्च णित्रमाएं तरपाछ । जाम अरे विश्वकण्य जिल्लाको मात्रमा (चरक छेरमाविड। क्लिंगा नापि मृद्रा जीनराम वत्रम जनमण्डाको भागाचा। Four Quartets कविजाय नापाएड कण्टत अनिवर्त है एकाश्च क्रमण्य :

Our only health is disease

If we obey the dying nurse

Whose constant care is not to please
But to remind of our, and adam's cur

And that to be restored, our sickness must

grow worse.....

এলিবটের বাকাচেডনার অভিতরাদের লক্ষণ ব্যেছে। তবু বলা যায় অভিতরাদ ডেম্ম কোনো থকার প্রভাব বিভার করতে পারেনি। অভিতরাদ সম্পর্কে বলা হয়ে বাকে, The absence of logical consistency in existency in existential thought is a common charge levelled equines it, and that perhaps rightly. সম্ভবত: এ ধ্যুবের ধারণা এলিবট নিজেই পোষণ করতেন। ভাছাড়া এলিবটের অপৎ বর্নীয় মুল্যবোধের সাথে নিবিছভাবে অভিতঃ। ধীবনের প্রতি তার বে শৃষ্টিভলী ভা হচ্ছে মুলত: বর্নভিত্তিক। পাণিব দু:ব বাতনার বোর-বিবোর নিরেই

তিনি জীবদকে বিচার করতে চাদদি। নিদিই সময়ের পঞ্জীতে মুদ্যবোৰ প্রতিষ্ঠা করা সম্ভব না-হলেও, পরিচিত অগতের বাইরে এবং যা সময়ের সীমারেবার নিদিই দর এবদ কোনো মূলাবোরেব প্রতি আহা রাধাও অগতের বাাপার নয়। বিবর্ষীর ব্যাব্যা তিনি ক্রছেন এভাবে:

The real issue of our time is not between those who believe in recourse to war and those who do not: the frontiers are vague. The real issue is between..... those who believe only the values realizable in time and on earth, and those who believe also in values realized out of time.

['The Criterion,' P. 68]

আর এই যে ধর্নীয় সমূভূতি, তা কি প্রচলিত অর্থে এলিয়ট-এর ধ্যান ধারণাকে প্রভাবান্থিত করতে সক্ষম হয়েছিলো ? সোজা জবাব হজে; না। ধর্মকে তিনি একটি বিশেষ দৃষ্টিকোণে থেকে বিচার বিশ্বেধ করতেন। এ প্রসঙ্গে এ. জি. জর্জ বলছেন:

The religious man need not necessarily be a Christian (or a follower of any particular variety of religion). Even an atheist who in all earnestness and sincerety repudiates all belief in God is religious, according to Eliot. The essential point is that one should seriously consider the spiritual problems.

[T.S. Eliot: His Mind and Art]

ধর্বের ব্যাপারে তার উদার মনোডদী প্রশংসনীয়। ধর্মীয় কোন্দলে যেতে তিনি নারাম্ব। আসম কবা হচ্ছে আন্তরিকতা। কেউ যদি সদয় দিয়ে সুষ্টার মাহান্ত অনুভব করতে বার্থ হন অবচ তার কবা ও কাজে কোনো প্রকার তণিতা নেই, তাহলে তিনিও বার্মিক ব্যক্তি। এলিটে তাই বিস্থাস করতেন।

जन्मा जिल्लाम्ब मात्रवडा ए। এनिश्रोह यश्रीकात्र करत्रष्ट्रम, এमन मह। जिल्लाम्ब छएमिछ मन्मार्क किनिभ म्बर्गाटकत वक्कवा धिनियानस्योगाः

Existentialism is a reaction of the philosophy of man against the excesses of the philosophy of ideas and the philosophy of things."

[Philip Maiset: Existentialism and Humanism]

व्यक्तिकाम १८०६ मानूरवत्र कीयम-पर्यरमत्र এक श्रकात विस्तात। अवः ७३ विस्ताति। १८०६ पर्यरमत्र व्यनावनाक इक्षाइक्तित विकरः।

विन (पेटक विनयि-कारा-कार्यका गार्प कविषयात्त्र (याश्रीदार्थ कार्योकार्य। दि-द्याद्या कीर्या-वर्षी द्यादेक्द द्यापेत्र कविषयात्त्र केर्शकि मक्त्रीय। द्यापाम कीर्याद्य त्याद्य मुद्या वद्य नियक्ति किर्मार्थ शिष्ठ शक्ति मन्दर्भ मक्त्रात्र द्यापेत्र किर्या निक्ती हेटक क्याद्यक किर्याद्य श्री (पेटक कृद्य गार्थ पोक्टक शिर्याद्य मा।

मानुष कि १

अणियो अपः विकेष केल्याचे विशाम करवय :

Man is essentially limited and imperefet endowed with Original Sin, a wretched creature who can yet apprehend perfection, though he can never reach it.

व्यक्तिनानं त्या वृक्ति नव त्या Wretched creature এवः विक्रित्तन्य innocent freil श्री नववर्षी। व्यवस्था व्यक्त व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति नववर्षी। व्यवस्था व्यक्ति व्य

The heavy burden of the growing soul Perplexes and offends more, day by day; Week by week, offends and perplexes more With the imperatives of 'is and seems' And may and may not, desire and control.

शंद्धाक निन्नीबर्ध जीवन गण्यदं ठांत्र ग्रण्यहे बक्का किश्वा जीवन वर्षण थाका छाँ। निन्नीत देवनिहाछ अवादम। अनित्रहे वनद्धम: Life is an act of faith। विश्वान—जीवरम विश्वान, वृत्वाद्याद विश्वान, निर्म्नत शंकि विश्वान, भवकादन विश्वान—व्यव निन्नी विश्वान छेतू करता। निन्नी विश्व क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त विश्वान क्रिक्त था विश्वान क्रिक्त क

अभित्रतित ४२ मानमिक्छात्र किरार्क्षणार्छत्र धाङान ग्रन्थ । किरार्क्शार्छ नगर्छन् : रम (मानुष) जमम्पूर्ण । जमम्पूर्णरे (४१ क्या मात्र । भाष-धन्यका छात्र मरवा विमानाम ।

क्याय क्यां श्रीविद्य। छात्र गवरहरत्र क्यां श्रीवाक्य एका व्यक्ति मुक्ति गद्या । यव बालिएतरे म्नावाय क्यां छात्र छात्रोयिक पर्देश श्रीवाय श्रीविक क्यां व्यक्ति वीकाय क्यां इरव।

बानुष इराक् धरीय ও गरीय क्यकांग ७ चनक्यांग, मुक्ति ७ चानमाक्छात्र मःश्लीष---मःश्लिश बनाउ भारत रम इराक् अकी मःश्लीष।

त्नीर्यमञ्जाब बरम करवम :

Pain is the fundamental and positive condition of existence and evil is ineeperable from human nature. [World as Will and Idea]

रबन्न बनुवाबरनुत्र पूर्व-मर्छ। यानव धक्छित्र गार्थ वक्छ छङ्धाछङार कछ्छ। वक् रकारमा गीवारक्षा (नष्ट। चाणिछ भिष्ट। चक्छ भिष्ट। स्वर्धमै-अब वर्ष्ठ 'छविवाय, चडीछ, वर्डवाम परम विकृष्ट भिष्ट।'

स्विद्य नवर्दक निविद्दे क्या बार्च क्सियः अत्र स्वाद्य छिनि बनाइन :

Duration knows no such distinction. The post exists in the present which contains

कार्य । अन्यक

मयक्न अकारक्री निविका | ७०

the future. The concrete and ever present instance of duration is life, for each of us living individuals is his own time.

अभिन्ने Burnt Norton कारना एके बकानामूके शक्तिश्विम कनरहण :

Time present and time past
Are both perhaps present in time future
And time future contained in time past.
If all time is eternally present
All time is unredeemable.
What might have been is an abstraction
Remaining a perpetual possibility
Only in a world of speculation.
What might have been and what has been
Point to one end, which is always present.

The Dry Salvages-এর এনিরট আরো গভীরে প্রবেশ করেছেন। জভীত, বর্তমান, ভবিষাত জনত-বর্তমানের প্রোতে বাঁবা পছলেও, বৃহুর্তের বালক সাবে সাবে আরো কিছু বহুসা, আরো কিছু জনত করে:

It seems as one becomes older

That the past has another pattern, ceases to be a mere sequence. The moments of happiness—not the sense of well-being Fruition, fulfilment, security or affection.

Or even a very good dinner, but the sudden illumination—

We had the experience, but missed the meaning, in a different form, beyond any meaning.

We can assign to happiness.

भाक्तरावर व्यविगासपीय पर्णाखिः ... Tomorrow and to-morrow गास्त्र (भर्ष अधिसहे बनर्ष्ट्म:

There is no end, but addition: the trailing Consequence of further days and hours.....

ওই পটজুনিতেই উন্তানিত হলো Moments of happiness...... the sudden illumination. আৰ এর মাধ্যমেই জীবনের অর্থহীনতার নিগড় পেকে মুক্তির নিঃপ্রাণ গ্রহণ করা বার। এনিরট বের্গদীর মন্তবাদ নিজক মৃষ্টিভালীর সাবুকো স্পষ্টভার করে তুলেছেন:

I have said before

That the past experience revived in the meaning is not the experience of one life only.

But of many generations...

विषय (परियो नवार्ष पार्गापविद्यार metaphysics-এत वृष्टिकान (परिक विद्यात कृत्यार कृत्यार्थ) । अविष्यके का क्षेत्राचाचित कत्रवान। कारणण:

> 'your shall not think' the past is finished' Or 'the future is before us'.

छोहरम अभिवरे कि (बाबार्ड ठांप? छिमि (बाबार्ड ठांप:

> time past and time future always point to one end, which is always present.

মতএৰ এলিরটের জীবন দর্শনের বৌল উপাদান হচ্ছে ধর্ষডিন্তিক অন্তিবাদ। বানৰ প্রকৃতি, পাপ এবং আদি-পাপ সম্পর্কে তীয় সে মতবাদের সাথে মিল মুয়েছে। সেণ্ট অগাটাইন, পাসকাল এবং কিরেকেগার্ডের মতবাদের।

निषिष्टे मदब ७ बनापिकान मन्नार्क बनाष्ट्रीयन-किरसर्वनार्छत छद्व धनिस्तित कारना बनुवनिछ।
धनिस्तित काश्वाक बार्क्न निर्द्ध बारनाठमा क्या किर्मन बानिया। छिनि किन। मद्रारनाठक छिनि।
धनः मृ कि क्याव्ये छीत बन्नाम विमायक शिष्ठ्याव वाक्य वहम करत। धनियरहेव काना यूबरेछ
स्रात मत्रारनाठमा माहिरछा छाँव विश्वादिक बक्या ७ ठिक्टिड छद्व स्थाना मत्रकात। धक्री वान विर्द्ध व्यवसी प्रवर्ण ठाइरन मन्नार्थ धनियहेरक वाविष्कात करा महत्र स्रवर्ण मा।

কাৰা তাৰু সম্পৰ্কে ওৱাৰ্ডস্থৱাৰ্থের ধারণা হলো: emotion recollected in tranquility'। এলিরট তা বেনে দিতে রাজী নম। তিনি বনে করেন স্বন্ধিকর মৃদুর্ভে উচ্ছানের অভিজ্ঞান কাৰা নম। আর এ কথা ধনতে সিয়ে তিনি সরাসরিভাবে ওয়ার্ডস্থ্যার্থকে বজোজি করে ধলজেন: Poetry is neither emotion nor recollection, nor without distortion of meaning, tranquility, কেবলমাত্র বিজ্ঞান করা হলেই কিংবা অপাধের মতবাদকে ব্রুণ কর্মানেই সাহিত্যা কেবলে কারো মূল্য দেরা হর মা। মুক্তিনির্ভিন্ন মন্ত্রা, এমনকি তা পুন জগাধির না হলেও, সাহিত্যিক মূল্য বছন করে। এলিরট ভাই অভান্ত সংবত উপারে নিজের বজনা উপস্থাপিত ক্ষেত্তেন। তিনি বনজেন: Poetry is not a turning loose of emotion but an escape from emotion,

[Selected Essays]

विविद्यों, कावालक्ष्म विन्त्र निवास निवासिक विद्या निवास विक्रिया विविद्य विविद विव

it is not an expression of personality but an escape from personality,

There are many people who appreciate the expression of sincere amotion in verse..... But very few people know when there is an expression of significant

वीषभव । उद्यक्ष

मक्कि बकारहरी भविका । ७५

emotion, emotion which has its life in the poem, end not in the history of the poet. The emotion of art is impersonal,

[Selected Essays, Page; 22]

विनिष्ठे ७९ ४६७व क्या बर्जरे काछ धमनि। छिनि य क्यारमा कारमर क्यिरम बरमा छैन छोनमात्र मामात्र क्यम छोरमर कीयम-किछोगात्र गूज हिरमर्थ छेछोत्रन करत्रह्म :

It is an advantage to mankind in general to live in a beautiful world; that no one can doubt. But for the poet is it so important? We mean all sorts of things... ... by beauty. But the essential advantage for a poet is not to have a beautiful world with which to deal; it is to be able to see beneath both beauty and ugliness, to see the boredom, the horror and the glory.

[The Use of Poetry and the Use of Criticism, Page: 106]

সাধারণ বানুষ জ্বলর পৃথিবীতে বাস করতে চার। কিন্ত কবির জম্যো কি তা জত্যাবশাক? কবি স্থলবের উপাসনা করেন। স্থলর পৃথিবীর স্বপু দেবেল। এলিয়ট এর কোনো প্রয়োজন বোধ করেন না।

चुनाम ७ कृषितिस्त्र बाङ्गारम की बार्ड्ड का स्थीत बरमा कृषितक मृष्टि-नियद्ध करास हर्ष। स्थितक हरूब बरमान, बाक्टक स्थीतक कीकारक क्षत्रकाम तरहर्ड्ड सुन्यत बात कृषितरका असीरत।

কাবা-স্টের থেরণার উৎস সম্পর্কে এলিরটের তবু হলো: মানুষের পরিবিতি নিবে কবিংক ভারতে হবে—এর গুরুষ উপলব্ধি করতে হবে—এক কবার এ বিবরে সচেতন হতে হবে। প্রাক্তব, জিরোদাশিরন, লা ওরেই লাও প্রভৃতি কাব্য এলিরটের ছিউরাান সিচুরেশন সম্পর্কে সচেতনভারই প্রতীক। এবং ওইনর কাব্যে রচিত কর্গৎ তার vision of the boredom, the horror, and the glory of life-কে নিবুঁতভাবে প্রতিষ্ঠিত করছে। বিশেষভাবে প্রাক্তব বেকে আংশিক উক্তি সেরা যাক:

Do I dare
Disturb the Universe?
In a minute there is time
For decisions and revisions which a minute will reverse.
For I have known them all already, known them all
Have known the evenings, mornings, afternoons,
I have measured out my life with Coffee spoons;
I know the voices dying with a dying fall
Beneath the Music from a farther room.
So how should I presume?

बाह्य रक्षानाम हिन्त ।

पारुर्दिश भीका विकास

ভিদি এপ্রসঙ্গে যে বক্তবা রেখেছেন তা সত্যিই অপূর্ব।

कर् । महाम्य वकारमरी नाविका

· 传 · 为 · 对 · 对 · ·

कारमानिक मनिवर्कम । जानाम जारमा । त्रव विदूत्तरे काशिक गर-जनकाम । अवर अगव अविवर्कः कर्कृक जरकिक जनस्वते गर्कनभा । अभिवर्कम कविकास ७ मार्करक मृज्यम जन्मीन हासा मकतीस । मृज्य-क्रिका बांच वाच पुरस्र विदस्त जानरक्ष ।

विवारित कविकास ७ महिरक मृजून कडकी न हाता नकनीता। मृजू-हिन्ता वांच वांच वृद्ध विदेश कांगरह । यका शरकः

"नीख अनिनिट्ट छोन कारनान हन्यकान नम यूजिरहाह, छोट नीखान छाना छोन ना स्वान पर कर्मिक्क निम्न तार्थ व ना स्वान प्रित्र मिन्न तार्थ व ना स्वान क्षेत्र स्वान स्वान क्षेत्र स्वान स्वान क्षेत्र स्वान क्षेत्र स्वान क्षेत्र स्वान कार्य माहन मन कार्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य क्षेत्र के क्षित्र व ना स्वान कार्य माहन स्वान स्वान स्वान कार्य क्षेत्र क्षेत्र कार्य कार

বিশ্ববে বলীবা অবিত্রকিত। অতএব এলিরট সম্পর্কে তার বভাবত অবশাই ওক্তবপূর্ণ।
কিন্তু আবালের ধারণা বার্কস্বাদী দৃষ্টিকোপ থেকে তিনি এলিরটকে বার্বা। করতে চেরেডেন।
বীকার্ব বিংল শতাক্ষাতে এটি একটি প্ররোজনীর বাপকার্তি। তবু আবরা জানি, ওই বাপকার্ত্তি
লাহিত্য লিকপকলার ক্ষেত্রে পের করা দর। বয়পা হতাপা পুনাতা পাল অত্যাচার পোষর ইত্যাকার
বানবিক আর্ত্রনালের উপালনসমূহ মৃত্যুর বিও বিও চিত্র। এ সবই স্বাভাবিক । এলিরট নিজেও
তা জানেন। কিন্তু ওই স্বাভাবিক জীবনকে এতো গান্তীর, এতো নিরবজিনুজাবে জড়িবে
রয়েছে বে এ সম্পর্কে ভাবনার নার নির্কৃত্বিতা নয়। তাছাল্লা কবির অনুভূতিনীক স্কার বানুকের
নার্যাক্ষ সন্তাকে ধারণ করে বলে 'জীবিত বা মৃত্তের জনো' বিচলিত হবে না কিংবা হতে পারে মা—কর্মাটা সক্তিক নয়। করা বিচলিত হর বলেই বানুব পালবিকতার হর অতিক্রম করার প্রবাসে অজ্ঞেটা
ভংগর। কবির লাহির জ্যে এবাভাই।

Boredom 's Honor विविधि कांगा-िष्ठांत्र त्यंत्र कथा गया। गृष्ट्रा धवर क्यांशक किंदिय विविध यांगांव गांवनांव परवाष्ट्र Glory of dife— ब्रोहांट गणवन्द्रः विविधि वांगारक त्यांशारक होता।

बिना क्रिके कार्यात निवयक देनमूना ७ व्यानिक देवनिक्षा

बन्नरेख ७ जिन्छा-या अभिवर्षित कांवा-महैत मार्थ विकिन्नछार्य कहिल-युन्नछः छीत्र भिक्क विकासका र्यस्कर हैरमाविछ। जान अ शमरक अभिन्नहे-अन बक्का हरकाः

We can only say that is appear likely that poets in our civilization, as it exists of present, must be difficult. Our civilization comprehends great variety and complexity, and this variety and complexity, playing upon a refined sensibility, must

produce various and complex results. The poet must become more and more, comprehensive, more allusive, indirect, in order to force to dislocate if necessary language into his meaning.

[Selected Essays, Page ; 101]

এবিরট বর্তবাদ সম্ভাতার মূল ক্ষ্ম প্রত্যক্ষ করেই এর জটিল্ভার কথা ব্যেক্ষে। কথাটা বিশ্বৰ্কশাপেক। সভাতার জটিলতা যদি আভাবিক পরিপতির মুবাদে ঘটে, তর্ক অসাবশ্যক। বনজিয়াব,
ক্ষেত্রক্ত জটিলতার কথা। পাণ্ডিত্যের বেড়ালালে আটকে থেকে শিক্ষী যদি আত্মপ্রাদের উদ্যাদ
মহনা করে তাহলে তার ভক্ত-বৌরাছির। দুরেই থেকে যাবে।

অবশা এলিবট সভ্যতার কথা বলেছে।। বৈচিত্রা ও জালৈজা আধুনিক সভ্যতার নিঃপান। ভাই কবিকে হতে হবে পরোক্ষ, অধিকতার ইঞ্চিতব্য, আরো বিস্তৃত মানসিকতার অধিকারী। প্ররোজন-বোধে তাকে ভাষার পরিচিত বলরকে দিজস্ব নির্বাচিত অর্থে স্থপান্তবিত করতে হবে।

হাঁয়, to dislocate...language into his meanings কৰিব ক্ষতাৰ অন্তৰ্ভুক্ত থাকতে হবে। এখানে এগিবট আৰুনিক ক্ষিতাৰ নিৰম্ভন পৰিবৰ্তনশীল অপিচ দুৰ্ভ তৰক প্ৰবাহেৰ কথা বলহেন। এই যে বোধ তা ক্ছিতেই সাধাৰণ মন-শীলতাৰ পৰিচায়ক নৱ।

ভারপরেও যে কথা থেকে যার ভা ছজে এলিরট-এর বিবাট বৈশিষ্ট্যপূর্ব অবদান, অর্থাৎ UNIIICATION Oli SENSIBILITY' কে সম্ভবপর করে ভোলার প্রবাস। 'ইক্লিরগ্রাহা অনুভূতি একজীকরণ' বলতে ভিনি বোঝাতে চাম ভাবনা ও অনুভূতির পারস্পরিক সাহচর্ব বিবান। এলিরট কাবোর এলিকটার যথার্থ বূলারেন হওয়া প্রয়োজন। নইলে আধুনিক কবিতা সম্পর্কে ভার বারণা কী, ভা কিছুতেই বোঝা যাবে না।

क्षिक्र कार्या क्षेत्रिक गायशास

Symbols ও Metaphor ডিনি বিশেষ মর্শে বাবহার করেছেন। প্রতীক ও রূপক কবিতার অনংকাম হিসেবে পরিগণিত। একেত্রে এলিয়া ডিনু ধারণা পোষণ করেন। ডিনি মনে করেন প্রতীক ও রূপক অভিক্রতা থেকেও শতর মর্শাৎ তাবও বাইরে বিরাজমান কোনো কিছু প্রকাশের একমাত্রে উপার অধ্যা বাধান।

ৰম্ভতঃ এলিরটের সারা কাবা-হার জুড়ে প্রতীকের ড্ডাছড়ি। তাঁর কবিতা Burnt Norton -এ Rose হচ্ছে বানুষের পাধিব অভিক্রতার প্রতীক, Little Gidding-এ বৃত্যুদ্ধ--

The moment of the rose and the moment of the new tree . Are of equal duration

Yew tree जानार मृजूतर शंकीक। East coker-এ factory प्रत्य गाविषय मानूम नेनारकरातर जनकरम् शंकीक, Field mouse स्वरंगम हेनामारनम, Dencers and ocean क्रिक्टियान, Still point: क्रिक्टियान, See जन्म क्रिक्टियान वक्षीक्रार्गम निवास क्रिक्टियान क्रिक्टिय

কথ ও বিকিন্ধকার প্রতীক। করা বাজনা প্রতীক ও স্থাপ বাসবাবে এনিবটোর সাক্ষণা করাবাবে। তেন্দি USE OF IMPLICATIONS/ম ব্যাপানেও এনিবটোর ক্ষাবাবে নৈপুরা লক্ষ্য করা বার। আর এ পছাড়ি সম্পর্কে এনিবট-এর বজনা বা তা হলেছ 'in the use of statements which carry a weight far beyond their ostensive meaning. কিন্তু এর কি কোনো প্রবোজন ছিলো? এনিবট বলেছেল, it helps the poet to avoid direct statements of his beliefs, and attitudes, leaving the reader to reconstruct meanings for himself, তাহলে Implications বলতে আবরা বুবতে পারছি —ক পরিচিত শব্দাবাদী অধিকত্তর কোরাবো ও বঙীর তাহপর্বপূর্ব অনে ব্যবহার করা বার; ব সরাসবিভাবে বিশ্বাস ও বৃত্তীভাগী প্রকাশ বেকে বিয়ত বাকা বার; ব সরাসবিভাবে বিশ্বাস ও বৃত্তীভাগী প্রকাশ কেনে বিয়ত বাকা বার; ব সরাসবিভাবে বিশ্বাস ও বৃত্তীভাগী প্রকাশ কেনে বিয়ত বাকা বার; ব

And indeed there will be time

To wonder, 'Do I dare ?' and, 'Do I dare ?'

Time to turn back and descend the stair,

With a bald spot in the middle of hair—

Do I dare
Disturb the Universe?
In a minute there is time
For decisions and revisions which a minute will reverse,
For I have known them all already, known them all—
Have known the evenings, mornings, afternoons,
I have measured out my life with coffee appons;
I know the voices dying with a dying fall
Beneath the music from a farther room.
So how should I presume?

[Prufrock]

Implications এর পছতি কবিতার নার্যকরণেও পরিলক্ষিত: Burnt Norton ধারুর প্রতীক।
East coker ব্যিত্রীয়, The Dry Salvages জনের Little Gidding অপ্লিয় প্রতীক।
ব্যাবুগে কাব্যের তারার্থ ব্যাব্যার প্রতিটি বক্তবা তিন, চার কিংবা সাতটিরও অবিক অর্থে উপরাপিত
করা হতো। গাল্ডে Vita Nuova কাবা গ্রন্থে নিজন্ম কবিতাসমূহের ব্যাব্যার একাবিক অর্থ প্রসক্ষে
আন্দোচনা করেছেন।

छेणरबाक भवकित ख्वन विकास बाहिए निर्द्याक कांग्रामगुरवः

East coker, V:

"Trying to learn to use words, and every attempt is a wholly new start, and a different kind of failure Because one has only learnt to get the better of words

For the thing one no longer has to say, or the way in which One is no longer disposed to say it.......

Home is where one starts from. As we grew older

The world becomes stranger, the pattern more complicated

Of dead and living. Not the intense moment

Isolated, with no before and after

But a lifetime burning in every moment

And not the life of one man only

But of old stones that cannot be deciphered...

The Dry Salvages, II:

...We had the experience but missed the meaning, And approach to the meaning restores the experience in a different form, beyond any meaning. We can assign to happiness.

Little Gidding V:

We shall not cease from exploration And the end of our exploring Will be to arrive when we started And know the place for the first time.

श्रम क्याब निव्यावनी -- कविडाब, जन्मारे पुंडा (वत्र कवटड द्या । (काना :

These are only hints and guesses,
Hints followed by guesses; and the rest
Is prayer, observance, discipline, thought and action,
The hint half guessed, the gift understood, is Incarnation.

(Burnt Norton, V)

खर्थना खानान Prufrock-এ किट्न गाउना गांद :

And indeed there will be time
To wonder, 'Do I dare?" and "Do I dare?"

WHIS TICES OBTECTIVE CORRELATIVE

अनिवाहे Objective Correlative एकु नन्नदर्भ बरनरङ्ग :

a set of objects, a situation, a chain of events which shall be the formula of that particular emotion; such that when the external facts, which must terminate in sensory experiences, are given, the emotion is immediately evoked.

আৰ এ শূত্ৰ ধৰে আসে 'stream of consciousness.' চেন্তনাৰ প্ৰবাহ' এনিবাটৰ প্ৰশুক্ত ভাৰো বিশেষভাবে কুটে উঠেছে। এখাদে ডিনি সময়কে খেডাবে ব্যবহার করেছেন ডা নক্ষ্মীয়। ক্ষিতাৰ পতিশীলভাৱ সময় এর নিজম গডি ছারিয়ে কেলেছে। কিংবা বলা চলে, সময়ের প্রবাহ পারিয়ে দেয়া হরেছে। ঘটনার বারাবাহিকভাও দেই। আরো নেই সময় এগিয়ে চলার সভাবা পর্য। সময়ের গডি থানিয়ে দেয়ার উপনা নির্বৃতভাবে লক্ষ্য করা যায় প্রশুক্ত কাব্যের দিয়ের বণিত জংশে:

... the evening is spread out against the sky Like a patient etherised upon a taple;

প্রাক্তক-এর অতীত এবং ভনিষাৎ একটি বিরবিশুতে এদে দাঁড়িরেছে। আর এ শ্বির বিশুই হচ্ছে চেডনাবোবের একটি বিশেষ মুখূর্ড। Timo এবং Space দিশ্চল। অপ্রগতি বছা বেশান থেকে কবি ভরু করেছেন সেখানেই তার ভাবনার পরিস্বাপ্তি। কিন্তু সময়ের এ শ্বির অবস্থান ক্রে দিয়েই প্রাক্তকে নিচার করা চলবে না। প্রাক্তক-এর অন্তর্গত অগতের অভ্যন্তরীণ অস্মেশ থেকে নেই। তা বর্থানিয়নেই চলছে।

Objective Correlative বিলেদ অর্থে যা ছলো, emotion that an audience wants to be justified in the plot: আপাতঃদৃষ্টিতে যা অসংলগু—হরতোৰা অপ্রাসন্ধিক, অথচ বিষয়ের কেন্দ্রীয় স্থারের সাথে সম্পৃক্ত। এদিক থেকে বলা যার, এলিরটের প্রায় সথ করটি নাইকের মধ্যে তাঁমই ব্যবস্তু phrase—objective Correlative—এর প্রতিধ্বনি। The Family Reunion—এম দিল্লোক্ত সংলাপে:

Can't you see them? You don't see them, but I see them,
And they see me. This is the first time that I have seen them.

अबः बावक्छ phiase ग्रन्थ-

'the unexpected crash of the iron catact'; the bright colour fades,' 'the bird sits; on the broken chimney'—

যদিও ঘটনা প্রবাহের সাথে পুরোপুরিভাবে সঞ্চতিপূর্ণ নয় তবু উবুদ্ধ উচ্চ্ছাসের সাথে পুরেষ কবিছিলু সার্থস্য পাওয়া যায়। তেরনি The Cocktail Party নাটকে সাথে ফেবরি'র বছব্য তুলনীয়:

That was her destiny, the only question

Then was, what sort of death? I could not know.....

She did not know, so all that I could do

Was to direct her in the way of preparation.

बीचनर्धा । ५०४८

नवक्रम बकाएडमी भविका | १३

देखिए। मन्नदर्क खिन्द्रदेश शास्त्रा

ইতিহাস সম্পর্কে এনিরটের ধারণ। রীতিসতে। ব্যতিক্রমধরী। তিনি ইতিহাসকে সম্পূর্ণ আলাদা পৃষ্টিতে বিচার করতে চান। প্রচলিত ধ্যান-ধারণার সাথে ঠার মতবাদের তেমন কোনো বিল শেই। Gerontion কাব্যে বলা হতেছ—After such knowledge, what forgiveness? আর তার পরেই শুকু হলো ইতিহাস সম্পর্কে যুগাস্ককারী বিশ্লেষণ:

Think now
History has many cunning passages, contrived corridors
And issues, deceives with whispering ambitions,
Guides us by vanities. Think now
She gives when our attention is distracted
And what she gives, gives with such supple confusions

And what she gives, gives with such supple confusions. That the giving famishes the craving. Gives too late

What's not believed in, or if still believed, in memory only, reconsidered passion.....

Unnatural vices

Are feathered by our heroism. Virtues

Are forced upon us by our impudent crimes.

উপরোক্ত কথাগুলো ইতিহাস থেকে অঞ্চিত জ্ঞানের ব্যাপারে সরাসরি জিঞ্জাসা। ইতিহাস থেকে কি আমন্ত্রা কোনো শিক্ষা গ্রহণ করি? কিংবা অর্জন করি কোনো গ্রাণ? অথবা ইতিহাস কি আমাদের চুড়ান্ত সত্তা সম্পর্কে কোনো ধারণা প্রদান করে? এবং যদি কোনো প্রান সত্তিই অর্জন করা হয়, তাহলে প্রশু উঠবে ওই জ্ঞান কি আমাদের আধান্তিক মুক্তির পথে পবিচালদা করে? সোজা জ্বাব হচ্ছে, না। এর কোনো মুল্য দেই। অথবা এর মুন্তা সনস্যাসংকুল পৃথিবীতে সিদ্ধান্ত গ্রহণে উদ্ধান্ত করার হয়ে অথবা কোন প্রজার? যে জ্ঞান ও প্রজ্ঞা সনস্যাসংকুল পৃথিবীতে সিদ্ধান্ত গ্রহণে উদ্ধান্ত করারে তারে—আমাদের চুড়ান্ত নিয়ন্তির ধারা বদলে দিতে পারে? সেজান ও প্রজাই হচ্ছে এর পরিপত্তি। এর জন্যে আমাদের চুড়ান্ত নিয়ন্ত্রির ধারা বদলে দিতে পারে? সেজান ও প্রজাই হচ্ছে এর পরিপত্তি। এর জন্যে আমাদের বৃদ্ধিনতাকে নিয়োজিত করার অন্যতম মর্থ হচ্ছে অবধা কালকেপ করা। জিরোনিখন তাই করেছিলেন। শেষটার বৃদ্ধ ব্যবসে, উপনদ্ধি করনেন কী চরার ধার্মতার শিকার তিনি হয়েছেন। এবং এব কলম্মতি হলো, জিরোনিখনের দুর্ভাগান্তনক পদ্বিপত্তি। ইতিহাস একেবাবেই অর্থহীন। ইতিহাস কর্যনো কোনো বাজিকে কিংবা ব্যক্তিন সম্বন্ধিত পারের নির্দেশ দিতে পারেনি। গুরু তাই নয়। ইতিহাস কর্যনো মানুদ্ধকে তার আমিধার্ম পরিপত্তি থেকে রুফাও করতে পারেনি। গুরু তাই নয়। ইতিহাস কর্যনো মানুদ্ধকে তার আমিধার্ম পরিপত্তি থেকে রুফাও করতে পারেনি। এর কি কোনো বারণ নেই? এই বার্যতার কিলোনা হেত দেই?

विवास समाह्म, देखिशाम deceives with whispering ambition, Guides us by vanities. देखिशाम त्येत्म त्य शक्कारवात्यव मूजमांच यहाँ का चढाड विमयित । जयम वन शहबायमक मिःत्यिक। हेडिए।त्र Gives too late. What's not believed in, or if still believed, in memory only, reconsidered passion.

এলিরট ঐতিহাসিক নন। ইতিহাসের ঘটনাপারত্বর্ধ ধর্ণনার ব্যাপারে তাঁর আগ্রহ থেই, ইচ্ছাও নেই। ইতিহাসকে তিনি প্রত্যক্ষ করেছেন কবি হিসেবে। কিন্ত ইতিহান নিয়ে থে তত্ত্বের অবভারণা তিনি করেছেন তা সতিটেই খিলুরকর। Gerontion কাব্যের শীঘে তিনি শেরালীবার থেকে যে উদ্ভি গ্রহণ করেছেন বর্তবান আলোচনায় এর ওক্ষর রয়েছে:

Thou hast nor youth nor age
But as it were an after dinner sleep
Dreaming of both

अणित्रहे कर्क् क माहेक जबूदबन्न क्रिक्छ विद्याय विकः

এলিরটেব দাটা স্ট বস্পর্কে আলোচনা কবার আগে এব পাঁড়ুবির উপরে কিছুটা আলোকপান্ত কবা প্ররোজন। Tragic Sense ও Tragic vision যদিও আপান্তল্পতি অর্থণত দিক থেকে তেমন কোনো ভাবতমা বহন কবেনা তবু বলতে হয়, শব্দ দুঁটি পুবোপুরি ভিন্ন অর্থে ব্রাহাত। বলা হয়ে থাকে ব্রাহা ধর্মে বিষয়েত গরাতান-এব কোনো আন নেই। গুটান ধর্মে এবং ব্রাহা ট্রাজেন্টা বৃদ্ধে যে আবহাওয়া, পবিবেশ উপলব্ধি বিবাজ কবে তা মূলতঃ বিযোগান্ত উপলব্ধি বা Tragic. Sense, ব্যতিক্রম দেখা যায় নীংশে এবং শোপেনহাাব কর্তৃক উপল্পাপিত Tragic vision বা বিরোগান্ত দর্শন শক্তিতে। তাদের মতথাদ হলো Tragic vision। এই Tragic vision মানুষের বেদনা থেকে বুজির কোনো পথ দেখে না। মানুষের দুংখ দুর্গশা কোনো নির্দিষ্ট সময়ে কিংবা সময়ের অন্তিবের বাইরেও কোনো অবলায় লাব্দ হওমার সভাবনা নেই। মানুষের জন্মের সাম্বের বিশো আছে বুংখ-বেদনা-পূর্ণা-মন্ত্রণা বোধ। এ হলেচ গুটা কর্তৃক নির্ধানিত অবলা—যে অবলা যা ছিলো, তাই রয়েছে, থাকবেও তাই। আর Tragic vision-এর বিত্তীয় তার হলো, জীবদের কোনো অর্থপূর্ণ রাখা। নেই। বিল্লেখণ নেই। জীবন অর্থন কর্ম্বরীন। জীবন এমন এক ছন্তালাবোরের কান্যু দেয়, বে ছন্তালাবোর থেকে মুজির সভাবনা সম্পূর্ণ তিরোছিত। তাপুপরি ব্যরেছে নির্দেজ্যন গল্ডান। আর ওই ছন্তানার আবর্ত একোটা গভীর নে তা থেকে পালিবে বিশাসবোধের তারে উপলীত ছন্তারা কোনো পর্বের স্বাহান স্থান সিত্তি থারানা দিনের নিশ্বাসবোধের তারে উপলীত হন্তারা কোনো প্রের স্বাহান স্থান স্থান নিয়ের নির্দায় বানের প্রায় স্থানা স্থানির কোনো।

Tragic vision যা দিতে পারে তা চল্ফে নিশ্চিয় চতাশা। ৰপাধ শূদাতা। অভিজ্ঞতা **অর্জনের** সম্ভাবনা এবানে নেই।

অপরপকে Tragic Sense নাননিক সীনাবছতার সভিজতা থেকে উৎসারিত। পাপের উপরবিষ, অনুশোচনা, পাপের পরিধান সম্পর্কে সচেতনতা Tragic Sense এব বুলে বরেছে। কিন্তু তা Tragic কেনো ৷ কাবণ নানুধ অনুসূত্র পেকেট যে অবস্থায়—যে উথিপুতার শিকার তা হতেছ, 'the thousand natural shocks that flesh is heir to' অথচ কিছুট ক্ষার নেই। অনুশোচনা আলোপনবির অনু দের সভিয় কিন্তু এব স্থাবিদ স্বন্ধনানীন। এই বে অস্থার ভাই বিবোগাত পরিণভির অনু দিরেছে।

Tragic Vision- धन किंद्र छमारबन रमना गाक:

शावत्मि द्वाद्यनि ७ दक् वन्द्वः

If thou didst ever hold me in thy heart
Absent thee from felicity awhile
And in this harsh world draw thy breath in pain.
To tell my story.

२. किः नियातः

As flies to wanton bays are we to the Gods They kill us for their sports;

माक्त्यभं :

Life's but a walking shadow...a tale Told by an idiot, full of sound and fury Signifying nothing.

बृहोम धर्मीत जानाबान-गजना जान जान जान परिक मुख्य जानाबान कानिएकत जरमा विष्ठ अरम निर्छ लाख। क्रिक मनाबारम भौक्रिक निर्छ वार्ष:

Christian optimism is not a document which can be signed, sealed and delivered to a suffering world to solve the problem of suffering,

্রিট্রা: টি. বি. কিলপাট্রিকর 'Suffering', Encyclopaedia of Religion and Ethics, Edited by James Hasting]

এনিয়টের দাটকে যে হর তা হছে Mystery of Suffering -এর । এ নিয়ে সরালোচকদের মধ্যে দানা ধরনের বিশুর্ক ময়েছে। এক শ্রেণীর সমালোচকের। মদে করেদ, এনিয়ট মৃত্যু চিন্তার একটাদা প্রভাবে পড়ে জীবদের সঠিক মূল্যারদে বার্থ হবেছেন। তাঁর কাব্যে, তাঁর দাটকে সানুষের অদিবার্য মখচ স্বাভাবিক যে পরিপত্তি, এ দিয়ে তিনি অহেতুক বাড়াবাড়ি করেছেন। এর কলে জীবদের কমিষ্ট গতিতে পরোক্ষ মৃত্যুর পদধ্বনি সর্ব্যা অবসাদের ছায়া বিস্তাবিত করে চলেছে। আরেক শ্রেণীর সমালোচকের। এর মধ্যে আবিষ্কার করেছেন ধর্মীর অনুভৃত্তি, যা কিনা প্রতিমূহুর্তে মৃত্যুকে সাারণ করিয়ে দেয়—কেননা জীবন ক্ষণবারী, এবানকার যন্ত্রপা বারো গতীরে। তিনি জীবদের প্রথাত সক্ষে অনুভ্ করেন বলে জীবদের যন্ত্রপাকে, এবং যা জীবদের সাথে নিঃস্থাবের মজে জড়িয়ে, তাকে জন্মীকার করতে পারছেন দা। মানুষের Suffering বড়ো বেনি তাঁর জ্বরকে দাড়া মের। তাঁর দাটক Murder in Cathedral এবং Cocktail Party মূলতঃ Suffering -এর রহস্য জিরে বিশ্বতিত।

किन्छ शंडीबन्धा वर्ष 'श्वभाव बहगा' माहेरकत्र विषय्यक श्रात्मक, व्यक्तिकारम्य छेशामानेष এ व्यमुकृष्टिय शहरूति बहुमा करबाह् । व्यक्तिकामी माहेककरमा श्राह्म : Murder in Cathedral [1935], The Family-Bounion [5838] The cocktail Perty [1960], The Confidential Clerk [1953], The Elder Statesman [1960]

অভিনয়নী উপাদান কি? তা হচ্ছে জীবদের 'বিবোগান্ত উপলন্ধি'। এর উৎস কিং বর্ষণার রহসা বেদে দেরা ও তা থেকে বৃক্তির কোনো সন্থাবদার দিশা দা-পাওয়। বর্ষণা জাগতিক দিয়নে পর্ববসিত। এর কোনো প্রতিকার নেই। প্রতিকার দিয়ে দার্শদিক ব্যাখা। চলে কিন্তু এর কলে দৃঃখডোগের কোনো প্রকার তারত্ব্যা বটে দা। জান প্রজা পাণ্ডিতা বৃদ্ধিরতা সবই যাতদা দিরসদে বার্থ। নানুষ কেবদারে একটা কাজই করতে সক্ষম। আর তা হচ্ছে অভিনয়াদের অবস্থায় সব কিছু সরে বাওয়া। আবার তাও স্বেজ্বাক্ত দর। তয় ও আতক এর সাথে জড়িত। মানুষ তাব সীমিত শক্তি দিয়ে শত চেটা সক্ষেও বর্ধন বিরূপ কিংবা অভভশক্তিকে কাবু করতে পারে দা তর্গদই তয় ও আতক বাবা চালা দিয়ে ওঠে। ট্রাপ বেকেট ওই বরনের মান্ত্রিক অবস্থা অনিবার্থ পরিগতি হিসেব গ্রহণ করেন। কারণ, তিনি জানেদ :

Action is suffering And suffering is action [Murder in Cathedral]

The Family Reunion নাটকের হ্যাবিও ওই অবস্থার নিপণ্ডিত। পিতার পাপের প্রারশিচন্তকে তাকেই করতে হচ্ছে। হ্যাবি হচ্ছেন bird sent flying through the purgatorial flame. তাহাড়া তার যরণার আরো একটা বিশেষ দিক হলে। তিনি একাকী এব প্রচন্ধতা উপলব্ধি করছেন অবচ কাউকে এর ব্যাবাস দিতে পারড়েন না। গ্রীক ট্রাড়েন্ডীর Orestes-এর অব্যক্ষ যরণার গোজানী হ্যাবি র জীবনেও প্রতিধ্বনিত: you don't see them, you don't - but I see they are hunting me down, I must move on.

The Elder Statesman-এর Lord Cleverton ভ্যান্ত শূ্মাতার জ্বানা অনুভন করছেন। এ বোধ থেকে তিনি জাতংকিত। তিনিও সন সয়ে খাদেহন শূ্মাতার ভয়ে। তার এ মাদ্দিক পরিশ্বিতি জ্পবকে বোঝাদো অসম্ভন। বরং অপন্যাধ্যার নিশ্বন সম্ভাননা রয়েছে। অন্য কেউ বদে করতে পারে ভার বাভনার কারণ হচ্ছে:

Morbid consience
From brooding over faults—
I might well have forgotten

हैनान त्यक्टिंव व्यक्तीलांव हैश्य इटाक् छीन शृष्टीड मिकाटक्व कार्यकाविता मन्नटर्स छीव निर्व्यक्त विनिष्ठिंड बांदना। এकक्षम मिक्र भूक्षम मृद्धाव लेश त्याक निर्देश होन। यात्र এ कक्षम बहु पहि व्यक्तिका महिनीय लेकिकि हैंडव करवाकः

Peace. And let them be in their exaltation.

They speak better than they know, and beyond your understuding.

They know and do not know what is to act or suffer They know and do not know that action is suffering And suffering is action. Neither does the agent suffer Nor the patient act. But both are fixed In an eternal action, on eternal patience To which all must consent that it may be willed And which all must suffer that they may will it.

যাহোক পথীদ হওয়ার পপ বেছে দেবাৰ ঘর্ণ হচ্ছে বৃত্যুকে বেছে দেৱা। ভাহলে প্রপু উঠতে পারে, যে কোনো কাবণেই ছোক, নিজেন মৃত্যুন পপ বেছে দেবাৰ ব্যাপারে কোনো পকার আবাজিক অধিকাব কি মানুষের ব্যেহছে? পর্যাদ হওয়। ও আবহন্তা। করার মধ্যে পার্থকা কোথায়ং বেনে দেয়া যাক, কোনো ব্যক্তি সঠিক ধর্মীয় বিপাস ও যথার্থ কাবণে নৃত্যুবরণ করতে পারে। কিছু কথা থেকে যায়। যে বিপাশের উপরে নির্ভিত্র করে প্রাণ বিসর্জন দেবা হচ্ছে সে বিপাশের যথার্থতা সম্পর্কে কি পুরোপুনি নিশ্চিত হওয়া যায়ং

नेबान (नर्कित राक्तित्र छात्र विश्व राज्य निर्दित लाज करत्र छात्र । जाडे जिनि नडील इर्फ हान । रेनजिक कर्जना अर्फरज जिल्लिक । मगरनेक वर्षश्चान नाक्तिरमत्र जिल्लामा (नर्कित राज्य नानी जिल्लार्फन अन मरबा तर्गर्फ जिल्लारमत्र श्रन् । तर्गर्फ जिल्लामी नक्ष्मा :

Just as we rejoice and mourn at once, in the Birth and in the Passion of our Lord; So also...we both rejoice and mourn in the death of martyrs.

ভাসল ও দু:গবোৰ পাণাপাণি। আৰ এ বৰনের যে অথকা, এর মুনে রয়েছে মানুষের নিজের অন্তিৰ সম্পর্কে এক দারুণ হতাশান প্রতিধননি। এখানেই নিহিত নরেছে মানুষেরাদের প্রক্রিয়া। নাটকটি দাট্যমন্কে থেমন জনপ্রিয় তেমনি সাহিত্যের ক্ষেত্রেও। স্লুনপ্রসাবী এর আবেদন। কেন না এলিয়ট এ নাটকের ঐতিহাসিক ধারায—বিশেষতঃ নেকেটের নিহত হওয়ার দটনার Objective correlative তত্ত্বের নিকাশ লক্ষ্য করেছেন। উক্ত ঘটনায় ব্যয়েছে ধরীয় উচ্ছাস। এব সাথে ধরীয় আশাবাদ। এলিয়টের মাদসিকতা ধর্ম সম্পর্কে যোটামুটি ওই ধরনের। ধর্মকে তিনি কেবল খেয়াকের বলে গ্রহণ করতে নাবাজ। যথায়থ, এলিবট মদে ক্ষেন, দিবিইচিতে, ধর্মের মূল্যায়ন হওয়া দর্মার।

Murder in Cathedral -এব পরবর্তী পর্যায়ে রচিত নাটকসমূহে তিনু স্বব ধ্বণিত। প্রায় প্রতিটি নাটকই জীবনের ক্ষণখায়ীবেদ বিভিনু দিক উপস্থাপিত করতে। জীবন জ্যাদিকালের প্রবাহে একটি নিংশাসমাত্র। এর কাছে কোনো কিছু প্রত্যাশা করা কর্মহীন। তবু তাই নর। জাগতিক প্রত্যাশার জ্জনালে মধ্যে প্রতারণা।

मिनिगमुद्दम (कजीग जन घटाक: timeless reality.

मुख्यि अप इत्त्व ध्वाभित विद्यागत्वाय षाध्यक्ष क्या। अत्र क्ष्मेत्व षाया योभिन क्या। The Femily Reunion: बारवव षन्त्रभित्यत्र केश्मत्व (योभिनात्म्य षदमा व्यत्म वाक्षि क्रित्व अत्मरह।

१४ । मक्कम असारहरी लेखिका

कं क्षे | >य नाका

बरम बाना, अवाद रम नाष्टि नारव। नातिवादिक भूगविकरम यक्ति बमुख्य कदरव। त्निकीय खात अव बानाहे वार्ष।

The Cocktail Party: नव-मारीच (त्रायान्किंक गण्यार्थ काहेन धरावर्थ। এति वराव्य अब जिनार्थ পরিপতি। হতালা এর প্রতিশব্দ।

The Confidential Clerk: একই ধরনের রোমাণ্টিক হতাপাব আবর্ত এখাদেও বিষ্ত।
The Elder Statesman : বাহ্যিক দিক পেকে সকল কোন এক রাজনীতিবিদের অন্ত:সারপুদাতা
এর প্রতিপাদ্য বিষয়। উক্ত রাজনীতিবিদ সসন্মানে অবসব গ্রহণের অপেকায় আম্মান্দ অনুদ্রব
করছে। কাব্য নাটক সম্পর্কে এনিয়ানের মতবাদ হলো:

Characters must some how (not necessarilly) disclose a deeper reality than that of most of our conscious living, and ...show their real feeling and ovlitions, instead of just what in actual life, they would normally profess or be conscious of....

It (Poetic drama) must reveal, underneath the vaciliating or infirm character the indomitable unconscious will, and underneath the resolute purpose of the planning animal, the victims of circumstances and the doomed or sanctified being.

[T. S. Eliot: Introduction to Bathell's Book]

करमकति गारिक डेक भड़नारमन गाणिश्र প্रजिभ्यनिष्ठ डेक्टि निया गांक:

Murder in the Cathedral: কর্ন ও দুঃৰ চোগ। 'the suffering of the witness and the action of the witnesses are one and the same thing.

বেকেট কোনালের প্রকোচনায় ক্ষণিক দুর্বলতা ও ধিয়ান্তিতে নিপতিত হন। শহীদ ছওয়ার গৌরব অর্জনের ভাবনা একটু কেঁপে ওঠে। তবু তার বলিষ্ঠ ব্যক্তিত্বের বিকাশ ঘটে— হয়তো অলকো:

The last temptation is the greatest treason.

To do the right deed for the wrong reason.

The Family Reunion: ওরেইলান্ত-এম বাণী বে, দু:বডোগ নারকীয়—এবং সহিকুতাও তাই।
এর জনোও নারকীয় হয়পা সহা করার মত ক্ষমতা থাকা চাই। বাাকেট মার্ডার ইন ক্যাপেড্রালে
ওই বন্ধবার প্রতিবাদে উচ্চকণ্ঠ। দু:ব ভোগ ও কর্মের মধ্যে কোনো বিভেদ নেই। দু:বভোগ
কর্মাৎ জীবন ধারণের জনো সহা করে ধাওয়া। যার। সংকর্ম করে তারা হচ্ছে 'পরীদ' ও 'সাক্ষি'।
নিশীভিত ইচ্ছাপজ্জিকে পরিশীলিত করতে হবে। আর এসব বন্ধবার প্রতিধ্বনি হরেছে 'দা ক্যামিদি
বিইউনিয়ন' কাবানাটো:

'Can't you see them? You dont see them, but I see them And they see me. This is the first time that I have seen them.

The Cocktail party: এবানে Problem of Choice --এলিয়াট খোৰাতে চান খোনো বাদৰিক সম্পৰ্কই বৰংসম্পূৰ্ণ শ্ৰন। বাৰা ভালোবানে, ভাৰা বিয়ে ক্ৰতে পাৰে না। বিধাহিত ব্যক্তিয়া শ্রেক সরে যায়। Celia-এর নিংশেষ হবে যাঁবার ক্ষর। Heywoods-এর A woman killed with kindness-এর সাথে তুলনীয়:

'O God, O God, if I could return to yesterday Before thougt that I have made a decision'

এ নাটক সম্পর্কে বলা হয়ে খাকে যে এ হতেছ সংসার বিশ্বাসী বানুষের বিষর্ঘতার প্রতিধ্বনি। প্রকৃতিপ্রতিদ্ধানি তালি তালি এ বিজ্ঞান করিছে করিছে তালি করে আরোহণ করতে হলে ব্যক্তিরবোধ বিসর্জন দিতে হয়।

गारिका गमारमाध्य छि. अग अमिश्र है

गाहिन्छ। नवात्नाहभाष ८५६ता এनियाहित जुमिका ও व्यवभाग व्यात्नाहमा क्यात व्यात्न नवात्नाहभाष एकत्य निर्वित जीत त्रहमावनी गम्भदर्क এकि छानिका (मग्रा याक:

Sacred wood—1920
Homage to John Dryden (1924)
Essays, Ancient and Modern (1936)
Study of Dante (1929)
After Strange Gods (1934)
The Use of Poetry and
the Use of criticism (1933)
The Music of Poetry (1942)
The Classics and the man
of Letters (1942)
What is a Classic (1945)
Milton 1947
The Three Voices of Poetry (1953)
Collected Wores 'on Poetry and Poets' (1957)

সমালোচক সম্পর্কে তিনি বলেন, ''সমালোচক ও সঞ্জনশীন সমালোচক অবিচ্ছিনুভাবে একই ব্যক্তি

अक्ट श्राप्त ১৫ शृक्षेत्र जिभि छक्ष मञ्जाबाद श्रीकिएज्ट जाबाद बनाइन :

The true generalization is not something super imposed upon an accumulation of perception; Perception dont, in a really appreciative mind, accumulate as a mass, but form themselves as a structure; and criticism is the statement in language of this structure; it is a development of sensibility.

चार्निक कारन गाविजारक एक वाकियरक श्रकान क्यांत्र श्रवनेका राजा बाद।

५० । मक्कम अकारख्यी शक्रिका

७ वर्ष । ३४ मत्या

अतिष्ठे धर्माञ्च विद्याधिक कदा बर्लाक्न:

Personality tends naturally to be the unregenerate personlity, pastly self deceived, and partly irresponsible because of its freedom terribly limited by prejudice and self-conceit, capable of much good or great mischief according to the natural goodness or impurity of the man: and we are all naturally impure.

বিচন সম্পর্কে এনিয়ট নিজপ ধারণা পোষণ করতেন। বিলটদের বিজ্ঞত্বে তাঁর প্রথম প্রকাশিত হয় ১৯৩৬ সালে। তিনি প্রমাণ করতে চেয়েছেন, বড়ো রোষাণ্টিক কবিয়া মানবতার নিক্ট অভিবাজি। এনিয়টে এই নমোভাবের কারণ ব্যাবা৷ করতে গিয়ে জন হেওরার্ড বলেছেন, বিলটন কাবোর গুণাগুণ নির্বাহণের ব্যাপারে এনিয়টের যে দৃষ্টিভলি কাল করেছে তা হ'ল: An antipathy towards Milton as a man. ভাইডেনকে তিনি উচ্চমার্গে তুলে ধরেন যদিও তাঁব কাবা মিনটদের কাবোর চেরে মহন্তম নয়। পোপ ও অগাইছিনকে মূলায়নের মাধ্যমেন নতুন ম্যাদার পুনপ্রতিষ্ঠা করেন। এনিয়টের বিচারে, ভউম স্যামুর্গের জনসদ 'একজন সচিক, নির্ভুল, নির্ভর্গোগ্য সমালোচক।' এনিয়ট মেটাফিজিকেল কবি জন ডানের জনপ্রিয়ভারে পুনর্জাগরণের নিশ্চয়তা বিধান করেছ। ডানের কাব্য বৃদ্ধিলীয়, শ্লেমবিশ্রিত। ডান সম্পর্কে তিনি মন্তব্য করেছেন: a thought to Danne was an experience, it Modified his sensibility

এলিগট বন্ধাৰনই এ ধারণ। পোদণ করতেন, তাঁৰ ভাকং সমালোচনামূলক গ্র**ছাবলী ছোমাণ্টিকতার** বিক্লমে অধিচিত্রভাবে তাঁৰ ভিনুমত ভূলে ধরেছে।

প্রশক্তমে এবিষয়ে তাঁৰ নি.জন বক্তৰা গুরুপ কৰা যায়, 'সং স্মালোচনা এবং সংবেদনশীল প্রশংসা কাবা নুলায়নে নিদিষ্ট—কবির নয়।' (प्रष्टेना : Selected Essays, P. 17]

विविधिक आत्मानरमत द्यांछ। इराष्ट्रम क्रामा (३१३२—३**१**१৮)।

তিনি তাঁর Social contract theory-তে উল্লেখ করেছেন, Man is born free and everywhere he is in chains.

Emile তে ক্লোণ জোৰ শিয়ে ৰলজেন: God makes all things good; man meddles with them and things become evil.

উপরোক্ত দুটি কথাই হতেই রোমাণ্টিকতার সংক্ষিপ্ত সার। ধরীর মতবাদের সাথে এর বিরোধ ররেছে। ধরীর মতবাদ হতেই, Man is born sinful, and ha is finite and free only in a limited sense. রোমাণ্টিক কবিরা 'এই জীবন, এই সংসার বা ,এই ভাগতিক সম্পর্ককে লোডনীর গ্রহণীর সভাবলে শীকার করেন না; এই মৃহুর্তে প্রবাহিত হতে থাকা জীবন বেন এক বিত্তীবিকারর বন্দীশালা, বেবানে তাদের বন্দী অন্তরান্ধা ব্যাকুল তীন্রভার সভতই কাঁদে, কোধার মৃত্তি কোধার সেই নাবশ্ব রঙের দেশ ও জীবন বেধানে কবির কর্ণেঠ দুরন্ত উরাস।

বাহোক, রোষাণ্টিক কবি-যানস সম্পর্কে T. E. Hulme বলছেন, 'এবানে ছচ্চে রোষাণ্টিকভাষ শূল : বাৰুষ, বাজি-বিশেনে, জনন্ত সন্থাবনার ভাগার। যদি আপনি সরাজকে এমনভাবে গড়ে তুলতে পারেদ বেবানে শোষণের ব্যবস্থা বিলুপ্ত ভাহনে ওইগৰ সন্থাবনার বিকাশ বটার ক্ষোপ আসবে। জীপদি প্রস্তির সভান পারেন।

बीग्य-गर्गा । ১७৮८

नकसम अकार्डिंग शिवका ५३

चात्नाहनात्र स्विभार्ष वापरमग्रादात्र এकि सम्बद्ध बद्धवात्र डेब्रुडि नित्रा व्याख्ड शीर्तः

Man-all men, that is to say-is so naturally depraved that he suffers less from the degradation of the universe than from the establishment of a reasonable heirarchy.

এক কথায় রোমাণ্টিক মানসিকতা তাবং আগুবাকা বিরোধী। প্রচলিত বাবস্থার আড়ালে বানবতা নিম্পেষিত। এলিয়ট এ আন্দোলনের বিরোধিতা করেছেন যে-স্ব কারণে সে-স্বের বধা প্রধান হলো মানুমের ব্যক্তির সম্পর্কে রোমাণ্টিক মানসিকতার অতিরঞ্জিত ধাবণা। তিনি আরো মনে করেন, রোমাণ্টিক কবিরা মানবিক ব্যক্তিসভায় জীবদের চূড়াল্ত নূলা প্রতাক্ষ করেন। অভএব, তিনি এ'ও মনে করেন, ওই' ধরণের ধারণা পেকে ব্যক্তিগত নোহবিকার এবং অভিজ্ঞতা স্বাধিক প্রাধান্য লাভ করবে। এলিয়টের ওইস্ব কাব্যিক বতাদর্শেব ভিত্তি হলো তাবই নিজস্ব পিওবী—অর্থাৎ Theory of Impersonality in art.

डेक पिक्षीत डेजात जात्नाक्षणां क्रत्रां जिति दम्हणः

A Practical sense of realities......which is anti-Romantic: not to expect from life more than it can give or more from human beings than they give: to look to death for what life cannot give. [Selected Essays, P. 275]

শিলেপ গৈনাজিকত। ও বস্থগত দিক নিয়ে এলিয়টের ধারণা হলো: নানুমকে ধর্মীয় বিধিব শৃংধলা মেনে চলা প্রয়োজন। এমন কি অনুভূতি ধরীয় বিধি কর্তৃক নিয়েপ্তিত হতে হবে। ঐতিহার উপরে গুরুত্ব আরোপ করতে হবে। শিলপ কর্মে স্থানিদিষ্ট নিয়ম অনুসরণ করা প্রয়োজন। মতামত প্রকাশের ক্ষেত্রে স্বচ্ছে বিশুদ্ধ শারণা খাকা চাই।

উলেখা, উপৰোক্ত তত্ত্ব পুরোপুরিভাবে রোমানাটকতা বিরোধী। মানবভাবাদ মূরত: নৈতিকতার সপকে। মানবভাবাদ নীতিশাল্রের পটভূমি নির্মাণের উপরে নির্ভরণীর। তাড়াড়া মানুষের আদ্বিক শক্তির নৈতিক সম্পূর্ণতা অর্জনের যে অনিবার্য গতি, মানবভাবাদ যর সহকারে তাও প্রভাক করার ব্যাপারে আগ্রহী। অত্তরৰ একখা সভিয়ে, মানবভাবাদ ঐতিহাসিক জ্ঞাম বা প্রজ্ঞার প্রতি শুদ্ধার ভাব পোষণ করে।

যুক্তির ধী-শক্তি দিয়ে অতীতকে নিরীকে। করার ব্যাপারে আমরা কি ইতিহাস থেকে পাঠ নিতে পারি ? এ প্রশুর জ্বাবে মাদবভাবাদীবা বলেন, ইতিহাস হক্তে একটি Cumulative process। কিছ এলিয়ট ইতিহাসের Cumulative process-এ বিশ্বাস করেন, এমন কোনো প্রমাণ দেই।

বন্ধং ইতিহাস সম্পর্কে তাঁর অতান্ত শ্রুমণ্ড নতামত রয়েছে:

history has many cunning passages, contrived corridors,/And issues, deceives with whispering ambitions,/Guides us by vanities.....

[Complete Poems and Plays, P. 22]

इेडिशन नन्नर्टकं व्यस दिक्ष बात्रन। बाकात कि कात्रन ? कात्रन, এलिसरे मरम करतम, 'नडा' विरन्ध कारमा नयरम्ब कना। नम। এ एएक व्यमञ्जालक कमा। 'সতা'কে আমরা জানি মুক্তির নাধানে নর। প্রতিষ্ঠানগত ধারণাও এবালে বিকল। 'সতা'কে আমরা জানি Revelation বা ইপুরপ্রকত বাণীর নাধানে।

এলিবট 'ঐতিহ্যের' প্রতি ওক্তম আবোপ করেন, একথা আগেও খলেছি। ঐতিহ্য চেতদার মাধ্যমে তিনি এবিষয়ের উপরে জোর দিতে চান যে সামাজিক ও ধরীয় প্রতিষ্ঠানসমূহ হলেছ মুল্যবোধকে বুল থেকে মুলান্তবে সচল রাধার উপলক্ষ নাত্র।

সাহিত্য-সমালোচক হিসেবে এলিয়টের স্থান চিহ্নিত করার বাাপারে বিশেষজ্ঞানের মধ্যে মতাজন রয়েছে। বিশেষজ্ঞবা বিভিন্ন দৃষ্টিকোপ পেকে সমালোচক এলিয়নিকে প্রত্যক্ষ করেছেন।

यात्नाहनात्र स्विथार्प करमक्छन ची। उनामा समात्नाहमा-वित्नष्ठापत यहिन्छ है। समाव्या समा

John Crowe Ransom नरंग करवन, 'गञ्चबङ: এलिगरोनेत राह्य छारला नगरनार्छक याभारमंत्र मरंगा (ग्रेट) [The Great Critics P. 713]

Edmond Wilson এলিয়নৈর লেখায় ধর্মান্তার ঝলক লক্ষ্য কলেছেন। তদুপদি ডিনি মনে করেম, নিজের বজবোর বাপারে এলিয়নৈ উচেক্তি। তাবপর অবশা ডিনি এও শীকার করছেন, 'এলিয়নৈর লেখায় এবন্দৰ ব্যাপার অনেক্থানি আছে যার ফলে বোঝা যায়, তাঁর নিজের যুগের পালভরা পাতিতাও অস্থ:সাবশুনাতার প্রতিকলন সেখানে ঘটেছে।' [Axe's Castle P. 124]

Wyndham Lewis দি. এস এলিয়ট সম্পর্কে একজন বিশেষজ্ঞ। তাঁর বন্ধবা শিষর আগ্রায়ী, কাজেট বোটামুটি নিরপেক; গ্রহণযোগ্য কিনা বিতর্ক সাপেক; তবুও গুরুষপূর্ণ:

If there is anything more than another paraded by Mr. Eliot, the literary critic, it is a supposed logical precision of statement, a fastidious carefulness in the use of words. Is it a gross self-delusion, one sometimes wonders, or a mere barefaced bluff. [Men Without Art]

'Bare faced bluff' কথানৈ এলিয়নের ক্ষেত্রে নোটেই প্রযোক্ষা নগ। সমাপোচক ছিলেবে তিনি গভীৰতাবে সব কিছু পর্যালোচনা করতেন, পরীক্ষা করতেন এবং নিজস্ব ফর্মুলা, স্টাচিস্থিত পদাতি, অতুলনীয় বিশ্বেষণ ক্ষতা প্রযোগ করতেন। হয়তে। তাঁর বহু বক্তবাই বিভর্কের উপের্ব নয়। কিন্তু ভাই বলে কিছুতেই bluff শবদ সঠিক কিংবা তথানির্ভর নয়।

অবশ্য A. G. George মসুবা ক্ৰেডেল, he has some defects as a critic. He is often pontifical and sometimes overweening. [T. S. Eliot: His Mind and Art]

কথাটার ব্যাখ্যা করতে গিয়ে A. G. George ন্যাখু আর্নন্ড সম্পর্কে এনিয়টের বনপার্টাণ মন্তব্যের প্রতি ইক্সিড করেছেন।

अनिवरित पृष्ठिएक ज्ञाण यानंतर राष्ट्रका. 'मर्नन ও धर्मकाबु अनका याक्षत्रधाक्ष्यि। । धर्मन भाषात्र जीव वाश्चिक ठाठि वकाय धाकरन्छ शक्षणाक यकान्त्रिं।''

वीकात्र कवि এते। मत्रात्नाहमा गरा। यथवा अ'अ वना थएड भारत, मत्रार्त्नाहभाव एकरा शृष्टी छ कारा विविध वार्ष् वार्नर्र्म् नाभारत छिनि कारा हिनि कारा हरनामि। अञ्चाद छिनि विभिन्नर्रम् कार्मण्ड कार्य कार्नर्म्म वार्नर्म्भ छिनि वारत। निर्मत्न हर्मि मार्गा निर्मत्न हर्मि वार्मर्म्म कार्य कार्नर्म्म । अववङ्गिकार विविध कार्या विविध कार्या वार्मण्ड विश्व वार्मण्य । अववङ्गिकार छिनि इर्मिक्स कविडाव वार्माभ्य ।

সমালোচক হিলেবে এলিরট-এর প্রধান জাঁট হলো, ভিনি সমালোচনার ক্ষেত্রে যে মাণদণ্ডের কবা বলতেন তা নিজের স্থানিধে মতে। আধার পরিবর্তনও করে কেলতেন। এ ধরনের স্ববিরোধিতা বিলাজিকর অবস্থার সূত্রপাত করেছে। অথচ তাঁর বত সমালোচকের ক্ষেত্রে এমনটি ঘটা উচিত ছিল মা।

পাত্তে সম্পর্কিত রচনায় তিনি মন্তব্য করেছেন, কোনো কবির কবিতার রসোপলজির জন্যে তীব জীবনদর্শন কিংবা আইডিয়ায় জান্তা স্থাপনের প্রয়োজন নেই। অথচ একই সাথে তিনি শেলীর কাব্যকে 'Repellent ideas' বা 'অক্ষচিকর ভাবধারার' অজুহাতে নিলা করেছেন।

এ ধরণের বিজ্ঞান্তিকর মানসিকতা সমালোচনার ক্ষেত্রে নিতান্ত দু:খছনক। এবং এর ফলে সমালোচনার মাদ বিদ্যিত হয়। সমালোচনার জগতে ধার স্থান অবিসংবাদিত — যিনি সবল সতেজ স্ফুর্ব সমালোচনার গতিবারা প্রবর্তন করেছেন, তিনিই বা কেমন করে শেনী। ও মিলটনের মত লেখকদেব প্রতি জতটা নির্দয় হতে পারলেন, এর যথায়থ ব্যাখ্যা করা। প্রায় অসম্ভব। তবু মনে হয়, 'ব্যক্তির প্রতি বিরূপে ধারণার' বশবর্তী হয়ে তিনি তা করেন নি। শিলপকলার উপের্ব কিংবা পিছনে কিংবা অন্তরালে যে ব্যক্তি-চরিত্রের অন্তিম্ব তিনি গৌণ বলে এছিরে যেতে চেয়েছেন, চুড়ান্ত পর্যায়ে সম্ভবতঃ তা তার কাছে স্তিক বলে মনে হয়নি। তাছাছা, মতবাদ বিবর্তনের আওতামুক্ত—একখাও বেনে নেয়া ধায় না। এলিরট বিশেষক্রয়া বোধ করি এদিকটার প্রতি গুরুর দেগনি। A. G. George-এর মন্তব্য প্রথিধানযোগ্য:

...his capacity for subtle analysis and the widely admired lucidity and severity of his prose style make him one of the most distinguished among contemporary critics.

তবু কী তাই। কুরধার দৃষ্টিভকী, সুক্রাবিল্রেষণ ক্ষমতা ও সাবলীল রচনাশৈলী তাকে এমন এক পর্যায়ে উল্লীত করেছে যে তাঁর কাব্যের অন্তর্গত বৈশিষ্টা তাঁকে কবি ও সমালোচক হিশেবে এক অবিভাজা সন্তায় রূপান্তরিত করেছে। তাঁর কবিতার সাথে তাঁর গদ্য রচনার তুলনা করা হলেও দেখা যাবে যে এমন সব সমালোচকদের সংখ্যা নিভান্ত কম যারা এতো অধিক লিখতে পারেন—এতো নিখুতভাবে, এতো কম কথায়।

এখানেই এলিয়নের মাহাদ্য। গোরতর নিলুনেরাও তাঁর লেখায় অপ্রয়োজনীয়ে শব্দাবলীর ব্যবহার দেখাতে পারবেন না। কবিতায় থেবন প্রতিটি শব্দ অর্থবহ এবং প্রয়োজনীয়ে তেমনি তাঁর গদ্য বেখারও তিনি সদাসতর্ব। মনে হয় এলিয়নের একটি কবিতা আরেকটি কবিতার সমালোচনা। নিজের স্পষ্টর ব্যাপারে নিজেই সদা-সমালোচনা মুখর—এমন নজির, টি.এস. এলিয়ন ছাড়া, আব কেউ বয়েছেন কিনা বলা কঠিন। Miss M. C. Bradbrooke যথার্থ বলেছেন: his equipment as a critic is congruent with his equipment as a poet. [Eliot's Critical Method, edited by B. Rajan, p. 126]

नाग्विक नगटनाइक व्हिन्द

विक्रिंश वारमन बरमरहम: ''मःकिश जात्र जमहात्र हर्त्व वानूरवर कीवम। मिन्छ निविध विक्रूति । अ जककात्र मिरम स्मारम जारम छात्र अवः छात्र काछित छैभरत।'' উপরোক্ত ভাবধারা H. G. Wells, George Orwell, Aldous Huxley, Arnold, Hardy, Pater প্রমুধ দেবকদের রচনার বিকলিত। গাঢ় অভকার প্রকৃতির নিলিপ্ত পটভূমিতে ক্রমণ: পাধা বিভার করে চলেছে আর এব বাবে বানুষের অভিন্ন অসহায় কাভরানি ও বার্ধভার লীর্ঘনিপানে ভরপুর। এ অবস্থা বেকে বৃদ্ধির পথ কোধার যানুষের জানা দেই। উন্নিবিভ লেবকদের স্বষ্ট অপতে ভাই নির্দুর নিয়ভির নিংশক অবচ স্থানিশ্চিত পদ্চারণা বানুষের হাসি-কানুার অভরালে একটানা ক্রমণস্থবের আবহাওয়া বিভারিত করেছে।

কোনো কোনো নেৰ্ক এর বধ্যে প্রত্যক্ষ করেছেন সারাজিক অবজ্বরে চিছ। কিছু কোনো এ অবজ্বনকোনা এ ছতাশার আবর্তন—মানুষের বছরান মন্ত্রপান্ত কোধান্ব এবং এর কী কারণ, এগবের
ব্যাধ্যা দানাজ্বনে নানাভাবে করেছেন। আর্নল্ড রনে করছেন, এগব ছাছে কালচার কৈ অবছেল।
করার প্রতিকল। তাঁর 'কালচান' সম্পর্কে ধারণার সাথে মিশে আছে 'ধর্ম'। অত্যত্তকে তিদি পরীক্ষা
করতে চান কেননা তিনি বিশ্বাস করেন, এর মাধানে ত্রবিষাত পৃথিবীর মানুষের জন্যে প্রথচনার
নির্দেশ পাওয়া যাবে।

এলিবনের ধারণা ব্যাখ্যা করা প্রয়োজন। তিনি মনে করেন, সময়কে অতীত বর্তমান তবিদাতে বিজ্ঞাকরা মর্থহীন। তাছাড়া তিনি এ'ও মনে করেন, সময়ের সাথে অনন্তকালের সম্পর্ক অধিচিনু। বর্তমান ধারণ করছে অতীত এবং তবিঘাতকে। Here and now-এর অন্তর্গত হচ্ছে অতীত ও তবিঘাত। বাহোক, 'সময়' সম্পর্কে উত্তরের ধারণা প্রায় কাছাকাছি। যদিও এলিয়ানের চিন্তাবানা আরো গতীর। অধিকতর মুদূরপ্রসারী। এলিয়ান দৃচভাবে বিশ্বাস করেন, উপুরের উপরে ইমান ছাড়া সামাজিক উনুতিকদেপ যতোরকর পরিকলপনাই গ্রহণ করা হোক না কেনো, সেসর বার্ধ হচ্ছে বাধা। তিনি বলেন: ''আমাদেরকে সদাস্বর্ধন বলা হয়ে থাকে, অর্থনৈতিক সমস্যা অপেকা করতে পারে ধা। এলিব আলিও সমস্যাও অপেকা করতে পারে মা। এলব আপে থেকেই দীর্ধকান যান্ত অপেকা। করছে।''

আৰৱা বৰ্তমানকে উপেক। করি। অবছেলা করি। অনিশ্চিত ভবিষাতের আশায় বর্তমানের দাবি আমাদের কাছে গৌণ বলে মনে হয়। এর কলে আমাদের আদ্বিক বিকাশের পণ বিশ্নিত হয়। আমাদার আদ্বিক বিকাশের পণ বিশ্নিত হয়। আমাদার আদ্বিন বিকাশের পণ বিশ্নিত হয়। আমাদার আদ্বিন বিকাশের পণ বিশ্নিত হয়। আমাদার ভবেনা Ego-centric হয়ে পড়ি। Over completent historical knowledge এ অবস্থায় জনো দাবী।

गाहिन कर्व विराग गूर्शन रेनिटें। कृतन थरत। गाहिना विहास और रेनिटिंग पेप यस निषय शिक्ष निर्वासन करत। किन्द गाहिना कानक्यो इस्त इस विकास रेनिटिंग शिक्सिम कर्मान इस इस । महिन कारना निरूप केर्य पानि इस भीरत ना।

गांवास्तिक गवारताहनात्र रक्षरत्व अनिवारित अथव अखिलाभा निषव इत्सा, बामविक सम्पूर्वछ । बानूब वर्छरे रहित क्वक ना रक्षरता, छात्र कार्य्यत्र कनांकत गम्पर्क रम कर्षरा निष्ठिछ इत्छ भावरव गा। स्थ-मान्ति छनिवारछ प्रक्रित इत्व, अवस बावशां भित्रक नव। छनिवारछत्र अश्र अवारम स्वार्यत । राष्ट्रित भावराह अत्राह्मता छ। इत्वाह्मता छ। इत्वाहमता छ। इत्वाहमता छ। इत्वाहमता छ। इत्वाहमता छ। इत्वाहमता छ। इत्वाहमता हाल वर्षा वर्

विनिष्ठ विनिष्य अभय अभय यातान क्याप्ता । ग्यष्टित्र थात्रना वाक्ति (वेटक यात्र । ज्याप्ति विक्रिक्ति विद्याप्त । ज्याप्ति विक्रिक्ति विद्याप्ति । विक्रिक्ति विद्यापति । विद्यापति । विद्यापति । विक्रिक्ति विद्यापति । विद्यापति ।

वाकि ७ गम्हिन गाप्प गाप्प गमाप्पत्र कनामि गाबिङ হয়। गामाध्यक गमगान मूनीजूङ कान्नम मिर्फिन क्वरङ भिरत छिनि बनाइन:

> If humility and purity be not in the heart, they are not in the home: and if they are not in the home they are not in the city.

The man who has builded during the day would return to his hearth at nightfall: to be blessed with the gift of silence, and dose before he sleeps.

[Choruses from 'The Rock'v]

विष्ठिनुष्ठा—िनः । भेडार्योव वाग्रज्य विश्वां । नामाक्षिक किः या मानिक व्यवं छेडानिय वर्षं, मानुष्यत्र व्यक्ति । भेकिनमूद्धत्र किष्ठ नामन कत्र्ष्णः। अनिग्रहे महा करत्रन, अ व्यक्ता (धरक मूक्क रूउगा प्रकात अवः व्यक्तिरवः।

क नियटिय अवनाम

It is a function of all art to give us some perfection of an order in life, by imposing an order upon it. [H. W. Carr: Proceedings of British Academy. Vol. VIII, P. 6]

শিরের কাজ হচ্ছে জীবন-বিন্যাসে কিছুটা সম্পূর্ণতার নিশ্চয়তা-বিধান করা। উপরোক্ত উদ্বৃতি এলিয়টের ব্যক্তি বানস উন্যোচনে বিশেষভাবে প্রযোজা। জীবনভর ওই উদ্দেশ্য সামনে রেপেই তিনি সাধনা করে গেছেন।

জানের কণা মুধর করা এক বাাপার জ্ঞান করন কর। আবেক বাাপার। আবার, জ্ঞান পেকে নির্বাস গ্রহণ করার ক্ষমতা সম্পূর্ণ ভিনুতর বাাপার। জ্ঞান হক্ষম করে এর মাধানে িক্ষম বন্ধবা উপস্থাপন কর। অতি কঠিন ব্যাপার। উচুদরের শিশপ চেডনা ব্যক্তিরেকে তা সম্ভব নয়। এলিয়ান তাই করতে সক্ষম হয়েছিলেন। এদিক থেকে এলিয়ানের প্রতিভার জুড়ি নেই। শুবু ইংরেজী সাহিত্যে নয়, বিশুসাহিত্যে এধরনের প্রতিভা বিরল।

विनिष्ठेन गण्यकं এकवात्र जिनि वरनिष्ट्रांगा, विनिष्टांत वर्षण এएका व्यक्ति छान व्यक्ति गांभाभा किलान किलान

human dignity springs from the fact that man is a compact of the finite and infinite, of good and of freedom and necessity, the natural and the supernatural, the contigent and the eternal, of matter and spirit.

আলো-জাধারের বিরোধী উপাদান আছে যানুষের জীবন ও স্বভাবে। এর একটিকে স্বসীকার করা হলে স্বপরটিও স্বসীকার করতে হয়। স্বর্ধত এপুরের উপস্থিতি ররেছে যানুষের চরিত্রে।

४७ । नवक्रम धकार्डिया शिवका

७ वर्ष । ३व मःचा

चड्य मूं हित वि कारना धक्छि छैर्शका कवा हरन कारना नामूर्यत्र महिक मूनाविन कवा महक्त्रत्र हरन मा। नत्रः यद करन नानूम मन्नर्रक जून बावनात्र महि हरड शास्त्र। धनित्रहे छहे छान्यावात्र शिंड जान्याचान हिर्मि।

এবং নিজের কাব্যে এর সম্প্রসায়ণ করেছেন। আর এটা ছলো এলিয়টের উল্লেখযোগ্য অবলাগ সমূহের অন্যাতম।

চিন্তার ক্ষেত্রে এলিরটের বিশেষ অবদান ছলো: যানব প্রকৃতি পর্যালোচদা করে তিনি ধর্ম সম্পর্কে এনন এক বতবাদ স্বষ্ট করেছেদ যা বিশ্ব-মতনাদ ছিসেবে চিহ্নিত ছতে পারে। ধর্মীয় বিশ্ব-মতনাদদ রূপরেখা তিনি তাঁর শিলেপর বাধানে তুলে ধরেছেন। কিন্তু প্রচলিত উপারে এর বিশাশ ঘটানো সম্ভব দায়। তাই তিনি এক ধরনের মতুন আছিকে কবিতা রচনা করেছেন। উপায়ন্ত্রপ স্বরূপ Four Quartets-এর কথা উল্লেখ করা যায়।

डिभि नाम करत्रम क्रिसा श्रकात मस्त्रा किर्या नयारनाष्ट्रमा बाख्यिक कार्या क्रमस्त्र भ्रमा किर्या इंडान्नाम वार्यक्रिकार क्रमस्त्र भ्रमा क्रमस्त्र भ्रमा क्रिया इंडान्नाम वार्यक्रिकार श्रकान क्रमस्त्र भारत ।

प्यामुधिक कार्त्वत मृत्य-मूर्णमा এवर कीवरभव विश्वाणांच श्रविषित्ति श्रकारमब तिश्वाणांच श्रविषित्ति श्रकारमब तिश्वाणांच श्रविष्ठि श्रविष्ठ

তদুপরি ব্যবহার করেছেন, প্রাত্যহিক চিত্রকলপ, Objective correlative, প্রতীক ও রূপক। অতীতের নহৎ রচনা থেকে উদ্বৃতি নিয়ে এর পাশাপাশি নিজম বার্ণা প্রকাশের পদ্ধতি। এসবের নাগানে তিনি সাহিত্যের ক্ষেত্রে এক নতুন দিগজের সূচদা করেছেন।

তান জানন-দর্শনে ধারাবাহিকতা নজান রয়েছে। কাব্যে প্রবন্ধ নাট্য স্টিতে তিনি যে জাবন ধন্ন উপদাপিত করেছেন এর বনো কোনো প্রকার অহেতৃক জানৈতা নেই। আরো একটি উল্লেখযোগা বাপার হলো, এলিনট এমন একজন কণজন্য কবি যার একটা নিদিট জীবন দর্শন আছে—মানুষের জন্যে যে সেজ আছে। লক্ষ্য করা প্রয়োজন, একমাত্র জনাধারণ ক্ষমতা সম্পন্ন লেখকেরাই তাই পারেন। Irony বা শ্রেম এলিনট কাব্যে ইজিতবহু, পাণ্ডিত্যপূর্ণ। মানুষের সহজাত দুর্বলতা তার প্রেম-এব বিনয়বস্থ। কিন্ত কোনো কারপেই তিনি নিষ্কুর অমানুষিক 'শ্রেম' বাবহার করেন না। জনাপন ক্রেফ্-এর 'শ্রেম' তার কাব্যে অনুপন্ধিত। গভীর সংবেদদাশীন স্বন্ধ তার। মানুষের প্রতি অপরিসীম ভালোবাসার কারপে তিনি মানুষের সহজাত পূর্বলতার উথ্বে মনুষাভবোধকে স্বাদ দিয়েছেন।

চিডাবিদ হিলেবে এলিয়টের স্থান অবিসংবালিত। তবু কাবা অগৎ গিয়েই তিনি চিডা করেদগি। কলপনার দুরত্ব পাগ। ছেড়ে তিনি বাঝে বাঝে চার পাশের ক্ষান বাস্থবতাকেও প্রতাশ করেছেন। তেবেছেন মানুষের নুক্তির পথ কোধার। আবুনিক পুঁজিবালী অর্থনীতি সম্পর্কে তাঁর ধারণা হলো, এর মাধারে has no solution to perennial problem of individual boredom, একবাটা বলেই তিনি হালছেড়ে লেনি। তিনি এর কারণ দির্দেশ করেছেন। বলেছেন, পুঁজিবালী অর্থনীতির বক্তবা হচ্ছে, 'বর্তনানকালে নৈতিক ও আবাদ্ধিক কলাপের ব্যবস্থা করা কোনো রাজনৈতিক অর্থন

এनियुष्ठे The Symposium পত্ৰিকাৰ প্ৰকাশিত কোনো এক নিৰম্ভ সম্পৰ্কে উপয়োক্ত মন্তব্য কৰেছেন। উক্ত দিবছে ক্যুনিচমকে প্ৰত্যাৰ্থান কৰা ছবেছিলো। এনিয়েট বিষয়টি ব্যাৰ্থা কৰে বনছেন, ওই ধরনের পুলিবাদী অর্থনীতির ব্যবহা বাদধিক বুলাবোধের বারান্তক বিপর্যর সূচনা করে। বাদুবের এদিনের সঞ্চিত বুলাবোধ উল্টিরে কেলে দিরে অসক্ষত জীবনধারার সপক্ষে বক্তবা তুলে ধরে। 'ক্যুানিজন', তার মতে, 'ওই ব্যবহার চেরে অধিকতর স্থাপ্তদ জীবনের দৃষ্টিভূলীয় কথা বলে। বিশেষত: সাধারণ বানুবের বেলার সোটি প্রবোজা।' কারণ ক্যুানিট্রা not only feed the hungry, and clothe the naked, but remove the feeling of 'boredom' which is what the average man cannot stand.

बाजनीकि जन्मदर्क अभिन्नदेश किलायाता

রাজনীতি সম্পর্কে তাঁর চিম্বাধার। ব্যক্তি বিশেষের মানবিক মূল্যায়নকে কেন্দ্র করে আবতিত। উদারনৈতিক গণততে ব্যক্তি বিশেষের মর্যাদা বিনষ্ট হয়। ব্যক্তি সমষ্টির অসজত চাপে পড়ে নিজম্ব বৈশিষ্টা হারিয়ে ফেলে। ব্যক্তির বিকাশ বিশ্বিত হয়। সংখ্যাগুরুর অত্যাচার খেকে বিপদ নেমে আসে। গুরু হয় জনতার একনায়কার।

The mass can more effectively stiffle individuals than totalitarianism.

জনতার উচ্চৃংগল 'पাচরপ ব্যক্তির বিকালের পথে ভরংকর দেয়াল রচনা করে। এক্ষেত্রে অবলা এলিরট গণতজ্বের সাঁমানদ্ধতান প্রতি ইন্ধিড করেছেন। তিনি মনে করেন সত্যিকারের গণতান্ত্রিক বিধিবারস্থার এ অবস্থার অবসান নিশ্চিত করা উচিত। কথাটা গণতজ্ববিরোধী মনের পরিচারক। প্রকৃতপক্ষে এলিরট গণতজ্বের প্রতি শুদ্ধালীল। যদিও সাধারণ অর্থে কিছুটা ভুল বোঝাবুরির সন্থাবনা কিছুতেই অস্থীকার করা যায় না।

তবু ধলা যায়, তিনি গণতত্ত্বের ভবিদাৎ সম্পর্কে আশাবাদী। আর গণতত্ত্বের ব্যাপানে তাঁর মত সম্পষ্ট : 'আসল গণতত্ত্ব সর্বদাই বাধাবদ্ধনযুক্ত গণতত্ত্ব। এর নিকাশ কেবলমাত্র বংশানুক্রমিক অধিকার ও দায়িত্বের মাধাবেই সম্ভবপর।' [The Criterion, Vol. viii. December, 1921]

তিনি প্রচলিত রাজনৈতিক গ্লোগান-এর কারণ ব্যাখ্যা করেছেন। তারপর নিজস্ব মতবাদ প্রকাশ করে বলেছেন:

The emotional excitements which political slogans [Communism, Fascism, Republic-canism, Nationalism] arouse seem to be a crude substitute for the loss of religious emotions.[The criterion, vol. viii, Dec. 1928]

गाथात्रपंडः (नर्थकरमत्र (यनाग्न या घटि, अनिव्रष्ठे बाक्योजित व्यापादि व्याग्रशी; डाँव व्याग्रह शिला बाक्टमिकिक ভार्याता गम्नर्द्ध।

क्यापिक्य-এत প्रोपेनिक खत्र—एव खत्र बानूरवत्र शांचिव गयगात्र गद्याग एतः, এ निर्द्ध जिमि श्रन्शनांचा উक्तात्रश्च करत्राज्ञ । ज्ञान क्यापिक्यरक यर्थम किश्राक्ष विद्यारात्र खरत निर्द्ध कागा हत्र, अनिवर्क्ष कर्ण ज्ञान श्रेष्ठिवाप्यूचेत्र । जिमि छत्र बत्ररात्र विद्यागरक 'विचारात्र' वरण यर्ग करत्रम ।

এলিরট এত্যাকে এ'ও বলেন, the same is true of Fascism and of extreme nationalism. [The Criterion, viii, 1928, P. 282]

उन् बना बाब, अवीदम अनिवर्ष मन्पूर्ण मिर्जुन नम। कामीबान छ हूडाच बाडीबडाबान क्यापिकदबब् महाकाविड नेक्यांना घटड भीरत मा। क्यापिक्य घटक अक्ता अखिवानिक मिकाच। बाडिक मिनीक्षम स्वरूप मन्द्रीरक बन्धा क्याब अक बामिक पनिन। कामीबान छ्ये बाबान बाडिक्य। हूडाच बाडीबडाबान्छ छाই।

তিনি রাজার শাসনকে শ্রজার চোধে দেখতেন। সম্ভবতঃ বৃটিশদের রাজ-প্রীতি এলিরটোর বলেও শোলা জাগিরেছিলো। বৃটিশদের দৃষ্টিতে রাজতর হচ্ছে ক্ষতার ঐপুরিক সূত্রের পার্বিক বিকাশ। এলিরট প্রবর্তন ক্ষতোন the idea of loyalty to a king who incarnates the idea of the Nation. [The Criterion, VIII, July 1929, P. 690]

রাজতত্ত্বের প্রতি বাশুষের আনুগত্যের প্রয়োজনীয়তা সম্পর্কে এলিয়াট-এর যে বজাপন রারছে, তা হচ্ছে, তার বতে ''সত্যিকানের বৈপুরিক ভাবধারা—পক্ষাভারে ক্যাসীধার কিংবা ক্যুদিজর নতুদ ভিছুতো ন্যই—বিপুরাজকও নর।'' [The Criterion, VIII, July 1929, P. 691]

উপবোক্ত বভবাদের সাথে দেণ্ট অগাস্টাইন-এর The City of God ও কিষেকেপার্ড-এর The Present Age (1846) প্রাণে বিশৃত রাজনৈতিক বভবাদের নিল ময়েছে। এলিয়াই তাঁর Essays, Ancient and Modern গ্রন্থের ১২৩ পৃষ্ঠার বলচেন, 'বর্ম সম্পর্কে বিরূপ ধারণাপোর্বকারী বিনিই-বোন—জিনি ক্যাসিবাদী অথবা ক্যুদিট অথবা গণভ্রী অথবা বৃদ্ধিধারী, যে দার্থেই দিজেকে ভাকুল না কেনো, ভার আদর্শ সর্বলা নীচু বানের এবং প্রভ্যাপা উর্ম্বনারী।'

১৯৩৩ সালে এলিয়ট বুৰকদের বিপাধগারী হওয়। সম্পর্কে পর্বালোচদা করেছিলেদ। ডিদি কেবলৈদ তাদের অধিকাপেই উদ্দেশাবিহীন, ওদের বাবে রয়েছে হতাশার দীর্ঘশাস। এ অবস্থার জন্যে পারী বৌলিক কারণগমূহ জয়ীপ করার পরে এলিয়ট নিছাত্তে পৌডুলেন, it is far better to be stupid in a faith, than to be stupid believe nothing.' [The Criterion, XII, April 1933, P. 472] বাজ-আনুগড়া বা বিওরি বা Theory of royalism প্রকৃতপক্ষে এলিয়টের কোনো প্রকার বাজ-বৈভিক আদর্শ দর। বরং বলা চলে, তত্ত্বগড় দিক বেকে এ হচ্ছে তাঁর বাদসিক প্রক্রিয়া, বারশা, নিজস্ব অধ্যা ব্যক্তিগড় সভাদর্শ। আর এসৰ বক্ষা বলার পরে ডিদি যা বোঝাতে চেরেছেন ভা হচ্ছে: বাজনীভির সাবে বাদবিক সম্পূর্ণতা অর্জনের যে সাবদা এর সাবে রাজনীভির কোনো সম্পর্ক সেই। ধর্ম-বিশ্বাস বানুষকে ওই স্তরে পৌছুতে সাহায্য করে।

তাঁর বক্তবা হচ্ছে, রাজমীতির ক্ষেত্রে গারাদ্য আশাবাদ সম্ভবদর এবং তা কেবলি জুত্র, কেবলি সারাদ্য। তিনি আরো বদে করেন, পাধিব এবং বস্ততান্ত্রিক সরকারের উৎপত্তির বুলে রয়েছে বাদুবের স্বাতানিক পাপপ্রবস্তা।

त्राध्यमीणि मिलाकात वर्ष मानुरमत धाषिक मृक्ति महाम निर्ण शारत मा। त्राधरेमिण स्मान्यक क्रिक शर्मार धाषिक विकालत शर्म नाम हरत में छात्र। धाप छे व्यवका स्मान्य भ्रम भ्रम प्रमान क्रिक श्रम हर्ष्य विकाल स्मान्य स्मान स्

What ultimately matters is the salvation of the individual soul. You may not like this principle; but if you abjure it, you will get something you like less. The world

बीष्य-वर्ष | ५०४८

नवक्रम अकारख्यी भविका । ५%

lends now to scramble for its salvations by taking a ticket (Moscow). [The Criterion, XIII April 1934, 1453]

কারো কারো বভে বোষাণিটক বিষপুতার সাথে অন্তিষবাদের ANGST বা হতাপার প্রতিষ্থিতি বিরেছে। বাহ্যিক দিক থেকে হয়তো কথাটা মিখ্যেও নয়। রোমাণিটক বিষপুতার সূত্র সম্পর্কে শেলীর সন্তব্য সবিশেষ শুক্তমপূর্ণ। এর সূত্র হচ্ছে, the desire of the moth for the star. অবচ গভীৰত্ব অর্থে রোমাণ্টিক নিষপুতার সাথে অন্তিষ্বাদী উদিপুতার কোনো সম্পর্ক মেই। অন্তিষ্বাদী উদিপুতার হংচছ, a product of Christain notion of Original sin.

মানুষের নিজস্ব অন্তিকের মৌল কাঠাযোর ভেতরে ররেছে অপরাধ, উদিগুতা, ছতালা। অবস্থা এও বলা থেতে পারে ওসধ ছচ্ছে মানুষের অন্তিষের অন্তর্গত উপাদান। রাজিধিশেষ এছেন অবস্থায় বাইষেলের অমির বাণীর মধ্যে পুঁজে পেতেও পারে তার মানসিক সাম্বনার সূত্র:

He that findeth his life shall lose it: and he that loseth his life for my sake shall find it.

वक क्षीम, स्मामिकिकात गार्थ थात्र थिति क्षित्व क्षित्वाराम नित्नाविक वर्ष्ट्राम। कीका मन्मर्क ध्वीम वर्षाक वर्षाम केष्ट्राम क्षीम क्षीम वर्षाक वर्षाम केष्ट्राम केष्ट

जारबक विक—थांशाचिकछात्र विकः, मन्तृषै जिन्न्यताततः। এषारम जीवन वर्षन्दः। कृषु अषारम् यदाजीवरम्ब परताजा याजः। अषामकात्र पूर्य-विश्वषा विराह्म अत्र विष्ठात्र विराह्म विराह्म महास वर्षाम परताजा । वर्षामकात्र परताजा एपितरा रा जीवरम्ब व्यवाम जार्षे हर्र्ष्य मिला प्रतिराह्म वाति जीवनः। व्यव्यव वर्ष्यविक्तराज्य जार्गाकिज किरवा व्यवकात्राक्ष्य विकास वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्षामकात्र विकास वर्षामकात्र वर्षामकात्य वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्षामकात्र वर्

অক্তিৰবাদ religious classical-tragic দৃষ্টিভঞ্জীয় সমপৰ্যায়ে। কথালৈ T.E. Hulmo-এম The Speculation-এ বিধৃত। তিনি এফিয়ট সম্পৰ্কে মন্তব্য করতে নিয়ে বলেছেন:

Eliot stated that our present day ruin is the external sing of a world religious Crisis, and that modern history can also be understood as a metaphysical tragedy.

আট-এর আর কি কাজ খাকতে পারে যদি না এ ট্রাভেডীকে তুলে ধরতে পারে---[A London conversation with T.S. Eliot. P. 280]
বিশ্ব দে বলছেন:

'ৰিজ্ঞাম বিরোধী তিদি গতিশীন জীবনে কোনো ভারানেকটিক্সের ছান বরতে পারেন না। সমস্যান্ত একেবাবে নতুন নর। ট্যাস প্রাউন এই সমস্যার শিং ধরে সমাবান করেন নিজের মজে, ধর্মে তার বিপাস নেতিবাচক ছিল না, বিজ্ঞাদেও ছিল আছা; তিনি ভিনু সভ্য ন্যায় বিশ্বের মজনানে সমাবান বুঁজে পান যাতে আধ্যাদ্য ও বিজ্ঞান দুইই বিপাস্য। মনটোনের সমাবানও প্রায় এই বক্ষা বিচিত ভাতে জিজ্ঞানার ভাসটাই বেশী। বিনটন নৈজ্ঞানিক বুছিবই এক চেটে ভাল ছিলেন।

छारे छीत बेन्त्र थाव देखानिक वृद्धित सर्भक वनत्नरे इत। वक्तरछा देखानिक। मूर्वित्र छात्रिक पृथिवीत व्यातात्र त्रकारन छर्गव कान्नाकारे। त्रूव कक्ष्मे—এछ निष्ठिकितमिक कन्नम् खन् इन् छाउँछ। अनिष्ठारेत प्रवण थाव छर्गत मर्छ। मर्मक गाँठरम राष्ट्र प्रवाणकी वीत्र अनुर्व, छवु छिमि वर्षवाणी पात्री वर्ष्णावर्ष्टर मतिया छछ। क्ष्म वाणात्रारे। छामरन इत्रछा वन्नद्वम्, व छारम मर्बिणेरवत्र विवित्र कीवम्यात्रा विकित्त्रक्तर थिछ्छाछ, त्र छ्म वाणात्रा पृष्टे।

কিছ সা অধ্যাশভীবীর ঐপূর্য তাঁর বদে, তাঁর প্রাণে, এবং ওই ঐপূর্যের আনোক্ষারা তাঁর বৃষ্টভনীকে করে তুলেছে ফছে—কাটকের চেনে ফছাতর। ব্যক্তিগত জীবদে, চেতনার প্রবাহে, সাধনার সৌকর্যে এবং একাগ্রভার তিনি সভিছি অতুলদীয়ে। তিনি যে নিকপ ও ভাষনার আবাহের করেছেল সেসর হচ্ছে নির্ধাদ, নির্ভেজাল। পার্থির আকাংখার মৃত্যু তিনি চালনি। কিংবা এ'ও চাননি, বনুষের সামগ্রিক সভার কোনো প্রকার অবনুন্যায়ন হোক। তিনি বার্থার স্মুবণ করিছে দিরেছেন, আনাদের ব্যক্তিগত নিয়তি বৃহত্তর নাগর সভার নিয়তি থেকে আনাদা কিছু দয়। তিনি বিশাস করতেন, কোনো নানুষ যতে। বেশী ব্যক্তিখাত্রাধ্যের অঞ্বু রাখার ব্যাপারে ক্ষয়তাসম্পন্ন ততে। বেশী তার পক্ষে মানব জাতির সাথে একাছতা অর্জন ও বিকালের পথ স্থাম করা সভারপর। এনিয়ট তাঁর সমগ্র স্প্রীলী চেটা করেছেন উপুরের সাথে মানুষের খোগাথোগের পথ চিকিড করার জন্যে। A Song for Simeon এবং Little Gidding কারে। ছিরাক্লিনিশের বাণীর প্রতিশ্বনি করেছেন:

Those who do not die, die, those Who die, do not die: of one another They live the death and die the life.

এলিরট তাঁর স্পষ্টতে মানুষের মূর্যতা, নির্দ্ধিতা, অনিমূপাকারিতা, অভনিকা প্রভৃতি উন্যোচন করেই কান্ত হৃদ্দি। তিনি ওই সনের পর্দ। অপসারণ করে সমগ্র মানবজাতি সম্পর্কে আমানের অবজিত করেছেন। আর এর অন্তরালে থে ইতিহাস রুমেছে—ক্রেছে মানবাদ্বার ক্রন্দানগরিক আর্ডিমাল ও বিজীমিকা। তিনি সেসবের সাবে আমানের পরিচর করিবে দিয়েছেল। 'পোড়ো জনিতে' মানবাদ্বা নিংসজা। নাবাদ্বার ক্রিছেলে। 'পোড়ো জনিতে' মানবাদ্বা নিংসজা। বিশেষ গুলিতে মনে হন, এলিনট মানবাদ্বার নিংসজানেই প্রকট করে তুলেছেন, সমাবানের তেমন একটা ইজিত প্রধান করতে পারেননি। প্রকৃতপক্ষে, ওই বর্ধনের অভিযোগ স্থিতি। নয়। তিনি মনে করতেন সাহার ও ইনানই কেবল ('বিশ্বার' শ্বনেই। একেছের নবার্দ্ধ মনে হ্বনি।) মানুষের মৃত্তির সম্ভাবনা নিশ্বিত করতে পারে। এলিরট মহৎ জীবন-শিল্পীর দৃষ্টি নিরে আমানের বাবে ও চেত্তশা প্রিকে সে-সব্বের দিকে ধাবিত করতে চেরেছেন।

তিনি বনে করেন, কোনো শিকপকর্মই শিকপকে কিছুটা মুদ্দদল না করে পাবে না। আম তা তবু বর্তমান ও ভবিবাতকেই কিছুটা বদবদন কর্বে না বরং অতীতক্ষেও তাই করে। ঐতিহা সম্পর্কে তাঁব এ বাববা নিসেম্পেরে বুপান্তকারী। ঐতিহা মানে পুরনো পদ্ধতিকে প্রহণ করা ময়। ঐতিহা হচ্ছে ইভিহাসের মতো বা হচ্ছে humanity's memory of its our past এবং এ কার্বেই এগিবট ব্যান্ত্ল, Conscious present is an awareness of the past. जिनि जिल्लम उद्गुरस्य धकामण्यम् तम्यम । अनियम मन्यर्क यमा एरसस्यः

he brought into poetry something which in this generation was needed: a language spare, sinewy, modern; a fresh and springy metrical form; thought, was adult and imagination aware of what is bewildering and terrifying in modern life and in all life.

উপরোক্ত মন্তব্য সঠিক ও যথার্থ। তিনি তাঁর সমকানী। কবিদের যে কারো চেরে নিজম যুগ-সচেতদভাবোৰ জাগিরে ভোলার ব্যাপারে অধিকতম অবদান রেখেছেন। আধুদিক কালের কোনো স্বালোচকট সাহিত্য পিপাস্থদের মনেব উপরে এলিয়াট-এর মতো প্রভাব বিভার করতে পাঞ্চেনি। এবং আবার বলা যায়, এলিয়টের মতো কোনো কবিট জীবিত অবদায় এতো অবিক পরিমাণে বিশ্বত পরিসরে আলোচিত হবার সৌতাগ্য অর্জন করতে সক্ষম হননি।

विश्व जाशिए। वक्कण वेजनास

অধ্যক্ষ দেওয়ান মোহাশ্মদ আকরক

नाहिष्ठात প্रकृष्ठ चन्नभ कि এवर विभू-नाहिष्ठा बनाउ कि बाबा बार এ-नव श्रामुन नवाबारमम छेनमें **डिभारताक विषय नवरक ठूड़ांक मक्या कहा महर्यक्ष । माहिजा, निध 'उ प्रमा नवरक मांगायिव नरका** ध बड़बाम श्रेडिनिङ थीकांत्र कान गर्वथांनी मण्डङ निकार्ष्ड এरम भौजा मध्यभंत यह। जीनरमंत्र मरक अञ्दर्धाञ्छारन निक्छिण व जिनारि निवरयत्र मरना क्षेत्रराक्ष निवरय रम माननजीनरमन्द्र अको अभिवार्य अखिवाकि, ता मदाद उदर्व र अवकान तारे। **औ**नतार बालकजान मदम माहिएकान भित्रिवित्र उप विष्कृति एवं अकि अकि खिला खिला कि विषय। 'यभवित्य भित्रेरवार्भव खे<mark>लारवा भवा</mark> ष्टिगार्च वा जांच প্रक्रिया शिमार्य मोशिरजांच भरण পৰিবেশেৰ मध्य जर्गाजील। जर्म व भवश नाहिएलात्र वाशिक थकाने এवः जात्र वाशिक कार्य नवदीय चन्नदारम्य कन । नाहिएलात्र चन्। वानिएवर व्यक्त-मन्त्राय। जा (परकरे विविध्युव नामाविव कांत्रर्भव गर्फ विकिन्ड रहत जा श्रेकांने भीत मांगोविक र्षिनीत्र नांबरना । असना माहिएछात्र योग छेपरमत्र महान कवर्छ घरम नांभव-सीवरभव विर्मुष्पेख घरम भएक व्यक्तिवार्य। की बरबरक् रम की नरम-- या' स्थरक बुरम बुरम क्षण वामुख वामानिय महिएक अ यवनीरक मबुक करबरहान ? अवीरनाउ रम चामि महाब धरणु महरहान (मदा पामि। रपीम-चामांडका, बुष-मृश, मक्तिनारस्य वामना প্রভৃতি একক প্রবৃত্তির আলোকে দে জীবনকে ব্যাব্যা করা অতি আধুনিক-कारम अकति कामिन। कर्षना भागत-कीनरन्त्र ना मानन-मानरमत्र करून उमान श्रीरमने मा करमेश्र मना बाब ७७८मा छाट्य बरतार मिःगरणरह। एरम अरमब ब्यामीरी मानवबीयरम अक्नाज व्यक्ति श्रमुखि मद। अरुपत्र नानारन नानव-श्रीननरक नार्षा। कतात्र रहहार छ जनिनार्वछारनह चनु मन मनवह व्यवीनारिनिङ रचेटक बाब। এ क्लिट्य क्षत्रि, तृष्ठि वा बुक्ति गा किछू चिकिन्डव नामश्चिक, डारकर बालाम मानाम विनादि एक बर्टिं कीबरनव दोन छेपानन हिमारबर्ड व्यक्तिक मकन धनुष्ठि बरल गर्ना नमा गर्म। मृत्युखारक विद्युष्य क्यारन राजा थाय, व्यावमः मण्यारे भागव-कीवरागत व्यापि ५ स्वीतिक ध्रवृष्टि। रा जाकाश्वक्षेष्ठे श्रेशव वर्षाद्व जाकशका, छ भववङी वर्षाद्व जाकशिक्षेत्रात्व (पर्वा (प्रवा वर्षा), व्याय, लाख, व्याव, यूपानी ध्रवृष्टि ध्रकृष्टि ए ध्रवृष्टिकरणा चाषत्रका छ चाषधि छिडीकरे मागाविय वृष्टि विवादि बामककीयमस्क छात्र मदकात भारम भविष्ठातमा करत। जावमःतक्ष कीयरमत गृहमार्छ लाक्ष्यक विलाहर अवर छात्र भविभिष्टिए रूबन्या, निक सारक्षत्र वागना, षण्य वान, बानुनी मुखान नागमा, समृष्टि सीष्टि सञ्जि छेननृति बिनारन रानी राम बाबराणिकीय नरम मुक बरवरक्र-रनीम-चाकारका, युवहाबी श्रवृत्ति, भवार्षभवजा, यभेडा ७ वङ-स्वर, श्रकृतिव वरमा (छामत्र वामना, भवरमाक मबर्द बार्क्य श्रेकुछ छेलबुक्तिकरमा। अरमय निर्देशयन यानमिक मिक ब्लेट्स मध्य बरमक बीनरम

তারা অন্নালিতাবে বিষ্ণাভিত। সুদুর অতীতে বুজির প্রাধান্য শীক্ত বলেও আধুনিক বুগে লে আদি বৃত্তিধনার প্রতিপত্তি শীক্তি লাভ করছে। জীবনের দিক বেকে বিচার করতে আমাদের সর্গুলোর অভিনয় শীকার করতে হয়।

এ সৰ বৃত্তির সন্তোৰবিধানের প্ররাস অথবা বার্ধতার চিত্র সাছিত্যে অনিবার্ধতাৰে দেখা দের। সাছিত্যের উৎকর্ম বা অপকর্ম নির্ভর করে সে চিত্র অংকনের সাকলোর উপর। তবে তার চেরেও আরও প্রবিধান-বোগা বিষয় হচ্ছে মানবলীবনের প্রকাশের চেইাতে সাছিত্যের সর্বালীনতা, বে সাছিত্যে বাবৰ-বীবনের বিভিন্ন দিক যত বেশী প্রতিক্ষিত হবে, সে সাছিত্যেই হবে অধিকতর সকল। একদেশদর্শী সাহিত্যে বাবৰ-বীবন দেখা দেবে—ঠুটোঅগ্রাধের হত।

ৰিণু সাহিত্যের আলোচনার এ তত্ত্ব আনাদের কাছে অভিশন সভা বলে প্রবাণিত হয়। কালের ধ্বংগ গ্রোভ পার হয়ে বিপু-সাহিত্যে আজও বীরা সন্মান ও অটুট হয়ে টিকে স্বরেছেন, ভাঁলের স্বাচীয় ब्रांग ब्रांबर्फ कीनरान गर्था पिकरक शिक्तिकान क्यांत्र श्रेयोग। स्थानात्र, बार्क्सिकी, लाक्सनीवन क भारतेत्र माशिष्ठा मार्यनात्र मार्यक्षात्र मृत्य त्रत्यस् जीयनत्क मर्याक्षात्य श्रद्य क्यात्र श्रद्यक्ष । जीवस्मत **अत्रिर्दामंत्र** अत्रिवर्छन निजारे बाहेरछ এবং जीवमरक *वाबा घरवरे खात्र गर*ज बीअ बेरिया हमरड बर्ट्स । जरन जीवरनंत्र योनिक উপापारनंत्र क्लाम विराप अदिवर्जम बदनि बरन, এ नव गुहोरपत ऋष्ठि खरनद बुना शताबनि। असना अरमत यहे চतिया পरिरम्पन पर्यमा पाना मरपूर, चानता चानारमा चीनरमत अन अन्ति नृष्टित ना धनुष्टित शिष्टिनिधित गांकार नारे अवना निन् गारिखारक एक नरहेंचे, नक्न नाहिजारकर स्राप्त वना यात । विश्व नाहिरजाद भर्दार छन्त्रीज्ञ व काम नाहिरजाद चारनाहनात <u>व विषयिष्ठि विर्णयेखारव जात्रारमय पृष्ठि जाकर्षव करत्र। र्लाञ्चलीयरत्रत्र माहेक्करणा रकत्र जातारमय कारह</u> चानत्मत्र निषयः। এ প্রশ্রের উত্তর শেক্ষণীয়ের স্বষ্ট চরিত্রগুলোর সধ্যেই পাওরা বাচ্ছে। चरानुष्टि डेकांकांडका छाड़िए गाकरवर, कनावित्र कर्जुक श्रेखाविष्ठ बाका नीवाव, कर्त्रद क्षीवन महरह खावना विष्ठांत त्रांबन्यात हो।वर्गि, धनवविष्त अवनारिका, विश्व धक्छित छेनत वाविनछा विछारत धवानी धगरणात्रा मानव-कीवानवरे अक अक्ठा धनुष्टित्र धार्जिविव। त्य वृष्टि छ धनुष्टिकरणा मानुरक्त क्रण वर्ष व बीवरनम मण-नरक रावा मिराइ। रा मजनरकम अमिरवरनम अमिवर्डम शरमाइ वनः छविवारक बर्द। ७८५ रा १४ गामिक निर्देश छोत्रा धीर्जिनिश्च क्याङ् मिश्काला अत्रिक्जन वय नि। अ वक्षार्या পোষকভার স্থাসিত সমালোচক মোহিতলাল কর্মদার চনৎকার মন্তব্য করেছেন:

শীবন বেনন বাহিরের দিকে নিতা পরিবর্তনশীন, সাহিত্যেও আননা তেননই প্রকাশন্তবিদ্ধ নবদ নক্ষা করি। তৎসত্ত্বেও সাহিত্য যে সর্ববুসে এক, তাহার প্রমাণ হোমার বাদনীবিদ্ধ কারা এখনও বে কারণে অনম হইয়া আছে চিরলিনই তেননই থাকিবে। সাহিত্যের তথা শীবনের নিতাবন্ধ কি তাহার একটু আলোচনা এই প্রদক্ষে করিতে পারিনে জান হটত। প্রমানের গভীবে প্রবেশ করলে তিনি বেখতে পেজেন পে আর কিছু মর বানবলীবনের বিভিন্ন বৃত্তি ও প্রবৃত্তির চিরত্তনতা। হোমার বা বানবীবিদ্ধ মচনার আননা এ তত্ত্বেরই উপায়রণ পাই। আনাবেদ্ধ করি পরিক্তিভাবান্যবেদ্ধ মধ্যে বাজা লারণ আন্তর্পতিন্তার অন্য পুত্র কারনা করে ভাতে সকল হরেছেল, বৈ পুত্র চত্ত্বিক্ষে মধ্যে সর্বজ্যেই বাসচক্রকে বৌধ-নাব্যে অভিবিক্ত করা কাবে তাঁর বংশকে স্ব্রাভিত্তি

[ं] ने मास्क्रि विहास : (वाश्कियान मयूनवास : पृ: >>०

জিনি রাজকীর চাল পরিবর্তন করেননি। শীতাকে উদার করার উপারস্করণ তিনি খালী ও স্থানীবের পৃত্তুত্ব হস্তক্ষেপ করেছেন। এক্ষেত্রে নাজিবাডাানি প্রচারিত সক্ষোর আলোকেই উপারের বাধার্বের বিভার হওরা উচিৎ (The end justifies the means) নামক নীতিকে প্রহণ ক'রে তার বানবিক স্থানের প্রকাশ করেছেন। তেরণি অপাপবিদ্ধা জেনেও প্রজারস্কানের জনা শীতাকে বিশর্জন দিরেছেন। এক্ষে অভি আবৃনিক প্রজাতরের নীতির প্রতি তার প্রেষ্ঠ প্রদার নিদর্শন ব্যর্গেছ। এক্ষাের বাহারিজের মধাের করে। নিদর্শন হরেছে। এক্ষাের বাহারিজের মধাের করে। নিদর্শন হরেছে। এক্ষাের করেছা করিছের পাঞ্জাের না বিলে হরত রাম অবতাররালে এখনও টিকে থাকতেন, তবে মানুষ বলে তার কোন পরিচর পাঞ্জা বেছেন না। বৃদ্ধান্যৰ বস্তু সতিটি বলেছেন:

পৃথিবীর আদি বহাকাবাগুলির বৈশিষ্টা আমি যা' বুঝেছি, তার নাম দিতে পারি বাগুবজা, শে বাগুবজা এবন সম্পূর্ণ, নিরাসক ও নির্মন বে তার তুননার আধুনিক পাশ্চাতা রিরানিজন-এর চর্মন নমুনাও মনে হর দরার্ত্র। বাকে বলা বার সম্পূর্ণ সতা, মহাকাব্য তারই নিবিকার দর্শণ, মহাকাবো টাকেডির বস্ততা নেই, করেডির উচ্ছলতা নেই; তাতে পদা কর্বনো কাঁপে না, পলা কর্বনো চল্টে না; বজা কটনা আর ছোটো কটনার ভেদ নেই —সম্বাই সমান, আপাপোড়িই সম্বাস্থ এবং সম্বাহ্টী ইবং ক্লাভিকর।

क्रांकिक एक बर्टि कार्य या वालाङम, राम्य यात्क श्विद्दार कराय जात्म श्विद्दार स्वाप श्विद्दार स्वाप व्याप व

3

विकास देनियां का भाग वार्षात्र विद्यारी कवि। भाग नवाद्यित नामन वार्षात्र वृद्ध जिनिते नर्थापेन विद्यारक एवं वामनानी करवरकून वर्ष जीरक बना एवं विद्यादी कवि। अ छेशावि नवक्षन देनेशार्यक जीविव बाक्षक वा निका वाक्षक रवांचा किन। अक्षा करना मिला रव

'श्रमित संबद्धित । नामां कि नामां कि नामां कि नामां है है। जिल्ला कि नामां कि नामां

धरन ना ।... वर्षन नृत न्निष्ठ नेनात नना पर्यकात रा निर्धाय जीत कविजात वर्षात नृष्ट नन्नन नरिः, विश्व वर्षमाज नन्दन नव जीत कविजात, चात वर्षात क्षतान क्षतान जाननाम।

नीरबळनाथ ठळवठींत्र धवस्य भूवरे भङ्ग। छत्व छात्र विद्याद्य भारत श्राट्य भित्र विराह्य छात्र मुर्जि वर्षना (मध्या एव ना । व्याव व नानाष्ट्रिक छात्र कार्या अछ अविष्कृते (व छारवर अठिक वर्षका ना पिरम नक्षत्रम देगमारमः পরিচর जगर्णूर्व स्थरक योत्। 'नक्षत्रम-प्रमृष्ठि' मानक **পুঞ্জ स्थर** हेषुष्ठ नानाविष श्रवस (परक जान बान्ह नानान श्रवान श्रवाह । जाएंड रक्छ नकक्रम रेगमावरक विद्यारी, रक्छे ध्विषक, एक्ट मागवडावाणी, रक्ट श्विणी गःधावनीम, रक्ट बबबी, रक्ट गावक रेखाामि माना विल्विष्य बिट्गिषिष्ठ करत्ररक्षम । এতে नवक्ररमञ्ज कीनरम रव क्याक्षित्र (४४। किर्योक्, डांव क्यिक न्नेहे । कांत्रव खींब कावा कीवरनत्र विजिन्न भर्वारम जिनि भन्न भन्न-विरमाबी जावबाबाध श्रकाभ करमाकृत। मकन्न-कीवरनन क्षत्रवाक भर्यास्थव भूर्ववर्डी भर्यास्य कि निरम जीएक स्थान मध्य (भएक विद्युभाषक कर्तृष्टि कवारक क्रिके ध्वामि। তৰে নজকল 'আমার কৈফিয়তে তার জওরাব দিয়ে তা' খণ্ডন করার চেষ্টা করলেও, ওরা তার পিছনে कारना जनरबाद या जारबारशत नीजिश्वरमात्र याजिक्य (मर्थ बिग्यरम क्रिक्ट्रेक् जिल्ड्रेड दरबिहरूनम, छात्र ८५८म खानक (ननी सूची श्रमिष्ट्रालन नायकल श्रमनारमम मर्गा व्यानक्षमा व्यानिष्कांत्र क्रांच मार्थकछात्र। छात्रा जुरन शिरम्भित्तन - এ विर्धान जनाउन र्धु कवि ध्वान्ते बरेतेनामरक वर्षन छात्र कारवात जन्मिछ यम क्षप्रभाग कत्र। इस उसेन जिनि प्यानात्मव प्याजिनीया नत्म एउनि : पीननोष्टि एक अक्ता प्रमा वर्षार माध्य जागरन जिनि बनएज फिरमिइनिन-जीबरनय माधा यथम प्रम्य सामाख जर्बन कार्या ভাষ প্রভিফ্রন হবে মনিবার্যভাবে, এতে বিস্মিত বা বিশ্বন হওয়ার কোন কারণ নেই। এভাবে যাঁরা এकि विषय गृशेष्ठ मुज्ञाक व्यवत विगयत मुज्ञ शिमारन श्रंष्ट्र कत्रएड छान, छीएमत अवस्विव बाखिएक जि ज्ञांषुनिक पर्यत्व बना वय -- category mistake. जर्षाए दिशीरन वा' वश्याद (कान म्रजानना निर्दे শেখানে তা প্রত্যাপা ক'রে দে সমঙ্ক কোন মন্তবা করা দে প্রাক্তির মুলে রয়েছে। স্থানভাগ্য নীতি बिगार्य नाम्नारज्ञ वा पर्नरन भुकान्छि, कावायगर्छ छात्र कान वान भिक्रे। कार्यके कावायगर्य ভার প্রাপ্তির আশা সেরপ একটি ত্রান্তি বা ঠাঁত আর কিছুই নয়।

कावा मानव-मानरमत्र श्रकान वर्तारे छात मरवा मानविष्य नानाविष्य वृद्धि अ श्रवृद्धित भावी, भरक्षाम यावार्षका छारक श्रकान भारतरे भारत। रणानारभत्र मधूत्र शर्क विरक्षान द्वार एवं कवि व विश्व मद्यक वानात वानी श्रकान करता, रम कवित्र मानरम यदा रणानारभत्र वाथात अनुगत वना। वरत हरन। कारकरे कविश्व मानद-मानरमूत्र श्रक्षितिष्य यरन, छारमत्र मानरम रमवनमाञ्च वकरे छारबत्र छम् । इरत व्यवः छात्ररे वनुरश्चित्रभात छित् क हरत छात्रा भारत विद्यान मानरम रमनाव्य वकरे छारबत्र छम् । इरत व्यवः छात्ररे वनुरश्चित्रभात छित् क हरत छात्रा नाम नाम वर्षात विद्यान अनुगरत भवित्रानिक हरतन, वमन रमानवेष रक्षान कविरे भूवारक निर्द्य समानि।

নজন্মন ইসনাম সহছে তাই প্রাসন্ধিক প্রণু তিনি কোন তাবের বা জান্তর্পের কবি নন, তাঁল সহছে জাসল প্রণু তিনি বাজনিকই মানব-মানসের সত্যিকার প্রতিনিধি কিনা এবং সে মানসের বিভিন্ন বিকেশ সত্যিকার প্রতিনিধি কিনা এবং সে মানসের বিভিন্ন বিকেশ সত্যিকার প্রতিনিধির তিনি করেছেন কিনা। তাঁর সহছে বিতীর প্রণু হচ্ছে বিশুক্রি বা বিশু সাহিত্যিক হিসাবে বাঁরা সাহিত্য জগতের শুদ্ধা পেরে এসেছেন তাঁর অবলান সে-বর কবি বা সাহিত্যিকের অবলানের সম পর্বারের কিনা ? এশুনে আরও একটি বিষয় সহছে জানোচনার প্রব্যোজন---এ বিশ্বের মহাকাবা বা সত্যিকার উপন্যাসে মান্র-চন্ধিত্র চিত্রনের যে স্থবিবা দেবা বের, বঙ্

बार्याच बरवा रम ऋविया मिरे। छेमाञ्चल चरम बमा यात्र श्वाबारबन्न 'श्वित्रछ वा ५७िमि' रख बानव-छत्तिज क्रिज्ञालंब व्य लंबाकांका व्यथा योव, व्यथ्या केलहेरबच छवात এछ भीरमद यर्था छात्र व मार्थकछ। व्यथा योव, वंश्व कारवा वा रहाते गरब रखन कान निवर्षन भीख्या यात्र ना। এकना वदा उभनागरक এक भवीरवन এবং निविक कविका ७ छोरे नेबाक जना भैवारिक कहि वना बात। (कान नकन छोरे शब-निविद्यन অনেকপ্রলো গাঁৱের সমষ্টি একতা করে বেষন তাঁর সম্বন্ধে কোন মন্তব্য করা সম্ভবপর হয়, ডেম্বনি সার্থিক वंश कविष्ठात्र कविनार्यत्र विखिन्न वर्षी कविष्ठात्र यस्या धम्-श्रीतमं करत्न, ठीत्र कीवन-मृष्टित वार्णकष्ठात्र महान ्षर्छ इब । योभोगीय बिভिन्न अरम्भ चायका छीत्र स्रहिक्टर्यंब मृतस्त्रत चारिकांत्र क्रवर्ण भावि । राहि हं एक् এ विस्थुन नानानिन नी जिएड प्रतावडा । प्रवीप डीन्न नामक ७ नामिकामा मुहेरस मुहेरस বিলে চাক্রই ছব। কোন অপুপা এফ কারণের ফলে কোথাও বা জিন আথার কোথাও বা পাঁচ ছয়ে वाम ना। चंत्र कांचा बठियंजागर्वक नरका बबीजनाथ এकि पाँठ ठेक पांगरनव प्रकिकांदी। डीव বিভিনু ৰচনাৰ সমুদ্ৰ মহন কৰলে যে খনুত ভেগে ওঠে তা হংচ্ছে মানবজীবনের বিভিনু দিকের উপর অতি প্রবন্ধ আলোকপাত। সুবে-দুংবে, উবানে-পতনে যে মানবজীবন কিভাবে অবভিত বিবভিত इ'राष्ट्र এবং শেষ পর্যস্ত যে তার জয় অনিবার্য, রবীক্রনাথ তার অনিশান্তদর স্টার নাধামে সে আশাম बाजी बांबारम्ब छनिरवर्छन। या डेक्कियधाशा खानरक ভावछीत पर्नरन धरिडाम बरन উপহাস क्या इरब्राष्ट्र बनीन्छनाच डांब बरनानु थे कर॰ठ छारक ऋषडिहिंड क्याब ध्यान करनरङ्ग । 'ड्राब गव, नवकरण अरमा **धार**न, अरमा नेरह कारने अरमा गारन' शञ्जि छिकिएल छीब रम पृष्ट धेराम श्रकानिक सरबर्छ। यानवजीतरनव धवन कान जिन राष्ट्र, या जात्र मुक्ता पृष्टित जिल विद्युं छ। धळनाडे खाळरकत मुनिया छोरक क्रांत्रिक शिमार्य गंभा करवाण ।

নজকল ইসলাবেদ স্প্ৰীতে সেক্ষপ সৰ্বাজীন দৃষ্টিভঞ্জি দুৰ্ভনান। তাঁৰ বিভিন্ন বচনায় মানম-জীমনের নানাদিক সম্বন্ধ এমন চমংকাদ আলোকপাত হয়েতে, যাদ জনা তাঁকে বিশ্ব-সাহিত্যে স্থান পাওয়ার যোগ্য অধিকারী বলা যার।

পূর্বেই বলা হয়েছে — কাব্য বা গলেশর নায়ক নায়িকার রয়েছে একটা প্রতিনিধিম মূলক representative চরিত্র। মানব-জীবনের এক একটা পিক তাতে প্রতিভাত হয়। সে প্রসঞ্জে আরও বলা হয়েছে মানব-মানবের মৌলিক প্রবৃত্তি আল্লাসংয়ক্ষণ। সে প্রবৃত্তিই প্রথম প্যায়ে আল্লাক্ষণা এবং পরবাতী পর্যায়ের আল্লাক্ষতিটা দ্ধপে কেবা কেব। এ সব প্রবৃত্তির আবার উপ-প্রবৃত্তিও রয়েছে। আল্লাক্ষার উপ-প্রবৃত্তি হতেও মূলুক্ষা, পরিক্রাছের আকাহক।। অহমিকা, প্রকৃতি প্রীতি, সামুগ্রী হওয়ার বাসনা। আল্লেপ্রতিটার উপ-প্রবৃত্তি বৌলনাসনা, বূধ–চারী প্রবৃত্তি, পরার্থপরাত্র, অপতা ও রজ কেব, রহসা ভেলে বাসনা, পরবোক সমতে আগ্রহ প্রতৃতি।

শাবার চেতনার থগতে বৃদ্ধি, প্রক্ষোত ও ইচ্ছা শক্তি নানাভাবে আমাদের জীবনে দেখা দেয়। বৃদ্ধি সহজাত প্রবৃত্তিগুলোকে পরিচাননা করে এবং তার মধ্যে নিচার গোন, ঐতিহ্য চেতনা, আদর্শ-বোধ প্রভৃতির অভ্যুদর হয়। প্রক্ষোতের প্রকাশ হয় তয় প্রেম ক্রোধ প্রভৃতি কপে এবং ইচ্ছাশক্তির মধ্যেই আমাদের কামনাবাসনা প্রভৃতির উৎপত্তি হয়। এ তিনটে বিভাগ পরস্পরের সজে এবন অঞ্চালি সমুদ্ধে ভঙ্কিত যে একটিকে অপরটি থেকে তত্ত্বের দিক থেকে বিচ্ছিন্য কর্মেও বাশ্বর জীবনে তাদের পার্থকার্য আবিকার করা পুনার। বৃদ্ধি থেকেই প্রক্ষোতের উৎপত্তি, না প্রক্ষোত্তই বৃদ্ধির সাহায়ে আহ্যপ্রকাশ করে বলা খুবই কঠিন। বৃদ্ধিকে ইচ্ছাশক্তির জনকও বলা বাহ এবং তার পুত্রও বটে। নানাবিধ বৃদ্ধি ও

है भवृद्धि এवः क्रिजनात कर्गछ नानाविष जात (पर्वा (पर्वा) (प्रवा) क्षेत्रध महाक्ष्म मार्क्य क्ष्म मानाविष्ठ, क्ष्मेन्छ वा वार्ष्ठात यूगामाम, क्ष्मेन्छ वा जात प्रदा (पर्वा) (पर्व मानाविष नवमा। जाताव जाजाविष नवमा। जाताव जाजाविष नवमा। जाताव जानाविष नवमा। जाताव वार्ष्ठा व्या (क्ष्में वार्ष्ठा क्ष्में वार्ष्ठा वार्रा वार्ष्ठा वार्या वार्ठा वार्ष्ठा वार्ष्ठा वार्ष्ठा वार्ष्ठा वार्या वार्या वार्ष्ठा वार

ৰহাকাৰোর রচয়িতাগণ অথবা সহা উপন্যাদের বা নহানাটকের শুটাগণের কর্তব্য হ'চ্ছে বানবজীবন অথবা নানব-মানস সে সব প্রশু বা সমস্যা হার। কি ভাবে আন্দোলিত হ'চ্ছে, তা নানব সমাজে তুলে বরা। বহাকাব্যের রচয়িতা না হলেও খণ্ড কবিতা বা দীর্ঘ কবিতার বাধ্যমে রবীক্ষ্রনাথ হাক্ষিক প্রসুথের মত নজরুল ইসলাম যে কর্তব্য সম্পাদন করেছেন তাতে তাঁকে বিশ্ব-সাহিত্যের অপর এক শুটা বলে প্রজাপি করা যায়।

S

ষহাকবিগণের কাব্যে জীবনের সব দিকের আলোকপাত হয় বলে তার আলোচনা নানাবিক বেকে হ'তে পারে। যে-কোন দৃষ্টিকোণ থেকে, বা বে-কোন বৃত্তির আলোকে তাঁদের কাব্যের জরবিন্যাস হ'তে পারে। আবার কবি-মানসের জর্ম গৃচু সন্তার প্রতি কোন গুরুষ আলোক না করে, তবু তবু কালের ধারার অনুসরণ করেও তাঁর কবি-কর্মের বিভিন্ন স্ক্রীর আলোচনা হ'তে পারে। তবে এতে বাইরের কারণের প্রভাবই মাত্রে বেকর্ড হবে। কবির মর্মমুলে যে-সব ভাব ছিল ক্রিয়ালীন তার সন্তান তো নয়ই, এমনকি তাদের বুরবার সংক্রেত্র পাওরা যাবে না।

নজকলের কৰি জীবনের সর্বপ্রথম ন্তর্রবিনাস করেছেন কালী আব্দুর ওদুর। তিনি তাঁর কবি জীবনকে চার ভাগে বিভক্ত করেছেন। প্রথম ন্তরে তিনি তাঁর সাহিত্যিক জীবনের সূচনা থেকে বিজ্ঞোহী প্রজালের পূর্ব পর্বন্ত বলে চিহ্নিত করেছেন। ছিতীর ন্তরকে বিজ্ঞোহী প্রকালের পর থেকে রাজ্ঞানিতিক জীবনের অবসান পর্বন্ত বলে নির্দেশিত করেছেন। তৃতীয় ন্তরকে তিনি তাঁর সঙ্গীত রচনার বিশেষ করে গজন গানের রচনার যুগ বলে অভিহিত করেছেন। চতুর্ব ন্তরকে তিনি বলেছেন তাঁর বোগী জীবনের পর্বায়। একটু অনুধাবন করলেই দেখা যাবে এ বিন্যাসের বলাে একটি জটি বরে গেছে। কারণ কোন ন্তরেই তিনি একটি বিশেষভাবে বিভারে হ'রে সে-ভাবের রাণী প্রকাশ করের মধ্যে হরত কোন কোন ভাব প্রধানা পেরেছে বলে এ বিন্যাস নিছক ফান্সনিক কোন নির্দ্ধ নয়। এজনাই এতে নজরুলের কবি-নানসের বোটাখুটি পরিচর পাওরা বার। তবে এতে ক্রি-বানসের যুল উৎসের সন্ধান পাওয়া যার না। এজনাই কানের বারাতে তাঁর স্কট্ট বে-ভাবেই প্রকাশিত ছউক না কেন, ভার আদি উৎসের আনোকে তাঁর স্কট কাবের পুনবিন্যাসের প্রয়োজন।

১৯২০ সালে নজকুল ইসলাবের উথান কাল খেকে তার শুভ হওয়ার সময় পর্যন্ত, জিনি বে বচনাসম্ভাবে বাংলা ভাষাকে সমৃদ্ধ করেছিলেন, তার আলোচনাপ্রথকে শান্ত প্রতিভাত হয়, জিনি আনাদের বিন্যাসমত মানব–মানসের বিভিন্ন ধারা অনুসর্থ করে রচনার প্রবৃত্ত হননি। একেত্রে তাঁর সৃষ্টিতে হয়ত কোন অভিশয় তুক্ত ভাবের প্রকাশ অভিশয় গুক্তর ভাবের প্রকাশের পূর্বে বেশা দিবেছে। তবে এ কৰা অভ্যন্ত সভ্য বে, তিনি অপর সকল ক্লাসিক সুটার মন্ত জীবনের নানাদিকের চপর আলোকপাত করেছের এবং তাতে বে সব সমস্যা দেবা দিরেছে, তাদের সমাধানের ইজিতও করেছেন। এজনাই বিশু সাহিত্যে তাঁর রচনার স্থান লাভের ধোগাতা বরেছে পূর্বেই বলা হরেছে। আরুসংরক্ষণের উপবৃত্তি হিসাবে বুজুপ্ছা, শক্তিলাভের আকাঝা, অহম-বোধ, প্রকৃতিপ্রীতি, সাপুনী হওবার বাসনা অভ্যন্ত প্রবল । নজকল ইসলামের বিখ্যাত কবিতা 'বিছোটী'র মধ্যে ক্ষেব্ৰ এগুলোর অভিন বা স্থিলাভ প্রকাশ পার্যনি আরও নানাবিধ বৃত্তির সন্তোম লাভের উপাদাদ ব্যরহে :

चानि पूर्वात्र, चानि एउट कति नव हृत्रमात्र ! चानि चनित्रन উচ্ছ् चन, चानि प'तन गोरे येट नक्षन, येट निश्चन-कानुन पृथम !

[निद्यारी]

বানৰ-বানদের যুদ্ধ-শৃহার এ এক উচ্চুল দৃষ্টান্ত। শক্তিলাডের জন্য তার প্রয়াস ও সক্ষতার উনাহরণ রবেছে তার নিম্রোক্ত উচ্চিতে:

> অগদীপুর উপুর-আমি পুরুষোত্তম সতা, আমি তাপিয়া তাপিয়া মধিয়া কিবি এ স্বর্গ পাতাল মর্তা।

> > [विद्वारी]

'निक्रारी'त जरनक श्रमा भःक्रिएक जरमिका बार्यत श्रमान विद्यारक जारमात मक सरमानरमा :

जानि शानन-शानन-नमा कडू बन्नपीरत कवि बन्नपीरा, कडू निर्मुन स्वःम-बमा।---चात्रि छिनिरा धानिव निकृ-नक छ्टेट युगन कमा।।

[बिल्हाही]

धक् छि-धीछित्र ठ०कात्र भिन्दिन बर्यस्य निर्माक छेत्र् छिर्छ :

जास कानगरन तम शांत करन यात्र मन्ना भनीत कृत्न ७ जात्र इनरम जीवन वनरङ ज्ङ्राय अङ्ग्रहस्त्र कृत्न।

ঐ ধাৰলা কুলে নাক-ছাৰি ভাৰ, পার পাড়ী নীল অপ্রাজিভার চলেছি সেই অজানিভার উলাস পরশ পেডে। भागन-मांगरम मानुयी एउत्राप्त रा यापिम श्रवृद्धि बरयाष्ट्र जात्र ठम९कात्र श्रकान, नव्यक्ररमम राजनाद । जिनि जगनानरक केरकन करत वनरङ्ग :

তোনার দত্ত হজেরে বাঁথে কার নিপীড়ন-চেড়ী!

আনার স্বাধীন বিচরণ রোধে কার আইনের বেড়ী!

সুধা ভূমা আছে,আছে বোর প্রাণ,

আনিও মানুম, আনিও মহান।

আনার অধীনে এ মোর রসনা, এই থাড়া পর্যান!

মনের শিকল 'ডিড়েছি পড়েছে ছাতের শিকলে টান—

এতদিনে ভগৰান!

[कत्रियाम]

আদ্বশংককণের উপবৃত্তি হচ্ছে আদ-প্রতিষ্ঠা। সে আদ-প্রতিষ্ঠার মধ্যে কোন-বাসনা একটি অতান্ত জোরালে। বৃত্তি। যৌন-বাসনার পরিণতি সম্বানলাত। সে সন্তানের মাধ্যমেই মানুদ অমন্ত্র লাভ করতে চায়। এ যৌনবাসনার প্রকাশ কবির ভাষায় অনুপ্র রূপ পরিগ্রহ করেছে:

त्रिश्चित्र शिनाख्य श्रीत्र श्रीत्

[कान्छनी]

वाषशिष्ठिक्षेत्र উপ-প্ৰবৃত্তিৰ মধ্যে যুগচাৰী প্ৰবৃত্তি অভান্ত প্ৰকৃষ্টিমান। এ প্ৰবৃত্তিই মানুৰকৈ অন্যের সঙ্গে মিলিভ হয়ে আত্মপ্ৰতিষ্ঠা-লাভের জনা উন্বৃদ্ধ করে। এ প্ৰবৃত্তিই রয়েছে মানৰভাবাদের মূলে কার্যকৰী। নজকলের ভাষায় এ প্রবৃত্তিবই দান মানৰভাবাদের প্রকাশ অনন্য—

> > [नावाबाणी]

क्षं वर्ष | अव गर्बा

एउर्वान भवार्षभवता मबरक दीव व्यक्तिरङ बरवरङ मन्भूष व्यक्तिनव :

निष्क यादण्य नाया (पश्-मन मानिस मम्हाबदन এই यत्रनीय छत्रनीय द्यां न त्रद्य छाद्यादण्य यद्याः। छात्रि नाम्त्रच जक्षानि कविं मानाम नदेश छुनि, नकदनय नाद्य नद्य छनि श्रीय नाद्य जाणितादछ् युनि।

[क्लि-अक्षत्र]

খপতা বা ব্ৰক্ত সুেহের স্পষ্ট নিদর্শন ব্যেছে তাঁব কাবা-চেতনায়। বক্ত-সেহ খেকেই খনেশ থেকেছ স্বিটি। খনেশ প্রেষ্ঠ থেকেই খাদেশিকতা এবং খপর জাতি কর্তৃক শাসন ও শোষণ থেকে বুঞ্জি লাভের উদয় বাসনা দেখা দেয়। নজকল-কাধ্যে এই চেতনা খতান্ত স্পষ্ট :

> काश्री। एव गमुत्व ये भनाभीत शास्त्र, वाक्षानीत मूत्न नान घ'न रावा क्रारियत बक्षत्र।

বাঙালীদের ভাতীরভাবাদের সূচনায় তিনি কী বলিষ্ঠ কণ্ঠে বাঙালীর খুনের উলেখ করেছেন। প্রকৃতির বা বালব-বাদসের রহসাড়েশের বাসনা মানুদেন আমু-প্রতিষ্ঠা বা অমরম লাভেয় জন্য উৎস্ক এক সহজাত প্রবৃত্তি। নজকলের অসংখ্য ক্রিডায় তার প্রকাশ রয়েছে:

> হয়তো ভোষার পানো দেশা, যেখানে ঐ নত ভাকাশ চুষয়ে ধনের সমুজ রেখা।।

> > ये समृत्यव गीर्यव बार्यं, या लिय भरण विकास चारोः; व्यास्त्र अस्य कृष्टिक स्वरम वंत्रस्य यावात द्यासी अका॥

ये नीरलक ये अधन-भारत (पायते।-हाका एठाबाक छाउँया, ज्ञान्त प्रक्ष प्राण्यान-भूष्टी भिक्-भारतक ये प्रतिन छाउँया।।।

(पाप।]

পরলোক সমতে তথা সংগ্রহের আগ্রহ মানম-জীবনের অপর এক সানারণ জনাগুতপ্রবৃত্তি। নজক্ষণের জীবনে তাও ছিল ক্রিয়ালীল। তার কাবা-জীবনে এ প্রবৃত্তির রূপও একাধিকবার দেখা দিয়েছে:

> कानि ना'क काफ जूबि कान लाक बहि' उन्हि बाबाव शाम, द्र किन निवहीं। काना किन्छागात बनीब गाहाता, श्रीकात हिन-बाजि हस, मुद्दा, छाबा, भाषात्व हत्तह क्या बनीब विश्वद्ध ?

> > [(भाक्मनाभ]

গহলাত প্ৰবৃত্তিৰ তব পাৰ হবে মানুহ পৌছে বৃদ্ধি, প্ৰশোৱ ও ইচ্ছাণভিৰ তবে। বৃদ্ধিৰ তবেই দেখা দেৱ ঐতিহা চেতনা বা পূৰ্ব পৃত্তৰদেৱ ব্যক্তিগঙা বা কীতিকলাপের প্রতি প্রদা। ঐতিহা চেতনা নানাভাবে শেখা দিতে পারে। ধর্ম-সংক্রান্ত ঐতিহা-চেতনা দেখা দেৱ কোন বিপিট ধর্মের মহামানবদের প্রতি প্রদার। ধর্ম-নিরপেন্দ ঐতিহা চেতনা অদেশের বীর পৃত্তকদের প্রতি প্রদার ব্যক্ত হর, অথবা অদেশের পৌরব কোন কীতিয়ান পূক্ষম বা নারীর প্রতি ভক্তিতে তা আমপ্রকাপ করে। অদেশের কীতি সম্বন্ধে আমপ্রামা সে ঐতিহা চেতনারই এক প্রকাপ।

দক্ষণ ইসনাবের প্রথম আবির্ভার বেভাবেই হউক না কেন, 'শাত-ইন-আরব' কবিতার সর্বপ্রথমে ডিনি বাঙালী পাঠক সাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছেন। এর পর 'বেরাপারের ভরণী', 'কোরবানী', 'বোহরমন' প্রভৃতিতে তার ধরীর ঐতিহ্য-চেতনা প্রকাশ পেরেছে। প্রাসন্ধিক হিসাবে এবানে উলেব করা যার:

> 'পুলফিকার', আর 'হারদরী' হাঁক হেখা আজও হজরত আনীর— শাতিল আরব। শাতিল আরব।। জিলা রেখেছে তোরার তীর। শাত-ইল-আরব)

जानू नकत, छमतान छनत जानी हाहेनत मांडी त्य এ छत्रनीत, नारे छत्र नारे छत्र। काखाती এ छत्रीत भाका नासि माना, कांडि मूर्य मात्रि भान---ना-नित्रक जानाह्।

[(बंबाभारतम जनवी]

नक्कन रेमनायरक श्रीवरे जर्मनाम रमछत्र। इत्र छीत्र कार्या ना की बर्रन कार्मन कर्मन करन छाउँनि वरन। रम जर्मनारमत्र की वस्त श्रीजनाम रिमारन नक्कम-मामरमत्र विभूमर्गरनत पृष्ठीक रमछत्र। रवर्क भीरतः:

আবার আপনার চেরে আপন বে জন

বুঁজি তারে আবি আপনার

আবি গুনি বেন তার চরপের ধ্বনি

আবারি তিরাসী বাসনার।

व्यानावर १ छिछ कानरन विश्वा পदान भिनारत नानिका बिद्धा, সে बाना गरमा स्विन व्याभित्रा व्याभनावर भरन स्वरित स्वर

[चानन निवानी : स्वानके]

बीबाबाब मदकं नंबर्वाबाब अक्रमे वर्षेत्र मददब वर्षना विश्व माहिएला विवन ।

अ नवराष्ट्राव प्रसान नवटक जिनि पांत्र क्षेत्र करण वनरङ्ग :

व्यक्ति काना राष्ट्रम, वाश्वास (मर्छम वाशासि क वानम (मर्छ— वाशास क श्रीत्यम जिल्हा नत्य स्वृत वाशास विश्व स्वित (श्रीष्ट्र)।

[बन-नीडि]

এ দেছেরই বধ্যে যে সে প্রাণের ঠাকুর নিতা তার নীলার মন্ত রয়েছেন,—এ সহজে কবি নি:সন্দেহ:

अ (मरक्त्रे विश्व विश्वात्र)
त्वितर्षः जीनाविद्यात्री
विश्वा वात्र। भव अ कात्र।
काश्रेत रक्षि छात्र। छात्र।

[গুশ্বাগিচা]

त्म भवनाषात्र सभ करन कवित्र निकृष्ठे न्नाष्ट्रे (चंदक न्नोहेज्य इरव (चर्च) निरंबर्ष ----

यनि कृत श्रम कृष्टि जक्र भाष्य रा य भाष्य श्रम विषय प्राप्य यनि এकाकिनी छनि वनज्ञान रा य छात्र। श्रम भिष्क भिष्क छरन।

त्म मखाद भद्रव भद्रिष्ठ कवि भिरत्रह्म। छोरे निःमत्मद बमरह्म:

[चटछपय : नजून होष]

বৃদ্ধি ৰাজীত প্ৰক্ষেত্ৰ ও ইচ্ছাৰভিও আৰাদের জীবনে নানাডাবে দেব। দেব। প্ৰক্ষেত্ৰ প্ৰধান পায় আসভি, জোৰ, ভয় প্ৰতৃতিৰ বাধ্যযে। নজকন তাৰ কোন প্ৰকাশ কৰেছেন— ইংৰেজদেব ভা'পোৰা একি বের বিশ্বতে। প্ৰথম মহাসময়ের শেষে তৃত্তি সম্পূর্ণভাবে পরাজিত হলে প্রতিবেশী গ্রীকণণ স্যার্ণা প্রতৃতি বানে তুর্কিদের উপর নানাবিধ অভ্যাচার করতে আগ্রন্ত করে। এই ধারুণ অন্যার রেখে ইত্রেভিড হয়ে সম্মান ইসলাম তুর্কি বীর আনোরার পাণাকে সম্বোধন করে বলেছেন:

यात्नायात्र । यात्नायात्र ! किनअयात्र जूनि, त्यात्र जनअयात्र द्यात्र द्यात्र द्यात्र द्यात्र द्यात्र द्यात्र व्यात्र व्यात्य व्यात्र व्यात्य व्यात्र व्यात्य व्यात्य व्यात्य व्यात्य

इच्छानि क्रिय पूर्वास धकान तरमण्ड नक्ष्मन देगनात्मत्र घनन निखत गव कविछाएडर :

५८व पासि ।

- ঐ यशिकृत পাत र'एड वन तर्न-एडती लोना याग्र— ५८त. थाग्र।
- ঐ ইস্লাম ডুবে যায়। যত শ্যতান সারা মণ্ণান

জুড়ি খুল তাৰ পিয়ে হছার দিয়ে জয়-গান শোন গায়।

[রণ-ভেরী]

অতএব একথা নি:সন্দেহে বলা যায়, বানবজীবনের তথা মানবমানসের এমন কোন দিক নেই যাতে নজকল ইন্লামের দৃষ্টি পতিত হয়নি, বা ভার সংস্থাধ বিধানের জন্য নজকল ইন্লাম কোন আলোকপাত করেননি। এ কখা অবশা সতা যে বালমীকি, ব্যাস বা খোমারের মত একনৈ বিরাট যুগের মধ্যে অবসিত মানব মানবীর চিত্র অংকন প্রসক্তে ভানের জীবনে কার্য করী কোন ঐতিহ্য-চেত্রনা তিনি প্রকাশ করেননি। তবে তাঁর বিশ্বামহীন স্বন্ধ জীবনের নানা পর্যায়ে মানব-মানসের নানাবিধ বিত্তিত অংশ নিয়ে তিনি রীতিমত তেবেছেন এবং সে চিন্তনের ফলে কবেক বতে প্রকাশিত তাঁর রচনাবলীর কবিতার মাধ্যমে তা প্রকাশ করেছেন।

এগুলো কালের ধার। অনুসারে বিন্যাস করলে স্পট্ট প্রতীয়মান হবে তিনি সত্যিই একজন মহাকৰি; এবং বিশ্ব-সাহিত্যে অতি উচ্চ স্থান পাওয়ার যোগা। নিয়তির নির্দুর পরিহাসে তিনি পঁরাক্রিশ বংসরের উর্ধিকাল নির্বাক ও শুদ্ধ জীবন যাপন করে তার অতি আদরের মানির মায়ের কোলে আবার আশ্রম নিয়েছেন। তার কাবা পার্ক্তেরাঙালী মাত্রই নব-জীবনের উদ্দীপনার নেতে উঠেছে। তবে তার কাব্যকে অনুবাদের মাধ্যমে বিশ্ব-সাহিত্যের দরনারে পৌছে দেওয়ার আজ পর্যন্ত কোন চেষ্টা হরনি। এটা আমাদের পক্ষে একটা মহাকলক বাতীত থাব কিছুই নয়।

तककल-माह्छा-मबालाह्वात धाता

व्यक्ति इननाम

নজন সাহিত্যালোচনার সূত্রপাত 'মোসলের ভারড' পত্রিকার ১৩২৭ সালের ভার সংখ্যার প্রকাশিত নাছিতলাল মনুষদারের পত্রিটি থেকে। উষ্ণ পত্রিকার আঘার সংখ্যার প্রকাশিত নাছজনালর বিদেশ প্রতিক্র পরারণ এবং প্রারণ সংখ্যার 'বেরাপারের তরপী' কবিত। দুটি মোছিতলালের পৃষ্টি নাকর্যণ করে এবং ভার সংখ্যার পত্রাকারে নাহিতলালের দার্থ আলোচনাটি প্রকাশিত হয়। বোহিতলাল পত্রিকা—সম্পাদককে লিখেছেন:

আপনার পত্তিকার দুই সংখ্যা সম্প্রতি পাঠ সরিয়া আনক্ষ ও বিশ্বায়ে উৎকুল ছইয়াছি...
কিন্তু সাহা আমাকে সর্বাপেক। বিস্মিত ও আপানিত করিয়াছে, তাহা আপনার সক্রিকার
সর্বশ্রেষ্ঠ কবি লেকক হাবিকদার কাজী নজকুল ইমনার সাহেষের কবিতা। আমার এই
অবসরে তাঁহাকে বাচনার সারস্বত মন্তপে স্বাগত সন্ধান প্রান্ধিতিত ছি......

ताहिङ्गात्मत के पारमोहनात्क बामना माहा महिल्डा नककन मयारमाहनात्र मृहना बनाइ शिश्व। वे नम्य त्यारमाहनात्र वाह्यान्य पार्थीन्डा नार्टित शृष्टि स्थाप्त सकत्र के विश्व महिल्हा म्यारमाहनात्र साह्यान्य किल्हा निर्माण्या स्थारक जिन्ही भर्ष ज्ञान क्या स्थार ।

নজকল সনালোচনার প্রথম পর্ব ১৩২৭ থেকে ১৩২০ সাল (১৯২০-৬০ দ্রী:), মিউমি পর্ব ১৩৪১ থেকে ১৩৫৪ সাল (১৯৩৪-১৯৪৭ দ্রী:) দেশ নিভাগের সময় অবনি। তৃতীয় পর্ব ১৩৫৫ থেকে ১৩৭৭ সাল (১৯৪৮-৭০ দ্রী:) বাংলানেশের স্বাধীনতা লাভের পূর্ব পর্বস্ত। মালকল-চর্চার প্রথম (১৩২৭-৪০ গাল) বা সূচনা পর্বের বৈশিষ্ট্য মালকল-নাছিতভার যথার্থ সমালোচনার মন্তার, এ মুগ মাজিশরোজির যুগ, প্রশ্যা বা নিশার প্রাচুর্বে এ পর্ব ভারাক্রান্ত। এ সময়ে মালকলের জনপ্রিয়ন্তা (গাছিভিক্র ও রাজ-নৈতিক উত্তর কারণেই) এবং মালকল-নচনার মাল্যব কাট্ডি (কোন কোন বচনা বাজেরান্ত হওয়া সন্ত্রেও) কেবল মাত্র কিংবলন্তিভেই পরিণত হরনি সে-কালের বন্ধ মাণ্ডী ব্যক্তিত্বের সমৃতিকথারও উপাধান হয়েছে। আর নজজল-নিমের ৩-বিজ্ঞপতার ইতিহাস ছড়িরে আছে 'শনিবালের চিঠি, 'ইসলাম দর্শন', 'মোসনেম দর্শন' প্রভৃতি পত্র পত্রিকার। রক্ষণশীন হিন্দু, মুসলমান এবং গ্রাম্ম এই তিম সম্প্রমানের আক্রমণের লক্ষ্যে পরিণত হয়েছিনেম মালকণ। তবে ব-স্মানের পৌড়া ও ধর্মাছণের মাক্রমণের তীর্ত্তর এক্তর্ম স্থাসর হরেছিনেম মালকণ। তবে ব-স্মানের পৌড়া ও ধর্মাছণের মাক্রমণের তীর্ত্তর এক্তর্ম স্থাসর হরেছিন বে মানুল কালার পারস্থান মানিক 'সঙ্গাত্র' পত্রিকার

वीय-सर्वा) ३३५८

भवका क्रांटियी पश्चिमा) २०६

३००० गालब (भीष गःबंगाव 'कावा गाशिएडा बाकानी यूगनवान' श्वरह क्लाएडब गरम निर्वरण वावा सम्बद्धितन,

··· এই वाकान। (भन वाडीं छ क्रनेट्डब क्यांब दिवाय इय कावादक वर्न, नवाक, नछाडा बेट्यांकि वानकाठिटड याठारि कतिवाब छेडिंगे धवान इय नार्ष ····।

•••नवक्रन देगनात्मत कांना रुष्टि मदाह (य व्यटनमनामिक्डान भूग। উठिताह्न, देशांदक व्यान्त धनुह कांना-छेभाडात्मत क्म निम्ना मत्न किन मा नवः कांना महाह छन्नछ नामभान व्यक्तात्म मिन्न म निम्ना निम्ना निम्ना निम्ना क्षेत्र माना हरे।•••

শন্তরক ইসলান বাজালার জাতীয় কবি। জাতির বেদনার কথাই তাঁহার কাব্যের ভিতর শিয় প্রদাশ পাইতেছে। হিন্দু এবং মুসলমান লইয়া বাজালী জাতি। স্থতরাং এ জাতির বেদনার কথা প্রকাশ করিতে হুইনে রচনায় ইসলামী এবং হিন্দুয়ানী উত্তর জাতীয় প্রকাশ ভঙ্গীর ছাপই পিতে হুইবে, নতুধা রচনা সহজ ও স্থান হুইবে না।

অজ্ঞান-চর্চার প্রথম পর্যে সজ্ঞান-'সাহিত্য'-ধিচার কোন কোন কোন কেত্রে ব্যক্তিগত বাজ, বিভ্রপ, কুৎসা ও নিশার নামান্তর, এ পর্যে 'কলোন' ও 'সওগাত' পত্রিকা নজকুল-সমর্থনে সক্রিয় ছিল। ফলে হিশু ও মুসলমান সমাজের রক্ষণশীলদের থাক্রমণ প্রতিহত করা সম্ভবগর হয়েছিল।

নৰক্ষন-সাহিত্যের বর্ধার্থ আলোচনা শুক্ত হয় নজক্ষল-চর্চার দিন্তীর পর্বে (১১৪১-৫৪ সাল)। বাসিক 'বোহান্দনী' পত্রিকার ১১৪১-৪২ সালে চার সংখ্যার মুঞ্জিবুর রচমান বান চারটি প্রবন্ধে নজক্ষল-সাহিত্যের বিভিন্ন দিক সম্পর্কে বিস্তারিত আলোচনার সূত্রপাত করেন, এই সময় বেকে সাহিত্য সমালোচকেব। শুক্তম ও নির্চার সঙ্গে নামক্ষল-সাহিত্যের মুল্যায়নে ব্রতী হন। কালী আবদুল ওপুদের প্রবাহালী—'নজক্ষল ইনলাম', 'প্রতীকে প্রীতি', 'কাহারে করি না কুনিপ' এবং হুমারুন করীরের 'বাঙলার কারা' (১১৪৫), বুজুদের বস্ত্রর 'An Acre of Green grass' (১১৪৫) প্রকাশিত হয় এই পর্বে। হুমারুন করীর এবং বুজুদের বস্ত্রর প্রন্থে নফক্ষল-সাহিত্যের তাংপর্য সম্পর্কিত গুক্তমপূর্ণ আলোচনা অন্তর্ভু ছিল। ১৩৫১ সালে আধুনিক বাংলা করিতার মুখপত্র 'করিতা'র বিশেষ 'নজক্ষল-সংবা।' প্রকাশও একটি উল্লেখযোগ্য ঘটনা। আবশুল কাদির ও রেজাউল করিম সম্পাদিত 'কাহ্য মালক' (১৩৫২) সংক্রনের ত্রিকাতেও নজক্ষল সম্পর্কে প্রবেশীর আলোচনা ছিল। নজক্ষলের সংক্ষিপ্ত অবচ প্রথম নির্ভর্জবোগ্য জীবনী 'নজক্ষল জীবনী' রচনা করেন করি আবদুল কাদির, যা 'সওগাত' পত্রিকার ১৩৫৪ সালের জ্যৈক সংখ্যার প্রকাশিত হয়েছিল। পরবাহীকানে কালী আবদুল ওপুদের পূর্বোর্রান্ধিত তিন্টি প্রবন্ধ এবং আবদুল কাদিরের 'নজক্ষল-জীবনী' 'নজক্ষল প্রতিত্রা' গ্রন্থে সন্ধিবেশিত হয়। আবুদ সক্ষলের 'বিজ্ঞোহী করি নজক্রন' (১৩৫৪) দেশ বিভাগে পূর্ব যুগে পূর্ব যাংলা বেকে প্রকাশিত নজক্ষল-সাহিত্য আলোচনার একনাত্র প্রযাস।

মঞ্জন-চর্চার তৃতীয় পর্ব দেশ বিভাগের সময় খেকে বাংলাদেশের স্বাধীনতা লাভের সাল পর্বন্ত । দেশ বিভাগের পরে বাংলা সাহিত্য চর্চা কলকাতা ও চাকা উত্তর স্থানকে কেন্দ্র করে বর্ষানর হয়, স্বাভাবিকভাবেই এই পর্বের নককল বিচারে পশ্চিম বন্ধ ও পূর্ব পাকিতানে গৃষ্টিভকীর পার্ককা পরিলক্ষিত হয়।

নজকন-চর্চার আলোচা পর্বে কলকাতা থেকে প্রকাশিত পূই প্রেণীর আলোচনার প্রাথানা কেব। বার, নজকন-স্বৃত্তিকখন এবং নজকন-সাহিত্যের বুল্যায়ন। এই পর্বে পূর্ব বাঙলার নজকন-চর্চার চারটি বিবর্ধে অক্সক আলোপিত হবেছে, প্রথমতা বাঙলার বুসলবাদের দব আসম্বর্ধে নজকনের অবদান, বিতীয়তা উপস্বহাদেশের আজাদী আন্দোলনে নজকলের ভূমিকা, তৃতীয়তা আধুনিক বাংলা সাহিত্যকে ইননামী ঐতিহ্যের সক্ষে সম্পর্কিত করার নজকলের সার্ধক্তা চতুর্ধতা আধুনিক বাংলা ক্ষিতার ধারার নজকলের বিশিষ্ট স্থান নির্দেশ।

তৃতীর পর্বে পশ্চিম বন্ধ থেকে প্রকাশিত বিভিন্ন প্রয়ে নজকল-জীবনের বন্ধ মূলাবান তথা ও উপাদাম সনিবেশিত হব, ১৩৫৭ সালে প্রকাশিত অচিতাকুরার সেনগুংগ্রন 'ক্ষোল বুগ' নজকল সম্পর্কিত সমৃতিচারণের স্বর্লট বরিয়ে দের, পরবর্তীকালে প্রকাশিত সমৃতিকখাসমূহে নজকলজীবনের বিচিত্র দর উপাদান বরা পড়ে। গৌরেন ঠাকুরের-'বার্ত্রী' (১৩৫৭), রেনেপ্রক্রুয়ার রায়ের 'বাঁলের দেবেছি' (১৩৫৯), পরিত্র গলোপব্যারের —'চলমান জীবন' (১৩৬১), গজনীকান্ত বরকারের—'শুদ্ধাম্পাদেবু' (১৩৬৪), প্রাণতোম চটোপাব্যারের ভ'কাজী নজকল' (১৩৬২), নেলজানন্দ মুলোপাব্যারের ভ'কেউ ভোলে না কেউ ভোলে', পরিষল গোলামীর ভ'স্বৃতি চিত্রব' (১৩৬৪) এবং নজকল-সমৃতির স্বচেয়ে মূলাবান দলিল মুজক্তর আহমদের—'কাজী নজকল প্রসাক্ষ প্রসাক্ষ (১৩৬৬)।

युक्त वाध्यरमय—'काकी मजकन धमरज (म्युजिक्ता) धकानिङ धरगणिन ১৩५५ मारम (১৯৫৯ प्रीः)। श्रक्ति करमक्त छिन बाज ১৬५ भृष्टी। जुनिकात बुक्क्त्र जाङ्यम निर्दिण्सिनः

यनाव जायरावर्ष्णीन बारनव राज्य। ''वांशा माहिर्डा नयकान'' श्रेकाणिड रहवात भरवर जायव यर्ड कवि नयका रेमलार्ज्य भूषाय जीवन-एविड वर्षन्छ रहिष्ड रवित । रारे रहे। यहवा यावनाक।

আজকান সজকন ইগনাম সম্পর্কে অনেকে অনেক কিছু নিবেছেনও। বড় দুংব বে এইসব লেবার ভিতরে কিছু কিছু নেব। নিছক কল্পনাপ্রসূতঃ এই আতীয় কল্পনা-বিদাস বছ হওয়া একান্ত বাহনীয়।

ভবিষ্যতে যাঁর। নজক্ষন ইনদানের জীবনী দেবার গ্রভী হবেদ তাঁদের কিঞ্চিত সাহার্য হতে পারে এই ভেবে আমি তার সম্বদ্ধে আমার স্বৃতিক্থার কিছু কিছু নিপিবছ করছি।

এই স্বৃতিকৰা মুজক্ষা আহ্মদ গতুন কৰে সেৰ্বেন এবং তা 'কাজী নজজন ইন্সাম: স্বৃতিকৰা' নামে ১৯৬৫ প্রীষ্টান্দে প্রকাশিত হয়। প্রজাটির পরিধনিত বিতীয় সংজ্ঞান ১৯৬৭ প্রীষ্টান্দে আর তৃতীয় সংজ্ঞান ১৯৬৯ প্রীষ্টান্দে প্রধাশিত হয়। শৈকজানন্দ মুবোপারায় নজজন-স্বৃতিকরা সেবেল ধর্ম 'কেউ ভোলে না কেউভোলে' নামে পরে এই স্বৃতিকরা পরিবাজিত ও পরিবাজিত হয়ে হয়েছে 'আহার বহু সক্ষান' (১৩৭৫)। অচিত্যাকুমার পেনগুরুর গলগুল-স্বৃতিচ্চায় সূত্রপাত 'ক্ষোল মুবা' প্রয়ে আর জার পূর্ণাক্ত নামকল-স্বৃতি চারণ 'লোকের বড়' (১৩৭৬)। পশ্চিম বজে সক্ষান-চ্চায় উৎস্থাকৈত লাককুম আরিক আন আমানের নজজন সম্পর্কিত প্রবাহ প্রয় 'সজজন-পরিক্রমা' (প্রকাশ ভারিবারীম)। নজজন-চ্চায় ভ্রতীয় পর্বে (১৯৪৮—৭০ ব্রীঃ) পশ্চিম বল বেকে প্রকাশিত নিম্নোক্ত প্রয় স্বৃত্তি হাবেছে :

ৰুদ্ধদেব বহুর দাহিত্য-চর্চা (১০৬১), হুবাবুন ক্বীরের 'বাঙ্কনার কাবা' (১০৪৯), আফহারউজিন বানের 'বাংলা। দাহিত্যে নজকন' (১০৬১), রবীক্রণাথ বারের 'দাহিত্য বিচিত্রা' (১০৬১), দীবনানল দানের 'কবিতার কথা' (১০৬২), নারারণ চৌধুরীর 'দলীত পরিক্রমা' (১০৬২), বাব্যেশ্রর বিত্রের 'বাংলার গীতিকার (১০৬০), নারারণ গলোপান্যারের 'দাহিত্য ও দাহিত্যিক' (১০৬০), জন্মব বহুর 'আবুনিক বাংলা কবিতার গতি প্রকৃতির (১০৬৪), সংস্কৃতি পরিষণ প্রকাশিত প্রবন্ধ দংকলন 'কবি নজকল (১০৬৪), দীপ্রি ক্রিপাঠার 'আধুনিক বাংলা কবিতা' (১০৬৪), স্কুরার শেনের 'বাংলা দাহিত্যের ইতিহাল' (৪র্থ বহু ১০৬৫), সৈরদ মুক্তবা আলী নিবিত নজকলের 'ক্রাইরাত-ই-উনর-বৈর্ব'-এর ভূমিকা (১০৬৬), জন্মব মুর্ণোপান্যারের 'রবীক্রানুদারী কবি স্বাহ্ম' (১০৬৬), ক্বেন্ত গুপ্তের 'কুরুদরজনের কাবা বিচার' (১০৬৬), সত্যেক্রনাথ সন্ধ্রমণ্ডরের 'পতাক্ষীর কবি' (প্রকাশ ভারিথ নেই), স্থনীকর্মার গুপ্তের 'নজকন চর্বিত বান্দ' (১০৬৭), রবীক্রনাথ রারের 'বিজ্বেক্রনান কবি ও নাট্যকার' (১০৬৭)। আলোচ্য পর্বে পূর্ব পালিক্তানে নজকন-চর্চ। প্রধানতঃ পত্র-পত্রিকার প্রায় সীরাব্য তবে কিন্তু প্রথ

पारनाठा भर्द भूर्व भाक्तिषारम नक्कम-ठर्छ। প্রধানত: পত্র-পত্রিকার পুঠার সীবাবছ, তবে क्षिष्ट श्रीष्ठ धकानिङ एरमछिन। पूर्व भाकिखारम भक्कम-म्युजिठात्वभ एरमरछ निर्माङ श्रव मगुरदः समीय छेष्मीन-वत 'वारमत प्रारंषि' (५,५६), बान मुक्कम बन्नेनुकीरनत 'वून-गुहै। नककन (५,५६)' व्यन बानक्काशत माध्यूरमत्र 'नवक्रमरक वर्षन रमर्थिष्ट' (১৩५५), ज्यारवाम्छकीन ज्याद्यरपत्र 'व्यामात्र निल्मी जीवरमत्र क्यां (১৩৬৮), ऋषी जुनकिकांत्र शांतपादवर 'नकक्रन जीवदनव (१५ जवांग्र', (১৩१১) এवर रेनवन जांगी जानवारकः 'नजक्रम जीवत्न ध्यत्मव अक जवार्यः (১৯৬१)। পূर्व পाक्छिन ध्वरू धकानिङ मजक्रम गारिजा नवारमाठमावृत्तक श्रेष (পूर्याक वा जःभडः), काबी जाववृत्त छन्द्रपत्र 'मबकन প্रजिजा' (১৩৫) भिन्नर्थमज्ञ नाहिष्डीत 'नक्कन माहिष्डात ভূমিনা' (১৩৬०), मৈत्रन योनी वाहमात्मत 'नवक्कन देगनाम' (১৩৬১), बुरायम धानाबुन एटक्स 'बुगनिव बांला गाहिजा' (১७५৪), बुरायम बारबुन हाई छ रेगबन जानी 'बारगारनत 'बारगा माहिएडाव देखिबुख' (১৩৬৫), काकी (बाडायात र्यारमस्बद 'नककन कावा পत्रिहिडि' যোতাহার হোদেন চৌধুরীর 'সংস্কৃতি করা', (১৩৬৫), পৰিস্থান পাননিকেশনদ প্রকাশিত প্রবন্ধ সংক্লম 'নজক্রণ পরিচিডি' (১৩৬৬), আহমদ মফিক 'শিকপ ও সংস্কৃতি জীবন' (১৩৬৬), মীর আবুল হোসেন गलाभिड धेरद गःक्सन 'नबक्रम गाहिडा' (১७७१) काबी वाकगारडिकिन बाहरामव 'गाहिरडाव निविधि' (১७५१), ७: ययहाक्रम देगनात्यत्र 'माहिएछात्र भएष' (১७५१) जानून कक्षरमत्र 'निरुभ ७ माहिछा मादमा' (১७५४), जांबर्न कांपित मन्पांधित 'नक्कन बहना मन्नात्र' (১७५४), बादायम बादकूजुबाह्द 'मक्कन रेंगनाम ७ जोव्निक बारना कविडा' (১১१०), रामान राक्षिपुत बरमारनद 'जाबुनिक कवि ७ कविछा (১৩৭২), আতাউর রহমানের 'কৰি নজকন' (১৩৭৫), বোবাশের আলীর 'নজকল প্রতিভা' (১৩৭৬) वरः नाहानुषीन जाहरामतः 'नरम-मानुषी नवक्रम धेमनाम' (১७११)। बारनाष्ठा नर्र्य नवक्रम मन्मर्य श्र हानि उ पृष्टि दे: रववी श्रंथ विकानुत्र बश्यारनम् Nazrul Islam (၁३७० श्रीः) अवः निवासून देवंनाय क्रियारी 'Introducing Nazrul Islam (၁৯৬৫)। अवस्य हे लिएवस सहनांगडी मण्डिल मृष्टि श्रव्य अ नर्टर्व श्रवानिक हव, त्रिकृत हेननारम्ब, 'मयक्रम मिर्ट्मनिका, (১৯१७) अवर स्रीक्रिया च्ह्राजानात, 'नवकन चरन्या (১৩१७)।

১৯২০ (चेट्क ১৯৭০ च्रीहेक्कि, এই পঞ্চাল বংগরে भक्किन चीवनी छ गाविजा-छर्डाव या गरिक्ख बागरतथा निर्धित हम जाव गृहना भर्द (১৯২০—৩० च्री:) मक्किलब गाविजा चिज धनःगिड वा निन्तिष्ठ हरवित, विजीव भर्द (১৯৩৪—৪৭ च्री:) मक्किलब चीवनी वहना छ गाविजा मनारवाहनाव चौवनवूनक প্রথান পরিবাশিক্ত হয়। এ পর্বে জীবনী রচনার জাবনুর কাদির এবং বাংলা সাহিতো নজনবের জান নির্দেশে কাজী জাবনুর ওপুর, ধনারুন কবীর, বুছদেন বসুর জানোচনার ঐতিভানিক বুলা বর্তবান, পরবর্তী কানের গবেষধাও জানোচনার মৌলিক সূত্রসমূহ ঐ সর জানোচনার মধ্যেই নিবিজ্ঞ ছিল। সক্ষল জানোচনার ভৃতীর বা দেশ বিভাগোত্তর পর্বে (১৯৪৭-৭০ খ্রীঃ) এক্বিকে ধের্ম স্বুজিকবার জীজ জপর দিকে তেননি নক্ষল ইসনারকে সামগ্রিক বা গভিতভাবে মূল্যারদের প্রধান পরিবাদিক। এ পর্বের স্বাধিক ওক্ষপূর্ণ জ্ববান ক্রয়েন্ত মুক্ষকর জারবদের নজক্রন-স্বৃত্তিকবার বিভিন্ন সংক্ষেপ প্রকাশ। যান বাধনা মুক্ষকর জারবদের নজক্রন-স্বৃত্তিকবা ছাল্লা সাহিত্য বর্ধার্থ স্বাধানাচনা ক্রিংবা নজক্রন-স্বৃত্তিকবা ছাল্লা সাহিত্য যাবার্ধি স্বাধানাচনা ক্রিংবা নজক্রন প্রকৃত মূল্যারদ উত্তরসূত্রীদের পক্ষে বুংলারা ছিল। আলোচা নজক্রন ইসনারের ক্রিডার রস বা বিত্ত বিভারের কিছু জাজরিক প্রয়াস হরেছে কিছু সৈরক জালী আহসানের 'নজক্রন ইন্সারন বিভিন্ন গ্রহে দজক্রনকে বিভিন্ন বিভারের ক্রিডার বার্ধার রাধান্তা বরা পর্চেছে বনে বনে হর না। মূল্যারন বিভিন্ন গ্রহে দজক্রনকে বিভিন্ন বিক্রার বিভিন্ন বারার রাপন করে সামগ্রিকভাবে মূল্যারন করা হরনি। নজক্রনের মুজার পরে নজক্রর ঐতিহেনের বারার রাপন করে সামগ্রিকভাবে মূল্যারন করা ঘরনি। নজক্রনের মৃত্যার পরে নজক্রর ঐতিহেনের বারার রাপন করে সামগ্রিকভাবে মূল্যারন করা ঘরনি। নজক্রনের মৃত্যার পরে নজক্রর ঐতিহেনের বারার রাপন করে সামগ্রিকভাবে মূল্যারনের সময় উপস্থিত ধরেছে।

चिक्या

तबकुरलव 'बुलिककाव' ७ 'वनगोरि'

मारक्ष्य बरमान थान

বাঙলা ১৩৩৯ সানের প্রথম দিককার কথা। তবঁন বাঙলা ও জাসার প্রদেশের মুসলরানলের এক সাত্রে বাঙলা দৈনিক সংবাদপত্র 'দৈনিক ছোনভান'' বন্ধ হাইবা পিরাছে। আবরা তিন জন একই পথের সহবারী, মরহার কবি আশরাক আলী বাদ, মন্ত্রম নোহাত্রদ কানের ও আমি, কলিকাভার ৩৬নং জাপার সার্কুলার রোভন্ব তৎকালীন স্থাকিরা ছোটেলের উপর তলার, একই ব্যরের বাসিলা ও রেকার। আমাদের পাশের ববে থাকিতেন তৎকালীন সাগুছিক 'হানাকী' পত্রের সম্পাদক ব্যরহান।

লেই ক্ষিয় আনাদের পরিচিত কতক স্বােশ সহানী ব্যক্তি আনাদের হারা—অবশ্য আনাদের ভারাবািদ্দ—, ভারাদের ছােট খাট সাম্য়িক সমস্যার সমাধান করাইয়া নিডেন। কেই ক্ষিত্রে সভাসমিতির নামপত্রে লিখাইয়া নিডেন, কেই ভারাদের বইরের পাঞ্জলিপি সংশােধন করাইয়া নিডেন, কেই কােন বইরের প্রাক্ত্রি সংশােধন করাইয়া নিডেন; ভারার কেই বা কবি ভাশরাফ ভালীকে দিয়া কবিতা লিবাইয়া, ভারার মেরের গামে মাসিক পত্রিকার ছাপিডেন—, মেরের বিবাহের স্থাধনার জন্য।

আৰমাও কিছু ৰনে করিতাৰ भা। বিনা কাজের হইগোলে সময় যদি কাটিয়া যায়, ক্ষতি কি গ এই কাজের পারিশ্রমিকের জন্য আবাদের তরক হইতেকোন চাহিদা ছিল দাঁ। কোন দিন আবাচিত ভাবে বড় জোন চা আর কিছু নাশতা। আধিক অস্থবিধার থাকিয়াও চাকা পরগার ব্যাপারে ব্যক্তি-আত্ম বিপানু করিয়া কিছু করি দাই আবনা।

এই সময় আমার পরিচিত এক বৰু—নাহবুৰ-উল-আলম,—ছোলডান অফিসেই ডাহার সহিত প্রথম পরিচয়—, এক দিন আমাদের আন্তাদায় আসিয়া, পরের দিন আমাকে ডাহাদের বেনীয়াপুকুর অঞ্চলের গোলাম ছোবহান লেইনম্ব বাড়ীতে পুপুর বেলায় ধাবার দাওয়াত করিলেন। বধা সময়ে ডিনিই আমাকে নিয়া ফাইনেন, ডাহাও বলিলেন। অনিচ্ছা সম্বেও বাদানুবাদের পরু, বনুর একান্ত আবেদন উপোক্ষা করিতে পারিলাম দা।

গ্রিটিশ আমদের অবিভক্ত বাঙলার প্রাদেশিক ইনস্পেটর অব রেজিফেট্রশন, জনার কলপুল কানের চৌধুরী সাহেবের জ্যেষ্ঠ পুত্র নাহপুর। চইপ্রামে ভাষাদের বাড়ী। তবলকার সময় আমাদের বস্ত বেবেরালী নাহপুর।

जानियं नर्ज यथा गनात नाश्यु त्यत्र नात्य जाशालद बानात शांकित श्रहेगात। नाश्युव शिनात व्यवस्था विम, जाशात गश्याति वर्षु यमकरकाका नात्श्यत्व महिछ। ज्यात जानता जिम व्यवस्था नवस्थात्व, मछक्ताता छ व्यक्तिया । वस्थाताका नात्श्य वस्थात वस्थाता । वस्थाताका नात्श्य वस्थात वीमवाशयुत्र वाश्याम्बर्धा अ-छि-शि-वारि,

मारहात्वा विकीय मूळा। त्यांय कविकाकूरनुमाय यात्री, कविकाका शाहरकारांच कांनी व्यवस् नामकुरकारा नाम नाशमूद मारहरका धनम मूळा। भार्च मार्कारम काशाहर वाक्षी। भारत व्यवस्था वरमक्यांकी वाकारक स्मि सकीरक याकारांक कविरक स्वेशास्त्र विस्तय विस्तय काहरून।

त्मिन हिन प्रविश्व । शैशांत्र क्रियिन नामा श्रेकांत क्षांनाल क्षांत्रा लग्न, क्षांचा करक श्रेक्ष्य क्षांत्रात्व विकार,—''क्ष्म्य क्षांत्रात्व तृत क्ष्मू शिक्ष छ महलाक्षि । क्षांत्रात्व क्षण क्षांत्रात्व क्षांत्रात्व क्षांत्रात्व क्षांत्रात्व क्षांत्र क्ष

আৰি হালিয়া বলিবাৰ,—''তুৰি আনাম সৰ্থই আন, তোনাৰ বন্ধুকে লাহাথা কৰাৰ মন্ত আনাৰ কি থোগান্তা আছে, ধই ছাপাল বিষয়ে। দৈনিক ছোলভাদের শেব পর্বায়ে আনমা তিনজন উক্ত পান্তিকাম লশাদনা বিভাগ পরিচালনা করিমাছি যাত্র, এবল উহা বন্ধ হইবা গিরাছে। অন্য কোবাও চাক্ষীম অন্য উমেলার হই নাই। পাবানকেশন ব্যাপারে আনার কি অভিক্রতা বাকিতে পারে ? আম ক্রম-বিক্রয়ের জানও আনার নাই। আনার পুঁজি কতটুকু—ভাহা ভূমি জান।''

এবদ সময় বদক্ষদোলা সাছেব বলিলেন,—''আমি মাহবুধের নিকট আপদার বিষয় সব শুলিরাইছি। আপদার নিজস্ব পুঁজি ষেটুকু আছে, ভালাই আমার ধরেই। আমিও পুঁজিপতি দই।'' এই শ্রীয়া হাসিতে লাগিলেন।

बाबपूर बनिया छेठित,—''এबंध बाब कि । बाधारी कान बंधेर्डिंश वार्थ मांछ । बाबि ट्यांबारक रखाबाब बाबा बंधेरक गरक कविया करनक रखाबारब भिवा याँधेर । बाब रकान बामिक कविरुधा । ध्रकानेवा बाानारब कि कविरक्त नाव बाब ना नाव, नरब रचना वांधेर्य । बाबि ठाँथे कृति छव गर्स बाक ।''

शीकित्र बीवन द्यवारम, 'राबारम चात्र कवा करन मा। जवात्र चात्रारम कि कि कतिराज घरेरन जाताब कित्रिक महि। जीकेरिक शकारन गत्रिक कार्यम छोड़ा चात्र रुगंभ केरीब त्रकिम मा।

ইবার পর বাহবুৰ বলিন,—''আবাদের মীচের তলার তোরার জনা বিশেব আকর্ষণীর বন্ধ আছে।
বীচে থাকেন পারন্য সমুটি কর্তৃক নির্বাসিত পারন্য দেশের জন্যতম প্রতিপজিশালী রাজনৈতিক
নেজ্ঞ আগা বইবুল ইনলার। বর্তনাদে তিনি বন্ধ। তীহার সম্পাদনার ও কর্তৃতে এখান ঘইডে
''হাবলুন বজিন'' নাপ্রাহিত্ব পত্রিকা কার্যনী ভাষার ছাপ। হয়। এই পত্রিকা প্রতিসপ্তাহে তাক্ষোপে
পারন্যের বিভিন্ন ছানে, বিভিন্ন রাজনৈতিক বহনে সম্বরাহ হয়। তাহার কোন পুত্র সন্তাম নাই।
বুইটি বেরে। সম্ভানি নাম বেশন বইজ্ঞান। তিনি কলিকান্তা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে কার্যীতে
ক্রমন্ত্র বোলক বেভালিট। তিনি পিজনে পত্রিকা সম্পাদনার স্বপ্রকারে সহারতা করেন। গ্রেন্, অফিন
ক্রমন্ত্র পরিবায়বর্দের বানস্থান ক্রম্ব জার্যার ক্রেমীত্ত, আবাদের মীচের ভানার।''

याहबूत्वत क्या जनूयांग्री जायश भीटि मात्रिया लोगाय, जामा माट्यत्य लिवामा । शावमा लाल्य व्याद्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त जाया । शावमा लाल्य व्याप्त जाया व्याप्त व्याप्त जाया व्याप्त जाया व्याप्त व्या

উসুতি কাৰদাৰ অপৰাৰে সম্ৰাচ কৰ্তৃক বিদেশে নিৰ্বাসিত হইমাও দুষ্টপতিৰহিত অৰমীৰ শৃষ্ট বৰণে তিনি তাঁহাৰ নিজম ৰাজনৈতিক ৰতবাদ প্ৰচাৰ কমিতেছেল, কলিকাতা হইটে নিজম কাৰ্যক 'হাবলুল ৰতিন'-এৰ নাধাৰে পাৰস্যেৰ অগনধেৰ মধ্যে। Plain living and high thinking এৰ ৰাজৰ প্ৰতীক প্ৰত্যাক কৰিয়া শুদ্ধাৰ নাধা মন্ত হইয়া আসিল।

্পিরবর্তীকালে, কলিকাতার আগা বইদুন ইস্লাব সাহেবের বৃত্যু হর এবং গোবরার গোরতানে উহাকে লাকন করা হর। বর্তনান ইরানের পাহান পাহের পিতা রেজা পাছ পাহনতী ইরানের সিংহালনে আরোহণ করার পর, আগা সাহেবের করর, উক্ত গোরতান হইতে উঠাইরা, স্পেশাল ট্রেন বোপে ইরানে নিয়া একজিপ বার তোপধ্বদি সহকারে রাজোচিত সন্ধানের সহিত পুনরার সমাধিত্ব করা হয়। বেগন বইজজানা ল' পান করিয়া কলিকাতা হাইকোটে বুজিজীবী রূপে ওকালতি করার সময় তিনি কলিকাতা কর্পোরেশনের অন্তার ম্যান পলেও নিযুক্ত হন। রংপুর জেলার অন্তর্গত গাখিবাছার অধিবাদী আই-সি-এন নৃত্যনুধী সাহেবের সহিত তাঁহার বিবাহ হর। আগা নাহেবের কর্মিত গেবেও ছিলেন কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ফারসী ভাষার এব-এ পোল্ড মেডালিট। তিমি বিবাহের পূর্বেই কলিকাতার নাবা যান।

সদ্ধায় বাদান ফিরিনা কবি আশরাক আলী খান ও কালের সাছেবকে সব বলিলান। কলিকাতার তথম সামান্য কয়েকটি বাজীত অন্য কোন উনুত কচির যুসনিম প্রকাশনালয় ছিল না। বাজিত কচিসম্পন্ন শিক্তি একজন যুসনমান বুবক উনুত শেশীর বই প্রকাশ করার আকাঞ্জায় অপ্রশন্ন হইবাছেন ইহাই ছিল সেই রাম্মে আমাদের আলোচনার নিষয়বস্থ।

পরের দিন দুপুর বেলায় সাহবুন আসিয়। হাজির। তাহার সহিত কলেজ কোয়ারে চলিলার দুতদ কর্মিরে। বেশ ভাল গোলাম। পরিষ্কার পরিচছনু উনুত ক্ষচির পরিচারক। ছয় সাতজ্বম কর্মচারী, একজন বিহারী লালোরাম। আনার জন্য এক ভিনু টেবিল ও চেয়ার—অঘাবিকারীর আসনের পাশে দির্থারিত রহিরাছে। কভক্ষণ আলাপ আলোচনান পয় য়াহবুর চলিয়া গোল। কি কি কাজ করিছে হুইবে আমাকে ভাহাও ভাবিয়া পাই না। কৌতুগুলী মনে লোকানে যাহা যাহা পেরিবার দেবিরা দিলার। সদ্ধার পর লারোরাম বাতীত সার সর কর্মচারী চলিয়া সোনে, বলক্ষজোজা সাহেব নিরিবিলিতে পুত্তক বার্ষার সংক্রান্ত আলোচনার পর বলিলেন, "কবি মজকল ইসলাম সাহেবকে পাঁচ শত টাকা লিয়াছিলার—"অুন্ফিকার" দাবে ওাঁহার একবামা বাই প্রথম সংক্রান্ত দুই হাজার কলি ছাপার জনা—প্রার দুই ভিন বাস পূর্বের কথা। অলাববি ওাঁহার নিকট হুইতে উক্ত বইজের পাঞ্জিলি সংগ্রহ করা সন্তব্যর হার নাই আমার পকে। কবি সাহেব বেলালী মানুছ; সব সমরই বাবোক্ষন কোশ্যালীতে গাদ দিরা বান্ত থাকেন। প্রতিকাশে বাসা হুইতে চলিয়া যান, রাজি নর দলটার কিবেন। জনেক রাজে বেকর্ড কোম্পানীর অক্ষিসের কাজ শেব হয়। আনি নিজেও দুই ভিনবার চেটা করিরাছি ওাঁহার সহিত সাক্ষাত করিছে কিয় পারি নাই। জন্য কর্মচারী হারাও করেকবার চেটা করিরাছি ওাঁহার

"वाबवृद्ध्य निक्षे छिनिवाछि जाननाव मिछ्छ कवि नजका देमनाव माद्वाद्ध जानकविम भूर्व इद्येख्य विश्व । जानिव मिछ्छ माद्याद्ध कविन । जानिव मिछ्छ माद्याद्ध माद्ध माद्याद्ध माद्ध माद्याद्ध माद्य माद्याद्ध माद्य माद्याद्ध माद्य माद्याद्ध माद्याद्ध माद्य माद्याद्ध माद्याद्ध माद्याद्ध माद्याद्ध माद्य माद्याद्ध माद्याद्ध माद्याद्ध माद्याद्ध माद्याद्ध माद्य म

ইয়া বাড়ীন্ত জন্যান্য উদীবনাল সাহিত্যিকদের নুডন বই প্রকাশ করার ইক্ষাও জারার জাছে। তাঁহানের বইও ছাপার ব্যবহা কক্ষন। জারার প্রতিষ্ঠান নুডন, ইহান্দে সন্ধীব করিয়া ডুলুল। উপ্রুক্ত লোক জন্তাবে জারার ইক্ষা জনুবারী কিছু করিয়া উঠিতে পারিভেছি দা। বর্ডবানে সবেরার ক্ষমনুধ করিব সাহেবের 'নারনী বজনু' ছাপিরাছি। ইয়া জড়ি পুরাডন বই। আমি চাই প্রতিষ্ঠানাল নুজন লেবকের বইরের জার্মপ্রকাশ। জারানের স্বাজে বুব ভাল ভাবে ইহার প্রয়োজন জনজুত হইজেছে।" নারি প্রতি-উভরে বনিলান,— "বই প্রকাশের ব্যাপারে জারার কোল জড়িক্তভা দাই। সম্বন্ধন ইসলার সাহেবের বাসার জন্মের দিন হয় বাই নাই, বিশেষ করিয়া দৈনিক ছোলভান বর হইবার পরে। তবে নোক সারকত ও সংবালপত্তার বাধানে ভারার বেজিবনর রাখি বারে। এবন ডিনি ছিল বাস্টার ভবের ও বেগাকোন কোশানীতে গান রেকর্ত করার ব্যাপারে ব্যক্ত জাছেন জানি।"

তিনি ৰলিলেন, ''আমার লোক দিনের বেলার তাঁছাকে বাসায় পায় দা। রেকর্ড কোন্দানীতে গেলেও তাঁছার সহিত কথা বলার স্থাধোগ হয় দা। আমার নতুদ দোকান, লীলু ভাছার একথানা বই প্রকাশ করা আমার একান্ত প্ররোজন। আপনি একট পরিশ্রম করিবা বইবানা শীলু বাহির করুল। এই জন্মই আপনাকে আমার বিশেষ প্রয়োজন।''

উত্তৰে শুৰু খলিলাৰ, 'ধোলা হাফেজ, দেখা যাউক কি করা যায়।'' ইহাদ পৰ আন্ত আদেক ক্ষা-

नानात्र ज्ञानित्रा नवस क्वा ज्ञानशक नाट्य ७ काटनय नाट्यक्त विश्वात । वस विश्वतत्र ज्ञाटनाह्या यटड चित्र निकास दृष्टेन ८२, नीसुर्ह ''ज्ञाककार'' वर्षे वाद्यित्र कत्रिट्ट दृष्टेट्य।

প্রতিকোলে উঠিয়াই কাজী নজকল ইনলাৰ নাছেবের পানৰ বাজার অঞ্চলের সীতাদাখ লেইনের বাসার উপস্থিত হইলাব। কৰির বিপুশু পুরাতন তৃত্য রাবা আবাকে পেথিয়াই বলিয়া উঠিল, "বাৰু, এত দিন পরে পেথা দিলেন।" তাহাকে বাহা বলার বলিয়া, কবি নাছেবকে আবার নালাব দিবার জন্য নির্দেশ দিলে, রাবা আবাকে বলিতে বলিয়া বাড়ীর ভিতরে চলিয়া গোল। এই বলার যন আবার অপরিচিত লয়। প্রার ত্রিপ সিনিট পরে কবি নাছেব দীচে দায়িয়া আসিলেন। আবাকে পেথিয়াই তিনি উচ্চ কপ্ঠে বলিয়া উঠিলেন—"আরে, বাহকুজ এত দিন পরে। কত দিন তোরার কথা বনে করেছি কিন্ত ভোরার নাকাই নেই। এবন কি কর গ কোধার খাক গ দেবা কর বা কেন গ আনি, দৈনিক ছোলভানে আছে।" বহু জিজাসার একতা সরাবেশ। আবি কবি নাহেবকৈ সপুদ্ধ অভিবাদন পূর্বক বলিয়ান,—"লৈনিক ছোলভানেই ছিলার। করেক বাস হয় ছোলভান বহু হবে গিরেছে। সার্কুলার রোডের আপোর বাড়ীভেই আছি। আপনি বর্তবানে গান রেকভিংরে বান্ত আছেন বলে আপনার সবয় নই করতে আলি নি। আপনার সব ধর্বই রাখি। জনৈক বছুর অনুবাবে বর্তবানে কলেজ ছোরারে "এপারার

रनिरमम,--"मिर्नारम जुनि कि कांक कररन?"

नुक शांडरम" (वाश निरविध ।"

विनान,—''এই नाইদের কাজতো তেমন কিছু জানি না। তবে প্রতিষ্ঠানের মানিক বনকদোজা সাহেব একজন মাজিত জচিসপানু তেমন বুৰক। বইরের লোকান নিকা প্রতিষ্ঠানের জনাতম অজ বলে কোম জাপত্তি করি দি। তার আকাঙকা ভাল বই প্রকাশ করা।'' তিনি আমার কথা তনিয়া বুৰবুলী হইলেম। বলিনেন, 'বেশ করেছ। বর্তমানে এইরূপ প্রতিষ্ঠানের বুর অভাব বরেছে কলকাভার। অদেক সাহিত্যিক ভাল প্রকাশকের অভাবে তাঁকের বই ছাপতে পারছেন দা।''

श्रीयन्त्री । उज्यक्ष

नवक्रम क्रमार्डिंग शिवका | ১১১

विम गमन माना भागा ७ हा निवा हाजिय। छाउदा भागा भर्न त्वामा । काणिन भय कृति गारिए विम्पाद माना वार्षिन । किष्के छूनि मारि। वार्षिन जानि विमाना क्विमाना वार्षिन अपना वार्षिन वा

উত্তরে বনিলেদ,—"নদে হয়েছে। নে অনেক নিনের কথা। তাঁরা আরাকে টাকাও নিজেছেন। তাঁরপর এপর্যন্ত কেউ কপি নিতে এলেদ না। আনিও কাজের ভিড়ে এ বিষয় ভুলেই থেছি। বর্তনাদে আরার একটুও কুনসত গেই। কেবল রবিধার শুপুরের পর বাসা হতে একটু বেবোই। দেনিন আবার ওলের গোকান বন্ধ থাকে। এগনই গাড়ী আনবে আনাকে নিতে আর রাভ প্রায় লশটা এপারটার সময় বাসান পেঁছি গেবে। ভোমরা আন, আমি একা। অভাবের পাহাড় আনার চারনিকে বাবা উচু করে রবেছে। এথানেই আমি দুর্ব ল।

আমি বলিনাম, ''তাদের লোক এনে আপনাম বাসায় কোন দিনই আপনাকে পায় নি। ছি**ল নাটা**র ভরেন অকিনে গিরেও আপনাকে পায় নি। অবশ্য দশটা এগারটার আগে কোন দিনই আনে নি ভারা।''

আবার কথা শুদিয়া কবি সাহেব হাসিতে হাসিতে বলিলেদ, ''ওরা বোধ হর—কোম্পানীর অফিসেই গিরে থাকবে। থেখাদে আবাদের গানের বহলা-বর্জালস সেখাদে পে' ছিতে পারেদি। বাইজের জোক অদেকেই সে বারগার ঠিকাদা আদেদা। লিল্পীদের দিয়ে যবদ রেকজি:-এর বিভিনু ভরের বহলা চলে, তাখন বাইরের কোন লোককে ভিতরে চুক্তে দেওরা হর দা। তুরি যথদ ওবালে বোপ দিরেছ, বই পীঘুই বের হবে। আবার পেছদে লেগে দা থাকলে, তা'ও সন্তব হবেদা। দু' ভিদ দিন পর পর আবার থেকে, কিছু কিছু লেখা নিয়ে যাবে। একত্রে বইরের সব কলি লেওরা সন্তব হবে উঠবে দা বর্তমানে। বহলা-অফিসে যেয়ে। আজ আর কিছু হবে না। আগানী রোকার বেলা দটা পল্টার সবর আবার এখাদে আসবে, কিছু কপি নিরে বাবে।'

वरे मन्द श्रीत्याकन क्लान्नानीत भाषी जामिया शक्ति श्रेष्ठ । क्षारेक्षात्रत मात्य जात्व क्लान्यानीत भाषीत्र क्रियाम निवास । व्यवस्थ क्षित्र क्षार्थ क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षार्थ । व्यवस्थ क्षार्थ क्षार्थ

ববে প্রবেশ করিয়া দেখি, বরের মেবেডে আমার সমধ্যক একজন ডক্রণ মুবক একালী বসিক্ষা আছেন। আমি উাহাকে আর কোন দিদ দেখি নাই। হিন্দু না মুসনমান ডাহাও বুবিডে পারিবাদ দা। পোশাক ডো তথদকার দিদে সকলেরই এক প্রকার। উাহাকে মমভারও করিবাদ দা, সাধারত भिनाय मा। উत्पर्ध चामना भेरम्भद्वत्र मिक्ठे चळामा। चरमक्ष्मन चामना हूनहान चिना चाहि। क्ष्म कारोन महित्र क्या विम मा।

ন্তপৰ জনাৰ বন্ধ হইলেও দেখাদে কোম আসৰাৰপত্তেৰ আজ্বন সাই। বেখেতে মানুৰেৰ চালা বিহালা। টেবিল, চেৰান্ন, চৌকি ইডাাদিৰ কোম বালাই দাই। এককোপে কিছু বিহালা ও বালিশ কড় কৰিবা বাৰা হইবাছে। আৰু আছে একটি হাৰখোনিবাৰ। কিছু বুঁধ পৰিকলম্ব পৰিচ্ছানু।

यात्रारक बनिरमम,—''जूबि छरक रहन। छम नाम जान्नागर्डकीन। श्रारमाकन रमकर्छ रथ जान्नाम-हेकीरमह नाम छरमङ,—देनिहे राष्ट्र डेमीयबाग कर्ण्डिकिमी जान्नागर्डकीन। अवारम जामान रम हाय-बामा देननामि नाम रमक्ष हरन छाछ छ नाहरक।

আবাদ উপীনকৈ বনিলেন, ''ডুনি জো ওকে চেন যা। ওর দার বাবস্থুর মহবান। আবাদ অনুমঞ্জ ভক্ত, সোদর প্রতিম। দৈনিক হোলভানের সহকারী সম্পাদক ছিলেন। পর্তমাদে এম্পারার মুক্ত ছাউলের অন্যন্তম কর্মকর্তা। 'জুলফিকার' দামে আবার যে মুড্য বই বে'র হচ্ছে, তা' ওরাই ছাপবেল।''

उर्न बान्या द्यानिवृत्ने मूक्ष्यन्ते मूक्ष्यत्नद दांछ ठालिया बिन्ना, छछत्य छछम्दक वाखिनाम्य कविमाय। এই मिन्नेट बार्गिन नाट्यत्वय निविष्ठ बानाय द्याय लिक्क्य। छात्राय लव बानात्म्य मत्या बर्णिक्याय वर्णक क्योरे देशेसार्छ।

পৰে কৰি সাহেৰ বলিলেন,—''আব্বাস, তুনি আনাম যে-চারখানা ইসলামী পাদ, এযাসে বেকর্ড ছবে, সে চারখানা পান গেমে ওকে ওনেয় দাও।''

धि-डिखरत्र, जारवान नारश्य बनिरमम,--'वाक चानात्र भनाति छान नाष्ट्र, ठाशा नाणिबारक्।"

उरक्षार बाबाब छोक लिबिन। बाबा शक्तिक श्रीति, किन गार्थिय नवक मुस्यार्थ शब्द श्रीता टेडवी क्यांव भिर्मिन भिर्मिन।

ৰণন প্লেট বোৰাই উত্তপ্ত হালুয়া হাজির হইল, তৰ্ম আব্বাস সাহেবের অসুস্থ গলা, সুস্থ না হইনা আৰু বাব কোৰার! গরুৰ হালুয়া গলাৰকেরণ হইবার পর, একে একে চারিবানা পান আব্বাস সাহেব তাহান্ত উলাভ কর্মেত গাহিন্ত ভালাত লাভালেন। গান চারিটির প্রপন লাটন—ব্যাক্তরে: সাহারাতে স্টুটনোরে বে বাজিল ওল লালা, বোলার প্রেমের পাঙাৰ পিরে, ইসলাবের ঐ সওলা লবে, ওবল রমজানের ঐ বোলার পেরে।

यक्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्र

कविष परण निविक अरे गूरेवामा वाका वादमा এकाट्यीटक मरविक बाट्या पूरे वानारे अकर्माव-मरिक पुरु।

खिनि जांत्रक वनिरमम,—''ভिन दिन नेत्र रामा वांत्रोति गर्यत्र द्यादिनन साख्य रामारमान रामानीय जिंदिन वांरा। ख्यांत्र जानांत्र र्योख क्यरम जानारक नीरम। जांत्रक कनि स्राया। बकारवरे बहैरबंद यबनिष्ठे किन निर्देश हार ।" जारवाम मारश्य बहिद्या (भरतम । जाबि डीहारबंद विक्रि हहेरड विकास मित्रा वामाद किविनाव।

পরের দিন দোকানে বসক্ষদোজা সাহেব বইরের পাওুলিপি দেখিয়া খুশীতে ভরপুর। নুজন আজিকে ও ভাবধারার ইসনারী গানের অভুত অপরপ সরাবেশ। পাঙুলিপি পাঠ করিয়া অনেককণ পর্বত্ত কাজী দক্ষল ইসনার সাহেবের বিভিন্ন রচনা রীতি ও বছরুবী কাব্যপ্রভিভার বিষয়, আলোচনা করিতে আরাদের অনেক সময় কাটিয়া পেল।

পূর্ব নির্দেশ বড, যথা সমধে মেগাফোন দকিসে যাইয়া, রাজার অপর পারে, যে বাড়ীতে পানের বছলা হয়, সেই বাড়ীর দরওয়াজার দারোয়ানের ছাতে কবি সাহেবকে দিবার কন্য আমার নাম নেখা একটু কাগজ দিলার। দারোয়ান অনা একটি লোককে ভিতর হইতে ভাকাইয়া আনাইয়া কাগজখানা কবি সাহেবের নিষ্ট পাঠাইয়া দিল। আমি দরওয়াজার দাঁড়াইয়া রহিনার।

কিছুক্ষণ পর, কাগজবানা হাতে করিয়া কবি সাহেব স্বয়ং দরওরাজার হাজির। সারে সাদা কতুরা, পরনে থুতি, খালিপায়ে দওায়নান। কবি সাহেবকে দেখায়াত্র দারওরান বাড়া হইরা সালার দিন। আনাকে দেখাইয়া দারোয়ানকে ব-লিলেন,—''ইনি বর্ণন এবানে আসবেন, ভারাকে বাথা দিও না'। ইনি আনার কাছেই আসবেন।'' 'জি, রজুর' বলিয়া দারোয়াদ পুনরার ভাঁছাকে সালার দিল। আনাকে দিরা ভিনি—দীচের ভলার বর পার হইয়া, উপরের তলার করেকটি বর অভিক্রম করিয়া—পানের আসর কক্ষে প্রবেশ করিলেন। ভাঁছার পিছনে আনাকে দেবিয়া উপন্থিত শিল্পীবৃন্দ, নারী ও পুরুষ, আনার দিকে চাহিরা রহিলেন। আনাকে বিছানায় কবি সাহেবের পাশে বসিতে নির্দেশ দিয়া, সকলের দিকট আনাকে পরিচয় করাইয়া দিলেন। উপন্ধিত সকলের উদ্দেশে আনি ছালাম আনাইলাম। আনার বিঘর তাঁহাদের নিকট যাহা যাহা বলিলেন, ভাহা ভনিয়া আনি লক্ষ্যার মাধা মন্ত করিয়ারহিলাম। সর্ব গুণ বিবজিত আনি—ইংরালী—১৯২৪ সন্মের কেব্রুয়ারী মানে ভাঁহার সহিত পরিচয় হইবার পর হইতেই তিনি কেন যে আনাকে অভটা মেহ ও প্রীতির চন্দে বেবিভেন, তাহা ভাবিয় পাইনা। হাজার শুকুর আনার দরগায়। অবশ্য আক্রোসা ভিনি লামাকে যে চন্দে দেবিভেন, সেই অনুপাতে আনি ভাঁহার জন্য কিছুই করিতে পারি নাই।

বিশিষ্ট নম্ব-নারীর একত্র সমাবেশ এই গানের মহলা। উপন্নিত ভন্নস্থলীর মধ্যে সেইদিনকার জন্য একরাত্র সাব্বাস্টদীন সাহেবই আমার করেকদিন আগের পরিচিত ব্যক্তি। বহলা-কক স্বরো চালাই বিছাদা—বিশ্বার জন্য কোন ব্যবস্থা দাই। একটু পরে হাস্যোদ্দীপর ও বুজিলীপ্ত রসিকতার পরিবেশে গানের মহলা আরম্ভ হইল। বিভিনু শিলপীদের গানের ত্বর ঠিক রত হইতেছে কিনা, বাদ্যকর ঠিক রত গানের সহিত সংযোজনা রক্ষা করিতেছে কিনা, সেই সব দিকে কবি সাহেব সন্ধার্গ। ইহা ব্যতীত শিলপীদের সাথে রসালাপ করাও জন্যতম কাজ। যাহার মহলা শেব হইরা বাইতেছে, তিমি চলিয়া যাইতেছেন, আবার আর একজনের মহলা আরম্ভ হইতেছে। এইতাবে প্রার তিম চার মণ্টা অভিবাহিত হইয়া গোল। ইতিমধ্যো চা-পান পর্বও করেকবার হইয়া গোল। আরি, হংমবব্যে বক্ষ মণ্টা চুপ-চাপ বসিয়া রহিয়াছি। হঠাৎ কবি সাহেব আরার দিকে ভাকাইয়া, বেন এভক্স আরার বিষয় ভালার থেয়ালই ছিল না, বলিলেন, "তুমি জনেকক্ষণ ব'লে আছে।" এই বলিয়া কাসজ কলম লইয়া, বুকের নীচে একটি বালিশ লইয়া বিছালার শ্রম করিয়া কিছুক্ষণের মধ্যে করেকটি গান লিবিয়া আরার ছাতে দিলেন। আবার ভিন দিন পরে আসিতে নির্দেশ দিকে আবি ভারাকে সালাম বিষয়

অতি অবশ সমবের ববে। তথার অত হৈ-ফা ও গান বাজনার বিভিন্ন প্রকার হন্তবােরে ভিনি কিবার এওওলি ইসনারী গান রচনা করিনেন, ইয় বাজবিকই বিশ্বারের বিবর।

জিন দিন পর বর্ণাসনের গানের রজনিলে উপস্থিত হইরা দেবি—তংকালীন ভারতের অন্যান্তব শ্রেষ্ঠ সম্বীত করাবিদ ওঙাৰ অবীরউদিন বান সাহের আসিরাছেন। বীণা, সারেজী, এসরাজ, জরুরা ইত্যাদি বাদ্যের বহুলা চলিতেছে। তিনি নজজন ইসনাবের গানের ওজাদ। অবশা কবি সাহেরই আমাকে স্থানিক্সী অবীরউদিন সাহেরের বিষয় আদ্যোপান্ত বলিরাছেন। কিছুদ্ধপ গানের বছুলা চলার পর নেগান্তোন কোম্পানীর অভাবিকারী জে, এদ, যোঘ মহান্তর আসারে উপস্থিত হইলেন। জন্যা বত করিরা উপস্থিত সকলেই তাহাকে অভিবাদন জ্ঞাপন করিনেদ। কবি সাহের, বাদ সাহের ও অখ্যান্য শিক্ষীদের সহিত রেকভি:—এর কাজের অগ্রগতির বিষয় মানোচনা অন্তে প্রার এক বজ্যা পর তিনি চলিরা গোলেন। আমি তথার আরও অনেকক্ষণ অবহান করার পর, কবি সাহেরের পকে নেই দিনকার মত আমাকে কোন কপি দেওয়া সন্তব হইন না বিধায়, তাহার নির্দেশ যত চনিয়া আসিনার। তাহার কথা বত তথার বাইতার ঠিক বতই। কোন দিন কিছু নেথা দিতেন, আবার কোন দিন, নারাদিন তথার আনন্দ কোনাহনে কাচাইরা দিরা শুদাহাতে কিরিবা আসিতার। অবশা ক্রেম্বা ক্রেম্বা

त्कावाच जान्वाहें हम हश्छ ह्यात्रिना व्याख्य विश्वादमान कान्यात्रीय जिल्ला मिन्न हिन। विश्वाद व्याख्य व्याख्य

वरे धारम निवास मनत, रेमनानी भानश्वित ध्रथम निर्म (मध्या हरेन। धाम जिम कर्मा कर्त्नाच हरेगा वर्षम भागि भुम्क जामिन, जन्म नावात এक (वर्षाम ठाभिन। जाम्बामछेकीश्वर कर-ठ मक्करमय रेमनानी भाग जन्म वाकाय भन्न कवित्रा वाविताहर। अर्हेमक रेमनानी भागश्वित विद्या अक्षि छिन्न वर्ष क्वा वाव किना। किन्न अरे जाजीय भारतय मर्वा क्य। रेशा वाजीश वरेश मुर्होग हरेगा वाव। अरे विवरत श्वनकरकाचा मारहरवत महिल विछिन्न स्विता छ जाविता विवस व्यामात्रमा श्विताम। निवास हरेन, कवि मारहरवत महिल वरेरा हरेरा। अरे कार्यम व्यामात्र छेला वर्षम ।

क्षिणिक कवि गारहरवन वन गरगर्भ बाकान करण जानान निरंजन किछाबानावछ किछू পनिवर्छन बहिन-क्षित । जानान श्रेडीिछ जिन्नियाछिन या এই পाञ्जीलिनि किया मुद्दीहै वर्षे किन्दिन कि गारहरवन मचिछ लाहरछ जानान बूच जञ्जिका हरेरव ना । वर्षेरवन भूग्क जानारकर स्वित्त श्रेष्टिन-छाना निर्द्धन, जिनि छन् श्रिके जर्जान स्विता निरंजन।

শীবাৰ প্ৰেনের স্বভাবিকারী দেবেলেনাথ বাচশতি বহালয় ছিলেন একজন স্থানিত বাজি। আনার পরিচিত জন। তাঁহাকে সব কথা বুবাইরা বলিয়া কশোজ তাঙিয়া এক পুঁচাকে বুই পুঁচা, এক লাইনকে পুই লাইনে ভাগ করিয়া, প্রত্যেক লাইনের পর বেশী করিয়া শোল্ দিয়া, ইলগারী পানের চারি করিয় একথানা বই বাহির করিবার ব্যবহা করিয়ার। বইজের বুলা এক টাকা। কিছ ইলভারী পানে শেব পর্বত্ত চারি কর্ষাও পুরা হব দা বলিয়া জন্য জিনটি গালশাৰ পুঠার সংযোগ করিয়া টাইটেল শেক সহ বেক আপ শেব করা হইন।

बरेराय त्रमुणांन क्या शुक्त निया कवि गार्ट्सिय बागाय छीवार- एवर्गियाय। छिनि जार्माानीय प्रविद्या बाबाब निर्क छोटिया बनिर्मम, "बिक क्रयह । "बनिष्ठ म्यांक्रमा स्मानीय" जावि छोछ-छेडर्स সভোচের সহিত বলিলাব, "আপলার ইগলাবী পালের কোন ভিনু বই নাই। আবার বুর ইঞ্ছা ইগলাবী গানের একবান। বই হউক। বর্তমানে এই গানগুলি অনগাবারণের প্রশংসা অর্জন করেছে। আপনি সভত হলে, অবলিষ্ট গানগুলি দিয়ে আর একবানা গানের বই বের করব। এই পরিকলপার অন্য আর্মিই দারী। বদক্ষণোজা সাহের বলেছেন, আপনার ইচ্ছার বিক্তমে কিছুই করা হবেনা।" কবি আবার বজবা শুনিরা আবার মুখের দিকে চাহিয়া রহিলেন। তাঁহার মুব কেবিয়া আবি ভরে বপরাবীর মন্ত যাখা নীচু করিয়া রহিলায়। একটু পরেই ভিনি হাসিতে লাগিলেদ। বলিলেন,—"ভোবার পরিকলপায় ও সাহসক্ষে ধন্যবাদ। তুমি যে আবার ইগলাবী পাদের বিষয় এতটা চিন্তা করেছ, আবি কিছু অতটা ভাবিমি। আবাকে আগে কললে পেদের ভিনটি নতুন গান লিবে দিতুর।"

আমি তাঁছার কথার সাহস পাইয়। মাথ। তুলির। বলিনাম,—"বাপনার সমরের পুর অভাব। এ ছাড়া বই ছেপে বের করতে অনেক দেরী হয়ে গেন। এই প্রুক্ত্ আমি তিনবার দেবেছি। শ্লেসের টাইপও আটক হয়ে রয়েছে। ফর্ম। স্ব প্রস্তা। আপনি মেহেরবানী করে একবার দেবে দিলেই, আগানীকাল ছাপ। আরম্ভ হবে। তারপর বই বাঁগাই হতে দোকানে উঠতে বে ক' দিন দেবী।"

ঘাসিতে হাসিতে প্রাক্ষের পাতা উন্টাইয়া তিনি শুধু বইবের বেক-লাগই দেবিলেন এবং ব্রিজেন, "বইবের নাম যে জনা "জুলফিকার" রেবেছিলাম তা তুমি ওন্টপান্ট ক'রে দিবছে। দু'ধবদের গানের একনে সমাবেশ। তোমার দেব। আমার বইবের প্রাক্ষে তুল থাকবে না, তা জানি; কিছ বেশিন প্রাক্ষ্ দেবে দিও।"

এই सुर्यार्थ जामि बिनाम,—'जुनिककान' छात्र। इहेरनरे जबनिहे शामश्रान खारा जिन, जाति

একটু চিন্তা করিয়া এই বইবের নাম রাখা হইল 'বদগীতি।' আবি প্রকৃষ্ণ চিত্তে রাতার নামিকা আসিবান, তাঁহার বাসা হইতে। দোকালে আসিবা বদক্ষকোজা সাহেবকে কর কথা বলিলে জিনি আনার হাতে হাত বিলাইয়া হাসিয়। বলিলেন, ''বল্লখড় কাজ করিবাছেন। এক বইকের পরিবর্তে দুই বই হইয়া গেল। আপনি না হইলে এই কাজ অনোর হাতা সভব হইত দা। আনার ভারতে লাই। আবিতো ভয় করিবাছিলার করি সাহেব না অস্বীকার করিবা বনেদ।''

করেক দিনের নথাই জুনফিকার বাঁথাই হইনা বরে জাসিল। দশবানা বই নিয়া কৰি সামেবকৈ দিনান। বইনের জঙ্গগোঠন দেখিনা আন্ত-ভোলা কৰি বুলীতে ভরপুর। জারাপর 'বরুলীভি'র চারি কর্মার পুন্দ্ দেখিনা যেন বুব জাশ্চর্য হইনা পোলেন। বলিলেন,—''এত ভালাভান্তি চার কর্মা শেষ করে কেলনো?'' আমি বলিলান,—''এই বইনে আশানার বর্তনান সববের একটি কটো দিতে হবে। এবল খেকে কটো বুক করে না নাখনে বই বের হতে দেবী হবে। সাত কর্মার বই পের কর্মান বিশেষণা, ''ভূমি দেখিই দাছোভ্যালা। ভোষার আনার এখেনাল মাধার চাললো কেন? বর্তনান আনার কোন বইনেতো আনার ভূমি খাকে না। বইনের ব্যালারে ভূমি না ক'রছ, তা ভোমার বালিকের দির্দেশ মত, দা ভোষার খেনাল মাধাক !''

चानि विनाम,—''वरे श्रकाणमा विवरत जानि या कपि, खाबारक खिनि क्यान जानिक करवन जा।'' बानिकः विनरमम,—''माक्या, करो। जूरम वार्थरमा। भीठ इस विम भरव अरमा।'' 'বদৰীতি চাৰ কৰা ছাণাৰ পৰ দেবি, আৰও পাঁচ ছবাঁট মৃতদ গাঁদ না বছলে, টাইটেল স্বেড বাঙা কৰা পুৱা বন্ধ লা। কৰি নাছেবকে বানাৰ বাইবা আৰও পাঁচ ছবাঁট গানেৰ পৰকাৰ জানাইবাৰ। তিনি বনিলেল,—"বৰ্তবাদে বেণাফোদ কোলাদীৰ বেকভিং বন্ধ আছে। এই বানে বিজ্ঞ বাইাৰ জৱেন কোলাদীৰ বেকভি হকে। তুনি চিৎপুৰে ঐ কোলাদীৰ গানেৰ বহলা অভিনে তিন দিব পৰ বাৰে।" তাঁহাৰ দিৰ্দেশ বত, চিৎপুৰ অভিনেৰ ঠিকানাৰ গোলে, দেবি, পৰওৱাজাৰ কোলাদীৰ লাবোৱাদ কাৰণ বনা আছে। আৰি তাহাকে কৰি নাহেবের কথা বনিলে নে আবাকে তিদ জনাৰ নিবা গোল। তথ্য বেলা পুই বাটকা। দেবি একটি ছোট ববে কৰি নাহেবে আৰা একজন লোক সহ বনিবা আছেন। তথ্য অদান কোন লোক নাই। আবাকে কেবিৱা ভিতৰে আনিতে বলিলেল। আৰি তাহালিলকৈ নানাৰ দিনাৰ এবং ধৰে প্ৰবেশ কৰিলে তাহাৰ পাৰ্লে বিনতে বলিলেল। আৰি তাহা বিনাৰ, কে, বলিক। তবে কে, বলিক আৰ লাই। এখন ছইতে ইনি কানেৰ বলিক।" তাহাৰ নিকট আবাৰ পৰিচৰ হইল আবি কৰিব নোজৰ প্ৰতিব। আৰি আবাৰ বিনিৰ নিবাৰ স্বিক নাহেবক নানাৰ বিনাৰ। কৰি আৱাৰ অনুক্ৰ কথাৰ উপযুক্ত নাই। অবাহিত আৱাৰ তাহাৰ পাৰ্লিত বলিলেল কিব নানাৰ বিনাৰ বিনাৰ, যদিও আৰি ঐসৰ কথাৰ উপযুক্ত নাই। অবাহিত মেহের এক অপূৰ্ব পৰাকাট।

বহিক সাছেৰকে দেখিলাব। দীপ্তিয়ান যুখ্যগুল। যাধায় কোঁকড়াগো চুল। তেজাদীপ্ত চাছনি। উনুত নাসিকা। দীৰ্ঘদেহী সুপুৰুষ। পৰিষামে যুক্তি, গায়ে সাদা টুইলের সাট।

জুনকিকার ও বদসীতির ছাপাদ বাপোরে উাছাদের মধ্যে কিনক্ষণ আপোচনার পর কবি সাছেব করেকটি পাদ, তাঁছার দিজত্ব একবাদা ছোট কটো, যাছা বদসীতিতে ছাপাদ ছইরাছে, তাঁছার গাদের ওতাদ ত্বর সম্রাট জবির উদ্দিদ বাদ সাছেবের দাবে 'বদসীতি'র উৎসর্গ পত্র, আবার ছাতে দিলেন। এই বইরে আর কোন গানের দরকার হইবে দা, ভাছাও জানাইয়া দিলেন। এবদ সমর চা ও দাস্তা হাজির হইল। আহার অত্তে তাঁছাদিগকে সালাব জাদাইয়া চলিয়া আসিলাব।

'জুনজিকার' বাহির হুইবার প্রায় এক মাস পরে, গজরুল ইসলামের সূতন ছবি সম্বলিত 'বলগীডি'' প্রথম সংভরণ, নোকসরাজে আত্তরকাশ করিল।

'জুলজিকার' ও 'বনসীতি' প্রকাশ করা উপলক্ষে, উক্ত পুত্তক্বয়ের পাণুলিপি কবির নিকট হইছে সংগ্রহের সময় মধ্যে, তাঁহার নিকট খন খন বাভায়াতের উপলক্ষে, তংকালীনে বৃদ্ধ বাঙলার প্রবিত্তমণা সাহিত্যিক, সজীত কলা-বিদ, বিখ্যাত কণ্ঠশিল্পী ও সাংবাদিকদের সহিত আমার পরিচয় হইবার মুবোর ঘটে। ইহা বাতীত সক্ষমনের ''কাব্য আমগারা'' ছাপার সময়, প্রতিদিন তাঁহার সজে উক্ত বইরের পাণুলিপি সংশোধনী মঞ্জানের বোর জেওরার অনেক শিক্ষাবিদ জানীগুণী ও সাজ্যিকাবের আনের সাহেবদের সহিত পরিচিত হইবার সংবোধ ঘটে। এই দিক দিরা নগন্য আমি—নিল্চর ভার্যাবাদ।

वाजश्रिकारक वर्षक्रि, म्वृष्टि-विम्वृष्टि-वाञ्च वीवरमत परायगार भौ क्रिया जूनि गरि जीवारमत वर्षा।

"जूनक्किन " ७ "नन्त्री छि" हाला १ है का वाकार नाहित है है वाब करवकिन लेव, बनरवारकाका नाइवय अक किन कानारक है वेकि नवा ७ लाँ है कि छ छ नावाद अक्वाना शास्त्र बांछा कानाव हो छ किन हो निर्देश होनिए होनिए निर्देश नाववक कार्यक नात्रिय । नाववान कह नाविद्या किरमा।" छिन ७ कार्य छवन छ छ रहे नववक कविनाहिछ कुक्य। लाँछोत्र शृक्षे। छ ने है कि है वाका वाका व বিশেষ করিয়া দুইটি লেখার প্রতি বিশেষভাবে দুই নিক্ষেপ করিয়া চমকিরা উট্টেলার। খাডার প্রথম পূর্চা হইতে কবি দক্ষেল ইসলাম সাহেবের স্বহুত লিখিত কবির 'বুলবুল' কবৈরে দক্ষ্টি ঝাল। ভাল পরের পূর্চা দুইটিই আবার ভাষাভবের প্রধান উৎস। কবির হুডাক্ষরের পরে অবশ্য জন্য কোকের হুড লিখিত আরও কিছু গান ও কবিতা আছে। প্রথম পূর্চা হুইতে যে ক্যাট 'বুলবুলের' গানের স্বাবেশ ভাহা হুইল:

5। बिनिया नवीकृत्म; २। निनि एडाव ह'म खानिया; ०। त्वन छेठांहेम बन-लेवान; ८। लवतानी बन-छेनानी; ९। त्वन बेत्राल प्रान् । त्वन खेत्राने । त्वन

এই ক্যাঁট গাণের পরের পৃঠায়, কবির নাম ও তারিব সম্বলিত আর দুইটি কবির স্বহন্ত নিবিত চারি লাইনের কবিতা,—নাহা আমার মনে আলোড়ন স্বাষ্ট করিয়াছে, তাহার অনুনিপিও পেওরা হইন:

स्वन्त त्वर्ण मृजू जानाम जानित्न कि এउ पिरन ?
वाकारम मृजूत विषास भू'नवी जानान जीवन वीर्त्य।
जन नाए नापी त्वर्य तमनू छम् कार्यन जाना तमा।
नार्जन এ-तम्बा छकारन श्रेडार्ड-- इत्न मार्थ जानि এका।
२०-२--२৮ क्षि
नाजि >हे। २६ निनिहे।

দিদের আলোকে ভুনিও ভোষার রাভের দু:স্বপদ,
উর্দ্ধে ভোষার প্রহরী দেবতা,
মধ্যে দাঁড়ারে ভুনি ব্যথাহতা,
পারের ভনার দৈত্যের কথা ভুনিতে কভকণ!
২৪-২-২৮
প্রভাত।

সেই ৰাভার এই ৰুইটি কৰিভার পরের পৃষ্ঠার, অদা লোকের হন্ত লিখিত বে দুইটি কবিতা; ভাহার অনুলিপিও দিম্নে দেওরা হইল।

> जिनात्त्र का निर्दाहिन्, जाव लिरब्ह मिरलिक जिन्होत्र।

হেখা বোর জিলে জিলে লাদ,
কলপ বৃহুজ্ঞলি পথুৰ জরিয়া করেছ পাদ
ছলর-অঞ্চলি হ'তে বন।
ওপো জুনি দিকপদ
হে ঐপুর্যাবাদ।
ভোষারে বা দিয়েছিনু, শে ভোষারি দাদ
গ্রহণ করেছ যত, ধাণী জড়
করেছ জামান।
হে বদু, বিদায়।
হে বদু, বিদায়।

এই कविजान भरतन भूडा

ভোষায় কিছু দেব বলে
চায় যে সামার মদ
দাইবা ভোষার থাকল প্রযোজদ।

গানের ৰাতায় কাহাৰও নাম নাই। কে সে-এই বাতার মালিক তাহাও মুবিতে পারিলার মা। পুষ্ট জনের লিখিত অতি সাধারণ একবানা ছোট গাদের বাতা কিন্ত তাহা আনার মনে এক বহাজিলাসা। কবির নিজ হাতের লেখা কবিতার নীচে নাম ও তারিখ সমলিত পেৰিয়া আমার অনুসন্ধিৎসু মদ চক্ষদ হইয়া উঠিয়াছিল। নিশ্চয়ই এইসব কোন বাজি বিশেষকে উদ্দেশ করিয়া দেখা। সেই ব্যক্তিকে আনাই আমার উদ্দেশ।

यात्र वनकरण्या नारश्वरक विकाम कतिनाम, "—याणिम এই बाङा काबाब लाईरमम कि इंदाब निक कि ?" जिनि शिनिमा बिन निल्न में भिर्म विन निल्न कि हो निवास कि शिन निल्न में यात्र विन निल्म कि विन कि वि कि विन कि वि

পরে তিনি আমাকে বনিয়াছিলেন যে উক্ত গানের থাতা, তাঁহার মাত্রুলার।, সমিসিটর শামসুজ্ঞোহা সাহেবের স্ত্রী,—কজিনাতুরেসা সাহেবার। তিনি বেশ কিছু দিন কলিকাতার ক্যাম্পারেল হাসপাত্রানে অস্ত্রুল অবস্থার থাকাকানীন সময়ে তাঁহার বিছানা হইতে তিনি উহা সংগ্রহ করিরাছেন। অবশাপরে ঐ থাতার আর বোঁজ হর নাই।

শাৰস্থক্ষোহা সাহেৰ ও কজিলাভুয়েসা লগুনে থাকাকালীন সময়ে উভয়েৰ মধ্যে অন্তৰজ্ঞান পরিবেশ স্টি হইবার স্থানার ঘটে। দেশে ফিরিয়া বিবাহিত জীবনে জোহা সাহেৰ কলিকান্তা হাইকোটে থোগ দেন, জাইনক্স হিসাবে।

याबीजी छीहात्रा बार्स बार्स रकान मिन निकान राजा बारात रकान मिन मकान भन्न अलाहात बूक हाछरम बानिएडन। रकान मनत बारात बिरमम् रकाहा अकार बानिएडन। छीहात बाना छान वर्ष मिनीहम कविता पिटड हरेंड बानारक। छान वरें मध्यरकत बाजिवछ छिन बानात छेला,—छाहात लहात बाना। আমি এম্পায়ার বৃক্ষ হাউদে পুশ্বক প্রকাশন বিভাগের কর্তৃতি প্রহণ করার কিছু কাল পূর্বে, কজিলাভুরেসার মারকতই, কবি কাজী দজকল ইপনাম উক্ত প্রতিষ্ঠানকে 'জুনকিকার' নামক একবানা গানের বই প্রকাশ করার সন্মতি দিয়াছিলেন। পূর্বে ইহা আমার জানা ছিল দা।

किनाजुरतमा मारहबात थेपन महान धमरबर मनम छाकारत्र निर्द्धन अनुमारी छाहार किनाजा काम्मिरबन हामभाजारन उठि कता हत। उपात्र मिनाजियान अभारत्रका स्थाप छोहारक धमन कताम हत। छोहारक किन् मिन छक हामभाजारन पाकिर्ड हत। छाकात उपात्र आनाधित स्थाप छिनार छोहात आनाधित स्थाप छिनार छोहात आत महान स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ।

এইভাবে गে कना। ভূমিষ্ঠ হয়, ভাহার নাম রাখ। হয়, জুলিয়াস সিজারের নামের সহিত সংবোগ রাখিয়া,—'জুলিয়াস জোহা।''

ত্রণ আমার সমৃতি-বিস্মৃতিৰ আর এক দিগন্ত শুলিয়া গেল। ইংরাজী ১৯২৭ সালে আমি করটিয়া কলেজের বিতীয় বাধিক শুলীৰ ছ'ত্র। জনাৰ ইব্রাহীয় খাঁ সাছেৰ ত্রণ কলেজের অধ্যক্ষ।

निजिने (क्रमात्र महाभाषित्यत এक्रा मनात्यत्य करमक मरमा द्वारहेटन थाकि। तम्हे ममत्र काणिएड भातिनाम, क्याँकाम मिन्नि कृष्त्री श्रात्यत्र क्रमाय उग्रारहण क्रानी बार्गत क्रिकाडूरज्ञमा मामक त्यात्र, हाका विभूतिणान्य इरेटड व्यक्त बारह এम-এ भीतिणात्र श्रीकात्र श्रीकात्र श्रीकात्र विभूतिणान्य इरेटड व्यक्त बारह अम-এ भीतिणात्र श्रीकात्र विभूतिणान्य इरेटड व्यक्त बारह अम-এ भीतिणात्र श्रीकात्र विभूतिणान्य इरेटड व्यक्त वार्यक अम-এ भीतिणात्र श्रीकात्र विभूतिणान्य व्यवकात्र विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य व्यवकात्र विभूतिणान्य विभूतिण विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिण विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिण विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिण विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिणान्य विभूतिण विभू

व्यक्ति व्यक्ति भिरिष्ठा भिर्मित्र पिष्ठि भिर्मित्र । उरकारमः निर्देश यानरमः नाइमा पर्भव यदाविह श्रीमः मुगलयाम राराय भर्षः यद्य नाराय विश्व विद्यामः विश्व भर्षे । उरकारमः निर्देश यानरमः विद्यामः राराय भर्षः यद्य नाराय विश्व विद्यामः । विद्यविनामः । विद्

উक्त चीन गार्टिन छवेन नन्द्रम अग्राद्धिन आती चीन भन्नी गार्ट्टिन अग्राक्त अर्टेटिन अर्टिन अर

(मोक्षा गाष्ट्रं এই গাণের খাতাখানা আমাকে কেন দিলেন এবং ইছা আমার कि काष्ट्रं नाशित्रं পাঙ্গে এমন সময় মনে হইল 'বনগীতি'র কোন্ পৃষ্ঠায় বেন এই ধরনের একটি কবিতা আছে। এই বই আমার হাতেরই ছালা। তথনই একখানা বই লইয়া বইয়েব শেষ দিকে একানব্বই পৃষ্ঠায় হদিস মিলিল।

পূর্ব উলিখিত চারি লাইনের দুইটি কবিতার প্রথমটিকে আট লাইনে পরিবতিত করিয়া এর বিতীয়টিকে বর্ণায়খা চারি লাইনে রাখিয়া, মোট বার লাইনেব একটি কবিতা। উহার শিরোনাম দিয়াছেদ,— গাদ। এই বইয়ের প্রত্যেক গাদ, গল্পন ও ভল্পন ইত্যাদি কবিতারও বিভিন্ন স্থব উমেধ করা আছে। অখচ এই গাদের কোন স্থব দেওয়া হয় নাই।

श्चम जाहे माइत्मित्र भव हासिह विवास हिक, संबंध ह्यांहे डाइका बिहा कविडाहित्क नूर डात्म डाम क्या रहेबार्छ। আমাৰের আলোচা, দুইটি জিলু তারিবেদ কৰিব চান্তি লাইদেন দুহটি কবি চান্ত কৰি লাইদেন দুহটি কবি চান্ত কৰা কৰিব চান্তি লাইদেন দুহটি কবি চান্ত কৰিব চান্ত

वनभीजित श्रेष्ठ नार्कत्र काराविक भिक्ति थाकित्य अवर छक्त गाटन्य थाजाबामा विमार्थेश मिवित्य गात्राव मिवीव यथार्थका छेभगिक कविएक भावित्यम।

श्रुकान भारक रव नवक्रम देगनार्थक दखाक्य महनिष्ठ छक्त भारमब बाछाबामा भवक्रम এकार्छ्यीरङ मःबक्षिण बार्छ।

এक क्षिन विषक्र काला गारहबरक विनिधान.—''এवेन वृश्विवाछि, किन वाभगाव गारनिव वीखीवाध वाबारक विवारहम।''

তিনি হাসিতে হাসিতে বলিলেন, 'বন গীতির বেবের গানটি দেখিয়া খাতাটি আপনাম হাতে দেওনাই বিব সিছান্ত করিয়াছিলাম। আপনি যে মানার উদ্দেশ্য বুরিতে পারিছেন, ইয়াই আনার আলজ্বি।'' পতি-উত্তরে আনি বলিলাম, 'কনি সাহেবের হস্তাক্তর বাতীত অন্য দেখাগুলি যে কারার হাতের বেখা, তাহা অজ্ঞাতই রহিয়া গেল। আর সা হয় নাই জানিলাম।''

जत्यागक तजक्रम

चावकुन कामित्र

কালী সজ্জন ইসনামের নের্থক-জীবনের পরিধি ১৩২৬ সজান্দ বোডাবেক ১৯১৯ বৃশ্চানদ থেকে ১৩৪৯ বজানদ বোডাবেক ১৯৪২ খুটানদ পর্যন্ত-প্রিকা, শারুর ১৪ বছর। সামরিকপত্ত্র প্রকাশিত তাঁর প্রথম কবিজা: 'মুক্তি' (বজার মুসনাম সাহিত্য-প্রিকা, শারুর ১৩২৬)। বিজীয় কবিজা: 'কবিজা-সমাধি' (সওগাত, আশ্রিম ১৩২৬), তৃতীয় কবিজা: 'আলায়' (প্রবাসী, পৌষ ১৩২৬), চতুর্থ কবিজা (গাধা): 'চিঠি' (বজমুর, বৈশাধ ১৩২৭) এবং পক্ষম কবিজা: 'কালোর উকিল' (মূর, জ্যৈষ্ঠ ১৩২৭), অথবা 'বোধম' (বোসনের ভারত, জ্যেষ্ঠ ১৩২৭)। 'আলায়' হাকিজের একটি গজনের অংশবিশেবের অনুবাদ এবং 'বোধম' হাকিজের 'রুসোকে ভ্রম্ গশ্তা রাজ্ আরেষ্ ব-কিমান গর্ম বর্ণের' সামক গজনের ভারামুবাদ।' ১৩২৭ কাভিকের 'রুজানুরে' তিমি 'রামী' অবলবনে দেখেন 'বালীর বাধা'। সজক্ষনের কবি-জীবনের সেই সূচ্যাভেই দেখা গেছে: মৌনিক কবিতা রচ্মার সজে সজে কার্মী থেকে অনুবাদের দিকেও তাঁর ঐকাভিক আগ্রহ।

সেই প্রথম জীবনে ইংরেজি থেকে বাংলা গলো কিছু জনুবাদও তিনি করেছিলেন। ১৩২৭ বৈশার্থের 'বলীয় মুসলবান সাহিত্যপত্রিকার সংকলন' বিভাগে 'জননীলের প্রতি', 'লিগুর খুঁটিনাটি বিশেষ্য' ও 'জীবন-বিজ্ঞান (দু:খ-কটের বছর)' শিরোনানে তাঁর তিনটি ছোট কেবা ছাপা হয়; তার শেষে বন্ধনীয় বধ্যে বুল্লিত আছে: ''Englishman-এর Magazine Section'' হইতে। এ লেবাগুলির ভাষানৌকর্ব দেখে বনে হয়, ইংরেজী বালবর্শ্লা অবলহনে লেখা হলেও এগুলি ছবছ জনুবাদ নয়। তবু নজকলের জনুবাদ-কার্থের খতিয়ান লিখতে গোলে এগুলিরও উল্লেখ আবশাক।

১৩৬৯ জৈছের 'পূনালী'তে জনাব আতোয়ার রহমান 'অনুবাদক ঘজকল' প্রবদ্ধে বলেছেন:
'হাফিল এবং ওমর বৈধানের রুবাইগুলির অনুবাদ এবানে প্রকাশিত হয় মাসিক 'রোহাম্মনীতে
——দজকলের সাহিত্য-জীবনের প্রথম পর্বে। তিনি হুইটম্যান এবং হাফিজের কবিভার
অনুবাদও করেন এই সময়েই।..তিনি কোরান শরীক এবং 'দেওয়ান-ই-হাফিল'-এর অনুবাদ
ভক্ষ করেন প্রায় একই সময়ে।

>. मककरनद ''क्यादेश१-दे-७नद रेग्वान' अरस्त कृतिकात रेन्द्रण मूक्कना कानी नरमाक्त : "कानी नारहरक अन्य कीनरम बहना और कानी कविछानित वांकना कानूनाम करमरकादे परम बाकर मारह । 'रामाद माहाइ रामाद माहाइ वांकन माहाइ कानूकार 'गाउन काम्य पाउन काम्य 'में मूर्तिक काम्य ।''-->>>१ कार्यक 'रामारम छ।वर्ष' अक्षिक क्ष मककरम 'गाउन्देग्-काम्य',--छ। 'वानूनाम' मद, योगिक कविछा---अकडि इवि रमस्य दिख, रा इवि मूजिङ कार्य मिलावा किराधंड- piece-इर्ग अन्य दिव मिलावा कार्यक विकास स्वाप्त कर्मित क्षेत्र ।---रामाय ।

क्षि पात्रता वर्ज्य एरवर्षि, मणका क्याठीय भागितियाम पाथर है 'मैशियान-दे-वाक्षिय' भारक करवकि भाषरका पनुवास में इ क्यिरविक्टनम । डिनि ब-श्रमस्य डीय 'क्यादेशप-दे-हाक्कि' भूषरक्य 'मृचवरक' वरणस्य :

আৰি তৰ্ম ছুল পালিৰে ৰুছে গেডি। সে আজ ইংরিজি ১৯১৭ সালের কণা। সেইবাদে প্রথম আমার ছাকিজের সাথে পরিচর হয়। আমাদের নাজালী পদ্দদে একজন পাঞারী নৌলভী সাহের পাকতেন। তাঁর কাছে জবে আমি কাসি কবিদের প্রায় সমস্ত বিব্যাত কারাই প'ড়ে কেলি। ...এর করেক বংসর পরে ছাফিজের 'দীওয়াদ' অনুবাদ করতে আরম্ভ করি।

ভার 'কাব্যে আমপারা' (১০০৮) প্রকাশের প্রায় ১১ বংগর পূর্বে, ১০২৭ সালের অপ্রহারণ, পৌষও বাব সংখ্যা 'বোসলেন ভারতে', সেই 'অনুবাদ' থেকে ছ্যাট 'গজন' প্রকাশিত হয়। ১০০০ পাবশের 'প্রবাদী'তে ভার 'দীওরান-ই-ছাফিজ': 'গজন—৭' প্রকাশিত হয়; ভাতে শিরোদারের নীচে বন্ধনীন বব্যে দেখা আছে: 'প্রথম ছ্যাট গজনের কবিভার-অনুবাদ 'বোসলেন ভারতে' বেরিরেছিল। এগুলি হব্য অনুবাদ দর। ভার-অনুবাদ বন্যা বেতে পারে।'' ১০০০ বৈশাবের বন্ধীর মুসলনান সাহিত্য-পত্রিকার 'দীওরান-ই-হাফিজ' থেকে অনুদিত ভার আরু একটি 'গজন' প্রকাশিত হব। এ-সকল অনুবাদে নজক্রন মুলের ভারও ছেলংখবলি যথাসন্তব রজায় বেবেছেন। 'গজন'—২' বেকে দু'ছ্ত্র উদ্বত কর্মছ:

এবানে প্রতি চরণে চারিটি পর্ন (measure) এবং শেব পর্নটি অপূর্ণ; পূর্ণপর্নে চারিটি অর (Syllable), তন্যুনো প্রথমটি বুজনন এবং অবশিষ্ট তিনটি বজনা; চরণ-প্রান্তের অপূর্ণ পর্বটিতে তিনটি অর, তন্মনো প্রথম ও তৃতীরটি বজ এবং বিতীরটি বৃক্ত। উপনোক্ত চরণম্যে প্রমানের (accent-এব) এরূপ পর্নার্যনিন্যানের লক্ষন তাঁর চন্দে কার্যনির লন্দ্র-জক্ষ-প্রনিব তরজ স্পষ্ট সম্ভব মরেছে। নজক্ষনের সূক্ষ্য চ্লাংশ্রুতি তাঁর অনুপিত গজনেও এনে দিরেছে ববৃত্ব গীতিধভার। নজক্ষন বেবানে ছলকে স্বাক্তনা দিরেছেন ভাবের কম্পনোকে, সেবানে বাশীর সাবেদনে হরেছে অবিক্তর তীক্ত ও প্রাণ্ডর। উপরোক্ত গজন—৭' থেকে নজীর তুনছি:

यन- यतृतीत नानि' 'वित्रष्ट'-खूकनी किंग्यिन कारना क्य-बाह्म, क्य नृत्य' निष्य क्यों 'विष्ण्य'-यनी क्यां निष्य शिवा त्यकारम। ख्य अरमाष्ट्राम बाबू यूर्वा त्यम यम चारमा निष्ठ त्यम बीविवादम, बाह्मा क्यां चामि खारमात्यरम त्यस क्रांस क्यां किवि कीविवा त्य। উপৰোদ্ধত গজনটি ৰাত্ৰাৰ্ম্ভ (MORAIC) ছলে বিৰচিত; তাৰ প্ৰজি চৰপেৰ পোড়াৰ একটি বিৰাত্ৰিক অভিপৰ্ক (hyper-measure), অতঃপৰ চাৰিটি পৰ্ব, তন্যুধো প্ৰথম ভিনট পৰ্ব ঘল্যাত্ৰিক এবং চতুৰ্ব পৰ্ব টি চতুৰ্বাত্ৰিক। সভ্যোক্তনাথ দত্ত হাকেক' অবলঘনে 'প্ৰিয়া মৰে পালে' লেখেন; তাৰ থেকেও চাৰ ছত্ৰ তুলছি:

व्यानात्मन এই প্রেনিক সনাক্ষে আতর নাভার দাই, প্রিনান কেশের স্থাভিতে নোরা মগদ সর্বদাই। শরের মুনলী শুনি আনি ওগো সমন্ত কান ভরি' 'অ'।বি ভরি' দেখি স্থার পেরালা—তব রূপ স্থারী।

--[जीर्च गनिन]

সভোন দত্ত (১৮৮২—১৯২২) এ অনুষাদ করেছেন প্রচলিত নবু-ত্রিপদী ভঙ্গীর মাত্রাবৃত্ত ছলে। কিন্তু এ অনুষাদে ফারদীর ধ্বনিবৈচিত্রা ও ভাববান্ধনা কতনানি প্রকাশ পেরেছে। আতোরার রহমান কি বলতে চান যে, এ অনুবাদ 'বৌলিক কবিভার বজা', আর দক্ষরদের অনুবাদ ভার অপেকা 'বীল্য'।

হাকিজের স্থাসিক 'আগর অ'। তুর্কে শিরাজী' গজনটির অনুবাদ মোহিতদান বজুবদার (১৮৮৮-১৯৫২) করেছেন এভাবে:

শীরাজের সেই তুরাণী রূপগী

(वप्रवर्धी

यणि क्यामणिम मध्य क्यांच्य এ

সুৰ্থ-হাদান,

नान (म भक्तम काता जिन्हित

वष्टम भी

नित्व नित्त भावि गयवकण

(वार्याता जाव।

(महेक नवान भएक जाएक (नेय-

हारना गांकी!

(बर्हण्टाक (न षायना अवम

चारक् मा कि?

(बाक् भावारम्य मीन महस्वय

कि नात्राहि

श्वन-भंगार्गान श्रीहि अवग

नुगलांत ?

--(चनकनानानी, 'वाक्तिक वनुमहर्व')

व जन्तरण हतत्व भर्तरचा मूल (पंटक दिनि हत्तव भर्वशिव भ्वतिमित्राचे ७ विमाल विक्रिय व'टल काटबाब जाटबान हत्त्वह स्वत्रधारी। कात्रणी जावह व जाटबाब जाटबान हत्त्वह स्वत्रधारी। कात्रणी जावह व जाटबाब जाटबान हत्त्वह स्वत्रधारी। कात्रणी जावह व जाटबाब हिंच श्रवाह । वज्ञ क्ष्म काटबाह हिंच थ विक्रिय —गंजरण या भन्न कात्रा।

त्वि श्वित्व व्रश्नान महिलावरत्व 'वाद्यशावात' ()৯১৪) श्रष्ट शक्तिका एवति गव्यवत्व भगानुबाद व्यक्तिक श्रक्ति श्रक्ति श्रीका श्रीकरव्य स्वित्राक 'द्राक्तिक प्रवित्राक 'द्राक्तिक प्रवित्राक 'द्राक्तिक प्रवित्राक स्वाक्तिक प्रवित्राक स्वाक्तिक स्व

> गाँउ एर गांतक, गाँउ एर त्रवृत्त नूजन नूजम बन्नदम, जूनिया ननिज स्वयूत्र स्व नूजन नूजम बन्नदम।

এ সাক্ষরিক সনুবাদ (literal translation) इत्ति कावारगोन्पर्य क्ष्म्यन्ननी इत्याक कि वा विठार्व। ১৩৩१ मावत्वत्र 'अवजी'रण मक्क्रम द्याकित्वत्र উপব্যোক্ত গভলাইর ভাষানুবাদ ক্ষ্মেন এতাবে:

याता नुष्ठा मुष्ठमण्ड लीगां औष्टि गार्भध्यामा। याता जीवा नोत्रांस होत्ता, कत्ता कत्ता क्षम योगा।।

राक्टिका 'मीश्याम' (चेटक नकक्रम थाहि कडशमि शक्याम यनुनाम करनम, छात्र महिक खामिका देख्याच क्या (बट्ड भारत।

আতোরার বহনান ''হাফিজের রচনার মনুবাদ'' প্রদক্ষে ক্ষচন্ত মজুমদারের 'সম্বানশতক' (১৮৬৪) কারাবানির নাম উল্লেখ করেছেন। ক্ষচন্ত মজুমদারের ''প্রকৃত মজু মখুর,'' ''দুঃল বিদা সুব হয় না'' প্রভৃতি পরার ছলের পদাগুলি জুলপাঠা পুস্তকে আজগু সংকলিত হয়ে খাজে। প্রবাক্ত ১৪-পংক্তির পদাটির শেষ শ্লোক—

> हारकरका थिय गाँउ पाँउ गुन्स्मा, य करत गाँन थिय गाँउ गाँउ । ——(गडांबन ७क, ১৫ गुः)

विजी हो । भिर्म भगहित भगहित भगहित । विवय विवय-विश्व-छत्र,
वास्त्रण । विवय क्षित्र क्षित्र ध्रम ।
----[महाबन्छक, ৮১ गृ:]

वनावादना त्य, हाक्यि (पंटन छोन निराहे क्काइस नव्यापात अ-मकन कविछा तहना करवय। किस छोत वह (त्रोवन अवना त्य, जास (पंटन धाव अक्टमा वहन जारन ১२१) नारनत)का जान्तिक छोत 'मडाव-नंडक' धकारनत करन देनानी-कवि हाक्यि बामानी शांठक-माबादर्गत वर्ष पर्य अविकिछ हरमहिरनम।

তার প্রায় ১৩ বছর পরে (১৮৭৭ খ্রীস্টাব্দে), ভাই গিরিশচক্র সেনের 'হাফিল' (দিঞ্জান-ই-হাফিলের অনুবাদ, প্রথম গণ্ড,) আনপ্রকাশ করে। ভক্তর মুহত্মদ শহীসুমাত্র 'দীগুরান-ই-হাফিল' প্রথম সংকরণ প্রকাশিত হয় ১৯৩৮ খ্রীস্টাব্দে এবং অধ্যাপক কালী আকরম হোসেনের ১৯৬১ খ্রীস্টাব্দে, —নজন্মলের অনুবাদের অনেক পরে। গিরিশচক্র সেনের মত্যে এঁরাও হাফিলের ''অনুবাদ করেছেন ইংরেলী থেকে'' নয়—মূল ফারসী থেকে।

2

গিরিশচক্র সেনের 'কোরান শরীকের তর্জনা' প্রদক্ত আতোরার রহমান বলেছেন: ''তাঁর (গিরিশচক্র সেনের) প্রায় সমসাম্যাকিকালেই আবোস আলী নামে একজন মুসরিম স্থাও কোরান শরীকের বাংলা অনুবাদ প্রকাশ করেন।'' কিন্ত প্রকৃতপক্ষে গিরিশচক্র সেন (১৮৩৫—১৯১০) তিন বত্তে 'কোরান শরীক' অনুবাদ ওপ্রকাশ করেন ১৮৮১ — ১৮৮৫ প্রীস্টাকেল; আর মওলানা মোহাম্মদ আব্বাস আলীর 'কোরান শরীক' বাহির হয় তার প্রায় গিকি শতাবদী পরে—১৯০৯ প্রীস্টাকে। বাঙালী মুসলমাদদের মধ্যে কুরআন শরীকের প্রধ্য অনুবাদক মওলানা মোহাম্মদ নাইমুন্ধীন (১৮৩২—১৯০৮); তাঁর 'বজানুবাদিত কোরান শরীক প্রথম বত্ত প্রকাশিত হয় ১৮৯১ খ্রীস্টাকে; তিনি দল পারা অনুবাদ করেন; দশম পারা ছাপা শেষ হওয়ার অব্যবহিত পূর্বে তিনি পরলোকপ্রাপ্ত হন। মঞ্জনের 'কাব্যে আমপারা' প্রথম সংকরণ প্রকাশিত হয় ১৯৩৩ খ্রীস্টাক্ষ মোতাবেক ১৩৪০ বজাবেশ—'দীওয়ান-ই-ছাক্ষিক্রের অনুবাদ শুক্র' করার প্রায় ১৩ বছর পরে।' দু'টি নমুনা তুর্জি—

ৰল, হে বিধমিগণ, তোমর। যাহার পূজা কর, আমি পূজা করি মা তাহার।

- [स्वा कारका

जूमि कि (मध्यष्ट्, नत्न वर्ग मिथा। (यह १ भिजुदीम जाड़ादेवा (भग्न, वाक्ति এह।

—[च्या गंडम]

এ कावानुबाप खडाछ रूर्वन। मूलिय डार्तिय श्रेडि भूर्व बामूनेडा मःत्रक्रव क्यांड श्राह्य व'लिये अस डायाम अवः छुट्न रेमिना श्राह्य वार्ति वार्ति वार्ताप्रक।

२. मक्करमध 'मनाहेश--हे-अन्य देनवान' अरक्त ज्विकाव रेनश्त नूक्करा जानी नरमरहन: ''अनि (मक्कन हेनमान) मूत्रारमय त्या ज्वारमय त्या ज्वारमय त्या ज्वारमय त्या ज्वारमय त्या ज्वारमय व्यवस्था व्यवस्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यव

नवक्रम अकारक्रमी भक्रिका | ১२৮

कं वर्ष । उस नहबंग

১৩৩৭ বৈশাৰ নজকন 'ক্ষবাইরাং-ই-হাকিজ' জনুবাদ শুক্ত করেন। তাঁর জনুবিত ১০টি ক্লবাই ১৩৩৭ জৈতির 'জরতী'তে প্রকাশিত হয়। উক্ত ক্ষবাইনশকের কবির স্বয়ন্ত লিখিত প্রতিনিশি 'নজকন-রচন্য-সম্ভায়' পৃত্তকে শোভা লাভ করেছে। এ-গুছের শেষ ক্ষবাইটি:

वम्-वाडीति (योगडी कम्''পान करत এ भागाव याता,
रायन गरत एडामि क'रत
स्थातत भारत डेंडरव डा'ता।''
डाई ड जायि गर्वम। बई
भागाव धरः धियात निर्म,
करत स्थरक डेंडरव गास्थ
धर्म भागाव धरे मिन्-भिताता।।

১৩৩৭ সালে ক্সকাতার 'পরতাজ চক্রবাতী এও সন্দ' নজক্রনের 'ক্ষবাইরাথ-ই-হাজিল' পুজকার্কারে প্রকাশ করেন। এ-পুস্তকের ক্রবাইগুলি ''এবানে প্রকাশিত হর সাসিক 'যোহাজ্বী'ডে—সজক্রনের সাহিত্য-জীবদের প্রথম পর্বে''—জনাব খাতোয়ার বহুমানের এ-বারণা ডিভিছীন।

X

১৩৪০ কাতিক, অগ্নহারণ ও পৌষের বাসিক 'নোহাত্মদী'তে সজক্তনের অনুসিত ওবর বৈবাবের ৫৯টি কর্বাই ধারাবাহিকরপে প্রকাশিত হয়। তাঁর 'ক্যবাইথাৎ-ই-ওমর বৈবাব'' গ্রহাক্ষায়ে প্রকাশিও হয়েছে তার প্রায় ২৬-বছর পরে—১৩৬৬ পৌষে, তাতে স্থান লাভ করেছে ১৯৭টি ক্ষবাই। প্রথম ক্ষবাইটি এই:

वाटन बाँछन मीर्ग कंदम सामन ७७ वे প্रভाड, जाटना मानी। मनान दननान द्यांनानि छाटका सामन मान। ट्याटना ट्याटना नियाय-म्यूडि। अमिन প्रछाड सामद टिम, बुँक्ट द्याटम अपेनाटन ट्या, मन्द्रम स्कून नग्रमणाङ।

কিন্ত বাসিক 'বোহাম্মলী'তে প্রকাশিত ১ নং ক্লাইটির রূপ ছিল এই :
পূর্বাপার ঐ বিহিন্ন হামে ডিনিয়-বিদার কিন্তপ-তীব,
কার্থসক্তর লাল পিরালার ঝবছে যেন মদ জ্যোডির।
ভোরের শুর ফেনীমূলে ভাক দিরে কর মুয়াজিন্—
ভাগে ভাগে, প্রশাদ পেতে উমার মটের লাল পানির।

न्द्रेड्डि (एवं। वात्क्, नवर्डीकारण मक्कन छीत्र जनूबान धरबाजन बर्डा निवर्डन करबन। क्वारेश्वनि मक्डिड करबन मूडनडारब। रबबन, वातिक 'रबाहाक्षी'रड धकालिड २ मः कवारेडि धरह रखाक्ष ३२৮ नः कवारे। वानिक 'रबाहाक्षी'त ३५ मः छ ३९ नः कवारे पू'डि एरबर्छ धरब मर्वराव

बीय-वर्ग । २०५८

वकारक्यी निक्रिका । ३२३

১৯৬ দং ও ১৯৭ দং কৰাই। গ্ৰন্থে কোনো কোনো কৰাইয়ের চরণ-বিন্যানেও বদল হয়েছে। বেষন, বাসিক বোহামদীতে প্রকাশিত ৪ দং কৰাই গ্লন্থে হয়েছে ১৬২ দং কৰাই এবং এতে বালেকার প্রথম, বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্থ চরণ যথাক্রমে হয়েছে বিতীয়, চতুর্থ, তৃতীয় ও প্রথম চরণ।

ক্ষাই ছ্ল:তবক (metrical stanza) বা পদবন্ধ বিশেষ, তাতে চারিটি পদ বা চরণ বাকে; ভার প্রথম, বিত্তীয় ও চতুর্থ চরণে মিন হয়, তৃতীয় চরণ সাধারণতঃ অমিন (blank) বাকে। আইবিশ কৰি এডোয়ার্ড কিট্রেরান্ড (Edward Fitzgerald : ১৮০৯—১৮৮৩) কার্মী ক্লাইয়ের এ গঠন-পদতি নজায় রেখেই ইংরেজিতে ওমর বৈনামের ক্লাইরাতের এক স্বাক্ত্রল অনুবাদ (free translation) বেনাইতেও প্রকাশ করেন। ১৮৫৯ বৃষ্টাবেদ তার Rubaiyat of Omar Khayyam প্রথম সংজ্বন প্রকাশিত হয়, তাতে ৭৫টি ক্লাই মন্তর্ভুক্ত হয়েছিল এবং ছাপা হয়েছিল বাত্র ২৫০ কপি। ১৮৬৮ খ্রীস্টাবেদ তার সজে ৩৫টি ক্লাই যোগ ক'রে বিত্তীয় সংজ্বণ, প্রকাশিত হয়; কিছ পরবর্তীকালে সে-সংজ্বণের ১৪, ২৮, ৪৪, ৭৭, ৮৬, ৯০, ৯৯ ও ১০৭ সংখ্যক ক্লবাই মটি পরিত্যক্ত হয়। প্রত্যেক সংজ্বণেই অনুবাদে'র ভাষায় কিছু কিছু অক্লয়র্জনা করা হয়। আবরা মাণে দেবিয়েছি যে, মঞ্জাল ওমরের ১ নং ক্লবাইটির যে অনুবাদ প্রথমে প্রকাশ করেন, পরে তার পরিবর্তন করেন। ক্লিট্রেরাল্ডের প্রথম সংজ্বণে এ ক্লবাইটির যে মুবাদ :

Awake! for Morning in the Bowl of Night
Has flung the Stone that puts the Stars to Flight:
And Lo! the Hunter of the East has caught
The Sultan's Turret in a Noose of Light.

ठलुर्व गः**क**राप (১৮৭৯) এর অনুবাদ---

Wake! For the Sun, who scatter'd into flight
The Stars before him from the Field of Night,
Drives Night along with them from Heav'n, and strikes
The Sultan's Turret with a shaft of Light.

किहर जन्म महाज्य महाज, अमन-देवप्राम शिरमन वज्ञाञ्चिक ज्ञाश्वर्णा (the material Epicurian)। जनाभिक्य मिलिंग निर्मानाहमन महाज, अमन देवशाम शिरमन शिक्टियन महाज्ञा मनमी मूकी (mystical Sufi)। अहे मूहे महाज्य ममर्थकरणन विजर्भ समाविधि निन्निम श्वाम अन्य क्लारिम श्वाम विजर्भ समाविधि निन्निम श्वाम अन्य क्लारिम स्वाम स्व

बिधाम (कः विधादार्थ विकास निर्माण्ड् लाव कावार्य मान क्षित्राण क मानाङ् बरमाण्ड क्षित्राक जाजन् जामान क्ष्मत्राण् दुनुत्राण् लाहान काजा बत्रायनमाण् बकुरवार्यञ्

भवकरम्य चन्याप-

देशान त्य छात्मन छानू कन्नल तमलाहे चाकीनम.
चिन्नित्र शे पंड तम चाक महेर्ड महम चमहम।
डाँन चीनतमन मृज्ञ शिन नृजु की ि कार्तिना हान्न,
चुनान मात्य निकास छात्र छाहे मिन्नित्र मानामग्रन।

बूत्वत श्रीष्ठि माधानुमारत यनुगठ (भएक मक्कल এ अनुवाध करतरण्य। जाव ও एक बृतामुश्रेष्ठ व'रत जांत अनुवाध काषाव काषाव

১৩৬৯ পৌদের 'পূনালী তৈ ভক্টর গোলার সাকলাযেন ক্লাইয়াৎ-ই-ওরন পৈয়ামের "অনুবাদক ছিলেৰে কান্তি বোদ, নরেন দেন, সভোন দত প্রমুখ কবির উদ্রেশ করে জনাব আতোরার বছরানের মতে সার দিয়ে বলেছেন যে, "তারা মূল কবিতার আজিকেন অনুসৰণ করেন নি।" আতোরার মছনান শাইত:ই বলেছেন: নজকল 'রুনাইয়াৎ-ই-ওরর বৈয়াবেন' অনুবাদে "আশুর নিয়েছেন স্বাসরি কার্সী আজিকের" এবং "এর আগে কার্সীর আর কোনো অনুবাদে ক্রাইয়ের আজিক পুরোপুরি অনুক্ত হয়নি।"

নজকলের অনুবাদেব প্রায় ৩০ বছর আগে, অফারকুনাব বড়াল (১৮৬৫—১৯১৮) 'ওয়াবের অনুবাদ ও অনুসবণ' ক'বে বাঙলা ভাগায় প্রথম রক্ষাই পরিনেশন করেন। তাঁৰ অনুধিত ৮০টি শ্ববাই জিল কিন্তিতে, প্রথম ২৯টি ক্ষরাই ১৩১১ বৈশারে, ৩০ পেকে ৫৩ সংখ্যক ক্ষরাই ১৩১৮ বৈশারে এবং ৫৪ থেকে ৮০ সংখ্যক ক্ষরাই ১৩২১ জ্যোষ্টে, 'সাহিত্য' পত্রিকায় প্রকাশিত হয়। তিনি ১নং ক্ষরাইয়ের অনুবাদ করেন এভাবে—

यात्र युवारता ना, शिष्ट, त्वमङ नयन। श्रीकारण कुरते, कुरते श्रीकाक-किन्न। श्रीकारकनी निनीशिनी श्रीय ज्वारम यक्ष्य कुड़ार्य जीव छ्डाम बङ्ग।।

জ্ব বড়াল তাঁর অনুবাদে কারণী ক্লবাইর বিলমিনাান (rhyme structure) বজার বাবেন। তিনি এক্টেরও তাঁর প্রির অক্ষর্ত ড্ল বাবহার করেন। এই গদাবিক ড্ল স্পানীর ভাব বৃহদের জন্য সবিশেষ উপবোগী; কিন্ত কারণী ক্লবাইর 'বিষ্টিক' ভাব, লবু 'হিউবার' ও অগ্নিগর্ভ 'প্যাশন' প্রকাশের পক্ষে এ ড্লা কতবানি অনুকূল নে পরীক্ষা অভংপর আর কেন্ট করেন নি। ১৩১৫ সালে সভোজনার বভরে 'তীর্মনিলন' প্রকাশিত হয়; ভাতে 'ক্লবাইরাং' শিরোদানে 'ওবর

বৈয়াৰ' থেকে ১এটি ক্লয়াইৰ অনুবাদ পরিবেশিত হয়েছে। তাৰ প্রথমটি হচ্ছে ক্লিজেয়াতেজৰু প্রথম সংস্করণের ১১নঃ ও চতুর্ব সংস্করণের ১২নং ক্লয়াই—

> वगण्हाताय कविजात भूँभि भाष्ट मिन এकथामि, भाष्ट यिन এक भौज बनिया, जान यिन जूबि, जानी। गि-विजाम बात्र भीएन विग्रा गोष्ट भी मनुन भीम, विजाम करेरव पर्श जावाद, जृथि मिंडरन श्रीम।

শতোদ দত্ত এখানে ক্লৰাইর বিল-পদ্ধতি রক্ষা করেন নাই, তাঁর 'প্রিয়া যবে পাশে' কবিতার ছন্দ—
যদ্যাত্রাপবিক নাত্রাবৃত্ত—ব্যবহার করেছেন, ফলে এর অজে নেগেছে নবুর গীতিকবিতার আনেজ।
বাঙ্কার লোকচ্ছন্দ (folk metre) স্বরবৃত্তে ওবরের ৭৫টি ক্লবাই অনুবাদ ক'রে কান্তিচক্র ঘোষ
১৩২৬ সালে তাঁর 'রোবাইরাৎ-ই'-ওবর বৈয়ান' প্রকাশ করেন। তার ১নং ক্লবাইটি এই:

রাত পোহালো—শুন্ছ সধি, দীপ্ত উষার যাঞ্চলিক?
লাজুক ভারা ভাই তদে কি পালিয়ে গেছে দিগ্রিদিক।
পূব-গগদের দেব্-শিকারীর স্বর্ণ উজল কিরণ-ভীর
পড়ল এসে রাজপ্রাসাদের বিদার দেবা উচ্চশির।।

কাজি বোকের অনুবাদে তবক হচ্ছে দু'টি সমিল শ্লোকের (rhyming Couplet—এর) সমষ্ট,—তার গঠনেও কবাইর ছাঁদ অনুসত হয়নি। কিন্তু স্প্রচলিত শ্ববৃত (Syllabic) ছলের চটুলতা ও লাসাগতি তাঁর অনুবাদকে করেছে লোকপ্রিয়। তাঁক অনুবাদকৈ করেছে লোকপ্রিয়। তাঁক অনুবাদকৈ করেছে লোকপ্রিয়। তাঁক অনুবিদ্ধ হয় বিজয়ক্ষ বোদ সাহিত্যবন্ধ কর্তৃক অনুদিত 'রোবাইরাং।' ১৩২৯ কাতিকের 'সহচর'-এ এই অনুবাদধানির পরিচয়-দান প্রসঞ্জে এক প্রবন্ধে প্রভাতচক্র চটোপাধাার লেধেন:

बारना गाहिएडा छत्रस्तत्र काबाख्या गिक्म्टम्त उ्छीव धवाग विकय बाबूत 'स्तावाहेबार।'---छीव जन्नाएम्त এको वित्यय एमि এहे या, जिनि छत्रस्त्र मृत कविज्ञाञ्चनि छ जात्र जन्नाण भाषाभाषि गाणिस छात्र जन्नाएम्त भाषाम विकासित जात्र जात्र भारत्र हाएउ मण्णूर्वक्राभ छ्छ पिरव्रक्ष्म। --- विक्रय बाबूत जन्नाण जरम्मारण धक्छ धन्तरक वक्षाय त्रावर्ष भारत्र भारत्र । छात्र महक्ष धन्ना छत्रन छत्मत्र नव्नाचि मक्सर्थ साहिष्ठ कर्य।---

विकार बावून वर्शी कामि (पविनि। जिनि) ३२३ मावन, जाम ७ जानिएमन 'गराठन'-এ त्नवे गानीन 'शिन्दी।' कात्वान दे: (त्रजी कन्वाम जवनवान क्रवांदे एत्म 'गराजि-गःबाक ठजूरभनी' (tetrastics) (वर्षन; जाम ७३२२ ठजूरभनीति वर्ष:

७. चारखाताच वदमान गरनरहन: कावि तारवन क्यादेखनि ''माळानुक इरण चकुनिक।'' विरव्यकान कर्ष (১৮৬६ – ১৯১৩) छोष 'जिरवनी' (১৯১६) कारबाव 'खूमिका'त 'माळा' वर्ष 'Syllable' गरवरहन जवर 'माळिक' नवरक Syllabic नुविरत्रहम। किंद्र मायावनेष्ठः माळानुक नवरक क्यानुक वा क्यानिक (moraic) इस जवर प्रकृष या क्यानुक व्यक्ति (वांकिश) इस नुवारंग इरद वारक।—त्यक।

एक शिंठक! यकि शांठ कर जूनि এই छिन्छांचानि,
मृति' भन्नत्वर्थ श्रावंधा करना इसेना मुख्यभाभि:
कवि छ डाँशान निर्वादा स्वम नर्छ श्रा कर्मण छान,
मर्वाम यभि स्टिर्स छोन भिरम थारक এक न्यानी।

উচ্চ চতুম্পদীশুলি প'ড়ে স্থানার ধারণা হয় যে, বিক্লম যোষ তাঁর ''Fitzgerald হইতে অনুদিছ'' 'রোবাইগ্লাং' এই আজিকেই নির্মাণ করেছিলেন।

১৩৩৩ সালে (বে ১৯২৬) নবেজ দেবের 'রোবাইয়াৎ-ই-ওমর বৈয়াম' প্রথম সংকরণ প্রকাশিত হয়। তিনি স্বর্যুত্ত, মাত্রাবৃত্ত ও অক্রবৃত্তের দানা চ্লোমজে ৩১৩টি শুমক রচনা করেন। কিন্তু একটি শুমকেও ক্লমাইর চ্লা-ট্টাচ অনুসরণ করেন্দি। তাঁর অনুদিত প্রথম ক্লমাই:

कारभा कारभा, बाठ क्वारना.

जन्न धार्णक काभित्र कारना

जीत करमरक निनीपिनीय बुरम।

जीत भा निन, जील-ववृगा मक्कामण बुरम

जन्नभा काम जारम।

भू व-धाकारभव भिकाती ५३ ज्याजित जारम छाड़ित स्मा गरे म-नगरमन विनान-बारम जरगाङ्गारम गरम।

গুলা বৈরাদের ক্লবাইর সংখ্যা অদ্যাধনি সঠিকভাবে নির্ধানিত হয়দি। ১৮৫৬ প্রীস্টাব্দে অক্লফোর্টেন
Bodleian Library তে সংরক্ষিত ওবর বৈরাদের ক্লবাহারতের যে প্রতিনিপি দেশে ক্লিকোন্ডত
ভার অনুবাদ ভোরী করেন, তাতে ১৫৮টি ক্লবাই আছে—সেগুলি ১৪৬০ প্রীস্টাব্দে শিরাজে অনুনিবিত
হরেছিল। ১৮৩৬ প্রীস্টাব্দে কলকাভার মুদ্রিত একটি দুগ্রপ্রাপা সংকরণে আছে ৪৩৮টি ক্লবাই; ভার
পরিশিক্তি আছে আরও ৫৪টি ক্লবাই। কলকাভার এগিয়াটিক সোনাইটি লাইব্রেরীর একটি কপিতে
আছে ৫১৬টি ক্লবাই। মনির্বে নিকোলান্ তেহবানের একটি নিঝোগ্রাফ কপি পেকে ১৮৬৮ প্রীস্টাব্দে
বে পাঠ প্রস্তুত করেন, ভাতে ৪৬৪টি ক্লবাই রব্বেছে। বলা বাছদা যে, এসৰ প্রতিনিপিতে অনেক
প্রক্রিকা বছলা সংবোজিত হলেছে। সে যা হোক, দরেজ দেন ৩২০টি ক্লবাইন ভাবনত্ব সম্বাক্তার
বিভাগী পাঠকের চিত্ত তথ্য করেছেন। কিন্তু রবীজ্ঞনাথ বংগছেন, গুরুর বৈরাদের ক্রিভার
প্রধান জিনিস্টা বন্ধ নর, গতি।" নরেজ দেকের বচনার সেই 'গত্তি' আশানুরূপ ব্রেছে কিনা,
ভা রনজের বিচার্ব। ভবে এ বিবরে সন্দেহ দাই যে, মজকনের অনুবাদ ছন্দঃপ্রসাদে অনিকতর বিভিনীর এবং ব্রের বিক পেকেও জনেক বেণী নির্ভরণীয়।

দজকল আনপান্ধা, হাফিজ এবং ওমন শৈয়াম ছাড়াও কিছু বিদেশী কবিতান ভাৰানুৰাণ করেছেন। ১৩২৭ নাবের 'মোসলেম ভারতে' ভাঁর 'বিরহ-বিধুরা' প্রকাশিত হয়; তার প্রথম দু'চরণ :

> कात जरत ? कारी এ পোড़ानू बं पाग्रमारण जात (पर्वरता ना। स्त्री। (त्रवीत काक्षत दत्रक गत्रमारण चात (क्येरता ना।)

কবিতাটির নীচে পাদটীকায় দেখা আছে: ''পুশতো ভাষার ব্যাতনারা কবি ধুশথাল শান শীকের ছিল্ম্পানে নির্বাসনকালে তাঁর সহধমিণীন লিখিত একটি কবিতার ভাব অবলম্বনে।'' ৮-বৈশার্থ ১৩৩৪-এব 'গণবাণী'তে নজকলেব ফুবিঝাত 'অন্তর-ন্যাশনাল সজীত' ছাপা হয়; তার ধুয়া:

আগো— জাগো অগণন-ৰন্দী, ওঠন্নে বত অগতের লাহিত ভাগাহত॥

২২-বৈশার্থ ১৩১৪-এর 'গণবাণীতে' প্রকাশিত হয় তাঁর 'আগর-তুর্য'—'শেলীর তাব অবলয়নে' নেশা। এ দু'টি নেখার নীচেই রচনার স্থান ও তারিথ মুক্তিত আছে: 'কলিকাতা ১লা বৈশার্থ, ১৩০৪।'' ১৩১৪ অগ্রহারণের 'সওগাতে' নজকলের মুন্টার্থ কবিতা: 'অগ্রপথিক' প্রকাশিত হয়। কবিতাটির শিরোঘামের পাশে তারকা-চিক্ত দিয়ে পাদনীকায় ছাপা হয়: ''এইটুরানের অনুর্বনে।'' (সওগাত, ওম বর্ষ ৬৯ সংখ্যা, ৪৬৭ পূঠা দ্রষ্টার্থা)। এই কবিতাটির বিজ্ঞারিত আলোচনা প্রসঙ্গে সেয়দ আলী আহ্মান তাঁব 'নজকল ইমলাম' পুদ্ধকে মন্তব্য করেছেন: ''দীর্ঘ ইংরেজী কবিতার প্রত্যেক ক্তব্দ, প্রতি চবণ, কখনো বা শবদ পর্যন্ত ভাষান্তবিত হয়েছে'' (২৩ পৃ:) ''অবচ তার স্থীকৃতি কোশাও দেই'' (১৯ পৃ:)। এই মন্তব্যে মনে হয়, উপরোক্ত পাদচীকাটুকু জনার আলী আহ্মানের দৃষ্টতে পড়েদি। বলা বারলা বে, সাহিত্যের প্রস্তুত মূলায়নের জন্য এ-বরনের গুঁটিনাটি বিষয়ও লক্ষ্য করা দরকার; অন্যথা অনেক সময় গন্ধ্বর্ম পরিপ্রমণ্ড প্রমাণিত হয় অসার। তবে এ-কথা শীকার করতেই হবে যে, সজকল সাহিত্যের মূলা-দিরূপণে আলী আহ্মান দক্ষতার পরিচব দিরেছেন প্রচুর, বন্ধিও তাঁর উপকরণের পরিমাণ স্থান। উপসংহারে বক্ষয় এই যে, সজকলের জীবন ও সাহিত্যকর্ম সম্বত্তে নির্ভরবোগা তথা যত বেলী সংগৃহীত হবে, তাঁর রচনার বিচার ও বিল্লেখণ তত বেলী স্থবিচিত্র ও সার্থার্ড হবে।

वागात कवि

एक्टेंग्र याद्युष शामान

তথ্যও পর্যন্ত আমি নজকলের নাম শুণিনি কিন্ত তাঁর গান গাওয়ার স্থান্য ভালি দা।ার সনোযোগ আকর্ষণ করন। সম্পূর্ণ আত্মপু হ'য়ে তিনি গাদ করছিলেন--আপপাপের লোকজন সম্বদ্ধে যেদ তাঁর কোন ধেয়ান্য নেই।

পরদিন আমি তাঁর নৈশভোজে আমার বাগায় নিমাণ করনাম। আমি লক্ষ্য করনাম তিনি অভিশাধ নাজুক—কেবল পান পাওয়ার সময়টুকু ছাড়া। আর যখন তিনি গান করেন তবন তিনি তুননাধীন। নককল ইগলাম বাংলা সাহিত্যে 'বিছোহী কবি' ব'লে পরিচিত। 'অসংখা কবি এবং তপাকথিত 'বিছোহী' বাংলায় যথেই ব্যাতিমান: স্কুরাং নজকল ইগলামেক যদি তপুনাত্র তেমন সাধারণ অর্থে একজন 'বিছোহী' কবি' ব'লে মনে করা হয় 'তবে সেটা এমন কিছু উল্লেখগোগা বাগপার ময় বলেই আমার ধারণা। ইকবাল তাঁর অনেক কবিতার অভিযোগ ক'বে বলেছেন যে তিনি কবি মন—তিমি ধলেছেন তিনি 'ভীবনের গোপান রহসো'র গান করেন এবং বাণী দান করেন—জীবনের বাণী। নজকল ইগলাম জীবনের কঠোর বান্তবন্ধ থেকে মুব কিরিয়ে সেনমি। নিজেকে তিমি সেই পাখীর সংগো তুলান করেছেন বে কোন এক জ্জানা উথেব উদ্ভে বেড়ার: তিমি তাঁর কর্মনর সাহিত্য জীবনে 'সত্যা' ও 'চির-স্কুলরে'র অনুসন্ধানে ব্যাপ্ত ছিলেন। কিছু তাঁর ফুলবের ধ্যান তাঁকে কৃৎসিতের বন সান্তিবা টেনে এনেছিল—তিনি অভ্যাচারীয় নির্বাহন, অবিচার ও জীবনের আর্থপর্নতাকে নির্বাহন্তনের অংশীদার হিসাবে সে-সবলে অনুভব করেছিলেন। সত্যিকার কবি, তিমি তাদের নির্বাহন কিরিতনের অংশীদার হিসাবে সে-সবলে অনুভব করেছিলেন। সত্যিকার কবি আলার বাণী বাবে নিয়ে আনেন এবং ভার পাতিব ওবং ভার পাতিব তাদের নির্বাহন এবং ভার পাতেব ওবং ভার পাতিব তাদের নির্বাহন বিনাতনের অংশীদার হিসাবে সে-সবলে অনুভব করেছিলেন। সত্যিকার কবি আলার বাণী বাবে নিয়ে আনেন এবং ভার পাতিব ওবং ভার পাতিব তালে

সকল দু:খ দুর্দণা ও আতছকে অকুতোজরে বোকাবেল। করতে পারে। নজকন ইসনার জীক বহং কবিতা সমূহে সেই বাণীর আলোক জানতে পেরেছিলেন যাতে দরিত্র ও দিসৃহীতেরা পেরেছে বাঁচার আসাস, নৈরাণ্যপীড়িত পাঠক পেরেছে আশার সঞ্জীবনী। ভাই আবি দলকনকে "বিদ্রোহী কবি" বলি না, বলি 'আশার কবি'।

নজন্দল ইগলানের কবিতার একটা দিক এবনও তেমন মনোনোগ আকর্ষণ করেদি—বেটা তিনি গতিকোরতাবে দাবী করেন। বনা হয় যে ববীক্স-সূর্য যথন কাৰাগগনকে পূর্ণ করে ছিলো সে সময় তিনি 'বুমকেতু'র মত উদিত হন। রবীক্স-প্রতিভার প্রতি সামান্যতম অপুদ্ধা আনামার ইচ্ছা আমার নেই—বাঁর সজে পরিচয়লাতের গৌভাগ্য আমার হরেছে। কিন্তু রবীক্সমাথেরই মত নজকন ইসলাম বাঙলা কবিতায় এক নতুন স্থানের সৃষ্টা। রবীক্সমাথের কবিতায় হিন্দী বৈক্ষৰ কবিতার বেশ থানিকটা প্রভাব লক্ষ্য করা যায়: মজকন ইসলাম সর্বপ্রথম মতি সার্থকতার সংগ্যে আবুদিক বাংলা-কার্যে কার্যী গললের প্রাণরস প্রতিষ্ঠিত করলেন—তিনি হাফিজ কিংবা ফার্যী গললের প্রাণরস প্রতিষ্ঠিত করলেন—তিনি হাফিজ কিংবা ফার্যা ক্রি করলেন—যা বাংলা সাহিত্যে অভিনৰ এবং যৌলিক, ছলে, অরে, চিত্রকলেপ এবং গৌলর্যের বাংলার স্থাই করলেন—যা বাংলা গাছিতো অভিনৰ এবং যৌলিক, ছলে, অরে, চিত্রকলেপ এবং গৌলর্যের বিজ্ঞান বাংলা ক্রিনে আমি রোমাঞ্চিত হ'নে উঠ্লাম। নজকন ইসলাম অনুকারক নন, সুষ্টা—সভিচ্বার সুষ্টা। আমি দেখতে চাই পূর্ব বঞ্চব তক্ষণ কবিরা কাজী নজকন ইসলাম অনুকারক নন, সুষ্টা—সভিচ্বার সুষ্টা। আমি দেখতে চাই পূর্ব বঞ্চব তক্ষণ কবিরা কাজী নজকন ইসলামের মত মহান পার্যী কবিদের মূর, ছল, চিত্রকলপ ও প্রাণপ্রাচ্বর্যে অনুপ্রাণিত হ'রে শৈলিপক দক্ষতায় দতুন ধরনের কারা ক্ষষ্ট করবেন।

এই কুন্ত পরিসরে নজকল ইসনামের সব কবিতা ও তার সৌন্দর্য নিয়ে আলোচনা ও বিশ্বেষণ করা সম্ভব দর। বস্তুত ইকবালের সজে নজকলের দৃষ্টিভজির এবং প্রকাশতদির জান্তিক বিল লক্ষা করা যায়। খুদী, ককর, খৃত্যু ও জীবন সম্পর্কে এবং হজরত উমন, বালেদ ও কামাল প্রভৃতি মুসলিম বীরদের সম্পর্কে ইকবালের ধারণা ও রাজনৈতিক মানসিক ও আন্তিক ব্যাপার সংক্রান্ত ভাবনা চিন্তা নজকলের কাব্যে রূপলাভ করতে দেখা যাছে। নজকলের আন্তর্পান্ত, দারিদ্রা, জীবদের পান এবং হজরত উমর, খালেদ এবং কামানের উপর নিখিত কবিতা ইকবালের কবিতার প্রতিরূপ বলে মদে হর। যেরদ ধর্মন মজকল তার 'মান্ত্রপঞ্জি' কবিতায় লিখেছেন:

खागाও खागाও, कूरप्रत आस्त वाखिए क्रम उडक त्रित्। डेभग जात्राप डेड्क बाह-ठिडम-क्टिन ''बानि बाहि''न,।

> कत्रध्र मिश्च-ग्रश्च-मम क्रम (क्ष्यान क्रियान) भीन (त्रापन— क्षियु-क्रम

त्मपुंक धाष-गविजात एउक वरक विभूता कन्मगीत। वन, पालिक इडेक धानभ यहिया स्वदाति ' कुद्धवीत। কে করে কাহারে দির্বাত্তদ ভাষচেতদ শ্বির যথদ ! ইর্বা-নণ ভীষ-মাত্রদ

भनावाज शारम भक्षरत उथ् वाष-यत-व्यविद्यामीत, बशाभाभी भिरो, मजा योशांत्र भन्न भनान्य वाग्ध निन।

> জাগাও আদিম স্বাধীন প্রাণ, আদা জাগিলে নিশাতা চাগ। কে ভগনান ? আদ-জাগ!

গাহ উদগাতা অভিক্ গান অগ্নিয় শঙি-শুনির। না জাগিলে প্রাণে সভা চেতনা, মানি না আছেশ কাৰো বাণীয়।

ইক্ৰানেৰ শ্ৰেষ্ঠ কৰিতাওলোতে এই চিন্তাৰারাই মহিন্মণভাবে প্রকাশ পেণেছে। এ পুজিলের নাৰা ব্যক্তিগভাবে কোন সাক্ষাই মটোনি কিন্ত ন্তক্ষণের করাটীতে প্রকান ও পার্থী সাহিত্যের বহি প্রনুৱাগ ভার এই সম্পান্ধিক স্থান্ধ কৰিব প্রতিও তাঁর মনোনোপ প্রাক্ষণ ক'রে পাক্ষে। বলা বাহলা ন্তক্ষণের উদ্যক্ষেত্র ইক্রাল জনপ্রিয়ভার শীর্ষস্থানে প্রকান ক্ষ্মিটিনেন।

এনার স্থানিচিত ধারণা চেতন ও অবচেতনভাবে বৃদ্ধ ও পরিবন্ধ একবালের সঙ্গে বৌশ্য ও তানুসদ্ধিংক আন্তোপ্তবন এই যুধক বাঙালী কবির আদ্ধি যোগাযোগ মটেডিল।

নামরা প্রারশ: সাধারণভাবে মুখে মুখে কবিদের প্রশংসায় পঞ্মুখ হট--ভাদের কাষের অভাস্তরে প্রবেশের চেষ্টা করি না, তাঁদের কাব্যের রূপ, সৌশর্য ও বাণীস সভিক্রের মুখ্য নিরূপণ করার ও তার মর্যাদা দেওয়ার প্রয়োজন মনে করি না। সেই সাধারণ প্রশংসার শিকার নজকল ছারছেন। কিন্তু তার কাব্যের গভীরে বাওয়ার ও তাঁর কার্যের মূল্য নিরূপণ করার কোন সভিক্রের প্রয়াস আজও পরিাক্ষিত হয়নি।

ন্ত্ৰজন ইগ্লান আছও জীবিত কিন্তু স্থিতহাৱা। দুনিয়াৰ কৰ্মজীবন পেকে তিনি বিদায়নিয়েছেন। জলং, জীবন ও নানুষের সম্পর্কে তিনি এমন স্ততীপ্রভাবে চিন্তা করেছেন বে সে
বাবেগের প্রচন্ত চাপ তার পক্ষে দীর্বদিন সহা করা সন্তব হয়নি। তার ধ্যনী দুর্বভূত হয়েছে, তিনি
নানসিক ভারসাম্য হারিয়ে কেলেছেন। নিজের এই পরিপাম সম্বন্ধে তিনি পূর্বেই ভবিষামানী করেছিলেন
নে ধূপের মত দুর হ'বে পুড়ে পুড়ে তিনি নিশ্চল হ'বে যাবেন—কোলাহলের উচ্চােদে নানুষকে আর
ভাগাবার চেটা করবেন না। তিনি অবশ্য জানতেন যে তার আছা অমর এবং তাকে হতা৷ করার্
সন্তব নর।*

जब्दान : नाहाकृतीन जाह्मन

"२२१२ मारत्रत्र देविक विभिः निष्ठिरकत्र २६८मे त्य, सकक्षत्र क्षत्रती मण्या त्यत्य गुक्रीण ।—मण्यावक ।

द्योच-वर्ष। ५०५८

मक्कन धकारखरी भविका । ১७१

तककुरलइ 'विकाशे' अज्ञान

भाशायन याश्यू अडेझाश्

भक्षकात्व विद्याद्यी-दिए छन। ও 'विद्याद्यी' कविछात छैंप्य-महान कताए द्यांत छीत माहिछा-क्योबत्व भित्र छोळ्डि এवः थापि-भर्दत पित्र यामाप्तत कित्र छोकाएछ द्या । मत्त तांबेएछ द्या, नक्करनत व्य-त्रहनाहि भाठक छ स्थी-ममात्नाहक महत्वत विद्यांत षृष्टि व्याक्षिण करत गाहि कविछा नहा, नेषा । कित्यात-वद्या तारहोत पर्यात प्राचन प्राचन गीन तहा। कत्रत्व छ, नक्षकात्वत माहिछा-मावना महत्वा भिष्टा तहा। कित्यादे छक । कवित कृत-क्षीत्रत्व महलाठी-वद्य ध्वा छ क्योंनिक्षी श्रीत्वालक मृत्यालामात्वत म्यूछिहान्या त्यात छोना त्यात स्था क्षीत्रत नाकि नक्षक निवेद्या अस्य, व्यात छिन व्यात प्राचन व्यात । यादि भववछी क्षीत्रत नक्षक वात्वा-कात्वा प्राचन व्यातन वतः श्रीत्वालक वात्वा कर्या । यादि भववछी क्षीत्रत नक्षक वात्वा-कात्वा प्राचन व्यातन वतः श्रीत्वालक वात्वा कर्या महत्वन ।

নজকল কৰি হিসাবে জননা কীতির অধিকারী এবং বাংলা সাহিত্যের জনাতম যুগগুটা-কৰিরপে বীকৃত, পরিকীতিত। কথা সাহিত্যা রচনায়ও তিনি তাঁর প্রতিত্যা এবং দক্ষতার স্বাক্ষর রেখেছেন। কিছা গাংলা কথাসাহিত্যের জনাতম দিকপাল শুনিশৈলজানক মুখোপাধ্যায়ের, বলতে গোলে, কাব্যক্ষের কোনো স্বাক্ষরই নেই। তিনি থে এককালে কবিতা লিবতেন, এ তথাও জ্বাদা গোছে তাঁর স্কৃতিচারণার। নজকল যে কথা-সহিত্যা রচনায় ও গদ্যাশিকেপ তাঁর স্ফ্রনী-প্রতিত্যা ও দক্ষতার স্বাক্ষর রাখতে পেরেছেন সেটি কোনো কাক্তালীয় কিংবা মাকস্থিক ব্যাপার নয়। মালোচনার ওক্ষতে যে বলেছি, নজকলের বে-নচনাটি প্রথম সাধারণ পাঠক ও স্থী-স্বালোচক বহলের বিশেষ দৃষ্টি জাকর্ষণ করে সেটি কবিতা নয়,

গদা একথান মনে রাখনে গদা রচনায় নজকলের কৃতিছের উৎস ও কারণ শুঁজে পাওয়। যাবে।
কৈশোরেই কবিতা রচনা ওক্ষ করলেও, নজকলের প্রকাশিত রচনা সর্বপ্রথম কবিতা নয়। ১৩২৬ সালের
জার সংখ্যা 'সওগাত'-এ প্রকাশিত 'বাউওেলের আছকাহিনী'ই নজকলের প্রকাশিত সর্বপ্রথম রচনা।
যতসূর জানা যায়, নজকলের এই গদা রচনাটিই প্রথম সাধারণ পাঠক ও স্থ্বী-সমালোচক মহলের
বিশেষ ষ্টি আকর্ষণ করে। এই বজবোর সমর্খনে ওশু এটুকুই উমের্য করা যথেই যে নজকলের
জীবন ও সাহিত্যসাধনা সম্পর্কে বারা সমৃতিচারণমূলক রচনা নিধেছেন, তাঁলের অধিকাংশই উমের্য
করেছেন যে, 'বাউওেলের আছকাহিনী' পড়েই তাঁর। এর লের্যক হাবিন্তার করে।

বৰপন্থি, 'ৰাউণ্ডেদের আন্তকাহিনী'ই নজকদের পত্রিকার প্রকাশিত প্রথম রচনা। এর আর্থেও অবশা তিনি অনেক কবিতা ও গদা রচনা প্রকাশের জনো পত্র-পত্রিকার পাঠিয়েছিলেন। কিন্তু সেন্ডলো প্রকাশের জনো মনোনীত হরনি। 'সওগাত' সম্পাদক মোহাম্মদ নাসিরউদীন এ-প্রসঙ্গে নিখেছেন: 'गलगांठ' श्रमानिक बनान श्रीम भन्नभवरे (১৯১৮) नव्यक्रम कन्नाठी त्यत्म लागांत कृष्य क्रियन —श्रेष्ट्र त्यां। त्यांत गत्म थांकरका ठिठि —यत्मक्षित त्यां। नाटिन बल्डान भन्न 'नाठेरक्ष्यम व्यक्तिवानों बार्ड वार्ग ठार्क्य नामा त्याः। नाम्भिः 'गलगार्ड श्रमानिक बल्डान भन्न व्यव श्रिक वर्षण्यक्रि मृद्धै वाक्ष्ठे वरता। यूगनवान गनात्क्य क्षार्ग त्यांक एवंन क्षेत्रभ छावाय वे वन्नत्य किष्कु निनंदक्त नाः, वा निषर्ण्य भावरक्षा नाः। त्यांकि बूंब छेन्द्रशास्त्रम भावरक्ष्यः, वाक्षिक अ श्रिक्तिन्द्रायः विक भिरत्र वर्षण्यक्ष्य क्षार्थः मृद्धः प्रकृत देश्वरता। वा व्यक्तिक अवार्ण नाविरकान क्ष्यक्षम हित्तम व्यक्षाठ - 'नाठेरक्षत्व व्यक्तिवानीं' श्रकात्म वाक्षिक वर्षण छात्र व्यक्षम व्यक्ति व्यक्

नवकरमंत्र शंना त्रांत्रना 'बांकेटखरमंद व्याद्यकादिनी' श्रकारमंत्र मार्थ-मार्थि भार्छ थ स्वी-म्यारमार्थि व्याद्य मृष्टि कडी। व्याद्व कर्दाक्ष्म, श्रेताड मादिङ्किन-माःशाभिक व्याद्व व्याद्व व्याद्व म्याद्व म्याद्व व्याद्व स्वाद्व स्वाद स्वाद

১৯১৯ সালের এক তুটিতে বাজিতে গুরে গুরে একদিন শামস্থীন (প্রণাতি সাহিত্যিকসাংবাদিক আবুল কালাম শামস্থীন) ও আমি মাসিক কাণালপাম পড়ছিলাম। ছঠাৎ 'মোসলেম
ভারত'-এ কি 'বলীয় মুসলমান সাহিত্য পত্রিকার ঠিক মনে নাই, 'বাউণ্ডেলের আছকাহিনী'
নামে একটি বস্-মচনা পড়লাম। এক সজে দু'জনে উঠে বসলাম বিসারে। প্রণু করলাম, কাম
লেখা এটা ৷ তথন লেখার পেথে লেখকের নাম লেখার রেওয়াজ ছিল। লেখার পোনে দেখলাম
হাবিলদার কালী নজকল ইসলাম, করাচী বলর। কোনো মুসলমান ভালো বাংলা লিখতে
পারে একখা তথন অবিশাসা ছিল। 'বিনাদ-সিদু মীর বোলাররক চোসেন লিখেছেন, এটা
সেকালে অনেকেই বিশাস করতেন না। কাজেই আমরা একাধিকবার সেই লেখা পড়লাম। কে
এই নজকল ইসলাম হতে পারে ৷ খাংলার কবি-সাহিত্যিকদের অনেকেরই নাম তথন
আমাদের মুখত হয়ে গেছে। জবপেতে দুই বঙ্গতে একমত হলাম, বদি স্তিটে এই লেখক
মুসলমানই হয়ে থাকে, তবে সে একদিন বাংলা সাহিত্যের একটা দিকপাল হবে।

[नकमम-अविहिष्टि, भृ: २२८]

আৰুল মনত্ব আহমদের এই অতীত-দিনের সমৃতিহারপায় তপাগত দিক থেকে কিছুনি ভুল খাছে। নজকলের 'ৰাউত্তেলের আছকাহিনী' প্রকাশিত হরেছিল 'সওগাত'-এ, 'নোদলেন ভালত' কিংবা 'ৰক্ষীয় মুদলমান সাহিত্য পত্রিকা'য় নয়। 'সওগাত'-এর কথা 'তার খাদৌ মনে পড়েনি, সদিও তিনি বলেতে্ন, হঠাৎ 'নোদলের ভারত'-এ কি 'বজীয় মুদলমান সাহিত্য পত্রিকা'য় ঠিক মনে নাই, 'বাউত্তেলের আছকাহিনী' পড়লাম।'' আবুল কালাম পামকুদীন ঘরণা তার সমৃতিচারপায় এ-প্রসাদে কোনো পত্রিকার নামই উল্লেখ করেননি, তিনি লিখেছেন:

उनेन चानि चारे-१ क्राप्ति छात्र- एका करनाक পछ। नाटिएएन राभाव भारा पृष्टानन हारिएक पश्ची पृष्ठक चनावर्गर वर्गायांगी। यान-शननामं, 'नटीव मूननान नाटिए। निक्रिक चनावर्ग प्रक्रिक करावर्गि दिनी। यान-शननामं, 'नटीव मूननान नाटिए। निक्रिक प्रक्रिक चनावर्ग वर्गिक प्रक्रिक प्रक्रिक प्रक्रिक प्रक्रिक प्रक्रिक उनेन चानाव (विज्ञाय एक)। त्यारे नभा,

गांविज्ञिक व्यात कृत्वज প्रांगिशित विकास । এविन ग्राह्य व्हार এकविन अक शिक्षकांव अक्ते वहुँ उत्तर्थ। कार्रि शिल्ला । कार्याहित नाम : 'बिह्रिश्यत्व व्याद्यकांविती' — क्विक : व्याविक्रात कार्यो निक्क विकास । कार्याहित अङ स्वाविक्रात कार्याहित निक्क विकास । कार्याहित विकास विका

আৰুল কালাৰ শাষ্ত্ৰদীন তাঁর আন্ধনীৰনী ও স্মৃতিচাবপৰুলক থন্ধ 'অতাঁত দিনের স্মৃতি'তে লিখেছেন :
আৰুল মনস্ত্ৰৰ আহমদ তথন ৰয়বন্সিংছ মৃত্যুপ্তয় ছুলে খেকে গেলেও দাকার বাথে ৰথে
আগত এবং আমার ছোসেনলেই উঠত। সে আসলেই দু'জনে বিলে সাহিত্যালোচনা ওক
হতো। সম্ভবতঃ একলার গারুৰের ছুটিতে দেশের ৰাজীতে একদিন মাসিক 'সওগাত'এর
এক সংবাঃ আমাদের হাতে এল এবং তাতে দেবা গোল, 'ৰাউপ্তেলের আন্ধনাহিনী' শীর্ষক একটি
স্থলর বচনা প্রকাশিত হয়েছে। লেখকের নাম দেবলাম ছাবিলশেব কালী নজকল ইসলাম।
লেখানা আমাদের এত ভালো লাগলো যে, ছাবিলদার কালী নজকল ইসলাম কে তা ভানতে
আমাদের আগত দুর্বার হয়ে উঠল।… পিঃ ২০ ন ২১]

নজকলের প্রথম-প্রকাশিত রচনা 'বাউণ্ডেলের আন্ধাহিনী' পড়ে আবুল মনন্ত্র মাহরেদ, আবুল কালাম শামস্থানীন প্রমুখের মনে যে-আশাবাদ জেগেছিল, তা সতা হয়েছে। নজকলের প্রথম প্রকাশিত গাদ্যরচনা তাঁর ভবিষাৎ সম্পর্কে সেকালেই পাঠক ও স্থাী-সমালোচক মহলে এমন আশাবাদ জাগিরে তুললেও, তাঁর প্রথম প্রকাশিত কবিতা কিন্তু সাধারণ পাঠক ও স্থাী সমালোচক মহলে তেমন বেবাপাত করেনি, আশাবাদ জাগিয়ে তুলেনি। কিশোব কবির ভবিষাৎ সম্পর্কে তাঁদের মনে জাগোনি কোনো উচ্চাশা। নজকলের কবিতা প্রথম প্রকাশিত হয় ১১২৬ সালের প্রাবন সংখ্যা 'বজীয় মুসলমান সাহিত্য প্রিকাশ্যল কবিতাটির নাম 'মুক্তি'। সত্য ঘানা অসম্প্রনে নেখা লগকলের এই কবিতাটির করেনটি পংক্তি:

রাণীগঞ্জের, অর্জু নপার্নির বাঁকে বোধান দিয়ে নিতুই সাঁঝে ঝাঁকে ঝাঁকে রাজাব বাঁথে জল নিতে যার শহরে বৌ কলস কাঁথে— সেটা সে বাঁকের শেষে তিন দিক হ'তে তিনটে রাজা এসে ব্রিবেণীয় ব্রিধারার মত গেছে একেই বিশে তে-মাধার সেই 'দেবাশুনা'-স্বলে বিরাট একটা নিম্ব গাঁকের তলে জটওরালা সে সন্যাসীলের জটলা বাঁধত বেধা গাঁজার বরায় পথের লোকের অঁতে হত বাধা

[4B]

নজকলের 'ৰাউণ্ডেলের আদকাহিনী' প্রকাশিত হয় ১৩২৬ সালের জ্যান্ত সংখ্যা 'সওগাড'এ, আর 'বুজি' ১৩২৬ সালের প্রাৰণ সংখ্যা 'বজীও বুসনমান সাহিত্য' পত্রিকায়। 'বুজি'র করেকটি পংক্তি উপরে উত্ত করা হারেছে। এখন পাশাপাশি উত্ত করা হাক নজকলের প্রথম প্রকাশিত গলা মচনা 'ৰাউণ্ডেলের আদুকাহিনী'র কিছু যংশ:

'কি ভাষা! নিভান্তই ছাড়বে না ! একদম এঁ টেল মাটির মত লেগে থাকৰে ! আৰে ছোঃ। তুনি যে দেখতি চিটে ওড়ের চেয়েও চানচিটেল! তুনি যদিও জাল্ আমার এক পুটেনের ইমার, তবুও সভিচ বলতে কি, আমার সে-সব কণাওলো বলতে লেমন যেন একটা আছবি বোৰ ছয়। কারণ, বোদা আমার পরল কববার সময় মন্ত একটা গলদ ক'রে বলেছিলেন, কেননা চানজানি আমার ক'বে দিলেন হাতীর চেয়েও পুরো, যাব প্রাণীন করে দিলেন কার্যার চেয়েও নরম। আর কাজেই দু চারজন মজুর লাগিয়ে আমার এই চামড়ায় মুগুর বসালেও আমি গোঁকে তা দিয়ে বলব, 'কুচ পরওয়া নেট।' কিন্ত আমার এই 'নাজোক' আনটার একটু আঁচড় লাগলেই ছোট মেয়ের মত চেচিয়ে উঠবো। তোমার 'বিবালি দল আনা 'ওজনেব কিলগুলো আমার এই খুল চর্মে যেক আমার কেওয়া ভিন্ন বলতে হবে 'তখন আমার অন্তর্মার। ধুক মুক করে ওঠে, লংপুনিনী বোরার ভৌগোলিক সত্যান হাঁছে লাড়ে গন্তন করি। চলেও যে মর্ঘপ পুন্প পুন্প ইম্ফুনিড হতে পারে বা ভোনাকী পোকা জনে উঠ্বত পারে, তা আমার মত এই বলম শোচনীয় আৰক্ষার পড়বল ত্রমিও অনীকাৰ করবে না।' — বাউত্তেলেক আছকাহিনী]

পালাপালি বু'টি উদ্বৃত্যংশের তুলনামূল। আলোচনাথ লক্ষা করা যাবে যে, নক্ষালের কবিতার তুলনায় তার গলা রচনা সেলালেই জিল অনেকরানি পরিপত। 'লোধাটি বুল উভয়ানের না হলেও, আজিক ও গতিলীলতার দিক দিয়ে অনেকের চোলে খুবই নতুন ঠেকলো' এর বধার্থ কারণও সবটুকু লেখা পড়লে সহজেই অনুবাবন করা যায়। ওয়ু 'বাউওেলের আরকাহিনী'ট না, দক্ষদেরে সেকালের অন্যান্য গলারচনা বিশেষ করে চোট গলপ, কবিতা ও উপন্যাস ইত্যাদি পড়লেও বোঝা যায়, তার কবিতার চেয়ে গলালিলপ জিল অনেক উনুত। নক্ষদনের কবি-কল্পনা ও উপনা বাবচারের প্রবণ্তা এবং শক্তিন কিছু পরিচর আছে 'বাউওেলের আরকাহিনী'তেই উদাহরণ:

আছকালকাৰ চোকরার। নিতান্ত বেহায়ার মত নিজে বৌ পাতৃশ করে আনে। নিজের শরীর যে আবলুস কাঠের চেয়েও কাল বা কেঁদে। কাঠের চেয়েও এবড়োসেবড়ো, সেপিলে দৃষ্টি নেই, কিন্ত নৌনির হাওয়া চাই দছৰ মত দুখে আলতার স্থা, হারণের মত নয়ন, অস্কাত পটল-চেবাত চাই-ই, সিংহের মত কানিদেশ, টাদের মত মুখ, কোকিলের মত স্বৰ্ণক্ষর, রাজহংসীর গমন, রাতৃল চরণ কমল, কালণ মানভ্যনের সময় যদি 'ছেহি-পদপ্রমণ উদারম' বলে তাঁর চরণ ধরে মনু। দিতে হয় আর সেই শব্দ চরণ যদি গছ ফর বিভ (বোলা না করেন) গদাধরের পিনীর ঠ্যাং-এর মতই শক্ত কাঠলার। হয়, তাহিলে বেচারার। একটা আরাম পাওনা হতে বক্তিত হয়, আর বেজার বসভক্ষ হয়।

কৰি আৰদ্দ কাদির লিবেছেন, '১৯১৯ ব্রীস্টান্দের ১৯৭ে আগস্ট জিনি (সজন্মন) ক্যাণ্ট ক্যাণ্টন্যেন্ট পেকে সাহিত্য পত্রিকার (বজীর মুসল্যান সাহিত্য পত্রিকা) একটি স্থীর্ণ গাণী ও একটি চোটগলপ পাঠিষেছিলেন এবং সম্পাদককে অনুবোৰ কবেছিনেন বে তাঁৰ এত বেলী নেখা ছাপানাৰ মতে। আৰপা খদি পত্ৰিকাটিতে না থাকে তাঁ ছলে এর বে-কোনো একটি লেখা যেন 'সওগাত' সম্পাদককে পাঠিয়ে দেওৱা হয়। ১৩২৬ সালের কাতিক সংখ্যা 'বজীয় মুসলমান সাহিত্য পত্ৰিকা'য় প্রকাশিত হয় তাঁৰ 'হেনা' গলপ। সেই সলপটি পড়ে সমজ্জার পাঠকেরা নিংসলেহে বৃথতে পারেন যে বাংলা সাহিত্যে এক অসাধারণ শক্তিশব প্রতিভার আনিভাব ঘটেছে।'——[নজক্ল-পরিচিতি]

य (परिक्ष लाहे हम रण, कविजात माशास नग, शमा तहनात माशास्त्र नककन हांत रुखनी श्रिज्ञात भित्रित श्रेषम बाक्षिति करत्रितान। ज्ञात, शमात्रहना हर्ति नककन रा मृत्रहः कि यदा श्रिज्ञातान कि एक श्रेष्ठ श्रेषम वाक्षिति करत्रितान हिर्मित परिवृत्ति राष्ट्र वाक्षिति हिर्मित कि श्रेष्ठ व्यक्ति वाक्षित श्रेष्ठ व्यक्षित वाक्षित श्रेष्ठ स्वाद्य स्वाद्य कि स्वाद्य कि स्वाद्य स्वाद्य कि स्वाद क

নজকলের গদা রচনা যে সেকানেই গতিশীন, সজীব সাবনীন মার কবিষ্যা হয়েছিল, তথু ছোনগলেপ নয়, তাঁর চিঠিপত্তার ভাষায়ওসে প্রমাণ আছে। ১৯১৯ সালে পণিত্র গজোপাধ্যায়কে লেখা নজকলের একটি চিঠির ভাষা:

পাবসীক কবি হাজিজেব মধ্যে বাঙলার সবুজ দুর্বা ও জুই ফুলেব স্থবাস আর প্রিয়ার চুর্ণ কুন্তনের যে মৃদু-গছের সন্ধান আমি পেয়েছি, সে সবইত বাটি বাঙলাব কথা, বাঙালী জীবনের অবিজ্ঞেল অংগ, আনন্দরসের পরিপূর্ণ সমাবোহ। কত শত বছর আগের পারসেরে কবি আব কোখায় আজকের সভা নিশিব-ভেজা সবুজ বাঙলা। ভারতেব উত্তর পশ্চিম প্রান্তেব কন্দ্রা পরিবেশে মৃত্যুসমাবোহের মধ্যে বসে এই যে চিবস্থন প্রেমিণ্ট মনেব সমভাব জামি চান্দ্রণ করনাম, আমাব ভাবায়, আমাব আপনজন বাঙালীকে সেই গ্রা জানাবার আকুল আগ্রহই এই এক টুকবো কবিছো হয়ে জুটে বেবিষেছে। জানি না, জুই ফুলেব মৃদু গন্ধ ও দুর্বার লামলতা এর মধ্যে ফুটেছে কি না। তবু বাঙালীর সচেত্রন মনে মানুষের ভাব-জীবনের এই একাছবোধ যদি জাগাতে পারে, তবে নিজেকে ধন্য মনে করব।

नकक्रत्मक जन्मवर्गित त्रथ। এই পত্তের ভাষাব प्रकार छिन्द्रांग किংবा कोविष्क जा त्यहै, यारक পরিশত यत्मक छोल, ब्रह्मात महक तेन्यूरियाद लिविष्ठ । नकक्रत्मद शंका ब्रह्मा विराय करत क्या-महिर्द्धाद याबाद्य स्थम स्थाप कविष पश्चित, कल्पना प्रसिद्धाः, ज्ञादिन ज्ञाद्धाः ज्ञाद्धाः ज्ञाद्धाः व्यवस्थ व्यवस्य व्यवस्थ व्यवस्य व्यवस्थ व्यवस्य व्यव

১৩২৭ সালের বৈশাবে আফজান-উল-ছকের পিতা কবি বোজান্ত্রেল হকের সম্পাদনায় 'বোসনের ভারত' বের হর; তার প্রথম সংখ্যা থেকে নজকলের 'বাঁধনহার।' নামক প্রোপন্যাস ধারা—বাহিকভাবে প্রকাশিত হতে থাকে। 'বাঁধনহারা' বোধ হর বাংনা ভাষার প্রথম প্রোপন্যাস। এর অনেকখানি অংশ তিনি করাটী অবস্থানকালে রচনা ক্ষেডিলেন। 'বাঁধনহারা'র মূলে ছিল প্রেমের বার্থতা, সেই বার্থতা শেষে রূপান্তরিত হয়েছিল নিম্প্রেছে। পরিপত্ত ধ্যমেও তিনি যে বর্মনহালন ও আদিক মুক্তির কথা বলেছেন, তার্ম্য লাভাগ এই উপন্যাসখানিতে পাওয়া বায়। এই প্রোপন্যাসে 'বাহসিকা'র এক প্রমীষ্ঠ প্রেম্য বে বিস্থোছের বর্ণনা আছে ভারই পূর্ল প্রকাশ পরব্ভীকারে ভার স্থানিখাত 'বিস্থোছী' কবিভায় দেখা যায়। [নজক্ষম পরিচিতি, পু ৬—৭]

वर्षे रक्षरताम भडार। : 'मार्थामका'न भरात्र आः निक उद्घाटि (चरकरे यनुमानन कसा गारन बरम जरम कवि। 'गार्थामका'न भरात थारु:

'भूकरक सुष्टेरत नित्सादी नरन र अन्न जय द्वरप्रस्थ ना मुल्न द्वरप्रस्थ रामान यात्रि राजा व्याव रदरान बीकिटम (जः। मुक्को ५ शुभान निष्टादी एन, जात्र धनमि शुक्षेत्र करिको ५ छात्र धाएछ এएन भिष्ठत्वा यात्र कि ! 'खनन उत कीठा बरमम, शारमम यात्र बरनम पूर्व-अन्य मिछि उ बर्पने, जाब नवीरन समाम छेन्। भ रवीनरनव बस हिस्सान ना भून स्थानी छीन् समागिरण प्रतिपृति भन्नर्ट, जीन अभिन जानान वर्ष त्याक्छिनि अक्ष्रु (भन नीमनशीना रम् व्यञ्जन वमन मुरक्षन द्रष्टर्या यान अनुरत्न (म कुछ याद्या यमप्रम महिन्छाछ। कर्षार्थ मन्दर्भ । अन्तर्भ प्राप्त कर्षा नुरबारे नरन, जानाव जरमक कथा मानुरबारे छबु छारनत छेन्छ। रमरे नरन रकरन । योग छुनिमरन द्यन. त्रना. त्य এ-छ्रास बाःनाएड छन्। निरसंड त्यम्बनरमय मुद्राप्त मुक्रि भागमामि, व्याप्रमीरमय यक (भाग) जुकीरभव वक्ष-कृषा जीय (प्राजीरबर्धक यज कुरेर्स अब बमनीरज बमनीरज। याद्याय य-मन एएएसएक नुबार्ड एएस श्राम्य याष्ट्र महा एकान्यारन, रमहर्राहे मनरमञ्जारन বুঁভে বেন ন্সংত হবে। এত বড় নে ধর্ ভাষ ও তো সানাজিক সতা, লৌকিক সভা, সান্ত্রিক गठा देउ। हि देजानि कठ बकरबब ना बादेखब बोनग-मुखीन बरबाल, छोटे बरन कि अधिनव यिन्छ। महारक बर्सन्न छिन्नछन महा बरन बन्नड घरन। ''श्राह्यक बर्मर महा—बीगुष्ट मर्छान ওপরই প্রতিষ্ঠিত এবং কোন ধর্মকে বিচার করতে গেলে তার এই বানুষের গড়া বাইছের विवान-मुखना भिर्य कन्नेरना विठांत कवरन मा -- एडमिन बानुगरक'- छात्र छिन ध्यम धात्राहक তার সভাবে বুর্থতে ঘলে তার অভর দেউলে প্রবেশ করতে হবে ভাই। তার বাইবের বিধা। व्याहात-नानशाक्रक महा गरन पनन किन ? ''इवर'हा व्यानि कथा छरन। ब्ला किन्द्र बनए ह भाविष्टिन, याद भावरबां । । । । काना, यात्राद बरनव । य भावि देवर्षा । । । वेद उक्षित. এই প্রভারণাই তো এদের সভা। অভএব এদের মত এমনি করে আমাকে মিনার্শ না করে ভাষেরই একজন যদি সভাবে পানার জনা নিজের নতুন পথ কেটে মেয়, ভবে এবা লাচি-

গোঁটা নিয়ে যে তাকে তাজা করবেই; কিঙু নির্বীর্যের মত একজন সত্যান্ত্রেমী বিজ্ঞোহীকে ভাজা করবার মত শক্তি এ মিশুকে ভগুণের যে বিলকুৰ নান্তি।

यामना ज्ञानि, मूक कवि नक्षकत्नन्तरे डाक-नाम। कार्यारे युवंट्ड विन्याज्ञ वस्त्रविश हत ना वि गार्रातिका তात्र भट्य वर्षाप नवक्रम जीव এই ब्रह्माव गिर्फाद विरक्षांशी रहडा। এदः बर्गाडार्यव क्षांशे निर्दाहन। এ-পেকেই বোৰা गांग्र (य, 'बिट्डाही' कविडा लियांत्र 'यरमक' चारंगेह डीव यरन এই চেডना 'ও यरनाडारबंब এ-(पद्याद्यकि गडा ५ ५ ६ । गिड इय (य, नक्ष्यक कि या कि ज्यान वस्त्रमाद्यव भेषा ब्रहना 'बाबि' পড़ে डाँव 'निम्नादी' कविडा निर्वाहन---साहिडनालिव धरे मानी कड ठुन्का। धावमून बाजान रिगम भ निर्माणन, ''श्रेमक्र'ड: भाषि उनाम य-मानी जुलिहितन, 'यानि' क्रिका (भरक 'विद्वारी' छेब्रुड हताएं. जिन्ह जीत श्रीभा यत्नरक छेड़िया मिरवर्ड्न अरकवार्त्रहे । किन्न कवियानरमत य-भर्गावितक वना गाम् '(श्रम्भान छेरमञ्जि' रमरे श्रानमा पर्य याशि उनात्मम किषिकारि नककरम्ब 'निष्टारी' कमार्ड महाम्छ करब्रिएला — এতে जानि किटना नटमश् मिनि ।। निष्ठय मिश्ठिनाटनेत्र चित्रिया (थरक नक्करनेत्र छेरकाङका कानाम। ह'तम श्रीरू ; 'उनु धार्थिक'डात्न 'नित्राद्यी'न छरः।। नक्करनत मानमक्रमि टेडनी करन्नरह व बठनाहि।" [अष्टेबा : नित्रादी : এक जीमा, बनिवानबीय देरहकांक, उठदे जीख उउठत] এই यस्या এनः विद्भाषन गोक्षिक्छ। ও ভাংপর্য ছারায় নাকি? 'गोহगिकाর' স্থশীর্ষ পত্র এবং 'विष्टारी' यिनिया পড়লে বরং এটাই স্বাভাবিক মনে হয় যে, 'তার এই গুনা রচনাটিই 'বিদ্রোহী'র উৎস। नअक्रामंत्र कविद्यक्ति, ब्राउना रेनपूर्या यात्र निष्यांदी यानगर्ज्ञात वापि उपम महान क्रवर्ज दान डीव शवा बहुन। व्यवनाथ পড़ाउ घर्ष, बानएड घर्ष कवित्र कीवरनंत्र वाष्ट्रव अञ्जिखकर्गा। किन्न महा এই যে, भ**जकरमत कथिङ। मन्म**रर्क यङ बादमाठमा-मयारभाठमा इम्र, डीव राम्य बठमा विराग्य करव शक्त-क्वभाग **गन्भरकं छाँव भवाःन** भग। अथि अञ्चलतात कविष्ठाग्र जावना-क्रिका, शांभ-बावना, जार्तन-चनुष्ठि, चनु-कल्पना, वस्नवा-धकार्यत जामा, छपना-छश्यका-िजकल्प डीन नमा-न्रहमा (धरक धहुत এग्राष्ट्। शमा ब्रह्मात वर्ष कथार करें जिनि वहरकात भववजीकारल कारवा क्रभाषाविष्ठ करवरङ्ग।

নজকলের বিদ্রোহী মানস চেতনাব উৎস ও আদি পটভূমি সম্পর্কে আমরা কিছুটা আলোকপাত করনাম। এবার দেখা যাক তাঁর ফ্রিখ্যাত 'বিজ্ঞাহী' কবিতা রচনার পটভূমি কি। নজকল-গাহিত্যের সাবারণ পাঠক, এমনকি অনেক স্থী-সমালোচকেরও ধাবণা 'বিজ্ঞাহী' কবিতা নিয়েই বাংলা সাহিত্যে নজকলের আবির্ভাব এবং রবীজ্ঞাত্তর বাংলাকাবো নতুন গুণের সূচনা। 'বিজ্ঞাহী কবি' হিসাবে বাংলা সাহিত্যে নজকলের বিশেষ-পরিচিত এবং সমগ্র বাংলা-গাহিত্যের পটভূমিতে এই কবিতাটির স্বাভ্জ্ঞাই এ-ধারণার প্রধান কারণ। ত'ছাড়া বু'একজন বিশিষ্ট সাহিত্য-সমালোচকের মন্তব্য ও এমন ধারণার মুলে কার্যকর। তলাহরণ বিসাবে বৃদ্ধদেব বস্তর নজকল-সম্পর্কিত একটি রচনার কথা বিশেষভাবে উদ্ধেশ করা বেতে পারে। বৃদ্ধদেব বৃদ্ধ তাঁর একটি প্রবাদের এক জারগার বিশেছন:

देक्ट्लातकारम आवित क्यांनिक वरीक्षमार्थत महामान. या स्वर्क स्कृतात हेल्क्कोरक वर्ष इ'रका----स्वन बाक्ट्यारक्ष नामिन, जाब महजाक्षमार्थत उक्षांज्या स्नि। जीव स्वर्णाद्यी वाउतारक वानू—जाउ वानि क्यानि । वान और निरंगरे बहराय भन्न वहन (करों राज बारणा किवाजन ; वाना कियू ठारेराना मा क्यें, वाना कियू ज्ञान वर्गा जावर वर्गा जावर वर्गा ना वर्णाम ना 'विद्यारी' कविजान निर्माण छिएरत रेश रेश क'रन मक्यान रेगलान और र्मो इर्गान । तारे श्रमन वर्गीजनार्यन नाताकान छाउरना।—[नवीजनाय ७ छेखन नायक, नाशिजाठर्ठा, ১৪৪-৪৫]।

्वत्य वस्त्र अरे वस्त्रमाठिङ ও जात्माठिङ धेवकि भएड़ जात्मवरे तरंग अवन वात्रभा छम्। निर्दार्ध (व. विद्यारी) कविछात 'निर्मन छेड़िरवरें नकक्त रेमनाव धेथेन अरम र्मो एक्डिएनम् प्रवीप वांशा माहिङ्य एक्ट जाविड् छ हर्ष्वाहित्सन्। अवर अत कर्तारें 'धेथेन वरीक्षानात्थेत्र नाताक्षान उत्तर्धकृतः। महिङ्ग वर्षेत्र वर्षेत्र जाविड्य वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र जात्मकृति वर्षेत्र मानिक्ष वर्षेत्र वर्षेत्य

'ৰাত্ৰ দু'ৰছৰ আৰ্গে যিনি নেৰ্থক নহলে দেখা দিয়েছেন, সেই ৰাইণ ৰংসর ৰয়ক জ্ঞাৰ কৰিব হাতে 'ৰিছোহী'র মতে! প্ৰাণৰত্ব কৰিত। বেব হওৱা এক বিস্বয়কর ব্যাপার। বৰীজ্ঞনাথেশ 'নির্বাহ্নের অপুভক্ষ' পাঠকের প্রবণে আনে বেগৰতী গ্রোভিম্বিনীয় উপলাহত কল্প্ৰদি, কিছা সক্ষমনের 'বিছোহী'তে রূপারিত হবেছে উদ্ধান প্রাণশক্তি, অকুপিঠত উচ্ছোন। সমিল মুক্তক হন্যাত্রিক নাত্রাবৃত্ত ছলে 'বিছোহী' প্রথমে সাপ্রাহিক 'বিজলী'তে, পারে ১০২৮ সালের কাত্তিক সংখ্যা 'নোসনেন ভারতে' এবং ভারও পারে অর্থ-শাল্লাহ্নিক 'বুনকেতু'তে প্রকাশিত হবেছিল। 'প্রবাদী' নাসিক 'বস্তমতী' 'সাধনা' প্রভৃতি বন্ধ পত্রিকার কবিতাটি সংকলিত হব। 'উলোম্মা' 'ইসলাম' প্রভৃতি পত্রিকার নানা বরনের আলোচনা হয়ে সারাছেশে ও সকল মহলে বিশুল আলোজনের স্থিতি পত্রিকার নানা বরনের আলোচনা হয়ে সারাছেশে ও সকল মহলে বিশুল আলোজনের স্থিতি করে। কবি শৈকেজকুমার ব্যানক 'বিল্লোহী'র ছলে ১০২৮ সালের অপ্রচালত করেন। প্রকাশিত করেন বিশ্বাহী বীরা নামে স্থানীর কবিতা লিবে সক্ষেত্রলকে অন্তিনালিত করেন। প্রকাশিত বৈক্ত থেকে ১০২৮ সালের মান্ত সংখ্যা 'সভ্যাত্র'এ কবি পোলাম ব্যান্তমা সেই ছলেই লেখেন 'নির্যন্তিত্র'। [ন্যাক্রন-প্রিচিতি, পৃ: ১০-১২]

বিশ্রেষ্টি ব্যাপক আলোড়ন স্কষ্ট এবং আলোডনা-স্বানোডনার ঝড় তুলেছিল সতা ; কিছ ন্ধাঞ্চল কৰে ভালে ভালে তাৰিক ও প্রথম স্বানোডক বছলের দৃষ্টি আকর্ষণ করিছলেন এবং অভিনন্দন লাভ করেছিলেন 'বিজ্ঞান্তী' হচনা ও প্রকাশের আগেই । 'বিজ্ঞান্তী' প্রথম বিজ্ঞানী'তে । অন্যাপকে ন্ধাঞ্চলের 'পাড-ইল-আর্থ' বিজ্ঞানী'তে । অন্যাপকে ন্ধাঞ্চলের 'পাড-ইল-আর্থ' বিজ্ঞানী স্থান ক্ষেত্র সংখ্যা 'বোললের ভারত' এবং 'কোরবানী' স্থান সালের ভারত সংখ্যা 'বোললের ভারত' এবং 'কোরবানী' স্থান সালের ভারত সাজেন-স্বানোচকক্ষিত্র প্রকাশিত হয় । 'বিজ্ঞানী'র আগে রচিত ও প্রকাশিত এসর কবিত্রাও পাঠক-স্বানোচকক্ষানে আলোড়ন আগার ও অভিনন্দিত হয় । নজকলকে অভিনন্দন আনিরে প্রখ্যাত ছাল্পিক কবি ও

यूननवाभ म्बर्धास्य नक्त बहनाँ हिन्दकांत्र । किन्न बांश वाबादक नर्वारणका विशिष्ठ । वाना-विन्न कविबार्क छोश जानमान निक्रिकांत्र नर्वरमुक्ते कवि स्वतंत्र शक्तिमान काली अवक्रम हेन्सान নাহেৰের কৰিতা। ৰছদিন কৰিতা পড়িয়া এত খানক পাই নাই। এমন প্রকাশের আবিধ্য খনুত্ব করি নাই। বাংলা ভাষা বে এই কবির প্রাণের ভাষা হইতে পারিরাছে, তাঁহার প্রতিভাবে স্থানী ও পতিলালিনী—এক কথার নাহিত্য স্ক্রীর প্রেরণা বে তাঁহার বনোপৃহে খানুলাভ করিরাছে তাঁখার নিংসংশ্র প্রমাণ, তাঁহার ভাব, ভাষা ও ছক্ষা আমি এই খবসরে, তাঁহাকে বাংলার নার্য্যত মণ্ডলে খালত সভাষণ জানাইভেছি এবং খামার বিশ্বান, প্রভূত সাহিত্যানোদী বাঙ্গালী পাঠক ও লেগক-নাধারণের পক্ষ হইতেই খামি এই ফুবের কর্তব্য সম্পাদনে অগ্নসর হইয়াছি। বাঙলার কবিনালকেও আজকাল লাকণ প্রীয় আসিয়াছে, মলর সমীরণের অভাবে বাজনী বীজন চলিয়াছে। নাংলা কাব্যলক্ষ্মীর ভূষণ-সিঞ্চন, তাঁহার নাটনীলাঞ্চন নৃত্য ও লীনা ও নুপুর নিঞ্চন মনোহর হইয়া খনলেমে পীড়াগারক হইয়া উঠিরাছে। প্রাণহীন ক্রিম নিয়ম পুথলিত নীরণ কঠিল গাতুর আওলাভ মানবকপ্রের ক্রিমাছ ভাষার অপদার্থ কবি-বন্ধ: প্রাথীন বিলির ওবে বাংলা কাব্যা আকাল-স্ক্রার ঘরনামাত্র বঞ্চিত অসার অপদার্থ কবি-বন্ধ: প্রাথীন বিলির ওবে বাংলা কাব্যা আকাল-স্ক্রার ঘরনাদান নির্মানত। সূচিত হইতেছে। আপানার পত্রি গাতেও ছিলু কবির ঝিলিংবনি আছে। কিন্তু কাজী সাহেবের যে দুইটে কবিতা (ধনাগ্রনি পড়িবার সৌতাগা হল নাই) পড়িবান তাহ। খার। বোসলেন ভারত-এর গৌরব রক্ষা পাইবাছে। বাংলা কবিতার মান নাঁচিরাছে।

काकी मार्ट्सनत कनिडाम कि स्प्रिताम वित्रव ? वार्ता कार्ताव स्य व्यक्तांडन एक-बर्कात ५ वर्गनः रेनिंडिता এककारन गुक्र ध्येमाधिनाम किन्द्र धनर्गर्थ भितिष्ठिनत चारनां छिङ द्येता रव द्रमती मिथाकि भिनीत डैभन िनक इंध्योछि, नाकी गाइएदन कविडा পड़िया भार छुन-बाकारन व्यानात याष्ट्रः इप्टेनार्छ्। रय एम कनिजार मन्मार्थभरी कर्छ जात्रजीत ज्यम ना ध्रेरेश छार्यन व्यक्षि ५ सम्मानात्म मध्ठत ना द्देशा देमानीः (क्यनवाज भूयन-श्रीष्टिकत श्रानदीन छात्र-**हा भूबी एड अर्थन मिंड इंदेशाएए (मेर्ड एम्म এই नवी म कवित्र कविडाय डी हात क्ष्य-**िमहिंड डार्टन गिष्ठ सुन्न विनाध्या मानवनर र्वत खन्न-मिश्च राज्य श्रदेशार्छ। काकी मार्क्ट वन छीटा र याण्डः छेरमासि छ जान-कक्षानिभीत यनगास्थानी अयभ-उन्हीं। 'त्यसाभात्तर उनभी' नीर्घक कनिजान एल गर्वज म्गडः এक श्र्वेत्व भाजाविनाम ५ यण्डित रेविटजा श्रेट्यक श्राटक जावान्यायी ञ्च गष्टि कतियाद्य, ए. ए. ए. क त्रका कतिया छादात मत्या এই य এकति यननीना, वायीन ग्यूडि. অবাধ আবেগ, কবি তাহাকে কোধাও হারাইয়া বদেন নাই। ছুন্স যেন ভাবের পাত্রয় कविर छ छ । कानभारन जानन धिकारतत भीना नः धन करत नाष्ट्र । এই कविष्णेकिये भाठकरक मुक्ष करता। कविठारि धावृष्ठि कविराहे वाका यात या नरक ५ वर्षगंड ভावत यन कान-भारत इंट्रेन्स् नीभरत वाश्वि श्रा नाहे। विम्याः उत्तः उक्ति माहम, यहेन विभाग এवः সর্বোপনি প্রথম হইতে শেষ পর্যন্ত একটা ভীষণ গল্পীর অভিপ্রাকৃত কল্পনার স্বর শব্দ-বিন্যাস ও छ्ण बःकारत यु ि बित्रा कृतिया छेठिगार्छ। आमि क्वन এकिन बाज स्थाक छेब्छ कविव :

> वाव्यकत हम्यान हमत बानी हाइम्ब भेड़ी ए এ छत्रनीत, नाई छत्र नाई छत्र! काक्षात्री এ-छनीत भाका माबि बाह्या, केडियूर माविशान 'ना-नदीक बाह्यार्'।

এই শ্লোকে বিল, ভাৰানুষায়ী শৃক্ষবিনাসে এবং গান্ধীন ধ্বনি, আকাশে ঘনায়নান বেৰপুষ্কের প্রশান ভ্রমান্থ-ধনিকে পরাভূত করিয়াছে, বিশেষ এর শেষ ছাত্রের শোষ বাক্ষা 'লা-শনীক আলাছ' যেনন বিল ভেরনি আশ্চর্য প্রয়োগ। ছাত্র্নের অধীন হইয়া এবং চবৎকার মিলের স্থান্ট করিয়া এই আরবী বাকাবোজনা বাংলা কবিতার কি অভিনয় ধ্বনি গান্ধীয় লাভ কবিয়াছে। ['মোসলেম ভারড' সম্পাদককে লোখা বোহিতলাল মজুম্পারের পত্রে থেকে।]

उभरतास शबरे ध्रमाथ करत 'विष्टाघी' त्राचन धारण्य भारति जान जात देन देने तालाभारत उन्नी', 'भाजइन-बातव', 'कावनानी', 'काघनत्रम', 'वाषन धारण्य भवान' है ज्ञापि जान जात सरमा किछारन स्वी-भमारताचक बद्दान ममाम्ख इरविद्धालय। नक्करतात कविष्ठांत खारव खाया एरण्य ध्रकाणमी छिएक मकुन्य मृष्ठिष्ठ इरव निरविद्यालन 'विरक्षाची' त्राचनात्र स्वार्थि। वृक्षरण्य वस्त्र कीत 'कारणत पृष्ट्य' ध्रारक्षि म्युष्टिष्ठात्रभ्यूषक विच्या 'नक्ष्यन देनेनाम'-ध्र निरविद्धन :

'বিছোহী' পড়লুৰ ছাপাৰ অক্ৰে ৰাসিক পত্ৰে —ৰংনহ'লে। এখন কথানো পড়িনি। অসহনোগের অগ্নিশিক্ষান পরে সমন্থ ৰনপ্রাপ বা কাষনা করছিলো, এ-ৰেন ভা-ই; দেশনাপী উদীপনার এ-ই যেন বাণী। একজন ৰুসলনান যুবকেব সচ্চে পরিচয় হলো, তিনি সম্প্রতি কলকাতা পেকে গ্রেমছেন, এবং তাঁব কাছে। কী ভাগা! কী বিস্বায়! একখানা বাধানো খাতায় লেখা বিশ্বোহী কৰিব আবাে অনেকগুলো কবিতা। নোযাখালিব রাজ্যী নদীর আগাড়া বংটকিত বর্জবাঞ্চন্দিতীরে বসে সেই বাতাখানা আদান্ত পড়ে ফেল্লুম। তাৰ মধ্যে ছিল 'গুলে, ছতা৷ নয় আজা সভা-গ্রহ, সভাের উবােধন', ছিলো 'কাষাল পাশা', আর কী ছিলো মনে পড়ছে না। সে সৰ কবিতা অচিরেই ছাপার অক্রে দেখা নেতে লাগলাে, আর ভাদেব প্রবলতা আমাদের প্রশংসা করবার ভামাটুকু পর্যন্ত কেছে নিল।' (পৃ: ২৫)

ৰুজদেৰ বস্তব এই সৃষ্ঠিচাৰণ পড়ে স্বভাৰতই ধাৰণা হয় যে, নজকলেয় 'কোৱনানী' কৰিতাটি (ধার জক 'ডবে হাতা। নদ, আল 'সতা-এহ' শক্তির উষোধন') বৃধি 'বিলোহী'ৰ পবে পত্রিকান প্রকাশিত হয়। অবচ প্রকৃত ঘটনা এই যে, 'কোৰবানী' কবিতাটি প্রকাশেৰ ('কোৰখানী' ছাপা হংগছিল ১১২৭ সালের 'মোসলেম ভারতে') পরে অর্থাৎ ১১২৮ সালের ২৭লে পৌছের 'বিজ্লী'তে বিলোহী, প্রথম প্রকাশিত হয়। এবং সন্তবতঃ পত্রিকা পেকে বৃদ্ধদেৰ বস্ত যে মুসলমান মুদ্ধের কণা বলেছেন তিনি এসৰ কবিতা তাঁৰ বাঁধানো-বাভার তুলেছিলেন।

বাংলা দাহিতো বহু প্রতিভাষান কৰিই মনেক উন্নত নাংনর এবং জনপ্রিয় প্রবিতা বিধেছেন।
দেসৰ কৰিতা পাঠক এবং সুধী সমালোচক মহলে আৰুত, মালোচিত সমালোচিত হু হুয়েছে। কিছু
নম্মকনেব 'বিছোহী' কৰিতাৰ মতো এমন খ্যাপক মালোচ্ন সন্থাৰত: আৰু কোনো কবিভাই সৃষ্টি
কৰেনি। প্রকাশের বালে বাণে এমন আলোচিত সমালোচিত গোল হয় হুয়নি। এখানি কবিভার
প্রায় একই সময়ে একাৰিক পত্রিকার আছপ্রকাশ এবং বহু পত্র-পত্রিকার পুন্দু ছুণ্ণের ঘটনাও 'বিদ্রোহী'
ছাত্রা মনা কোন কবিভার ক্যেত্রে ঘটেছে কিনা বলা কঠিন। কবি আগদুল কাদিবের ভাষার '১৩২৯
সালের কাভিক মানে নক্ষেনের 'মণ্ডিবীণা' প্রভাকারে প্রকাশিত হয়। 'প্রক্রোনাণ' 'বিছোহী' 'বুর্কেতু'
'কামান পানা' 'মানোয়ার' বেণ ভেনী' 'পাত-ইন-সার্ব্ন', 'বেরাপারের ভর্নী' 'কোর্যানী' 'বোহ্বর্ন

প্রভৃতি কণিতার জনা তার প্রণন সংস্করণ ঘতি জন্প দিনেই নিংশেষিত হরে বার। বাংলা ভাষার আর কোন কারা নাজারে ধের হতে না হতে এত সমাধর লাভ করেনি।

'নিয়োহী' প্রকাশের জনেক আগেই ভাবে-ভাষার ও ছলে নতুন্থের জন্যে নজকলকে প্রথম অভিনন্দন জানিরেছিলেন বোহিতলাল মজুমদার। আর 'অগ্নি-বীণা' প্রকাশের সাথে সাথেই এ-প্রথের জানোচন প্রদক্ষে 'যুগ-প্রথর্তক কবি' অভিধার অভিহিত করেন আবুল কালান শাসমুদ্দীন। এ-প্রসংছ তিনি তাঁর সমৃতিচারণ মূলক রচনা 'অতীত দিনের সমৃতি' গ্রেছে লিখেছেন:

এর কিছুদিন পরে নজফলের প্রথম কাম্যগন্ধ 'মগ্রি-বীণা' প্রকাশিত হয়। নজফল 'বোসারের অগতে' সমালোচনার জন্য একটি কপি আমার কাছে পাঠিয়ে দেন। 'অগ্রিবীণা'র সব কবিত আমার আবেট পড়া ছিল। কাজেই সজে সজেই 'মোসনেন জগতে' দুই কলম্ব্যাপী এব সমালোচনা কেজলো। 'অগ্রি-বীণা' কাষ্যের প্রথম সমালোচনা ছিল এটাই। এর প্রথম সপ্রাহে নলিনীকান্ত সরকার সম্পাদিত 'বিজ্বনী'তেও এর এক লীর্ব সমালোচনা প্রকাশিত হয়। 'বোসনের জগতে' এর সমালোচনার আমি নজকল ইসলামকে মুগপ্রবর্তক কবি বনে অভিচিত্ত করেছিলাম। বনেছিলাম, আধুনিক বাঙলা কাব্য-সাহিত্যে মাইকেল ও রবীক্রনাথের পরে নজকল ইসলামই ভ্রীয় যুগা-প্রথতিক কবি।

रात्रादमा नामिक

लकी (इत्ल ठाई (ठाता! नकक्रम देमनाम

गरबन बाज़ान रङरङ अबाब बाहिब छुबन बुहै एक छोहे, धीनन ए'न प्यन करवेंगी बाह्यांन हिंदन गर्वणाहै। निरम्भ वांबा (बरन (बरन भूरक्ष जिज्य ध्रम क्य, भौतित । ठरवे इनोब यथम, मरका बाएक हम्रक उस । **टिंड्न नीट्ड ध्यामाक पूरन, या यटन, 'एमय एम् व्यापय,** 'সভুন-চোৰীৰ বা' তাকাৰ ঐ, হাপুৰ ক'ৰে ধ'ৰৰে 'ৰন। ভাল-ভলাভে থাশুনে বাবা, 'একাণোড়ে' ভূত পাকে, विन गोर्फ तय विकामाज्ञि—बोफ एडएड बीय शीय योरक।" वाजित्वना डाक्टन प्रिक कृत्वा पावी डुड् खुड्य. ना बरल, में बाका चुरजब छरध्य बाधाव कांबाव बुम। मुल्द (बना ब्रिन-कार्य एए:न-बबार मन (बड़ाय, ख्लूटंड त्म रच्यान-त्मयान, अकला त्मरक्षे निम्रंड हार। जात्व जिज्या बित्र (न यात्रा बाल्या-बापा जन्-जारमा, नाम्रान करन व्यानि शंशीन्। जावश्य बाह्य बहेकारमा। भारकारनव भाभ फिरब बान्—बाब्छा-ङ्रङ्च बाङ्छा व । ৰশান-ৰাটাৰ প্ৰেক্ত পেত্ৰী মানুৰ ধ'ৰে মাছ ভাজে। बार्टिय भर्म यानुरम बाबा धकरे धका स्वरंद रवहे नगड्या नारक्य नीक-ठूनि वयरव टिंग्न-वरक (नद्दे। उपब भारत जाकामुरन बान, ठकुरक् मनाव जिल्लानी. वाष्ट्रिया-नरण्ड छेक्टिय म्बर्टिय क्य-कांग्रे किगुबी। ज्ञ-एनएम् जान निनाह बनिन् विक नामन ननहे। निक चनिर्मा नग चान्रम चान्छ, जन्म निर्म राष्ट्रिया वि

श्यमि क त्व (यात्मव यह ६ छी। नम छकः हमाउ छहि— এक था (भएडेंट मुथा थिएडांट डिन्स्नाव डाग्न (ई।ठिहे बांदे। मीजाब बारमप প্रजाभ कात्राम रमरभानिको उवानिरोन এই करब कि जन् तिरव ? कंबरन स्मर्भ नीय स्थान ? (बीकांत्र वृत्क बाता बाँएथ एव जुड, जाहांत्र तिःहात्रन ष्यक्ष इय, बाक्य छानाय (बीन्डाटन (म उत्सीनः।। भोकाव शंकी प्रितिएय गर्यन ह लाम बोलक, पालक इंड পণ্ডিত নশান্ত तकरना भारतम (बार्य-गाम्बर मृह। यात्वत (ठारी छान य। इन छोत्र ठार्थ होत्र नव नोहन नर्तीय एग्राफ् विज्ञात निज, एक इ न প्राप्ति तम। रयमभि ए'त किर्भान वर्यम, यमिन चिन्निनिक पन नत्कन गठ नीत्नन एड नानान् छीटम दमन प्राना । **जिनिमाएडन** जीनना **एडरन न्यन-डाएन्ड निम्नारीन**. क्टलन नतीन हुन्त काला। तम्बेट नाजु, त्र प्रिन, (एनरन एप्टरन लगारी (कमन, शिक् ना এनन शाइडि नान, यात्छ क्षा, গেইক হাসি, বশ্ব মত লক্ষ্য তাব। (। इ. स्ट्रिंग क्रिक्टरम, व्यामि मापा इत नीहू. याता-यानित बान भारन ना-रशानवारन तग्र भन लिख्न। চরিত্র ভাব ং সোনাব ছেলে, পড়ার ধবের বাইরে ভায় পুরুষই হাম পায় ना দেখা, এমন ছেলে কজন পায়। (गोबरम मि नीत इंन मा प्लिन श्रेनन १ मान क्लिटन বিশ ৰতাৰে ভ্ৰমতে পানিল গুলাৰুটী তেলে ভাই ভোৱা । ক

क्यानबाकुम वक गार्टरका भोकरमा धांथ। निकाय निकाय किया किया किया गर्दाव कविदाहि धकानिक इरविद्या। এव गर्थावक कमाव यानवाकुम करका पट कविद्याहित बहमाकाम ১৯৯৪ गाम (देर ১৯২৭)।—गन्नाकक

चवनिनि

तककृतनीि

ি নজকলের গান ও তার সংগ্রহ ও সংকলন প্রকাশ নজকল একাডেমীর একাটি প্রবাদ প্রকাশ পৃথিত। যাদের কাড়ে নজকল-গাঁতির বানী, তারলিপি, হস্তালিপি, বই-পত্র, পুরদো গ্রামেদেন রেকর্ড ইত্যাদি বা সে-সর সংক্রাত্ত কোন তথা রয়ে গেছে, তাঁদের কাড়ে নামাদের অনুরোধ নজকল-গাঁতি সংরক্ষণের জাতীয় স্বার্থে তাঁয়া যেন দরা করে সে-গুলো সাধারণ সম্পাদক, নজকল একাডেমী, এ৫৫ ডাউনের সার্কুলার লোড, দাকা (ফোন নং ২৫৩৫৫৫ ও ৪০১৬৬৬)—এই ঠিকাদার পাঠিয়ে দেন বা সে সম্পর্কে জানান। এ-রক্ষ কোন জিনিস পাড়য়ার পর তো নজকল একাডেমী পত্রিকার প্রের কর নামোনেরপূর্বক প্রকাশ করা হবে।

नीएठ करतकति भञ्चकन-भीजित प्रमुक्ति छाप। दोना। गोता এ-गत प्रतिनिधि पामारमक क्षणा। करतरङ्ग, बना नादला, এ-छन्तान नामी। एन ५ प्रमुक्तिपिन ए।विद এकोखाडाएव छीरमत्रहे। मण्णीपक]

উচ্চ यत्र-त्र	1
भिग्न चन-प्	

ভেৰুছিনা ভীৰম্বিকা

	Ţ	ভাল দান্র।				
}			O			į
बिन्	भिन्	111	41	ভিশ্	ना	
., 5	4	5	8	Q	b _	

4

मुकारम बहिरन छित्रमिन दुनि मैं। यह स्मन मानमीर छ 'दन सम होत क्रमीबिड ह'न समु (इरहरनन पानमीर छ।

खबृष्ठ खणुर-त्रिना निश्चद्र हित्र-विभिन्ना हित्र-रंगानिन्नी ८४ वृशिमा।

ट्यांबाव पि उत्तारम, 'उर्था भाषाचामी कवि, चौकित्व रम एव बिन्नह-निषाण छ्वि। नाण भाष दाव टाजवदन डाहाव कक्रम मःत्रीरह॥

কোন্ সে ডক্লণ কবি ভোনাৰে ভোনাৰ কৰিতা ৰচে যে স্থানৰ লেখেছিল গোলাল কুলেৰ পাঁপজিতে তব ছবি প্ৰোৰ-চলনে এঁকেছিল।

धिमात्र जारमण जाश्वरमत्र माद्य महि मृद्धिम धिनिक এकि कथा ना कहि त्यदे स्थान दिया विषय जास्त्र जार्थ क्रिया-श्रीमार्थित स्विटिस्ट ॥

३०२ | बकारख्यी निवस

७ वर्ष । ३व मरबग

वस्त

*'' यम् ड पन्। ' इकेट ड ''(अनुशिया' जगन्न आहिया धापन अन्ति (नाक्ष्म) समिर्ड इकेट्स।

সঞ্চারী

श्रीवय-वर्षा : ३ % 8

नक्कन धकार्डियो প्रतिका । ३०३

चारकान

चत्रशिभि : क्यम श्राम्बद्ध

ভাগ-- ৰাপ

बाटक युगक बीना बाटक यूगनी नन-मूनान बाटम युक्क मूनानी ॥ नाटक डाबिन् बिन् खबीन जानटन इटक इटक डिपनि डेपनि ॥ निवास कथ्य (मार्क कामरम सूच्य (मार्क इक्ष पड्या नर्ड डांबाकुन बनगरम। त्नहारत उक्तकुन भी प्रवास्त्र भ्य कथ्या कर्या चित्र विक्रणी॥*

II श्या या०	त्रमा रिष्। प्सा र्। मा ०० त्या ०० त्	मा रिया या या रिया रिया रिया रिया रिया रि
गा ना	ा रिका का जा मा निया ए एक एक में मिला	वना I पत्र श्राम्। ०० को० ०० I
म्। न	ल्। विं। ज्या न्या न्या न्या न्या न्या न्या न्या न	मा मा जा जा मा Т
त्रे। स	या प्रयो भेशा भी मुख्या य प्रयो ०० प्रातात	स्थमा I ता जना । }] ०० ली ०० ० ऽ नात्थ मुक्त मीना ॥
ा भाषा भाषा	प्रिंग का मा मि। उत्तर का जिल्ला	ना मि । ना Т
न्।	भा विश्व मा प्रिया मा प्राप्त	र्निता विषय था भी भी है
ৰা ছ	भा विशेषा की मूर्या व	र्बर्धा । में । ।] में न । ज

^{*} क्वकाङ। (बङारव बाकारमा श्रारवारकान रवक्डं (बरक वृत्तीः। नावक: क्षात्र (माधानी। -ववनिर्णकाव वीच्य-वर्षा | ১৯৮৪ मकाका श्रकारहरी पश्चिका | ১৫৫

वाटक बुलक बीना I गङ्गा गङ्गा কা ना म उड़ा ভাণ ना ८न **VI** मा न ा पर्ना । ना उड़ी उड़िमा । ना नड़ा मा व ० ० वि किं ०० ० नी ०० ० चि ० वारक मुक्क बीना ॥

चत्रमिणि: এ এইচ गार्टेष्ट्रत त्रव्यान

তিন

নস্ভিদেরই পাশে আমার করর দিও তাই,
(বেন) পোরে থেকেও বোরাভিনের আজান শুনতে পাই।।
আমার পোরের পাশ দিয়ে তাই নামাতীরা বাবে
পরিত্র সেই পারের ধ্বনি এ বাশা শুনতে পাবে।
গোর আজাব থেকে এগুনাম্পার পাইবে রেহাই।।

कड नवरिष्णभात्र (थानात्र उक्त भनीकीत उत्तर ये बनिष्णप करवरत्र जारे (कात्रान (उता ५तार)। रारे कात्रान छटन (वन जात्रि नवान ज्ञाहि॥

क्छ नत्रत्न किवास छोरे नम् जित्मत व्यक्तिनात्छ वाह्य नाम किकिय कर्य मुक्तिय गडीय बाट्ड। वाह्य जात्मत मात्प कितम (केल्स (वाह्य) नाम क्रमट्ड छोरे॥*

रिशा त्रिक क्रिक्त क्रिक क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्र

[-PI -পI -দা I U U O O O]

I -र्जा -। वशा र्मभी I-भी भी भी मा I भी -। । -। मी भी भी }] [व्या का व्या क्या का व्या का व्या का व्या का व

I ना बना -र्जबा क्षा कि का - । क्षा I -न ना बा I -न मा भा I न मा पि भा पि न मा भा पि न मि भा पि न मि भा पि न मि भा मि भा पि न भा मि भा मि

र्भ I श्रम का -विश्व पा I -1 मा न न मा I बाबा -मा शा -1 I -1 -1 भा -1 II का न ा न म ा न वा मा पा । पा । पा । पा न पा न II

^{*&#}x27;विक् वाट्टीयन करवन' (क. कि. वि ১৫८৪৮। कर्ड : (वा: कारनव।--वर्त निकाय

I भा भना - ना मा I भा भना ना - I ना ना ना हा वि का ना - I वा छा ० ० व ० व ना इ जी व

का का I-1 -1 ना I मा मना -मा ना I -1 -1 ना मा मिंग में निर्ध - धर्म I कुछ ० ० भन्द ए प्राध् ० ० न् ० त्या मा न उक् ० ० ङ्

T ণা ধণা সর্বা জা । জা জা -1 -1 । জ্বা-সার্বণাণৰ । -ণা দা পা-1 । ক্র বা বা ত ত ত ত প ভেত ত রে ভাই

I - । अत्राक्षा I - । या का - । I या - । । या भा । I । या ० ० ० छ या है

{भा भेषा-पा मा भा-प्रभा मा -1 I -1 ·1 भा भा I मा पा ना 1 रिका बाठ ठ न' ७०० त्न ० ०० ता न ० जा वि ०

खा खा I - । - । खा या I यथा प्रया प्रया - । I - । - । वा र्या वि I या र्या य छ ० ० प त त्या त्या ०० म् ०० म क् त्रा खा० ०१

I ना ना मा मा मा ना ना निर्मा विभागी ने निर्मान ने निर्मा । जिल्ला का कि का का

I 어찌 - 이 찌 - 1 I 어 - 마 피 - I - 기 - 리 때 I 리 - 기 - 기 - I তা০ ০ ৫ 및 게 ০ ৫ ০ 0 대 0 대 0 대 0

७ई वर्षा । ३४ मःचम

[-1 -1 -1 भा भा]

चत्रणिभि : चत्रादेत्रा पणिण

এছ পরিচিত্তি

तककुल-कोवतो

वारता माहिएडा श्रकाभिष्ठ किन नककत-मल्लिक ब्रह्माब म्रुबा गर्भा गर्भाठींड मा इएड शास किन्द्र यम्भा श्रेड शिक्तमा श्रकाभिष्ठ एम-मन निक्छि ब्रह्मा श्रमा क्या बनावा बालाव मा इएस. महन्त्र महन्त्र श्राणाव निष्ठगरे गर्म। ध-मल्लार्क ध्रमाकार्द्ध श्रकाभिष्ठ वरेराव मर्थाछ स्वारिष्ठ सन्भ गर्म। यस इम्मा व्यवस्था बरीजनार्थ छाड़। नार्माद स्वारमा किन-माहिडि।क मल्लार्क ध्रक्र अविक मर्थाक ध्रम्न वाकार्द्ध कर्यमा श्रह्मा छाड़। नार्माद अवरंग। नारे। स्वार्ष कर्यमा वालाद ध्रह्मा मार्थ प्रकाश स्वारमा अवरंग स्वारमा अवरंग स्वारमा वालाहिड स्वार्थ छिलाम मा।।

यता नाधना श्रेषानारत श्रेकांनिक मजन-जीवनी धनिन यिकाग्रंभके मजनन केमग्राह्मन वेश कीवगरे बाख পাওয়া যায়, **डीत পুণাঞ্জীবনকাহিনী লিপিবশ্ব হযেছে, এমন বই**য়ের সংখ্যা সামান্য । নজকল-জীবনের प्यान्तिना भीषुमा गांग এमन अप्रकृतिन मर्या गांडिं नेहर्यन नाम डेर्झर्य क्या गांग। रंग गांडिं इराह: ১. गुर्गगुही मध्यक्रन-थान साहायम महेन्दीन। २. ट्यारक्रांत अङ् व्यक्तियास्त्रात (मनखर्थ।). नष्टकन खीननी अन्। नक प्रकिन्न देमनाय। * ४. काळी नक्कन देमनाय: रमृष्डिकथा - मुझक्कत व्याध्यम । त. काष्ट्री अखकन - श्रावर डाम छही शायाय । ७. मखकन शतिकया ---व्यानम्ब पाछिक पात्र-पात्रान । १. भक्कन क्रीनरभन्न र्मम व्यवाग्र—स्की ख्विकनान शाप्रभान । थ्रष्टां अप म्'हिट इ. 'गुन्यु है। नक्षत्रल वितः 'देकार्ष्ट्रत साइ'- व ममध नक्षत्रल-कीननात्र (साहासूहिङ। त जूरन **यत्रात (5है। क्**त्रा शल्य अधिन श्रयान्ड: २मृष्डिठातन পर्यात्मन ब्रह्मा शर्मा शिर्मण्ड। अब नक्ष्य कान्न अ बरबर्छ। এटमत अथेकध्य बीग मोशायन मञ्जूकीम ७ विष्याक्याव रामध्य छेडरबरे कवित्र बीवन यशास्य कवित्र चित्रके मान्तिमा व्यामाट्य পেরেছিলেন। भीषंभिन बात्र উভग्रहे कवित्क वद स्थारन ছায়ার ন্যায় व्यनुत्रबंध करब्राह्म। এই कांत्रपिट कविन जीवरान गापि और एवं वाक्तितंत्र मन्नर्कंत्र वााभावना करना কোনো স্বানে এত বেণী যাত্রায় জড়িয়ে গেছে যে, ভার ফলে কবি-জীবনীৰ সরল নির্ভেজান ধারায় কিছুটা क्याभाव ब्युकान गृष्टि दरप्राप् । गडाकाव निर्द्धकान कीवनीकारबव भएक वाक्षिशंड ग्युडिठावन क्लाना क्लाना क्लाब उपनाब यत्रवास घटा ५८ठ । अनः वहे बुक्क्षव व्याह्यक्षव ''काकी नक्कन देननाय': 'मृजिक्यां '७ नक्षकन-कीयनीय भर्षात्य ना त्करन मृजिठावय मृनक श्राप्तव भर्षात्यदे त्यना त्वरङ পারে, এ-কারণে যে লেখকের সাথে নজকলের যুক্ত জীবন-কাহিনীর বিষয়ণীই এর প্রধান উপজীবা। জার

'-बीयमे ।। विक्रून देननाम ॥ हाका विगुविनाानव ॥ नाम: ၁०:००

७२१ ७ १२६ वर्षे द्वानरकान करहोणानारका ''नाको मकका'' ७ स्की जूनकिनान शानगरका ''नकका जीनरमा त्येष प्रमात' मन्यर्क छ अक्षे क्या बीटि। यकि श्रेष बृति पृष्ठे मूमानान। ७२१ वर्षे जानगुन जाकिक जान-जानरमा ''मकका शिकां।' महन्यतः ''मकका श्रीवानी'' बहुनान द्येष श्रीहरो। किन्न वर्षेटिन क्रि.हे शंग नरवन्तानुमक जीननीश्रेष नहनान (बह्मिक श्रीकि स्वर्धारम क्रमा

अर यह खबारिक विक्रून हेननाव बिठि ''भक्कन-कीवनी' कि वाहोत्रिक्ठित सक्कम हेननार्यक स्थान जीवनी अप बरन चिक्रिक क्या हरन, कायन नवकन-जीवरभय काक्षितीय बाबावादिकका এएक बाहाबुहि उत्य जरून जारह। जात्र डा छाछ।, এতে मजकम-माहित्जात डेक्डि राहेन जारह, शहाशहिन नाहिनीय गार्च गक्छि बन्धां बनाष्टे छ। क्वा शर्वछः -- गक्छिशीन बनावना कडार्व रग-गव क्वा एव शक्ति। अहे विक विषय मजाकान जीवन-क्रांशिनीकां किमार्य (नर्यक्त्र मःयम श्रमःमनीय। निष्ठयप्टे (नर्यक्त्र सुविधा खिन এই हेकू त्व, जिनि कर्वरना ऋचावचाय नषकरमद चनिकं गानित्या जारमन नाष्ट्र चामबाद खरवाने अ उांच छिन ना। यथेन डिनि नककन गानिया यानाम स्वयान लिलान, नककन उपन मिल्हाना, जीवना ७। এ कार्यान नवकन-जीवन गण्णार्क म्युजिहाबन क्यांत्र सावान जीव वस नारे। म्युजिहाबन-काबीरमब भएक मजामक कीवन-काशिनी वहना त्य এटक्यारम वमाम्यः এ-क्या वमाम् मा। जस्य डोरमत भएक मडाकांत्र स्थानभी-रनवकरमत साँछ शरदास्थानीत मःवरत्व वाडाय योग वृत साञ्चाविक। उच्छाम बाबना, यनाबनाक উদ্বৃতি जातक काटा जीवन-कार्शिन बाबाबाहिक्छाटक क्_{री} करता। भ्याजिहात्रनकारी य गठाकात कीवनी लावक छएड भारतम, 'छात्र अक्ति निवर्णन स्वय द्वात बात होतुनी थ्ये । विषय की वस-म्यृत्ति । (प्रयम्यात तान हो बुत्री विषय माराम यनुष श्रीष्ठ्य-वस् हिर्माम । किस जिनि (व ''बिट्या-की बन-प्रवृत्ति' बहुना करत्राष्ट्रव जाएक मजामक की बनी दनवर्षक चाक्क मुन्ति । जयानक विक्ति रेननारम्य ''नकक्षन कीवनी' चारन्ट बरन्छि, भाष्ट्रमुतिखार्य नूर्नाक कीवनी-श्रक्त इंटि (नरब्र्ए। এटि नव्यक्त रेन्नारम् नमध वीबरम्ब रेजिशमि (बाहाबृहि बाबाबारिक्छार्य वाब नाठ करबर्छ, এ-क्या निःमरम्पद्ध बना ब्याङ भारत बरन बरन कवि । सम्बन्ध छीत अ-बहेरतम सुनिकास ध-कथा बानाकुन :

विद्यारी कवि काणी नवकत हैमनात्वत्र धानाना पूर्नाक कीननी-श्राप्त यज्ञाव वांना माबिएका कीर्मान वदत्र यनुजुङ दक्ति। तम यज्ञाव पूत्रत्वत्र क्रमादे नवकत-कीवनी प्रक्रमात प्रजी दिवा क्रमान ।... नक्षकत्वत्र मनकानीन विद्य क्रमानात्वत्र पित्रिधिकिएक कामानुक्षविक्षाद्य मक्कत-कीवनी जूटन वत्रास्त कर्षाद्य ।

बन्द दिना नाहे जारनाठा श्रंप राज्यक्त रा छो। किछूठी गांकनामिक हरतछ अनः राज्यना किनि बाःना गाहिन्छा-नावकरण्य सक्ष्ठ बनाबारण्य भाज ।

পূर्वाक कीवती वनएं या बुबाब, जान कठान काठारम। এই बदेएं भिरमान्तरण देखी बरबएं बर्छ किन्छ नक्ष्मन-कीनरभन करनक बृंहिनाहि ज्ञेषा এएं वाल भरक्रए, या मरबूक करन और कीवनी क्षिकंडन ज्ञेषा-मनुष्क हर्ड भावज बरम कावजः वर्ध किन । जा शक्षा मक्ष्मरमन बहेमानकम कीवरमन करनक बहेमा करमरकन प्रमानक बहेमा करमरकन प्रमानक कीविज

वक्षा वकारहती निविका । ३५३

শ্বশারট এই জীবনী প্রকাশিত হওয়ার, তাঁর বৃত্যু পর্বন্ত কিছু কিছু এবন ঘটনা বাদ পড়েছে, বে-সব সংযুক্ত হলে এটা সভিয়েশারভাবে পূর্ণাল জীবনী হতে পারত। অবশা এই বইয়ের ছিত্রীর সংজ্ঞাপে সে-সব এতে সংযুক্ত হবে বলে আমরা যনে করি।

নজকলের শৈশন জীবন সম্পর্কে নোটাবৃটি পরিচরই এই প্রয়ে দেওরা হয়েছে বটে, তবে নেবক আছে।
কিছু নজকলের জীবন-চিত্র এই প্রয়ে সন্মিবেশিত করতে পারতেন। যদি তিনি কলকাতার
প্রকাশিত নজকল-স্বৃতিবৃদ্ধ বইগুলি আলোচনা করে দেববার স্থাবাগ করে উঠতে পারতেন। বিশেষ
করে ইপ্রমোহন সেনগুপ্ত নামক স্পর্টনক লেখকের নেবাটি পড়ার সময়ে, নজকলের বাল্যজীবন কিরুপ
জাহ অবস্থার মধ্য দিয়ে কেটেছিল, তার সত্য পরিচর দেওরা সম্ভব হতে।। আট বছর বরসে
পিতৃ বিয়োগের পর নজকলকে সমগ্র সংসারের ভার গ্রহণ ক'রে কিভাবে একদিকে মসজিদের এমানতি,
দরপার খাদেনদারি ক'রে কোনজনে বাড়ীর সকলের বুবে জনু জোটাতে হত, তার পূর্ণাল পরিচর
দেওরা সম্ভব হতে।

गजनात्वत श्रथम विवादम द्विक्ति পরিপতি সম্পর্কে লেখক তাঁর এ-গ্রাছে সতা পরিচমটুকু তুলে ধরতে পেরেছেন। বিয়ের কাবিনে ঘরজামাই থাকার শর্ত থাকার ফলেই যে সজন্ত সে মপমানকর শর্ত না মেনে বিয়ের রাতেই বিয়ে বাড়ী থেকে পালিয়েছিলেন, লেখক সেই অভিমত্ত পোষণ করেন। চরম দুলে জীবনেও গজন্মলেন আছুসন্ধান প্রদর্শনের এ-চিত্র সতাই বড় সুন্দর।

बीद्र बीद्र विनवाञ्चत्री नक्ष्मत्वत्र मानदन এत्म बीड्राद्यन।

[&]quot;এकि ना! जूनि।" धारना कारना अज्ञावनीयक एचर्छ नक्कन। जाकारना विगुर्य! "दैंगा, कृतिमा प्रदेक जान्छि।"

^{&#}x27;'তুমি কেন এত কট করে এলে? কভ দূরের রাভায়।''

^{&#}x27;'এদেছি, ভোষাকে খাওৱাৰ ৰলে।''

[&]quot;ना, ना। यामि थार ना। किछूएखरे मा।" मङ्कल जार्शाख क्यरण नाशन। "यङ्कर नाशन्तरम-हे जानांत्र नारी मागरध्।"

^{&#}x27;'शरी बामरद। खाबि बन्छि जुनि बाउ।''

^{&#}x27;'भा भा।" भक्कन उर् वानिति क्वर्ड नार्भन।

[&]quot;এ তোষার যারের দাবী। এ তোষাকে যানতে ছবে।"

^{&#}x27;'वा!' नक्य (ठाटर्ग जीकाटना नकक्त।

"जारमा छात्रांत जमा यानि छिरा मिन छेलतान करत जाहि। नामा लच करतक रगित। मून-जन किंदू बोरेनि। छूनि यमि नरबा छात्र धार्म जानि महम। जानवाडी हवान जारम छूनि बांज्रका ररव।

''ना या। जिनारक नूर्य नूर्य क्रिय क्रिय क्रिय गा। भाकरण क्रिय ना छेभ्यारम।'' अक्र नूर्र्ड नक्षकत यन चित्र करत क्ष्मता। बन्दन छेर्डन क्रिकें ''निर्देश अम, कि क्रिय। जानि जानित क्रिया था।''

विक्रणाञ्चलको त्वकृत कर करत यागरनग। जारे (चरा मक्कल यग्नन जारन।

विकास्त्रांत रामकारण्य ''व्यार्क्षत्र संड'ं व श्रेकालिड नवकरात्र वानान डाहात्र है भरत्राक्ष विनत्रनिष्टे विकि गरिक महन क्या मा कि १

यबालिक तिक्व देशलादित अर्थ ''नव्यक्रम-वीवनी'' श्रीष नव्यक्रल-वीवनित दिशान अर्थाण योगार योगारे विक् वाम लिए नारे, किन्न नव्यक्रदलन माःवानिक वीविद्यान अन्ति एक्यम् मृत् विवास अवीदन व्यक्ति। एक प्रत्य विवास विवास वाक्ति विवास विवा

যা ছো হ, যা বলছিলাম। এট 'সেবক'রই প্রথম সংখাতেই সন্তবতঃ নজকল ইসলামের 'সেবক' নামক কবিতাটি প্রকাশিত হয়। যতিও রওনানা সাহেবের সাবে নজকল ইসলামের তর্বন বিশেষ সন্তার ছিল না, তবু ঐ পত্রিকার নজকলের 'সেবক' কবিতা প্রকাশ সন্তব হরেছিল সন্তবহু পত্রিকার সহকারী সম্পাদক মোহারাল ওরাজেল আলীর চেটার। কিছু পাবিশুনিকের বিশিষ্টের ক্ষবিতাটি সংখৃতিত হতে পেবেছিল। সে-সম্মে গান্ধীজীয় অস্তব্যাগ আমোবনের আনামের দেশ উর্থেশিত, উত্তাল। মঙলানা সাহেবের এই উত্তপ্ত প্রবহ সে-সম্মর প্রকাশিত হওয়ার করে 'সেবক'র আনামত তবর হয়। কলে 'নেবকে'র প্রকাশনা হয় হরে মান্ন এবং মন্তব্যানা সাহেব এক স্বস্থানের জনামত তবর হয়। কলে 'নেবকে'র সহকারী সম্পাদক মোহাত্মণ গুরাজেল আলী ও আনামান সহকারীয়া বিন্দে শ্রাক্র করে তবন 'লৈনিক মোহাত্মণী' প্রকাশ করতে নতুন কোনো। 'লাধাত্মিক মোহাত্মণী' চালু থাকার তার একটা দৈনিক সংভ্রমণ প্রকাশ করতে নতুন কোনো। ভিন্নারেশন সম্বকার হয়ে না বলে উক্তির প্রামের্শ কিল। কলে দৈনিক 'বোহাত্মণী' মধাত্মীতি প্রকাশিত জন। এব কিছুবিশ পরে সভক্তঃ ১৯২২ সালের বে কিলো জুন বানের কোন স্বব্রে বোহাত্মণ গুরাজেল আলী এক চিটি স্বেন্থন আনাম কাছে আনাম সেনের বে কিলো জুন মানের 'নৈনিক মোহাত্মণী' র সম্পাদকীয়াক প্রামেন্ত আনাম কাছে আনাম কারে আনাম কারের মানাম সেনের বাক্তির উক্তানার 'নৈনিক মোহাত্মনী'র সম্পাদকীয়াক স্বিত্তি স্বেন্থনীয়াক স্বেন্তনার বাক্তির স্বেন্থনীয়াক বিনার 'নেনিক মোহাত্মনী'র সম্পাদকীয়াক স্বিত্তি স্বেন্থনীয়াক স্বামান করের বাক্তির স্বিত্তা স্বামান বিনার বিনার স্বামান স্বাম্বার স্বামান স্ব

ৰিভাগে যোগদানের জন্য । আমি ,বাড়ীতে পেকার নগেছিলান । আমি সানলে এ প্রভাবে রাজী ছরে পরদিনই কলকাতার গিরে কাজে যোগ দিলার । এর রাস থানেক পরেই সম্ভবতঃ ওরাজেদ জালী বললেন, "নজকল ইসলার ওণছি কুরিয়া থেকে কলকাতার চলে এসেছে । ওাঁকে আবাদের টাকে নিরে এলে কেবন হর ?" জাবরা সানলে তাঁর প্রস্তাবে সার দিলার । সজে সজে নজকল ইসলাবের সাথে বোগাবোগ করা ছল । তিনি তখন এ২নং কলেজ স্টুণিটে "বজীর বুসলবাদ সাহিত্যানিতি"র জফিলে থাস করছিলেন । তিনি ওরাজেদ জালীর প্রস্তাবে রাজী হয়ে পর্যাদেই এসে 'লৈনিক নোহাম্মদী'র সম্পাদকীয় বিভাগে যোগ দিলেন । 'দৈনিক নোহাম্মদী'তে নজকল ইসলাব বাস থানেক কর্মনত ছিলেন । যামার আরজীকণী "অতাঁত দিনের সমৃত্তি" গ্রন্থে সে সম্পর্কে জামি থিকাদ বর্ণনা দিরেছি । সেখান থেকেই নিয়ে কিছুটা উদ্ধৃত ক্রম্ভি:

''रा'राक करतकपिरात मर्थारे मळकरमम चाविडींव रन 'पिनिक याराचनी' चिकरम । এरमरे जिनि बनरनन : चामि किन्न बाजनमानक कनामीं निषद ।

এই क्लामित व्यापि लिभाजाम इएमक मुक्य नारम। यामि वलनाम: युव जारन। इएव। व्यापनिष्ट एक। এ-क्लाम निभयाम गथ ठाইएक योशा रमधकः।

নজকল এ কলাবের নতুন নামকরণ করলেন 'কাতুকুতু'। প্রতিদিন কাতুকুতু বেক্সতে লাগল। 'লৈনিক ৰোহাম্মদী'র পাঠকদের মুখে হাসির মনোড় উঠল। তথু কাতুকুতু নর সংবাদগুলির হেডিংও তাঁর ছোঁয়ার ক্ষিক্ষয় হয়ে উঠল। দু'এফটি হেডিং-এর নমুনা দিচ্ছি:

> '(नहाति निर्देश येखिनान त्रांगड-जावि जिडि नान। 'किकित हिकिविकि' 'जालारनक हा लान'

'দৈনিক নোহাম্মনী' নিয়ে পাঠক্ষহলে কাড়াকাড়ি পড়ে গেল। কাপজের প্রচার হছ করে বেড়ে চলন।

নজক্ষণ বাত্রে অনাত্রে পাকতেন এবং পেতেনও বটে, কিন্তু তাঁর দুপুৰের পাওবাটা আবাদের সাথে অফিসের টেবিলেই সম্পন্ন ছত। চা-পাতি গোল্ড তাঁরও কর মুধ-রোচক ছিল না। থেতে থেতে তিনি নানা গলপ গুজনের অবতারণা করতেন। আবরা তাঁর অইহাসি ও হাসির গলপগুলি পর্যর উপত্রোগ করতান। * * *

अक्षिम चाउतात मगर प्रदेश जिनि जामारक किरक्षम क्रम वमरममः 'जानमात बाड़ी काचात ?' यमनाच, महमनिश्टर ।'

"किश्व बन्नवनिश्टह काबात ?"

व्यक्ति वजनाव, व्यानमात्र वाङी वर्षवादन। वार्णान वस्त्रवनिः एक श्री श्राटवस पवस एक " श्राटवन न। कारकरे व्यावात श्राटवस मात्र वनात वार्णान हिन्दछ शावस्त्र ना। 'चारत्र मिन्नानिक्षे बनुन मा। याति नत्रममिन्दिक चरमक निम हिनान रन।'

'(वर्ष । बानीरबीना — এ नाव उरमरह्भ कबरना में

क्म छनव मा । जावि वानीरवालाव अन्याम जानी वृथात्र वाङीएड जाव पृक्ष वाह वत्र जिल्लाहिनाव (व !

'जिन्ने ना कि ? त्य बाढ़ी एका जाबारमम बाढ़ी स्वर्ध बाद्य बाह्य बीएमक कुरब।'

'हैं।, जाबि मतिवाय पुत्र कृतन এक वरमय भएक्कि, এवः काजी व भियनाय काजी वादीराज स्थरकि।'

'काकी बक्किम्बाह गारहरका बाक्रीटि पोक्टन, विधि यागानरगारन गरबाना छिरलम ?'

'हैं।, जिमिरे एका बाबारक बाजामरनाल स्थरक काबीन निवनात्र निरम शिक्ष पतिवासनुष कूरन जिल्हा कतिरम स्थान

'कि पाण्ठर्य! এटम प्यामान क्वनावन वाष्ट्रेटन किन ?'

'व्यानि এकतात व्यानात कूरमन नदूरभन्न मार्च बामीरचाभाग शिरतिक्ष्मान এक कूरमन वार्षिक महाय। स्मिन्न स्मिश्चारमञ्जूष अक रक्षमन निर्वा এकिंग माहिका चिक्रीड श्रावित।'

'याभनाव लाहे बहुत्वब बर्गा ऋखन बरम (क्डि फ्लि कि १'

'हा निष्ठगरे छिल। किन्न लिन्छ श अर्था अर्थाम साम्राज्य कि करम !'

'खात्तात्र এই कात्रप्त त्य, ऋखवडे त्रिधन खालनात्र गत्क बावात्र लिविहत कत्रित लिविह्य ।' 'खात्त्व, चालिंक्ट त्यदे कृत्य मोहाकात्र ना कि !'

व्यापि १६८ग नजनाम, 'यात्र व्यापिनिष्ट नक्ष्मम हममाय पर पिन-नाख भाग भारत व्यवसानि घरम तिकाल श्रवः क्राप्त वर्षावत्र कारते हस्ला।'

একদিন নতক্ৰল ইগলাৰ ৰড়ের খেগে অফিগে চুক্তেন্দ, ৰললেন: 'ওনেছেন' সভ্যেক্ত্ৰমাণ দত্ত গভকান বাৰা গেছেন।'

बननाव : 'दा, काशरक (म-भ बाम एए बिहि।'

नककन देगनान बन्दनभः 'गएडान मरहन डेभन शकते। अछिति। बिलाम भिनेटड हरन रहा ' योग व्यक्ति निनि कि नरनभः

उद्यालम निया वनतान : 'निक्तसंदे! अभिन भाकरण तिम मात्र तक निर्वरण गारव !'
वृत वृत्ती हत्य मककन श्रवह निर्वरण तत्र त्रित्यम । आवता जिल्ल निल्ल कात्ल वन भिनात ।
वृत्र वृत्ती हत्य मककन श्रवह निर्वरण तत्र त्रित्यम । आवता जिल्ल निल्ल कात्ल वन भिनात ।
वृत्र कार्याहन नाहेर्ज्जतीरण गरणाळ ग्रविक्रण वृत्तिण क्रिक्षण । ग्रजामिक क्रवरण वर्षीळगाव ।
हत्र त्रित्र व्यक्ति ।' अवरूष विया वस्तिम : 'त्रिन, गांश्रवा यात्न । क्रिक्षण व्यक्ति त्रिक्षण व्यक्ति । अवरूप क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण विवा क्रिक्षण विवा क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण विवा क्रिक्षण विवा क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण विवा क्रिक्षण विवा क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण विवा क्रिक्षण विवा क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण विवा क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण विवा क्रिक्षण क्रवरण मिन । आवत्र क्रिक्षण क्रवरण क्रवरण

छाई इत। नक्करतात धर्ड ७ जांगामत त्त्रवाक्षित कर्णाकितात्त्र वार्छ विस्त जांगा नोक्कात्र किंदू जारता प्रश्वाण वस्त्र शक्कातः किंद्र वातस्यावण नावस्त्रप्रीरक स्नीर्घ स्नि, त्रहारस्त जिल वातस्त्र वाभ जाहे। नक्कम क्लावकस्य जनकाव क्रिक्स भव कस्त्र जांगास्त्र क्रिय क्रिया क्रम्पान अनः प्राचिक प्रियम वर्ष्य अक्रिया अक्ष्टिया व्यानीतिक स्वानीतिक स्वानीतिक

ষণাসনরে গভারকে আপন আসন থেকে রবীক্রনাথ উঠে গাঁড়ালেন। পুরকেনভন্ত বুতি পাঞ্চাবী চাদর পরিছিত খ্রেডাণুগ্রন্থিত রবীক্রনাথকে এই প্রথম দেবে আবার মন তাঁর প্রতি প্রজা-ভঙ্কিতে আপন্ত হয়ে উঠন। হঠাৎ নারী-কর্ণঠ জনে চমক্তিত হলাম। কোণা থেকে নারী-কর্ণঠর কবিতার আবৃত্তি ভেগে আগতে বুরতে না পেরে চার্যদিকে চাইতে লাগলাম। নজকলকে আজেন ক্রনাম: 'কবিতা আবৃত্তি কবছেন কেং' ভজ্কল ছেলে বললেন: 'কবীক্রনাথের বুবের দিকে চেয়ে দেখুন তো!' চেয়ে দেখলাম। তাই তো! বনীক্রনাথেরই তো মুখ নড়ছে। কিছ এ নারী-কর্ণঠ কেনং দক্ষকল বললেন: 'তাঁর কর্ণঠই এক্রপ।' আমি বিসিত্র হলাম। এমন নারী-কর্ণঠর স্বন্ধ বে-কোনো পুরুষের ছতে পারে, এ ধারণাই আবার ছিল লা।

या शिक, बनीस्प्रनाथ मराजासनार्थत है जिब तिया छीत मीर्घ कृतिका शांठ त्या कृतना। इन कृतका निर्देश मुंबिक द्वारा छैठेतना। निष्कृत निर्देश कृतिका अवरना स्कृतनीय। मराजासनाथ महारे छाथानान। अवान स्वारंश करत्रकारान निर्देश अन मछा छक दल। निष्कृत हैमनाम (भाषात महित्क अफ्राना) स्वारंश स्वरंश किर्न कराम।

अगारिक्षम मिया क्यांत्रमानिक डाक्टलन वर्तः मुल्लामकीय श्वेनक्षत्र श्रुक्ष नित्य मामस्ड ननकान डाक्टलन । भूक डात शास्त्र अत्म क्षिण्य प्रमास्त्र डाक्टलन। नन्तन, 'मिथून, निक्षलन मल्लामकीयर्ड कि निर्वर्षः । এ-ल्लिश कि करत महनानात्र कार्यक क्कर्ड भीरत ?' स्वित्रमाम । नन्तनाम : 'लिशोने किन्न बुवरे स्लात ।'

अग्रास्त्रप विद्या वनत्ननः 'रा एक ठिक्टें। किन्न हिन्दूरानी ज्ञाव-ज्ञामाग लिना प्रबंदन महनाना हरो प्राप्ति करम यादना। जात्र कि कति ?'

षात्रि वननात्र: 'उत्व এक काम कक्ष्म। जाषा किष्टू किष्टू वमतन मिम। याव टावारा जाषात्र मिक मिरा शीनमान, रमवारन कांठिकांन ककन!

'किन डाएड मझकन हटी गांदा ना ?'

'ठिहेर् निन्ह्या । इग्रन्ड लियना तम यान यक्तिम् एक्षेट इरन ना।'

'खब (छा मिबाराडि। डेडम मकरोटि পढ़ा भारत्। कि स्म कि ।'

আমি নললাম: 'যতান সম্ভব রেখে এর ভাব ও ভাষার ছিলুয়ানী চেহানান বদলে দিন। তাতে যা হবার হোত।'

অগতা। তাই কৰা হল। কিছু প্রদিদ লাগতে তাঁৰ লেখাৰ দুৰ্গতি দেখে গ্রুক্তল যে খুনী হতে পাৰেন দাই, তার প্রতাক্ষ প্রমাণ পাওয়া পেল। নমকল সেদিন অফিনে এলেন না। তার প্রদিনও না। তথু তাই নয়, এরপৰ থাৰ ভাঁকে অফিনে কোনদিনই দেখা থেল না।

[चर्डा उ मिरनद ग्रृडि. शृंहा ४० - २०]

उष्िको जिल्लिक गीर्व हर्य भक्त । किन्न कि क्या वाद । जानाय नरम हर्य, सजकरमन भारतानिक जीनरमा अ-जन्मायको जात्र भूर्याक जीननी-श्रह स्थरक नाम भक्ता छेठिङ स्थ । कारकिविध-नव्यक्षन माफाएकीय मन्नार्क व्यवानिक विधिकृत हमनाम छीत 'अवक्षण-कीयनी' श्राह्म 080 পृक्षीय निर्दिशहन :

३३३२ बृहोत्क्व २६८म ७ २७८म छिरम्ब छाबिर (कानकाछा এनशी इस्न बनीत बुमनवान माहिछा मस्वारम्ब मध्य जाविर्यन हर । এই जाविर्यन्त मछामछि कर्तन कवि कार्यकावान । २६८म छिरम्ब मस्वारम्ब छक्ष्य अछार्यना मिल्लि मह-मछामछि रेमस्य अवस्थ जाति कार्यकावान छ भक्षकार्यक माना छूपिछ करतन । मङ्ग्यन मस्वारम् छर्यानम् मङ्ग्ये 'अम् अम् नम्मार्थकान विद्यान विद्यान । मङ्ग्यन मस्वारम् छर्यानम् मङ्ग्ये 'अम् अम् नम्मार्थकान विद्यान । मङ्ग्यन मस्वारम् छर्यानम् मङ्ग्ये । अस्वर्यन्त कर्यन्त नास्यकान्यमः आस्वारम्ब माना छुपिछ करतन अतः भक्षका छोर्यक क्ष्यत्मी कराना

কিন্ত এটাই কায়কোৰাদ-নজকল প্ৰথম সাক্ষাং হাৰ নয়। প্ৰথম সাক্ষাংকার ঘটেছিল এবও প্ৰীয় লল বংগৰ আগে ১৯২২ সালের সভবতঃ ডিসেম্বর মাসে। তর্মন আহি সাপ্তাহিক 'বোসনেম ফগ্রং'-এব ভারপ্রাপ্ত সালাদক। পত্রিকার অফিস ছিল ২৯নং আন্তনী বাগান লেন, কোলকাতা। মখদুনী লাইপ্রেরীর মালিক জনার মোলারক মানী ছিলেম এই পত্রিকার প্রকাশক ও পরিচালক। ঠিক সে-সময়ে নজকল ইসলাবের 'বুমকেতু' বেক্ত ৭-া প্রতাপ চাটুক্তে লেন থেকে। এই উভর অফিসের দূর্ব পুর বেলী ছিল না এক মাইলেরও সন্তবতঃ ক্র। থানি মারে মাকে নজকলের সাথে দেখা ক্রতে 'বুমকেতু' অফিসে কেতার। সে-সময়ে একদিন হঠাং কবি বায়কোবাদ সাহেব এসে 'বোসনেম কর্সং' অফিসে হাজির হন। নানা কথাবানির পর হঠাং ছিলি জিজেস ক্রনেন: 'কবি নজকল ইসলাম কি এখন কোলকাভার আছেন হ' কবি নইলুকীন ইভিপূর্বই 'নোসনেম ভ্রাং' অফিসে এসে সামার সাথে আলাপ করছিল। সে-ই ক্রবি নইলুকীন ইভিপূর্বই 'নোসনেম ভ্রাং' অফিসে এসে সামার সাথে আলাপ করছিল। সে-ই ক্রবি নাহেবের ভিজাসার জবাবে বলর: 'ইনা, নজকল ইসলাম এখন কোলকাভারই আছেন। আপনি তাম সাথে দেখা ক্রতে চাইলে আমি আপনাকে ভার ওখানে নিয়ে থেতে পারি।'

কায়কোনাদ-নজকল এই প্রথম সাক্ষাৎকারের বিশদ দিনরণ আমার 'অতীত দিনের স্নৃতি' গ্রছে দিশিক আছে। সেধান ধেকেই কিছু এংশ নিয়ে উদ্বত করছি:

भावत्कानाम भारत्व ननरमा : 'छारक (मधक्रमरक) (भगर्ड बृन्दे देखा करता। छीत्र धनीरम याबारक निरम्न (भरत भूनदे बुनी हम।'

व्यापि नननाम : 'टा'इएन हजून, এशीन योख्या गान । এই निरम्हन शिक्ष विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास

कात्रकावाम मार्डवरक मिरव यावर। -- यावि ও यममुकीन मुख्यांना छनाय। श्रेष्ठांन छात्रेरक लाह्म 'बूबरकपु' व्यक्तिम लोहिए एकि, अकि एहरम किछान्नरमाज व्यवस्थ पिरक एक्स व्यक्ति। जारक मक्करत्व कर्या किएकम क्यान एम वनन : 'नक्किन छेन्द्र व्यक्ति।'

बननाय: 'कवि कावरकानाम नार्ध्य भक्तकरमय नार्थ (एथा कवर्ड अरमर्छन । अक्बान छाँकि अक्ते (एथा मनकान।' एड्रानात उन्हरू करन छेभरन छैर्छ (शंग । किंकूकिन भरनष्टे मनकरमन कर्ष्ठ कन्दड (भनाय। जिनि यनरस्त : 'मास्ति, किन गार्छबर्टक छैभरन निर्देश अरमा।' बूबेमांब, एड्रामातिन भाव मास्ति। अहे माखिभम गिर्द्ध मन्द्रकर्टन मनी विरम्पय बर्डामम हिम नरमछ कामि। या' एडाक, माखिभम भीर्द्ध (नर्द्ध अरम जावाराम्ब छेभरन मिर्द्ध (मन। स्मिनास, मनकम কৰি কাৰকোৰাণকে বভাৰ্থনাৰ ক্ষনা একেবাৰে গিঁড়িৰ মুবে নাজিৰে আছেন। আৰি তীৰ সাথে নককলের সক্ষে পরিচর করিছে দেয়ার সংকই সক্ষেই নকজন নত হয়ে তাঁৰ ক্ষৰপুসী করনেন এবং তাঁকে সাগরে হাত ধরে তাঁর অফিস প্লাবে নিয়ে গোলেন। দেবলান, সেধানে চেরার টেবিলের কারবার নাই। বেথে কুড়ে এক বিরাট করাস পাতা। কবি এবং আমরা সকলে ক্যানের উপরে গোল হয়ে বসলান। নকজন শান্তিপদকে চা ও পানের ক্রমাস ক্রলেন। অকপকণের মধ্যেই বিরাট এক পানদান ভতি পান এলা এবং আরও এলো ট্রেড করে করেক কাপ চা। চা ও পানের স্বাবহার করতে করতে আলাপ চলতে লাগল। নকজনের মুবে কবি সাহেবের প্রশংসার বই কুটতে লাগল। বলনেন, আপনি আমাদের ক্ষরিওক, আপনার অনুসরণেই আমর। যা কিছু ক্রছি—আপনি আমাদের আশীর্ষাদ ক্রবেন।

कवि कांत्र(कांवान अनकारनत्र धनःगात्र वर्ष कव (गंदनन ना। बनदनन् यणि जांभनात्र छ जांवादम्य कविष्ठात्र धत्रन जांनाम।, छवु जांत्रि जांभनात्र कविष्ठाक्तिर्छ मूर्फ शद्यक्ति। अत्रभन्न छिनि जांद्र। बनदन्न । छत्निष्ठ, बाभभात्र कविष्ठ। जांविष्ठ छ गांन नाकि जांचूर्व। छ। किछू छभट्छ भ्यांक पूर्वी श्य।

এরপর ওক্ষ হয় নজকলের কবিতার আবৃত্তি। প্রথমেই নজকল আবৃত্তি করলেন তাঁও 'বিদ্রোহী' কবিতা। তারপর কবে 'কামালপাল।' 'আনোরার', 'কোরবাদী', 'নোহর্মর', 'থেয়াপারের জরণী' প্রত্তি কবিতার আবৃত্তি হল। কবি কায়কোবাদ মধ্যুরের মতে নজকলের আবৃত্তি ভালেন এবং উচ্চারণ করলেন, শাবাশ! এরপর ভক্ষ হল গান। এক গান শেষ ছতেই কায়কোবাদ সাহের আর একটা গাইতে অনুরোধ আনাতে বললেন। নজকলেরও ক্লান্তি নাই—ভিনি গানের পরে গান গেয়েই চললেন।

अछारन यथन नाउ थारा पणि।—-उथन मर्ग रन, भक्कन राम क्राप्त रहा भएएएम अवः जामारनम परम फिन्नतान कथा मर्ग भएन। कारकर निनारम भाग। एक रन। किन मारहव मक्कनरक सावानकराम जागारनम अवः गक्कमा विगरम पक्कि राम किन्दि धनावाम जागारनम। निकान नाउ। भवंत किन्दि अगिरम अगिरम ।

[बडीड मिरनत म्बृडि--পृक्षा ३৯--- ১०১]

এই সাক্ষাৎকারের কিছু দিন পবেই নজফলের প্রথম কাব্যগ্রহ 'অগ্রি-বাঁণা' পুস্ককাকারে প্রকাশিত হয়।
মজকল 'মোসনেম জগতে' সমালোচনার জন্য এককপি 'অগ্রি-বাঁণা' জামার কাছে পাঠিয়ে দেম।
'অগ্রি-বীণা'র সব কবিতা জামার আমেই পড়া ছিল। কাজেই সঙ্গে সঙ্গে জামি এর একটি সুবীর্য সমানোচনা লিবে কেললার এবং পরদিন 'মোসলেম জগতে'র সম্পাদকীর কলামে তার দু'কলম খ্যাপী সমালোচনা প্রকাশিত হল। এটাই ছিল নজকলের 'অগ্রি বীণা'র প্রথম সমালোচনা। এর পরে মলীনীকান্ত সম্বক্ষার সম্পাদিত সাপ্রাহিক 'বিজ্বলী'ডেও এর এক দীর্ঘ সমালোচনা প্রকাশিত হর। 'অগ্রি-বীণা'র ক্ষতিভিন্তার ভাষা, ভাব, বিষয়বস্তার নতুনর বিশ্বেষণ করে জামি নজকল ইসলামকে মুগ-প্রবর্তক ক্ষি-প্রতিভা বলে অভিহিত্ত ক্ষেছিলার। বলেছিলার আবুনিক বাংলা কাব্যসাহিত্যে মাইকেল ও রবীজ্ঞপাবের পরে নজকল ইসলামই ভৃতীর মুগ-প্রবর্তক করি।

মজ্জন-প্রতিত। সম্পর্কে আবার এ-বজবো সে-সময়ে কেউ কেউ অখুনী হয়েছিলেন। 'পরিবারের চিট্রি'তে বিরূপ সন্তব্য করা হয়েছিল। কিছ পরে বুছদের বস্থ পর্বস্ত বলেছেন: সজন্তব্য রবীয়েন্দ্র সম্পূর্ণ নতুন এক কবি-প্রতিত।

वा शिक, ज्यानिक दिक्ति हैननार्यत्र 'नककन-जीवनी'रिक वानिमृहिङार्थ स्निविङ भूभिक मककन-जीवनी'रिक विनि भिष्टे स्विविङ भूभिक मककन-जीवनी वर्त्त श्रेष्ट्र क्या व्याप्त भारत् । अभिक निर्द्ध जिनि भोष्टे सामित्रार्वित काक करवर्ष्ट्र । विजीव नश्कर्य अ-जीवनीश्रेष्ट्र जिन्हे नम्क करवर्ष्ट्र । विजीव नश्कर्य अ-जीवनीश्रेष्ट्र जिन्हे नम्क करवर्ष ।

- पार्ण कालाव जावच्छीन

निब-नर्गातद उठ नर्गाव*

ৰাঙলা ভাষাৰ প্ৰথম প্ৰাধুনিক কৰি মাইকেল স্কুগুদন দত্তের কাল্যকীতিৰ সূলা ও ম্যানা দিয়ে আছও বিতকোঁৰ অবসান নেই। তাঁৱই নত অন্ধিনস্তাৰ ও শক্তিমান কৰি কাজী নজজল ইসলাম। নজজলের কাৰ্যকৃতিৰ মূল্যায়ন নিয়েও প্ৰথম পেকেই চনেছে কৌতুহলোদীপক বাদাসুবাদ। ১৩৩০ সালের গোড়াৰ দিকে নজজল যথন ছগদী জেলে প্ৰনশন-ধর্মটা করেন, সে-সম্য অপরাজ্যে কপাশিক্ষী শ্রীপ্রৎচন্দ্র চটোপাধান ১৭ই মে ১৯২৩ তারিখে তাঁৰ সম্বেদ লিপেছিলেন:

আনাদের কবি কাজী নজকল: একজন ১৩,কাব কবি; রবিবাশু ছাড়া বোধ ছয় এখন কেছ থার এত বড় কবি নাই।

(म-मनग्रहे ५००० वकारकत २৮८५ रिन्धार्य छक्षवारत्रत माश्राधिक 'एश्वाहान' पश्चिकात 'व्यन्धान्य' निर्दानात्म स्त्रवी इत्र:

बाष्ट्रांना कांत्रामाहिएहा नवगूरमंत्र ध्रवर्डक कांधी नवक्रल धेमनाबः वाष्ट्रांनीत এक्ष्रन यञ्जनीत कवि ও माधिडाक।

यथंठ ततीयनार्धतं त्रानगीं कारनान 'উচ্ছ्'मैन' कथिडांडित गर्हिड डूनना क'रत नक्षकरमत श्रिकंटन रही 'निष्टाहीं महर् ১৬৬२ वधहात्रध्य 'श्रिकातीं भिक्रिकात २४८ भृष्टीय काकी यायपून स्मुक् स्मुक् स्मुक्त सम्मुक्त स्मुक्त स्मुक्त स्मुक्त सम्मुक्त सम्मुक्त

नवीन किन नवक्रम हमनादिन छिनिगाँउ 'निक्षिशे'-त चार्तिश এत छोडे छ बर्गक (नवीं), कि एन-वार्तिश अनन महान्ष्ट मुद्देश दाएँछ निविधित नव; छोडे छोत परनक्षीनिकाश हिमार्ति विकिथक्त ।

वक्कप-माहिका-विकास ॥ नाहाबुकीन काह्यम ॥ धकानम : मुख्याता, १८ कतानम, क्रांका-५। धाक्षम : कालाय बाह्यूम। ७৮८ मुक्ता ॥ मूजा : नेकिन क्रांका ।

बीयम-वर्षा | ১०৮৪

नवक्त वकार्छयो भजिका ५७%

অতঃপর শ্রীঘজিতকুমার দত্ত গ্রীশুদ্ধদেব বস্ত্র-সম্পাদিত ১০০৬ শ্রাবণের 'প্রপতি'তে এক স্থার্শি সম্পাদকীয় নিবদ্ধে ঘালোচনা-প্রসঙ্গে বলা হয়:

नखकन देगनात्मत्र क्षेपम कनिया 'बिट्यांदी' छेठू म्रत्यत्र कनिया नग्न। नक्षत्रम देगनाब चूब किछुमिन (ब्यांत्र शंनाय ध्रत्यस्वनि क्यरनन, यात्र यविकांत्म काँका व्यादयाद्य।

কিছ নিরাস্ত ও নিরপেক রগজের। স্থীকার করেন যে, নজকারের 'বিশ্রোহী' কবিতার বিষয়ব্যক্ত পরিবর্তনের সালে সালে একনিয়ব হ'বে, সকল অসংলগুতা ও অবিরোধিতা সমন্তি ও একমুবী হারে অনবদা রসমূতি লাভ কবেছে। নূতন ভার প্রকাশের প্রোজনেই মজকার প্রয়োগ করেছেন নূতন ছল্ডীতি: 'বিশ্রোহী' সমিল মুজক নাত্রাবৃত্ত বীতিতে বিরচিত --এই নূতন বীতি নজকালের নিজ্যা স্পৃষ্টি। কিছু এই স্থানিরপিত বীতির ধ্বনিশোমা অনুধানন করতে না পোনে প্রীপ্রেনেজ নিত্র তাকে ভেবেছেন: "বিশৃংগল ছল্ল" (শেষ সভাগত: ভূমিকা)। পান্যভালে চল-বিশেষ্ক প্রীপ্রবোধচন্ত্র সেন বলেছেন: "তার (নজকানের) বিশ্বাত বিশ্বোহী। কবিতার নূতন ছল্প-প্রানের যুপেই ইজিত আছে।"—(বাংলা ছল্প-স্থান্ধা, ৮১ প্রা।)

खबु दिनकि नित्र नग, नवक्तिन क्विशन क्विशन क्विननाशका नित्राद द्रम्थी योद्या यट-पार्थका। २०७५ व्याभिदान 'উपोगना' पश्चिकाम सुनिनंबकुनाम स्थाम प्रक्रिपन स्वर्थनः

আমাদের তথাকপিত কোন্ড 'নিছোই' কবি ষড় আশাম তাল ঠুকিয়া নকল পৌকদের অভিনয় করিতে দাড়াইয়াছিলেন, কিছ হায়! 'বুলবুল'-এব গান তাঁহাকে লক্জাবতী লভার পালে আনিয়া কেলিয়াছে।

५०७५ मार्स धकानिङ होत 'नवक्स हमनाम' पुष्टाक रेमधम धानी धारमान करसनः

নমক্ষালের খাতি 'নিয়েছী' কবিতার জনাই। 'বিছোহী' সংযত শোভার সধ্যে এক অনাস্ট্র-সক্ষান্ত্রই থৌননের গতি-চফল হা। ----- 'বিদ্রোহী'তে যৌবনের আবেগ ক্রপ পাম নি। 'বিছোহী' অক্যা কান্য হ'তে পাবে নি।

२७७७ मार्नित २५३ रेकाई डातिस्थन रियमिक 'गुनायुत পত्रिकात प्रीयिक उक्तमात डातन डाँव 'रिममिक क्रिन मक्रकन' धनाम मार्थन:

(ক্ৰাচীতে) সামানক বিভাগের কাজ ক্রা.ড ক্রতেই নছকল 'কামান পাশা', 'বিশ্রেষী' ও আরো নানান বিশাতে ক্রিডা লিখে বাংলা সাহিতাকে সমৃষ্ট 'ও বাঞ্চালীকে দেশান্তবাধে উন্নোৰিত ক্রতে পেরেছিলেন। মিলিটারীর চাক্রী ছেড়ে আধার পূর্ব পেকেই পুলিশের দাবোগানিবির কাজের বংশানস্থ ক'বে বেখেডিলেন। কিন্তু ভান্ত গানে স্বদেশীর গ্রহণ পাওয়ায় তাকে সরকারী কাল গ্রহণ ক্রা শেষ প্রয় হয়নি।

नक्रमान्य श्रीवनन्छ ७ कावा-डायना निरम डिलरबाङ डेक्डिममुद्द এक्रल समात छत् ७ हाफ छपा लक्षिरबर्गभ्य मृद्द्य ध्रवान्छ: क्रिया करत्रह्य नक्ष्यन-मानरभव मर्प्य ध्र-मक्त ममादन्तिरक्त मर्भव ध्रकान- ভূমিৰ প্রভেদ। বরীক্রমাণ তাঁৰ 'উচ্চ্:বল' কবিতাৰ বলেন: ''রড় ৬৭ আনে ক্ষণেকের তরে সঞ্জনের এক ভূল।'' তিনি বড়কে তেবেছেন: ''লোধাকার এই শৃংবল-ছেঁচা স্প্রীন্তাড়া এ বাবা।'' পাকাছরে নক্ষলে তাঁর 'প্রনিয়োল' কবিতার বড়কে বলেছেন 'নুতনেন কেতন', 'তাঁর কবি-কলনার 'বড়' হচ্ছে ধ্বংসের প্রতীক এবং দেই 'ধ্বংশ' হচ্চেছে ''লুভন ক্ষমন্তকেন'—তা 'ক্ষিচাড়া বাবা।' নর বা 'প্রনাস্টি' নর। ববীক্রমাণ ও তাঁর চিছার মনুনার চ উপলোক্ত স্বালোচকেরা প্রচলিত পুরাতন স্মাজ-বাবহার বুপোপবোদ্ধী সংক্ষার তথা বেরারত ক'রে তাকেই টিকিবে রাখতে চান; পাকারে নক্ষাল বনে ক্রেন বে তাতে পাধানুবের সমূচ কল্যাণ খালবে না, বে পুরাতন তীর্ণ স্বাল-বাবহা প্রাকৃতিক নির্মেই ধ্বংশ হ'তে চলেছে তাকে সংক্ষাবের ভোড়াতানি দিয়ে বজা করার প্রবাদ বালের মাবাতে বার্গ হতে বাধা—তাই বিপুর তথা মানুন পরিবর্তনই হওনা উচিত দোলেবক্সদের মাজ লক্ষা। স্মাজের কাঠারো হাবে উদার সামানীতির তিতিতে জ্গান্তিও এবং ঘাণনীতিক উপোদনের উপায়নমূহ হবে জনগানের নিয়রণাধীন—সর্বপ্রকার বৈষ্ণমা ও পাষ্যবের ক্ষাই এজা বাব নব্যালার হবি বিশ্বের প্রতি রাখানিক প্রতিক্রমাণ হবে নব-বিবানের স্থানিতিত ক্ষান্তনী বিবাহিতার স্কোব্যালী ও বিশ্বের প্রতি রাখানিক প্রতিক্রমানী নক্ষাল-শাহিতোর ভাবেন্তন ও প্রবাদানিক প্রতিক্রমানী নক্ষাল-শাহিতোর ভাবেন্তন ও প্রবাদানিক প্রতিক্রমানী নক্ষাল-শাহিতোর ভাবেন্তন ও প্রবাদানিক প্রতিক্রমানী ক্ষান্তনার স্ক্ষান্তনার আছে উপেন ও প্রপোদিত,—নক্ষাল সম্বন্ধে তালেন বিশ্বানার আছে উচ্চেতনারই স্বালাধিক প্রতিক্রমান।

নক্ষল-পাহিতে। আছে নৃতন ভাৰ ও তাৰ প্ৰকাশোপ্যোগী মূতন আছিক। তাঁৰ বিষয়-কপণাৰ নাহাৰ। এবং উপহাপনাৰ শিবপন্না অনাসক মানে বিশ্বেষণ ক'ৰেট তাঁৰ স্টিৰ বৈশিষ্টা ও ওপ নিৰূপণ কৰতে হৰে,—গোজেতা সমানোচকেৰ ব্যক্তিগত কৃতি বা সংলাপণত নীতিৰ নিৰিছে বিচাৰ অচল ও অথাছা। নক্ষল-সাহিতা-বিচাৰেৰ প্ৰকৃত অবিকাশা তিনিট হৰেন, নক্ষণনেৰ সাহিতা-ভাৰনা ও কপাছন-কাতিৰ প্ৰতি বাৰ সহানৃত্তি হাবে অক্তিম ও ধৰিক্ত। সেই সহস্বিতা, অবিষয়ে বা অনুবাগ ফুটো ওঠে নিলিপ্ত মন নিয়ে নক্ষল-সাহিতা অধায়নে নিবিছ অভিনিৰেশ, ঔৎস্কা ও নিষ্ঠা পেকে। ইদানী তাৰ স্বৰ্ধান্তৰ পৰিচয় হিষেতেন শাহাবৃদ্ধীন আহম্ম, কলে তাঁৰ নক্ষণ-সমানোচনা আমানেৰ সাহিত্যেৰ এই বিভাগে স্বৃত্ত শিল্প মানলগ্ৰ পৰিমাপ ক'ৰে নক্ষণ-সাহিত্য পাঠ কৰেন নি,—তিনি অনপেক দৃষ্টতে নক্ষণনেৰ অভিনৰ বিষয়-ভাৰনা ও কপাৰীতিৰ প্ৰতিপ্ত মানোকেই তাৰ বিশ্বায়কৰ বৈচিত্ৰা ও উপুৰ্ব অবনোক্ষৰ ক্ষেত্ৰে; কলে সেই সাহিত্যেৰ সক্ষপ ও চমহ্বানিৰেৰ মাচাই তাঁৰ হাতে হংবাছে বগাৰণ ও অভাবনীয়ে কক্ষতাৰ দাবীলাৰ।

चीनुकरण्य वस्त्र 'धर्गाड'-८७ नक्करमत्र 'बिएसाई।'एक बना एवं छीत्र 'धर्मम कविछा'। अस्तर्भ बास उना बनायु পরিবেশিত হতে দেৰেছি। নক্ষদেশ প্রথম প্রকাশিত কবিতা 'बुक्कि'। 'बिएसाडी' धकारनेत्र भूर्वि नयक्रात्वत्र वर्षनेएउद्देश यदिक कविछ। ও दीन भवाद एर्वाहेन। **छाएक अक्**हि कानानुक्रिक छानिका निर्मू (मध्या एरना :

```
    'युक्टि'--- यकीय युगनयान नारिखा-अजिका, श्रांबन, ১৩२७।

 २। 'क्विडा-नवावि'--- मछगाड, जाणिन, ১৩२७।
      'यानाय' ( शक्तिव श्हेर्ड) — श्वामी, लोग, ५७२७।
       'श्रियात एरश्या नेतान'—नर्कीय यूगलयान गाहिन्डा-পত्रिका, देवनांच, ১৩२९।
      'यानिनी वश्त প্রতি'—वजीय युगनमान माहिত্য-পত্রিকা, देवनाब, ১৩२९।
 ७। 'छेरबायन'- गुजांछ, देवनाय, ५०२१।
 १। 'ठिठि'—बळन्त्र देवनाचे, ५७२१।
 ৮। 'र्वायन'-- बांगलिय डांबड, रेकार्ड, ১৩२१।
      'भाज-देन-बादव'--- (यागत्नय ভादा, टेकाई, ५०२१।
५०। 'काटलाब डिकिन'—न्ब, टेकाई, ५०२१।
১১। 'बामम-धार्णक नवाब'— मामरलाब छात्रछ, जाबात, ১৩२१।
१२। 'वक्न'--वक्न, जागाह, १७२१।
      'गुबर्' ( गाम ) — बक्रीय युगलमान गाहिला-भक्रिका, गुविन, ১৩२९।
১৪। 'পেয়া-পারের তরণী'--- যোগানের ভারত, শ্রাবণ, ১৩২৭।
১৫। 'সুন্ধী'—বঙ্গুৰ ভাদ্ৰ ১৩২৭।
७७। '(कांत्रवानी'—सागत्नम छात्रछ, छाप्त, ५०२१।
১१। 'गंद्रीरवद वाषा'—वक्रनुब, व्याण्यित, ১৩२१।
७४। 'सार्वत्रमं — सागत्वम ভाक्ष, याणिन १०२१।
১৯। 'मृद्यत वर्षु' (गाग)--- यागत्मय ভाরত, काछिक, ১৩२१।
२०। 'बर्दनाय'---गायना, कांजिक, ১৩२१।
२)। 'बांजीव वाथा' (क्रमी घरेट्ड)---वष्टन्ब, कांडिक, ১৩२१।
२२। 'फार्डिश-रे-(मायाजमर्म': जाविडीव—तागरनम छात्रछ, जशशायन, ५७२१।
२)। 'मीख्यान-दे-शिषक': अथन: >-२ सामरनम जातज, यश्रशातन, >>२१।
२८। 'मा'--नाबाग्रन, ১७२९।
२८। 'णाना' ( शान ) — त्यामरसम जान्नज, त्नीब, ১৩२१।
२७। 'बिख्यान-१-शक्ति': शब्ज: ७.४--- योगत्वन जान्त लीन, ३०२१।
२१। 'कनक धिव' (जाना') - जन्ननान, त्रीय ১७२१।
      'वित्रध-विवृद्धा'—वागरमय ভाরত, याव, ১৩-९।
361
२३। 'मैं। श्राम-१-हाक्सिं: ৫-७--- त्यामरमय खांबल, याब, ५०२९।
৩০। 'বেদদ-হার।' ('প্রতিবেশিনী')—সওগাত, মাঘ ১৩২৭।
७५। 'नवनी' (भाग)—त्यागत्वय खावख. काम्खन, ५७२९।
এ২। 'শ্রেছ-ভীতু'---বোগলেম ভারত, কাল্ডম, ১এ২৭।
```

```
७७। 'निकट्फटलंब याजी'—नाबाबन, टिज. १७२१।
```

- এ৪। 'পনাতকা'—ভারতী, বৈশার্থ, ১৩২৮।
- ७७। 'महन-बाला' नाताग्रम, देवमार्थ, ५७२५।
- ७७। 'बाष्टान'--गावना, देवनाचे, १७२৮।
- ७१। 'विक्य-शान'---वकीय यूजनमान माहिला-পত্रिका, ग्रावन, ১०२৮।
- ७৮। 'छरमर्भ' ('बिधिनीमा'न छरमर्भ)—छमामना, भागम, २०५৮।
- ७२। 'नुभूब-चित्राव'—डान ही, श्रावप, १७२४।
- 80। 'नक्रीहाड़ा'—उपागना, डाम्र, १७२४।
- 85। 'यगापुडा'—नादागन, ভाष्ट, ३७२৮।
- 8२। 'भागत भिक' (गान)—यामरसय ভाরত, ভার, ১৩২৮।
- 80। 'कात नानी वाष्ट्रिल?'—तामरनम ভाরত, ভার, ১৩২৮।
- 88। 'क'वित्र ठाउरा'—गावना, ভाষ, ১৩२৮।
- 80। 'यक्क्रप धिगा'—नात्रायम, चाण्यिन, ५०२৮।
- स5। 'तर्नट्डरी'—माथना, चाण्चिन, ५**७२**৮।
- 89। 'वारामगी'—डेभागना, व्यान्ति, ১**७२**৮।
- Rb। 'वामन-मिर्ग'--यागरत्रव ভाৰত, थाण्चित, ১৩२b।
- तत्र। 'कित्रक्षनी धिशा'—मानगा ७ मर्मनानी, काडिक, ५०२৮।
- ৫०। 'बत्रन-बत्रन' ---बक्रीय यूजनयान माहिन्छा-लिखिका, कार्डिक, ১৯२৮।
- ७३। 'बारनायात्र'-नायना, काडिक, १८२४।
- ৫२। 'काबान भाना'-- (बागरनब डावड, काडिक, ১७५৮।
- ৫৩। 'निष्टारी'--सामरनय जात्र कार्डिक, ५७२৮।

['विष्याणी' २२१म भीष २०२४ छात्रियंत्र गाश्चाहिक 'विष्यती', २०२७ मास्य 'थवागी' अवः ১०२७ विनार्थत 'गावना' भीजिकाय मरकलिङ हरप्रक्तिन।]

এश्वनि ছাড়া এই সময়ে 'বিজনী' প্রভৃতি সামরিক পত্রিকায় গ্রন্থকার আরও অনেক কমিতা ও পান মুছিত ছয়েছিল। তার সম্পূর্ণ তালিকা নবীন নজকল-প্রেয়কেশা প্রস্তুত কর্মেন।

উক্ত সমদের মধ্যে মালিক 'সওপাত' পত্রিকায় নককলের 'কবিতা-সমাধি,' 'উলোধন', 'কলঙী প্রির' ও 'নেদন-চারা' শিরোনামে চারটি কবিতা, 'বাউওেনের আন্ধনাতিনী' (জার্চ ১৩২৬) লীর্ধক জোন প্রকণ এবং "তুর্ক মহিলার ঘোরটা-বোলা" (কাতিক ১৩২৬) লোকক সমালোচনা-নিষদ, এই জ্যানিরচনা মাত্র প্রকাশিঃ হয়েছিল। ১৩২৮ মাথের 'সওগাত'-এ নজকলের 'আবাহন', নাবে একটি সাধারণ পদা চাপা হয়েছিল; সেই সংখ্যাতেই বার হয়েছিল পোলাম মোক্তশার 'নির্মিত'; কলে প্রথম পর্বায়ের 'সওগাত'-এ নজকলের লেখা আর দেখা পোল না। নব-পর্বায়ে ১৩৩৩ জাবাচে চতুর্ব বর্ষের প্রথম সংখ্যক 'সওগাত' প্রকাশিত হর এবং ১৩৩৩ জাশ্বিনে নজকলের 'সর্বহারা' কাষ্যের উৎসর্গ-কবিতাটি 'সর্বসহা' (রচনা: কলকাতা, ১৬ই ভাজ, ১৩৩৩) শিরোনাবে আন্ধর্মণ করে।

একটি লক্ষণীয় নাপার এই যে, নভকলের প্রথম ও শ্রেষ্ঠ কার্য 'অগ্রি-মীণা'র কোনো কবিতাই 'সওগাত'-এ মুদ্রিত বা সংকলিত হয়নি। তৎসয়েও গুণগ্রাহী শাহারুদ্দীন আবেগভরে বলেছেন:

बगाबाप 'मञ्जाड'-मन्भापक बाद्याचन नामिक्डिकीनटक, जिनि नवकारजब **धर्मय गर्म्य** 'बाउँदिस्तमत 'याद्यकाहिनी।' मञ्जादङ धकान करत्राङ्ग्लिन।

শ্রীকৃষ্ণদেব বস্তর 'প্রগতি' নজকলের "তোর। সব জয়ধ্বনি কর্" ওনে তেবেছে তার "অধিকাংশ ফাঁকা আওয়াজ।" শ্রীনির্মলকুমার ঘোদ দন্তিদার 'উপাসনা'-র আরশিতে নজকলের 'বিজ্রোহী'-তে দেখেছেন 'নকল পৌরুষের অভিনয়।" অ তংপর সৈনদ আলী আহসান বলেছেন যে, নজকলের "আদ্প-বিলাস হলো প্রখমতং নিপীছিতদের প্রতি মমববোর, ছিতীয়তং দেশের আবীনতার জন্য একটি উদ্যা আবেস।"— (নজকল ইসলাম : একটি মন্তব্য : কবিভার কথা ও অন্যান্য বিবেচনা)। কিন্তু বিপ্লবন্দী নজকল তার স্ক্রিয় জীবনের শেষ দিন পর্যন্ত প্রতিজ্ঞাশীলতার প্রতিপক্ষে এবং নির্যাতিত মেহনতী জনতার সপ্রক্রে আহার্থ ভাষার আপোষ্ঠীন সংগ্রামের আহান-বাণী উচ্চারণ ক'রে গ্রেছেন। 'চির-বিজ্ঞাহী' বলেছেন :

নিম্নোলী করেছে মোরে আমার গভীর অভিমান। তোমার ধরার দু:খ কেন আমার নিতা কাঁদার ছেন! শিশৃংখল সৃষ্টি ভোমার, তাই ত কাঁদে আমার প্রাণ।।

নিষ্ঠোহ মোর পান্ধে কিসে, ভূবন-ভরা দু:গ-পোক।
আনার কাছে শান্তি চায়
লুটিয়ে পড়ে আমার গা'য—
শান্ত হ'ব আগে তা'রা স্বশু:খ-মুক্ত হোক্।।

गांगांकिक पासिश्वादिक छेषु के नक्षक तन मान श्राह्म मक्षति ग्वीरियक ग्राह्म विकास विक्षा विकास वितास विकास वितास विकास वितास विकास व

धनग्रक कि वीक्ट भारत वनग्र-भन्ना गर्छकी ?

नक्षकरत्रम अ-मन्दराम मु'हि त्सभा (भरक छक्ष छि भिरम माद्यां क्षिम याद्यम मह्या करमर्छ्न:

कारना विनामी, माहिजा यथवा निन्म-विनामी, कवि-मयारनाहरक्य भएक এव मर्जूर्व यकुट्ठि हिन भाउगाञ्च मञ्चव नव। कवित्र यरजा मय-भर्गारवत निभान कृषय जिन्ने এव " अक्षय यनुवानन यमञ्जव।

वागम कथा, वाक्षरक्व विणु-यानरवत बहरूत वाधर्म स्व गयाक्याद्विक यानविक्या (Socialist Humanism), जात्र विक्रवराणी (कारमा गण्डारगरी स्ववस्त्र गरकर नक्करनव প্रदासन केवादिक्या

ও উদ্দেশ্যের আন্তরিকতা উপদত্তি করা সম্ভবপর নয়। দেশের 'মুখী' শ্রেণীয় তাঁবেদার সাহিত্যিকেরা বনে করেন বে, তথাকবিত 'সতাদৃষ্টি গ্রন্থার' কাজ হচ্ছে প্রচলিত সমাজ-বাৰত্মার জীর্ণ ছিনু স্বানগুলি বধাসন্তব তালি দিয়ে তাকেই বহাল রাখার বাণী প্রচারণা, তার আমূল সংভারের মন্ত উচ্চারণ অসত্যান্ত্রী অপগ্রন্থার অপকার্য। এবং বিপ্রবাদীর স্বান্তী 'অনাস্টি'!!

नाश्यूकीन बाह्यम छोत 'नरम-भान्की नकक्रम देमलाय' धर्म बर्जरह्न:

नककालक कारवात अकृति वित्वव मोन्वर्य: भी श्रे वार्नाक वडा ।----

কবিতায় একটি কারণে রঙ অত্যাবশাক হয়ে পড়ে, আর তা হ'ল এই যে, কবিতা চিত্র না হলেও চিত্রকলেপর স্বাহার।----

সম্বতঃ জীবনানন্দ দাপ রঙের তুলীতে কবিতায় ছবি আঁকার শ্রেষ্ঠ শিল্পী এবং ন্যক্ষণ এ-ব্যাপারে জীবনানন্দের শ্রেষ্ঠতন পূর্বসূরী।

নজকলের ব্যবহাত উপরা (Simile) ৬ বু তুলনা (Comparison) নয়, তাতে উপরস্থ প্রতিভাত হন জেলর চিত্র; তাই তার অনেক উপরা হয়েছে চিত্রোপনা (Imagery)। একটি নবুনা তুলছি:

টাদ হেরিতেতে **টাদ-মুখ তার সর্মীয়** আর্ণিতে। ভোটে ত্রজ বাসনা-ভল সে-মঞ্চ পর্মণিতে।। — ['টাদ-সুকুর': তায়ানট]

विश्वात किति हो भगे-छि छना '७ महिन्दर्भनी है । विश्वा देश देश देश स्था स्था स्था स्था किति कि कि स्था स्था किति कि स्था किति कि स्था कि स्था

त्य देन्वाकिन क्षेत्रय-निक्रा बाजायन क्यामर छ-जाति ननाएँ हैं वि व्यामिशाए व्याप्ता प्रवीदे ए भर्ष।---व्यामात्र श्रेष क्षेत्रा, विम वाहिशात प्राप्त मान ;
व्यामात्र वाँका द्वाब व्याका प्रव व्याकात्म हैं वि ।
जातात्र नानिए हाबाब काएक कि ऋष बरतरह, प्रवि ;
हैं वि नव, छ त्य छात्रांत भेनाव कीम ; प्राप्त वर्ष।---वरमह् वर्षक हैं वि बद्याद्य पिएड व्याबारम्ब छर्व,
व्यावात्र बारान्य बरमह् व्याकार्य वीका हरमाग्रांत्र भरव।

এবানে 'ঈদের চাঁদ' উপরেয়; এবং ইস্রাফিলের 'ললাটের চাঁদ', 'বাঁকা ছুরি,' 'চাঁদার' কান্তে,' 'গলার ফাঁদ' এবং 'বাঁকা তলোচার' প্রভৃতি উপনান বাবজ্ত হয়েছে সংগ্রামী চেতনার প্রতীক ক্ষপেই। এ-সৰ উপনান কৰিতার আবেদনকৈ ক্ষেছে তাঁক ও প্রসায়িত। এ-প্রসঙ্গে 'কান্তে' উপসের এবং 'চাঁদ' উপসান রূপে ব্যবহারের একটি দৃষ্টান্ত উদ্বৃত করছি। তুর্পেনিডের স্থাবিশ্যত 'একটি জীবন্ত ধ্বংসাবশেষ' নামক ছোট-গলেপ পত্র মেয়ে 'লুকের্যা' বলছে:

वह ठिजकम्मि एउए श्रीस्थीताथ पर वकाल निर्मणन:

याकार्त्म উঠেছে कारखर गर्छा होन, এ-गूर्शन होन कारख। हाम्राभरण कान् यमनीन छन्। नुकारना याग्रह याग्रह। ---['कारख', गःनर्ड]

वरे पुरनाभियात यनुगत्राम भववडीकारम शीमिरमम मांग डीत 'कारम' कविडात निर्वर्छनः

गजून है। एमम बीका कालिहि जुमि बुधि बुध जारमावाग्रङ ? है। एमम भंडक पास गरह एश जन्मुरमन है। महासा कारह।

বিপুরী বৃষক শুরিকের সংঘরক সংথানের প্রতীক 'কান্তে 'ও হাতুড়ি',—কৃদাণের কান্তে ও শুরিকের হাতুড়ি যুক্ত হ'য়ে তাদের আন্তর্জাতিক পতাকায় থাজ শোতিত। নজকলের কবিতাটিতে 'কান্তে', 'ছুরি,' 'তলোয়ার' প্রভৃতি উপমান ব্যবহারের মুলে রূপফটির অপেকঃ প্রধানতর হয়েছে মানবিকতার প্রেরণা। তাঁর সমাজতেতনাপ্রসূত কবিতাগুলিতে ব্যবহৃত একপ উপমাপুত এই প্রেরণা-সঙাত হয়েই লাভ করেছে অপূর্ব বৈশিষ্টা; তাতে কাব্যভাবের অলম্বরণের ক্ষেত্রে উল্যোচিত হয়েছে এক নুতন দিগন্ত। বাঙলা কাব্যসাহিত্যে নজকল যে নহাধারার প্রবর্তন করেছেন, তার অসামান্যতার শ্রেষ্ঠ লক্ষণ নিশীজ্ত মানবতার প্রতি স্থানিক্তি সহাদুভূতি এবং সেই অদ্যা ভাব শিল্পসন্মত উপায়ে প্রকাশের উপযোগী অভিনৰ আজিক।

নজক্ষন-সাহিত্যের এই স্বকীয়তা ও তার নূতন রীজি-নৈপুণোর প্রবণতা শাহাবৃদ্ধীন সমাস্থ উপলব্ধি করতে পেরেছেন ব'লেই তাঁর স্থাক্ষ হাতে তার বিশদ বিচার হয়েছে যথার্থ ও সার্থক।

শাষাবুদীনের 'নজকল-সাহিত্য-বিচার' পুত্তকথানিতে মোট পঁচিশটি প্রবদ্ধ দান পেয়েছে। প্রধন প্রবদ্ধ: 'নজকল-চর্চা: দেশে বিলেশে।' তাতে শাষাবুদীন বলেছেন যে, নজকল-বিষয়ে ''বিভাগ-পূর্ব বাঙলার প্রথম গ্রন্থ অব্যাপক আবুল ফজলের 'বিজ্ঞাহী কবি নজকল'; ১৯৪৭ সালের মার্চে (চৈত্র, ১৩৫৪) এই গ্রন্থটি প্রকাশিত হয়।''—গ্রন্থবানির গোড়ার আবুল ফজল 'লেবকের কথা' শিরোনামে বে-ভূমিকা লিবেছেন, তার পেষে রচনার স্থান ও কাল মুক্তিত আছে: ''সাহিত্য-নিকেতন, চইপ্রাম; চৈত্র, ১৩৫৪।'' এ থেকে ধারণা হর যে, ১৪৪ পৃষ্ঠার এই ক্ষুদ্র গ্রন্থবানি ১৩৫৪ বজাকের

टिख नुष्ठिक २०१५ श्रीहोत्का वार्ठ-এপ্রিলের দিকে প্রকাশিত ছারেছিল। এটা ''বিভাগপূর্ব-কাল'' নয়,—বিভাগোন্তর কাল। গৈরদ আলী আহসান ১৩৬১ সালের ভাটে বালে প্রকাশিত তীন্ন 'নজকল ইসলাব' পুত্তকের শেষে ''নজকল ইসলাব সংক্রান্ত আলোচনা'' শিরোমানে ''ক্রেক্টি সংক্রম ও আলোচনা-গ্রন্থের উল্লেখ'' করেন এইভাবে:

नबक्रन-धिंखाः काबी धारपून ५५०

धंवतित्र धंवान व्याप हराफ कवित्र कीवनी---स्वयंक धार्यक्ष कावित्र। कावा-नवार्याक्रम काकी धार्यक उर्द्रमत्। बारमाक्रमा-घर्यकि चन्त्र-तित्रमस्यत्, किन्न श्रीह-रक्ष।

विष्यारी कवि नष्टका: पान्त एकत

नक्षत्रन देगलात्मत्र कीवनी—एजिएन क्या मन्न ७ मरनाक क'रा स्वा। नक्षत्रन-माहिएडाद ड्विना (२२ ४७): निवधमत् नाहिडी

जनति कुछ श्रवतक नक्षकत कारबाद विভिन्न श्रक्**षित पत्रिति** ५ ज्ञातनाठना । ***

কালী আনদুল ওদুদের 'নতকল-প্রতিত্তা' ২০৫৫ সালে প্রকাশিত হয়। তার উল্লেখ শাহাবৃদ্ধীন কবেননি। তাতে "নতকল ইসলার," "নতকলের প্রতীক-প্রীতি" এবং "আমি আপনারে ছাছা করি না কাহাবে কুনিশ" নামক তিনা প্রেক্ত ছান পেয়েছে। (শেষাক্ত সেলাটি থেকে আবুল ফজল তার বইয়ের ৫৬-৫৭ পৃষ্ঠায় স্থাশি উন্নৃতি দিনেছেন।) ২০৪৮ সালের ২১ই জ্যৈষ্ঠ তারিখে কলকাতার ডেণ্টান কলেছ-হলে মুসলিম সাহিত্য-পরিষদের উল্লোখন নজকলের ৪৩-৩২ জন্ম-বাহিনী উৎসর উদ্যাপিত হয়; সেই সভায় কাজী আনদুল ওদুদ তার 'নজকল ইসলাম' পাঠ কলেন। এটি প্রথমে ১১৪৮ সালে প্রকাশিত তার 'আজকার কথা' নামক পৃস্তকের শেষে সন্মিবশিত হয়েছিল। (সেই লেখা থেকেই আবুল ফজল তার পৃস্তকের ৫৯ পৃষ্ঠায় কিয়দশে উৎকলন করেছেন)। তার জপর দুটি প্রকা ২৯৪২-৪০ প্রীদ্যালেশ সাপ্তাহিক 'বাহালী' প্রিকায় প্রকাশিত হয়েছিল। এই তিনটি লেখাই ২০৫৮ সালে প্রকাশিত তার 'শাশুত বজ' নামক প্রকাশিত হয়েছিল। এই তিনটি লেখাই ২০৫৮ সালে প্রকাশিত তার 'শাশুত বজ' নামক প্রকাশিত হয়েছিল। এই

यान्न कथन टीव 'त्रशिष्ठि' পুস্তকের ১৪२ পৃষ্ঠার লিখেছেন:

उत्तर्भ 'बिएडाई। कवि नक्कन' गार्य यात्रि এकि एडाई वर्दे निर्विष्ट्नाय—चुन अंडीय यात्र नक्कन-नाहिएडात्र विष्ट्राप्यम्नक यारनाहनात्र ना निर्ध स्मिन्ति नक्क्यभाठा क'रम्बे वहेति राज्य।। वहेति नर्क्ष नर्क्ष मातिरकत कड्मठेन हिर्मान निका रमरक्थाती वार्ष्ट्र यनुर्वाकन्छ नाड करम्बिन এवर এकिना क्षांत्र भीठ बहुत भाठा हिन।

अहे बहिति मन्नार्क बबहाव खबालिक खाटनाहात लाला छोत्र 'माहिछा-लिल्ली खानून कखन लूखरकत २৮७ পृष्ठीत निर्विष्ठ्न :

भाकिकारन कवि नककन रेमनार्यय छेभय धक्यानि भविभूर्भ श्रेष बहुनाय श्रेषाम धरे स्थ्य ।

मबन्न बनाट्डवी निवन। ३११

वक्काः, 'विद्वादी कवि नवक्कां 'क्क्किंडानपूर्व-कारात्र धकानमा नत्र। किन्न काकी वावपूर्व अपूर्व 'नवक्का-धिंडिडा' पूचरक व्यर्ज के डाँव डिमिंड धव्यदे विजानपूर्व-कारात्र तहना এवः विजानपूर्व-कारादे धार्मिड। पारावूकीरात्र डांनिकात्र वाःनार्मात्व मुक्तिड नवक्ररात्र कीवन के माहिडा-मन्त्र ७-मःबाक 'व्यक्तिड अक्क धव':

৬. নজকল-কাৰা-পরিচিতি: ভক্তর কাজী বোভাহার হোসেন (১৯৪৯)।
কিন্ত ভক্তর কাজী বোভাহার চোসেনের 'নজকল-কাৰা-পরিচিতি' প্রথম সংশ্বরণ প্রকাশের কাল: '১৯৫৫ সন'—'১৯৪৯' নয়।
বিশে আলী মিয়া 'তার 'জীবনশিলপী নজকল' (১৯৭১) কোবার আগে 'ভোটজের নজকল' (২রা পৌষ ১৬৬৮) লিপেড্রেন ; তার উল্লেখ অনাধশক বাছলা নয়। শাহাবৃদ্ধীনের ভালিকায় শ্রীপ্রবোধচক্র সেনের KAZI NAZRUL ISLAM (Karachi, 24 May 1956) পুরিকাধানির নামও নেই। বাঙলা সজীতে ও কাৰা-সাহিত্যে নজকলের স্থান নির্পয় ক'রে প্রবোধচক্র ভাতে বলেছেন:

As regards his musical compositions which number more than fifteen hundred, a number that rivals that of Rabindranath alone, it may perhaps be said without fear of contradiction that he ranks as the most prolific composers of all times.....

But whatever his fate as a composer, indications of history are always there for us to believe that a place of honour in the rank next to that of Madhusudan and Rabindranath is assured to him as a poet, and among Muslim poets of Bengal his place is beyond doubt second to none.

নজক্ষনের গান ও কবিতা সম্পর্কে প্রবোধচন্দ্রের এই নির্মোষ্ট সমীক্ষা যে শ্রীজীবনানক দাশ, শ্রীজরবিক্ষ পোন্ধার, সৈর্যদ আলী আহ্যান, আজহারউন্ধীন ধান প্রমুখের উন্দেশপ্রধোদিত জাটসন্ধানপর সমালোচনা অপেক্ষা অনেক বেশী জ্ঞানগার্ত ও সারবান, এ-কন্সা সাহিত্য রসিক্ষেরা স্বীকার করেন। বিশ্বভারতীর প্রাক্তন রবীজ্ঞাপ-অধ্যাপক ও শান্ধিনিকেতনের ববীজ্ঞ-ভবনের অধ্যক্ষ প্রবোধচন্দ্রের বারণা যে, নজক্ষলের গানের সংখ্যা রবীজ্ঞনাথের গানের প্রার্থ সমান, অর্থাৎ পানের লভেষও অবিক। বিশ্ব বি

১. নজকলের স্থব দেওয়। গানে স্থানিশ্চিতভাবে একটা নজকলী দং আছে। তীক্তবোধসম্পান, নিপুত প্রবণশক্তিসম্পান সজীতজ্ঞ একদল গুণী মানুষ যদি পান্তিনিকেতনের সত্যে
গ্রানের বিদ্যালয় পুলে কেবলমাত্র নজকলের গান প্রচারের চেটা করেন, তা হ'লে রবীক্তসজীতের মতো নজকল-গীতি বেশ স্বত্ত একটা গর্বের শির তুলে দাঁড়াতে পারবে।

-[ser dai] 1

বাংলালেলে এবং পশ্চিম-বলৈ আজকাল নজকল-গীতির চর্চা উত্রোভর বাড়ছে। কিছ আলালুল্লপ নর। ভারতীর স্থাতি-জগতের হার-সৌরলোকের উজ্জ্লতমলের জনাতম এই বহাজ্যোতিকেরর স্থাতি সাবনার পদতৃত্বি, ব্যাপ্তি, গভীরতা, বৈচিত্রা ও ঐত্যজালিক বছিরা নিবে প্রেরণার সাবানাতম নির্দান কোথাও পরিস্থিকিত হয় না। না পশ্চিম বজে, মা বাংলালেলে। নজকল-স্থাতি শিক্ষা লেওয়ার বত্যে উপগুল্ধ গুল্প আজকের বাংলালেলে এবং পশ্চিম-বল্পে একজনও আছেন ব'লে জাবাব জানা নেই। মুবের কথার চিড়ে ভিজ্ঞেনা। স্থাতি কঠিনতম লাল্ল, দুরুত্বতম শিক্ষা। বাণী-প্রধান স্থাতি ওছাতম উচ্চার-পালুরী। সেই সজে সজীত-গুলুর এই বারণা থাকা প্রয়োজন: নজকল তিন থেকে চার হাজার পান নির্বেছিলেন। আর দে গানে আছে এক শ্রেট কবির গার্ডীর জীবনবোরের বিচিত্র ননজান্ত্রিক বাণী, এর নাটনীর ভলীর বিলেম লোতনা, কারা ও স্থবের সূদ্যাতম ধ্রনি ও জ্ল-বার্টনা।

--[७५ भूका]।

भाशवृद्धीत्मत এ-मकन कथात उक्षीभिड जात्मत बात्मते, बिल्यूष्यी मुक्कित मीथि ७ मधीत्व प्रकार उभमक्तित मार्मा स्मितिमक्ते।

শুৰু নজন্ধনেৰ গানেৰ উপকৰণ ও আজিক নিষে নয়, তাঁৰ কৰিতা, অনুৰাদ-কাৰা, গীতিনানা, নাটক-নিৰম, ৰজ্জা-ভাষণ, চিঠিপত্ৰ, ছোট-গল্প, উপন্যাস প্ৰভৃতি নিয়েও শাহাৰুদ্ধীন আলোচা পুত্ৰে সৰস অৰ্থচ পাণ্ডিতাপূৰ্ণ আলোচনা কৰেছেন। নজন্ধনেৰ সাহিত্য ও সঙ্গীতেৰ ভাৰৰৈশিষ্টা ও শিলপসৌন্দৰ্ব্য সম্পৰ্কে শাহাৰুদ্ধীনেৰ ক্ষেক্টি ৰনোজ্ঞ ও সাৰ্গত ৰন্ধনা নিয়ে উদ্ধৃত ক্ৰছি।

े. अपयथीना इटन शिर्म जामारक अपय-हात्री इ'टन ह्या। कविनास बटना भीणास सक्कम नेममाब बाह्या माहिरना এट अपय-लाभात गुहै।।

—[नक्षक्ष हे मनाट्यम भवा]

২. নজকল ইণলামের গলা-রচনা, নিবছ, ড্যোই-গ্রন্থ, নাটক রাগিকজনের চিত্তাকর্ষণে সমর্থ। যদিও এই বিভাগদৈতে তাঁর সাকলা তাঁর কাবাফাট ও শুরুফাটির তুলনার মলিনকান্ত, ভরুও সন্দেহ নেই, বাংলা পালার শ্বাক্রসভায় তিনি উন্নত্তমন্তক রাজনার্থের একজন।

- [शारतत्र मामारका नककम]

এ. बाजीय गानरे जान; बाट्ड धानर्थ श्वान्त मणूर्न विन्तारम्य मएक मण्ड बार्यज्ञ अवः डाबनाय माण्यिम । नवक्रम देशनारम्य जारन विन्य, व्यानाहि योव शावनित्र मण्ड माण्यि वाप्ति श्वाप्ति । निरम्भय क्रे किर्ति यानुभागरम डिनि यपूर्व शोर्यक निर्वार मण्ड प्राप्ति । निरम्भय क्रे किर्ति यानुभागरम डिनि यपूर्व शोर्यक निर्वार मण्ड प्राप्ति । विन्ति । विक्ति । विक्ति

—[गटनि ७ नवक्रतमा भीन]

श. याः हित छेलत नक्ना यांका এक बतानत यांके अवः लाहाइ कुँछ वामाताइ এक बतानत लिल्ल। किन्न लोहाइ कुँछ वड़ वड़ वड़ वड़ निल्लीताह निर्मान करवन; यहाम निल्लीताह ओ याः हित्र छेलत हमश्काय नक्ना यांकिन।

সঙ্গীতের লেখক হিসেবে নজরুল ইসলাবের অসাধান্য কৃতিত্ব সন্ত্বেও সেখানে তিনি যে কাজ করেছেন তা ঐ কুদে শিলপীর—বদিও বৈচিত্রের জনো, বিশালতার জনো এবং বিচিত্রে তার ও স্থারের সন্মিলনে পরীক্ষা—নিরীক্ষার জনো, মানব-জীবনের প্রতিটি কুদ্র কুদ্র অনুভূতিকে চমৎকারতাবে রূপদানের জনো সেখানেও তিনি কুদ্রছের সীমা ডিঙিয়েছেন—চিত্রকলপ, উপমা ও রূপকের অসাধারণ উপস্থাপনার জনো তিনি ধিরাইত্ব লাভ করেছেন। তবু আমার মনে হয়, 'অগ্রি-বীণা', 'সিল্কু-ছিন্দোল,' 'লিঞ্জীর' ও 'সামাবাদী'-র কবির চেয়ে এই সঙ্গীতগুটা বড় নয়।

-[सागाएव गगात्नाठक 'अ नकक्रम देगनाय]

৫. হাফিজ কেন গীতিকাব্যের রচমিতা হয়েও মহাকবি, বনীজ্রনাপ কেন গীতিকাব্যের লেকক হয়েও মহাকবি, তার সূত্রানুসদানেই বৈবিয়ে পড়লে যে, এক মহাজাতির হাজার হাজার বছরের ঐতিহ্যের, আকান্ধার এবং চেতনার যোগাতম রূপকার হয়েই তবে মহাকবির গৌরব অর্জন করতে হয়। এই গৌরব নজক্ষল অর্জন করেছিলেন। তাঁর 'অগ্নিবীপা', 'বিষের বাঁণী', 'সদ্ব্যা', 'সর্বহারা, 'জিফীর' এই সব কাব্যগ্রহ মহাজাতির মহাবেদনার মহা-দুংশের মহাস্কীত।

—[नद्धकृत देशनाम ए बुक्रामन बन्ध]

৬. গল্পনের সংযত কাঠামোয় প্রযুক্ত প্রতাক অসংলগুতার প্রথম প্রকাশ বটেছিল প্রকাশশরীর 'বিদ্রোহী' কবিতায়। নিংসলেহে ভাবোন্যালনার অপরূপ প্রকাশ এ কবিতা। কিন্তু
তার মধ্যে যে ছাফিল্লী কৌতুক ছিল, তাতে সংশহ নেই।

-[नक्कन देगनात '3 शक्कि]

৭. নজকলই ৰাঙলা ভাষায় প্ৰথম সৃষ্টি করলেন উদ্দেশ্যুদক সাহিতা। রাজনৈতিক সাহিত্য রচনা ক'রে এবং কবিতা লিখে যে সমাজ-কাঠামো পান্টানো বেতে পারে, এ-খবর তিনিই প্রথম যোষণা করলেন সরবে।

- नक्कत-बानग

৮. ুবাপু কৰের আমেয়ারের পকেট থেকে অবিরাম বেরিয়ে আসা পাষীর মতো নজকলের উপনা রূপক চিত্রকলপ স্থভাষ বুখোপাকাার ও স্থভান্ত ভটাচার্বে একান্ত পূর্নত।----শব্দচিত্রকলেপ, বাকাবাক্প্রতিযাম এবং ধ্বনিপ্রতিয়ার নজকলের কাবো উপসত ধ্বংস-স্কপ এঁকের কাবো স্বাধী হয়নি।

—[ভाষোদেশের ভাষোদিন]

ফ. নজ্জন ইসলান ফাবসী কাবোর সংস্পর্ণে এসে' অভাস্থ উনুভ সানের উপনা ও চিত্রকল্পের ব্যবহার শিবেছিলেন। সে উজ্জ্ব চিত্রকল্প ও উপনা তার নিজের ভাষ্যকে আর্ক্বীয়ভাবে সমুদ্ধ করেছে।

—[क्यारेशाए-रे-७वत विदारिक कन्याक मक्का]

এ সকল উন্ধিতে স্বশাষ্ট যে, নজকলের সাহিত্যকর্মের নিচার শাহাবুদীন মামুদী প্রধার ক্ষেন মি; তিনি তার উপকর্মের উন্ধান ও নির্নাধকলার কৈচিত্রা অভিজ্ঞ ক্ষপদক্ষের কৌতুরনী মৃষ্টি ও অভিনিবিষ্ট রস্বেন্ডার স্কেন্ডার নিচার কালি বিজ্ঞান কিবলৈ কালি বিজ্ঞান কিবলৈ কালি বিজ্ঞান কিবলৈ কালি বিজ্ঞান কালে তার এই সাহিত্য-নিচার অনেকাংশে উত্তীণ হতে পেরেছে ক্ষেম্বর্মী স্মালোচনার পর্যায়ে।

শাহাবুদীন তাঁর পৃস্তকটিতে প্রগতত: কাজী আবদুল ওদুদ, শুক্তীবনানন্দ দাণ, শুবুদ্ধদেব বস্তু,
শুক্তীঅরবিন্দ পোদার, দৈয়দ আনী আহদান ও আজহারউদীন বানের কভিপয় বিশ্বপ বস্তবোদ প্রতিবাদে বৈন্দ্রবাঞ্জ বিত্রকের অবতারণা করেছেন। তিনি তাঁপের সেবা থেকে উদ্ভি দিরে সে-সবের বিস্থানিত নিচাব-বিশ্লেষণ ক'বে যথেষ্ট দৃঢ়তা-সহকারেই বলেছেন:

- े यानपुत्त अपूर्व सूर्वाडीन पृष्टि भिर्च नक्षकरत्व काबारक ट्यांच क्षर्यं भीरवन नि।
- २. नक्ष्मल-প্রতিভাব নহযুকে জীবনানন্দ শ্বীকার ক'বে নিতে পারেন নি।
- ೨. वृक्षापय वस्त्र गात। श्रीवरात्र गाहिलाएनाठ गात्र बार्स मार्स १६ व्याविष्ठिष्ठिष्ठात्र ध्रकान घरि । दांत्र व्याविष्ट िठ हित्स वार्त्नाठ गाल्नाठ व्याविष्ट विष्ट्र वार्त्नाठ गाल्नाठ व्याविष्ट व्याविष्ट विष्ट्र व्याविष्ट व्
- स. व्यक्ति (लाक्ति नकक्रत्य कांबाङामा मधरक म डिक्कि करब्रङ्ग, डा डींब मकक्त-माहिङा-लार्डेब मीबाना निर्देश करब, उबु डाई नग्न, कांबारबारबंद मीबाना निर्देश करबा
- ८. नूर्मनाधारस्य প্रতি नक्षकारमान- सम्बद्धक छिनि (रेम्सम यामी पाष्ट्रमाम) 'बार्मन-विमान' बरलएक्न। च्यास वालिडिकनक श्रदे नामन्त्र वावश्रत।
- ७. এই याक्रशत्र हैकीन बीन। यीत्र क्'ठिकि ठिक धक्ति (वानार्क्षतत्र क्'ठ बना यात्र। विन्निकानरस्त्र हिथीबाती छाजना এই (वानार्क्षत क्'ठ छैक्ताबिक श्रक्तिकान भाग क'रम निर्देशन नक्षत्र Great Poet नन-Good Poet।

এ-বাবত বহু সাহিত্যরপী বৃহহ রচনা ক'বে নজকলের প্রতি নানা দিক থেকে অযথা, পরস্কান করেছেন। পাহাবুদীন সে-সকল তীক্ষ বাধ নিপুণ ছাতে উৎপাটন ক'বে নজকণের বিষাট সাহিত্যা-পরীরের ঘাতসহ অবিক্ত চিত্র পাঠক-সমক্ষে তুলে' ধরেছেন; এজনা তিনি বাংলা সমালোচনা-সাহিত্যের ইতিহাসে বছদিন সূরণীয় হ'বে থাকবেন। অন্তঃপর তাঁর রচিত্ত সমালোচনা-জাবর্তের

त्रपृष्ठ छात्म श्रीटिइ ५ र रे या नक्षकालय किन्द्रिय मक्त कनाय क्या निष्क्रिय शर्व श्रीटिशन इरव,— मक्षकालय पिरक रक्षे क्रायम कानिया स्क्रिशन क्या श्रीत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त क्या स्वाप्त स्व

শিশ্ব-দর্শনের যে স্বাচ্চ দর্পণে নজকন প্রতিভার স্ষ্টিনৈপুণঃ নির্নাঞ্চণ করতে হবে, নন্দনতাব্রিক নীতির যে নির্মণ নির্মণ সেই স্টেনহিনার প্রকৃত মূল্য পর্য করতে হবে, শাহাবৃদীন প্রচুর শ্রম ও প্রজার বিনিময়ে তার এক মানোত্তীর্থ বেধাচিত্র উপস্থাপন করেছেন। স্থতরাং আনাদের স্থপারিশ যে, তার নজকন-বিষয়ক নির্মাণনী এদেশের সকল বিশ্ববিদ্যালয়ের ও বিশ্ববিদ্যালয়-কলেজের স্যাত্তক শ্রেণীর ছাত্রছাত্রীদের প্রনীয় রূপে অনুরেণিত করা হোক। তা হ'লে নজকল-সাহিত্যের স্তিক মূল্যায়ন করতেই তাঁরা ওধু শিববেন না, সেই সাহিত্যের আসল স্বন্ধপ প্রত্যক্ষ করতেও তাঁরা পারক হবেন। তাতে শিক্ষণ ও আনন্দ, দুইই লাভ হবে।

নজকলের দৈবী প্রতিভার বিশায়কর সৃষ্টি তাঁর কাব্য ও সঙ্গীত। সেই অসামান্য সৃষ্টির ভাক-প্রস্থান, রূপ-প্রেরণা ও কলা-লক্ষণের সঙ্গে পরিচ্য হবে যতথানি যথার্ছ, জন্তরজ্ঞ ও পুংগানুপুংগ, তার জনির্ক-চনীয় রসের আনক্ষমা আআদ হবে ততথানি সার্থক ও সম্পূর্ণ। পাহাবুদীনের জননামনত নজকল-জনুশীলন সেই পরিচ্য লাভের পথ করেছে প্রশন্ত ও উজ্জ্ব। তাই তাঁর প্রতি আমাদের প্রশংসার সীমা নেই।

--व्यावक्रम कानित्र

तककृत्वद (द्रकादिकगात*

यवर्तिष ''नष्णकन-त्रव्वावनी'' (हर्ष वेख) श्रेकानिष्ठ वंत्र । यात्राव ''नष्णकन-वर्षा (पर्ता-विर्वर्ति'' श्रेष्टि पात्रि वर्तिष्ट्रिताय, ''नष्णकन-त्रव्वावनी''त (১४, २४ ७) १ वेख) श्रेकान नष्णकन देशनारात्र । स्थाति । क्योति अक्ते वाथि। कत्रत्व जान व्य व'त्न वर्त कत्रि ।

আমরা কেউ কেউ সমালোচনা লিখি—সে সমালোচনার প্রশংসা ও নিশা উত্তর্য়ই থাকে—কবির কাব্যের ও সাহিত্যের ব্যাখায়ে থাকে। কিন্তু মানতেই হবে ব্যক্তির আপন দৃষ্টির সীমাৰজতা ঐ সব ব্যাখ্যার কোন-না-কোনোভাবে অভিয়ে যার। কলে কবির সম্পূর্ণ স্বন্ধপ পাঠকের চোঝে ধরা পড়ে না। গে-জনো সমালোচনা প'ছে কবিকে সম্পূর্ণভাবে জানা যার না। কবিকে জানতে হ'লে তাঁর স্মষ্টিকে জানতে হংবেঃ কবিব গেই সাহিত্য যদি পাঠকের সামনে না থাকে ডা'হ'লে সমালোচনার মান নির্দির সম্ভব হয় না। সমালোচনা কবির ব্যাখ্যার কতটা প্রভাবকের ভূমিকা পালন করল অথবা কবির সভাবার পরিচর জুলে ধরল কবির সাহিত্যের সংগে নিবিত্ব পরিচরে ভা উপকত্তি করা সম্ভব।

*नवक्त बहुमाननी (84 49)।। अन्नादक: चारवृत्र काविष् ॥ श्रक्तिक: चारवा अकारहरी।। पान: 00 हाका।

कवित्र मिट माहिएकाव मर्थ्य अविष्ठात्वत्र जना का जनावामनक व्यवसात श्रीवाजन। वस वर्णस यांबर नकक्रन देगनात्वत्र त्मदे माहिडा जनायात्म भाउता यमञ्च हिन। माबावभ जमाबावभ जाबि-কাংশ পাঠক ৰাজাৱে প্ৰকাশিত নজকলের দু'চাৰবানা গ্ৰন্থ পাঠে নজকল-পিপাসা নিবারণ ক্রতেম। এর ববো প্রবানতম গ্রন্থটি ছিল ''সঞ্চিতা'। ১৯২৯-৩০ সালের দিকে গ্রন্থটি প্রকাশিত হয়। কলে কৰির পরবর্তী কালের অনেক লেবা ''সঞ্চিতা'তে স্থান পারনি। তথু তাই নর—বৃষ্টিপ-मन कांत्र कर्ज्य वारक्षांश कवित्र 'विरवत-वांनी', 'जाडाव-भाग', 'शनग्र-निथा' शव जिनित्र अकृति कविजाश ''সঞ্চিতা'তে স্থান পারনি। ''অগ্রি-ৰীণা''-র একটি যাত্র কবিতা ''সঞ্চিতা''তে স্থান পেয়েছিল— 'विष्टादी'। किन्न डॉल 'युवरक्डू', 'कावान भागा', 'बाइक्क्न्य', 'धनरवामान,' 'कावनानी,' 'बारनायात्र,' 'त्रप-उत्ती' প্রভৃতি बीत ও রৌম রুগের কবিঙাগুলি--্যে-গুলি নজ্জালের বীর চৰিত্ৰের প্রতীক, বে বৃদ্ধ-কবিতা তাঁর বৈশিষ্টা, সে-গুলি ''সঞ্চিতা'তে অনুপশ্বিত। কৰিব ''बिश्वित'' कावार्यास्त्र कदबकी कविटा 'मिक्टांट्ट गृही ड हरबहिन, यमन—'ब्रमार्थन महन्नास,' 'मिरगन এव. बदवान', 'क्रेम मानाबक', 'बाव (बर्ह्सट्ड क वावि बाव', 'नद्रत्वाब', 'बर्झ्सिक', 'क्रिकीव অগলুল' এবং 'তীক্ষ'। কিছু বে প্রতীকার্দে গ্রন্থটির নামকরণ সেই ''অিন্তীর'-এর বিপ্রবাদক কবিতাওলি वाम छिन। ''वारतन'', ''यामान्यार्'', ''युष-छिष्यप'', ''धमन-काक के' धर्मांड विवास कविडाशि ''निकिडा'य कान श्राप्ति। त्यांहे कथा ''निकिडा'' नकक्षण्य बक्षि गायाना व्यःराय श्रकाम। क्षरम नष्टकत देगनान वांडानी भांतरकत्र काष्ट्र এक तक्य व्यविष्ठित द'रा अखिह्रिका। स्मिरे बर्गा পাकिन्छान यानल ''बाइना উनुयन बार्ड'' कर्डुक ''नक्कमन-प्रध्नावनी''त जिन्हि बरश्य धकान बांडाना माश्रिरङात देखिशाम এकि वस घरेना। मिनकांबर वेत्र हेरमास्थारम्ब रावन एकि अव मन्नाभक कवि यावभूत कामित्र माद्यवदक यामि बनाबाम ना मिद्य भावि गि।

"নজকল-বচনাৰলী"র ১ম ৰও প্রকাশিত হয়েছিল ২৫লে মে, ১৯৬৬তে এবং এর ৰও প্রকাশিত হয়েছিল ২১লে ফেব্রুনারী, ১৯৭০-এ। চার বছরের সময়-সীরায় এই ডিনাট বঙ্গের প্রকাশ সহজ্ঞ-সাধাছিল না। সম্পাদক এবং তার সহযোগীদের নজক্ষন-তজি, আন্তরিক্তা ও নিষ্ঠা এই কাজকে প্রাম্থিত করেছিল। কিন্তু ৪র্থ বঙাট আর অবিলয়ে প্রকাশিত হয়নি। সমস্যা সংকূল বাংলাদেশে জনানান সমস্যার সংগে সন্তবতঃ এর প্রকাশ-সমস্যা জড়িরে পড়েছিল। "বাংলা উনুয়ন বোর্ড" দেশ স্থাবীন হ'লে তার পৃথক অন্তির বজার রাবতে পারেনি। সে সংবৃক্ত হ'রে পড়ে বাংলা একাডেরীর সংগে। বিশালদেরী বাংলা একাডেরীর বিস্কৃত সমস্যার সংগে "নজকল রচনাবলী" (৪র্থ বও)-এর প্রকাশ-সমস্যা প্রকট হ'রে লাড়ায়। ১৯৭০-এ এর মুন্তুপ কার্বি ওক্ত হ'লেও ২৫লে বে, ১৯৭৭ সাল পর্বন্ধ একে পাঠকের মুন্তুপর্যান করতে অপোক্ষা করতে হ'ল। ইতিমধ্যে ১৯৭৬ সালের ২৯লে অপাক্ষ্ট র্যার চৌত্রিশ বছর নজকল ইসলাম মুক্ত থেকে মৃত্যুবরূপ কর্বনেন। বাংলাদেশের নাটিতে তাঁর মন্তর্গকের সমাবিত্ব হ'ল। নতুন ক'বে তাঁর চর্চা ওক্ত করার আরোজন চল্ল। সেই প্রথম জালাবেকের প্রচাপে বেরিয়ে এল "নজকল-চনাবলী"র চতুর্থ বঙা। বিসমে হ'লেও মধালাভ। কেনন্ম "নজকল-চর্চা" সম্প্রসারিত হ'ওয়ার আরও একটি পর্য স্কৃত্তী হ'ল।

वर्षे बंद्ध नवकरतात य श्रव्यक्ति श्रकाणिङ ए'याङ (म-छान ए'न: ১. नजून होन; २. यम-छावत ; এ. बूनवून (विडीय वेड) এ. वृत्तकियात (विडीय वेड) ৪. त्यव मस्त्रीण ; ৫. व्यवस्थित-ए- अन्त रेपतान; ७. नह; १. ताडाबवा; ৮. मिनी छिड़ ३. घतथिता; ५०. मनमधानिमा; ५५. मनी छोड़ नि; ५२. कूट्यिन ; ५७. मनुमाना छ ५८. धत्ह। नता बादना हुई चर्छ प्रविद्ध व्यक्तिकाः भव किन्त मूक द्रांत वाख्यात भवन्ती बहेना। भन्नत्वक दीव मिर्यम्पा नन्द्याः

নজকল ইসলামের সাহিত্য-শীবনের চতুর্থ যুগের প্রায় সনুদর রচনা এই ২৫ও অন্তর্ভুক্ত হয়েছে। 'কুছেলিকা' উপন্যাস্থানি তার সাহিত্য-শীবনের বিত্তীয় যুগে বিরচিত,—বেন্যুগে তার সচেতন মনে দেশের পূর্ণাল স্বাধীনতাও সমাজতান্তিক নানবিকতা (Socialistic Humanism) রাজনৈতিক চিম্বাদর্শ রূপে প্রবল্তম প্রেরণার স্কার করেছে। এই 'কুছেলিকা' ছাড়া এই বঙ্গে অন্তর্ভুক্ত আর কোন গ্রন্থই কবির স্থিতহারা ছওয়ার আগে প্রকাশিত হয়নি।

''কুছেলিকা'' ছাড়া যে গ্রন্থসমূহ কৰির 'স্থিতহার। হওয়ার' পর প্রকাশিত হর সে-গুলোর নামকরণ কি ক্ষিত্র নিজের ? এই খণ্ডে গ্রথিত কাবা 'স্ফীতাঞ্জলি' নামটি সম্পাদকের দেওয়া। সম্পাদক বলেছেন:

এই चट्छ 'कविछा 'छ गान' यरानत रनाय ১১১ট গান 'मझें। छाउनि' नाम मिन्रिविनिड इ'स्स्राह्म। এই নামকরণড ডিনি यनुस्मापन कतर्यन किना छा रक बनार आसन्।

বা ছোক কৰির অন্তর্গ হওয়ার পৰ প্রকাশিত অনেকগুলো গ্রন্থের নামকরণ তাঁর নিজের দেওয়। নয়, যেমন 'বুলবুল' (২য় গও); 'জুলফি কার (২য় গও)', 'শেষ সওগাত, 'ঝড়', 'রাঙাজবা'। ''নতুন চাঁদ' গ্রন্থির নামকরণ সম্ভবতঃ প্রকাশকের। কবির 'নতুন চাঁদ' শীর্ষক কবিতার নামকরণে গ্রন্থাইর নামকরণ করা হয়েছে। 'মক্ষভান্ধর' কবির দেওয়া নাম। এটা নবীশ্রেট হত্বত মুহত্মদের জীবনী অবলম্বনে রচিত একটি অসম্পূর্ণ কারা। সম্পাদক বলছেন:

'দেবীস্ততি' ও 'হরপ্রিয়া' নাটিক। দুনির 'ও 'মধুমালা' গীতি-নাটাটির নামকরণ কবির নিজের। 'দেবাইয়াৎ-ই-ওমর বৈয়াম'-এর নামকরণও কবির নিজের। সম্পাদক লিখিত 'গ্রম্পরিচয়'-এ 'দশ্বহাবিশ্যা' গ্রম্থটির কোন পরিচর পেলাম না।

या बाक त्याया यात्र कवित्र माशिष्ठा क्रीयत्वत्र ठडूर्च भर्त्व जिनि या निर्विष्ट्रितन जोव व्यविकाश्य व्यविष्ठ हिन, श्रयक कत्रात यात्भरे जिनि बाबित्र शिकात्र शंदा भर्छन। त्यरे यव व्रठनात मर्था। क्य नव এवः त्य-श्रत्ना भिरत्र चात्रा करवक वंश्व 'नव्यक्रन-ब्रठनावनी' टेज्बें। श्रद्ध व्याना क्या यात्र। "मक्कन-बहनावनी" एक अ भर्वेष एव-भव भीन मःकनिक हरब्राष्ट् छारवन मःबी। ১৫००एक भूव हन्नि। कवित्र जात्र । त्या वार्ष সংগ্ৰহ কৰা সম্ভৰ হ'লে হয়ত ৬ছ ও ৭ৰ বও নজকল বচনাৰলী তৈরী হ'তে পাৰে। বিলেছ छत्यामा मणायक नवकात्मत निक এवः कित्यात्र माहिजारिक जिनु बंदक श्रकात्मत अविकालना করেছিলেন। এটা 'বাঙলা উনুয়ন বোর্ডে'র পহিকল্পনা ছিল। সে বঙাটিও অবিদ্বাস প্রকাশিত इत्रा श्रेटब्राक्यन। दक्यना नक्करनद के विलाशित ब्रह्मा वित्यव यर्गामास माबीमात्र। ब्राह्म क्रि मैंडिटिक् मर्र्य नक्कल देमनाय अवेग्ध ''नक्कल-ब्रह्मावनी''एड थारमिन। नक्करणब म्माबाम चिंडिंग्य, डींब िंडिंग्य, डींब किंडू धेवह এवन अर्थन धंकाणिड "नवकान ब्रह्मावनी"-स चक्र क्याना चात्र এको। निक। यञ्चत यत्न दश 'नजनन्तरनावनी' किछूत। তাড়াছড়া कर्तन गण्णानिङ। এत कांब्रपें हिन। नवकरनव वह शार्यक यह डीव अमाना बहनावंड हाविय बाउवांत महाबना शकी य'रम উঠেছিল। नम्रकालन अञ्चन जात्र भारत गर्जकन ए। भन्छिम बद्ध पाकर्डन मीर्च बिन महस्सम यरबाख रमुबारन छीत्र बहनावनी श्रकारनव रकान श्रष्टहिश हमनि। २५५४ मारनव भूरव भूव भाकिखारनख (म-८५) एवनि। यन्त প্রয়োজন প্রিল মেখানে যা পাওয়া যায় তা সংগ্রহ ক'ছে গ্রহণা কয়া। সমস্ত রচনাকে সামনে বেবে স্থানরিকলিপত উপায়ে সম্পাদনার মার। কবির রচনাকালের ক্ষমবিন্যাস व्यमुगारत खरत खरत कवित क्रमश्रतिशृष्टि एम्बारना धार्षिक श्रारय गुल्यावरकत पाता ग्रप्थ व्यक्ति। (म-क्रांचा वर्डवान वहनावनीएड किंछु किंछु बहना चंदक्त क्रविक चनुगारी चारण शिर्छ इंस्त शिर्छ। এ-बरक्त "कुरहिका" উপनगामीर रधवन बिडीस बर्छ गाउस উচিৎ छिन। यात्र कथा बार्छ, নজকলের প্রথম কার্যায় ''অগ্রি-বীণা'' হ'লেও তার কবিতাগুলি তাঁর প্রথম প্রকাশিত কবিতা নয়। व्याबाव ''व्यश्नि-बीभां य প্रकानिङ প্রথম কৰিতা 'প্রলয়োদাস'-এর প্রকাশকাল ১৯২২ খ্রীসটাব্দের (य-८७, ठनः कविडा 'नाड-इन-पात्रव'-এव প্रकानकान २०२०-এव (य-८७, पात ३२नः पर्धाप भाष कविडा 'बाइब्रम'-এর প্রকাশকাল ১৯২০-এর সেপ্টেম্বরে। বলা বাছলা 'धश्रि-बीपा'-य विडीस किंशित প্रकानकाल ঐতিহাসিক সূত্র অনুযায়ী ১৩২৮-এর কাতিক অর্থাৎ ১৯২১-এর অভীবরে। (कविडािंक कमरब्रह मुख्युक्त याद्यरभव मर्ड डिरम्बर्स ब्रिटिं। 'मामरम्य डाबर्डन याद्यप्रिट श्वकारनेत्र करा श्रकान शक्तिन भिष्ठिरत (१८७। श्रक्त इभरक कविशांति १३२५ मारम्य २२८न भीरम्य माश्राद्यिक 'विक्रती'(5 धकानिक इया :) २५৮ गालिक २२८न भीष) ३३२३ गालिक किरम्बरक्य (कान এक जिन।) करन कविक अनुगारत छोत (नवीरक এवीरन माजारना मण्डव दशन। (म-जिक (थरक मन्नावनाय विनु:थना घर्टे श्रिष्ट्। मन्नावक व्यवना बमाबाना पश्चिम क'रव প्रतिक्री **वर्षक** ल्टिष ''श्रक्ष-পরিচরে' कवित्र রচনাগুলির প্রকাশ কাল, **मু'**চারটি বাদে, এবং ভা কোন পত্রিকার क्षेत्र क्षकालिङ इंद्रिक्षिन ङान गत ङानिब (मध्यान (छ्टै। क्रिक्ट्न। (कान कान बंद्ध काम क्षान कविजान भाष्युरम धे बहनाहिन धकान जातिन पिर्ड डिनि एहै। कर्नाह्न। धर्माद (बाबा बाब कवित्र क्रियक পश्चिमिक्का পाठंटकत्र बुबट्ड याटड सञ्चवित्रा मा इत्र मिक्का मन्नामरकत्र बटम श्रीविज्ञात्व काथड हिन। এवः बना बाह्ना এই ঐতিহাদিক দায়িৰ অসম্পদ্ম কৰাৰ, এই বৰ্তমানে, जिनि योगाजन बाकि। वर्षार 'नवक्न-बहनावनी' डीएक निरंबंदे भूनवाय मन्नावना कविएव मिछवाब श्रीकाम। (व मन्नामना (क्वन नकक्रत्वव श्रेष्ठ श्रीकार्यक कामरक मामरन (बर्च मन्नेगु ছर्च मा, इर्प कींच कविद्या ब्राज्याक कोंगरिक गांवरन (इर्प। (स्कान श्रंकार्णक कोंगरिक गांवरन स्वर्पिछ,

শশাদনা করলে অতীই নক্ষেয় পৌছানো বাবে না। কেননা খনেক সময় বন্ধ আর্পের রচনা বন্ধ পরে প্রকাশিত হয়েছে।) মনে রাগতে হবে গ্রন্থ-প্রকাশে পরীব নক্ষমল পৃথিপীপনার পরিকল্পনা বাতবারিত করতে সক্ষম হননি। কেননা যতবার তাঁর কামনা "শেকালীর মত তব্য স্মর্বভি" বিভাগ ক'বে উঠেত চেয়েছে "নির্মাশ গারিয়া ততধার কাঠুরিয়ার মত তার "দলবৃত্ত শাধা"কৈ নির্মুলভাবে ধরণে করেছে।

जात करो। कथा, किछूँ। नाज्ञ जात श्रेकािन इन्हांत नाज्ञ नाज क्षेत्र किछू कुछू बुछन श्रेमा तर शिष्ट । वित्य कं त्य नाज्ञ वित्य ''नजून होम' कानाित्त । (यना श्रेष्ठ खाति तर-जूननात जूलक नित्रांत्र जातक क्य ।) अनेतन यन्निन क्षेत्र क्या भाषाता ना भाषात्व करे श्रेष्ठ वित्राम इति क्या वित्राम कर्म क्या । अभीतन यन्निन स्था ।

''गजून हैं। व' कि विद्यात ''এদেরি যদে ; ভাঙিনে বার্য' পংক্তিটি ছাপা ছয়েছে ''এদের ৰক্ষে ভাঙিৰে ৰীৰ,'' ''ৰুক্তপক নিৰ্ভন এরা উড়স্ত' ছাপা ছয়েছে ''ৰুক্তপক নিৰ্ভন এরা উড়স্থ,'' 'হাতের লাই_ এদের প্রাণ' ছাপা ছয়েছে ''হাত্তের লাটু এপের প্রাণ''; ''চির-জনমের প্রিয়া' কবিতার পংক্তি "िष्टित क्यनरमत्र श्रिया स्मित्र। एष्टर्य सम्ब के नीलाकारण," श्रापा इंट्याइ "िष्टत-क्यनरमत्र श्रिया स्मित्र। **हिरा (मर्च नीजाकार्न,'' ('क्वे' नरम्हा वाम प**ंक्ष्ण), ''वड क्याप्याम हाकिट**ड भारत्रि डामात्र** মধুর মায়া,'' ছাপা হয়েছে ''এত জে।াংলায় নাকিতে পারিনি তোমার মধুর মারা।'' ('পারেনি' चार्म 'পातिनि' इन्त्रगार्ट पर्भ यमा तक्ष इंता लिएन्), ''कात्त्रत महन চুति कतियाछि उन कन्त्रीत कुन।" ছाপा ছয়েছে "চোরের মত চুরি করিয়াছি তব কবরীব কুল।" ('মতন'-এর স্থানে 'মত' হওয়াতে ছম্পত্ন হয়েছে), ''নুজা হয়েছে, অঞ্জি দিতে তাই গাঁথি ভারে গানে,'' ছাপা হয়েছে ''মুক্তা হয়েছে; অঙলি দিতে ভাই গাঁপি গানে,'' ('তারে' শব্দটি খাদ পড়াতে ছব্দপতন ছয়েছে।); "আষার কবিতা তুমি" কবিতার পাক্তি-"যত রস-ধারা নেমেছে আমার কবিতার হুরে গানে,'' ছাপা হয়েছে ''যত রুগধারা নেমেছে খামার কবিতান স্থরে গানে ('কবিতায়' স্থানে ''कविञात्र'' ছাপা इस्यार्ड পংক্তিটির নর্দ বিকৃতি ঘটেছে।)। ''कन्প-লোকের প্রিয়া আসে না গো ধরণীতে ধরি কারা।" ভাপা হয়েছে "কল্প-লোকে প্রিয়া আমে না গো ধরণীতে ধরি কারা।" ''কেঁদে কেঁদে রাতে যদি যোর হাতে শেখনী যায় গো পামি' ছাপা হরেছে ''কেঁদে কেঁদে রাতে यिन भारत हार्ट्य मिथेनी याग ला पानि'' (''शाट्ट'' भारत ''शाट्टब्र'' इन्डग्राट्ट इन्न পन्डन इस्बर्छ।) "নিক্ষক" কৰিতাটির 'চিব-পৰিত্রা খ্যুত্যয়ী, বল কোন্ খডিষানে" পংক্তিটি ছাপা ছয়েছে ''চির-পৰিত্ৰতা অমৃত্যয়ী, বল কোন্ অভিমানে'' (''পৰিত্ৰা''র স্থানে ''পৰিত্ৰতা'' হওৱাতে ছল-পতন ছয়েছে এবং অর্থবিকৃতি ঘটেছে); 'আসিবে তুমি কি বেণুকা হইয়া সেদিন অধরে মম' ছাপা ছরেছে ''আসিবে তুমি কি বেণুকা লইয়া সেদিন অধবে মন'' (''ছইয়া'' ''লইয়া'' হওয়াতে পংক্তিটি वर्षशीन ह'ता পড়েছে।); ''ग य वानि'' कनिडाहित ''जुड निता এकि यहुड खेता, कि म शनिवादि दिवा?" हाभा श्रायद्ध "जुड निरंत्र এकि यहुँड थिना, कि शनिवादि दिना" ('कि शमियार्ष्ण्यं यावचारन ''रम'' नरमहि वाम याउग्रार्ड एम्प्रेडन इर्ग्नर्छ्)। ''टायात প्रयास दावी গরবিনী ?'' (''গো'' শব্দটি বাদ যাওয়াতে ছব্লপত্র হয়েছে), 'ভতই লুকাতে চাছি; আছিও रिष व्यापि व्यर्भा व्यानिया," भःक्षिति शरधर्छ "उउदे नुकाहेर्ड ठाहि; व्याक्षित्र रि व्यापि व्यर्भा

वानिता" ('नुकार्ड' चारन ''नुकाहेर्ड' इस्वार्ड इन्नन्डन इरहरूर्); ''बरडक्र' कविछारिब ''কেৰলই ল্লপের আচরণে যিনি চাকিছেন নিজ কার।'' পংক্তিটি ছাপা হয়েছে 'কেৰলই লপের चाठबर्ट विनि চाकियारछन निच काया" ('हाकिएछ्न' चारम 'हाकियारछन' छाला एउबारछ छून लेखन ष्टं (बद्ध) : ''क्न बागारेनि ভाता ?'' कवि छान्ति "पित्र भिश्राद्ध धमातिया भाषा बाँद्यनि दम्बान सीख ?'' हाना हरवरह ''पिम्पिमर धमाविक भाषा ? बारबिन रम्पास नीइ.'' ('धमाविया'न हारम 'धमाविक' हाना श्टबर्फ्। विकाम किस्ति वार्यवारन श्रद ना लिए श्रद नश्टल वाका वर्षशीन श्रा।), ''वाबारन व क्षिरक महमा मि द्वान पंक्तित प्रविन्। परिकृति ''याभारत प्रेकिट मधमा कान् पंक्तित प्रतिन्' छापा হৰেছে ('লে' শংশটি ৰাদ যাওয়াতে ছন্দপতন হয়েছে।); ''পুৰার যৌনন' কবিতাটির ৭ম পংজির 'বাঁৰিল'' द्यादा 'वीबिता,' ''पार्च ना छोदात्र धान-छत्रात्र छुविन एवनी काव' भःक्रिहित ''छोदात्र' चारन ''ভার'' ছাপা হ'বেছে, স্তরাং একটি বাত্রার পত্ন ঘটেছে; ''পাস্ব হ'লা বুবায়ে সহিবে—ভনিৱাছ कड़ (कड़ें' भरकिष्ठि ''क्डें' कारन ''क्' इरस्ट (এहा अवना भाठक नृत्य निएड भावरवन); ''बीला वर्गन भागापन, चुनी बहक वनर्गन' भःक्तिकि ''बीला' शाल मुजन धवाफ ''बीफा'' हाপीन हरवरह। ''धाव कडमिन' कविडाहित ''नदाब পियारय एगगारम त्राबिरव, श्रीज्य वानिरव नाकि' अंकिंकि इंद्रवर्ष ''नवान धियादा जाशादय वाचित्र, श्री इन पाणित्य नाकि ।'' (''निवादय'' चारन ''প্রিরারে' হওরাতে ত্শ ও মর্থের পতন হ'য়েছে।) ''পিরাজী পিয়ারে শিরার শিরার (क्वनरे जागाउ तिना' र एएए "निश्राकी भिग्नाएम निवास निवास (क्वनरे जागाउ तिना" (निवास " शादन "लियादन" इत्यादक वर्ष विलिख वर्तितक), "बरन इय क्षेत्र वर्ष-त्व्याकिः मूरम खर्ड कूक्यमा" श्वारन ''बरन इब टीन वर्ष-स्वाण्डिः मूरन छैठि कोजूडरन।'' (''कुजूडरन'' श्वारम ''स्नोजूडन'' হওরাতে একষাত্রা বেড়ে গেছে); 'ফির্মেণীস আলা হ'তে যেন লালা কুলের স্থরতি আসে' ছলপত্রন হ'রেছে।); ''কে বেন হাসিয়া ছ্ইয়া আমারে প্রাস অলপ-প্রেণ।'' পংজিটি ছ'রেছে ''(कन रवन शामिता कृष्टिया जाबारत अनान जनन-अर्थ।'' (''रन' बारन ''रकन'' बखबारड छून छ वर्षत्र भठन बरोर्ड्।); "ওঠ वि ठागै।" कविडाहित्र "एडमनि व्यक्तान कर्मा वाह्य जनमा ७५ नाष्टें भरिक्वारे इंग्यरक ''তেबनि व्याकान कर्मा उनमा उन् गाउँ' (''बारक्' नम्मीरे बान नहारिक कुम्मभा इ इरहरू) ; ''याबाबकवाम'' कविङाहित ''' ভোষাদের মহফিলে আমি সেই मुस्लास আম চাহ ' পংক্রিটি 'ভোষাদের ব্যক্তিল আমি গেই নুকুলেরে চাই ভাপা ছয়েছে ('আঅ' পল্টি ৰাদ পদ্ধাতে ছন্দপতন হ'বেছে)। এ-ছাড়া "শিখা" ধ্বিতাটির "কোধা সে অনাগত সাধ্যিক পুৰোধা' হবে 'কোথা সেই অনাগত সাগ্ৰিক পুৰোধা,' 'গ্ৰুগাড়ে ভাৰতে জনগণ পতি' হয়ে "इरेबार्ड जांबरजब स्वनंत्रनिति?" "नवन तिक्या। (योगरन व लासना" धरव "नवन तिक्या। वीवत्तव अ नाक्ता", "विन, नाकि नीएछ यात्र। मनाभि क्देएड" करन 'विन नाकि नीष्ठि वात्र। मनाभि इटेटा' ''वाबाम' कविठाहिक ''(काषा त्म 'यातिक', काषात्र तम देवाब, काषा तम नक्षियक ?'' द्यद ''काषा त्म 'बाबिक', काषा त्म देवाव, काषा त्म मक्कियक ?'' ('काषाव्र' एत्व ना।) वक्नाहे अ-श्रेमा श्रामिक कवि यावमूत्र कामिरवर गर्म, अ-श्रेमा भूग्य-मः ग्रामिक यथेना मुद्रानीमस्बन क्र्यांचीरम्ब । जीवा बरचंडे मांबबान किरमन ना। अवीरन बमा धीरवाक्यन मुप्तमे म'रनाबरमय बाामीरब भन्नावक जाक्तून कानित्वक छेलक अर्थन मन्त्र्य निर्क्त कन्नरम हमस्य मा। छ।व वक्ष्म मन्त्र स्मित्रियक् ।

नवकरमत्र एय-दर्भाग बहुमा मुद्रार्थ आयोदम्ब गांबायङ गङ्क छ'एङ इरव। दर्भना जायारम्ब कहिन ध्रमाण कवित्र ऐलेब लिएड लीएन। या जात्मक मबय इएएएए। कविन कार्यान बुच्चल किंकि मबी-लाहरकत हार्ष कनित्र एलकि वरन शंभा इस्तर्छ। এর একটা বাস্তব প্রবাণ আমি পেরেছিলাম। আমাদের ''নজকুল একাডেমী পত্রিকা'ন একজন পণ্ডিত একটি প্রবন্ধ পাঠিকেছিলেন। ভিনি निर्विष्ट्रिकाः नक्कम बार्य बार्य हर्ष जुन करवन। रामनः "चवाकीना ভार्य गांवाकी, नाताकीना **७.८१ ७.इ.एमत यषुनि।'' गाजानुष छत्मत्र छ्'गाजात्र এই कनिण शःक्विंग्ति विजीय शर्व এकि पण्डितिक** ৰাত্ৰা বেড়ে গেছে। বন্ধত: এই ক্ৰটি কৰিব নম এ-প্ৰমাদ ছাপাশানাৰ ভূতের। কৰিব আসল লেখাৰ भ**ः जि**ति छिन: ''यत्राजीता ভাবে नात्राजी, नात्राजी ভাবে তাহাদের অভুশি।'' সুভরাং যাত্রা পতনের কোন প্রপুষ্ট ওঠে না। অন্তএৰ আমাদের যেন শ্যেন দৃষ্টি থাকে যাতে আমাদের তুল কবির ভুলে পরিপত ना इत्र। नककत्नत्र त्येष भवीत्वत्र मु ठावित कविजात्र छ्य-भ उन इत्रज प्रथा यात्र। क्षित्र त्य जीत्र येथका পर्यारतन लाथा। या जिनि विजीत बान प्राप्तन नि। ''नकक्रन-त्रहनाननी' त हर्ज्य चा छन कान कान कांबाधरक्त कांन कांना कांबाल किएक छन्न-मूर्वन मरन हता। मरन दावा पदकांत अब कांन श्रव कवित्र চোৰের সামনে বুদ্রিত হয় নি। কবি এর লেগাগুলিকে শেষদেখা দেখে দিতে পারেননি। चरमक्छनि द्यारा भगज़ात्र चाकारत छिन, रयमन 'मक्रजाबत'। कनित चनुभविजिएज चन्यारा भावनिशि ছাপানো হয়—স্বতরাং এতে কোণাও ছলপাত হ'লে সে-ভাবেই হয়েছে। কবির ছারা পরিষাজিত हरागि। "(नेष गञ्जोञ"-এর এমনি একটি কবিভাব *ছল সম্পর্কে কবি* আবদুন কাদির গ্রছ-পরিচয়ে এই वक्तवा त्राचिएन:

> 'ছলিতা' গীতি-গুচ্ছের প্রায় সমগুলি গান সংস্কৃত বৃস্কছলে বিরচিত। তাহাতে 'দীপক মালা' ১৬-মাত্রা; তাহার আমার্য:—

> > मीभक-यांना गीभ गीभ गीभ गरे। योग योग भातिषां करे।।

সংস্ত রীতি ঘনুসারে ইহার প্রথম পংক্তিতে হয় ৮+১১ মাত্রা, কিন্ত বিতীয় পংক্তিতে ঠিক ৮+৮৮ মাত্রা। ইহার প্রকৃত পাঠ হইবে এ-রূপ—

नीशक-त्र.ना शीष शीष गरे। नायव जारा शिकाङ करे

ै अथे.रन भरिक्टि ४--- । बाजाव न् हि भन्।

এবানে স্পষ্টত: দেখা যায় যে, বুজিত কবিভার ''গাঁব গাঁব গাঁব সই''-এ ভিনাট বাজা বেকেছে অভিনিক্ত একটি 'গাঁব'' দক্ষ প্রয়োগে। আমার বারণা এটি একটি প্রসিদ্ধ যুক্তণ প্রমান। কারণ कृषिय कृषिणानिय छेन्य योजा गःचा। "১৬ याजा" साचा चाएए। कृषिणानिय निरमानिया अयि।

''ৰীপৰ ৰামা —১৬ ৰাত্ৰা (তা—নানা—তা—তা, তা না তা না তা)''

বে-কৰি নাত্ৰা সম্বন্ধে এতদুৰ সজাগ তাঁৰ নাত্ৰা পতন হবে এনন ননে কৰা অনুচিত। অবশা "গান্ধনী"ৰ নাটকীয়তাৰ জন্য একটি অতিৰিক্ত "গাঁখ" পৰু বাৰহাৰ হয়ত বা হ'তে পাৰে। কিন্তু তা গাইবাৰ স্থাবিধাৰ জনো—মাত্ৰাৰ পতন ঘটিনে নয়। এই অতিৰিক্ত পৰু বুজুৰ—বুজুৰ প্ৰমান ছাড়া আৰু কিছু নয় ব'লে আমি মনে কৰি। বলা বাছনা বল সকাৰেৰ জন্যে গানে শবেৰৰ উচ্চাৰণ দু'বাৰ কৰা বাৰ কিন্তু সেটা কৰিতাৰ জন্যে লেখা বাৰ দা। সম্পাদক এবং ছান্দানিক আবদুল কাদিৰ এখানে বাৰ্থ্যা দিয়ে এবং নাত্ৰা বিশ্বেষণ ক'ৰে আনাদেৰ উপকাৰ কৰেছেন এবং পাৰদানী সম্পাদকেৰ উপবৃক্ত পাৰিৰ পালন কৰেছেন।

সম্পাদক সারও একটি সপরিছার্য পারিছ পালন করেছেন। তা ছ'ল করিছ করিছার পাঠাছর দেরিরে দেওয়া। কিন সহছে একটা সাধারণ কথার প্রচলন সাছে। নক্তরল একবার যা নিবঁতেল সেটাই তাঁর পেদ নেবা। তিনি তার দিকে সার কিরেও চাইতেন না। ভক্তরা করিছ জনাবারণ পরিক্তকে প্রবাণ করার জনা এটা পৌরবের কথা ব'লে প্রচার করতেন। কিন্তু ছিল্লান্তেরীরা ওটাকেই করিকে হারেল করার একটা মন্ত হিসেবে ধবে নেন। এবং "নক্তরুলের কাবো পরিবার্ত্তনা"র চিছ্ন নেই ব'লে তাঁরা বত প্রকাণ করেন। কথাটা লু'ভরুক থেকেই আংলিক সভা, সম্পূর্ণ সভা দর। রবীজ্রনাথ ঘথবা জীবনানক দাশের কিছু কবিভা দেবলে রন্দে হন যে তাঁরা একটা কবিভাকে গ'ছে ভুলতে বিশ্বর হাসা রাজা করেছেন। হায়ত লোটা কবিভা নিবে কাটতে কাটতে তার একটা সাত্র পাংক্তিকে অথবা স্তরক্তন। হায়ত লোটা কবিভা নিবে কাটতে কাটতে তার একটা সাত্র পাংক্তিকে বিছে নিক্তেন। কবি ধেবানে শিক্ষী সেবানে রেবাকে অকম্পিত রাবার জনা এ-প্ররোজ্যর পড়ে—ঠিক মনোনত প্রস্টি অথবা পংক্তিটি বরা না পড়া পর্যন্ত এই অপেকার ও পরিশ্বরের কাজ করতে হয়। পেকস্পীয়ারও এমন কাজ করেছেন—এ-ব্যাপারে স্বচেরে বাত্রি কুবেরারের। কিছ বলা বাছলা রবীজ্ঞনাথের সম্বন্ত প্রথম পাঞ্চলিপিট শেষ পর্যন্ত একটা মনুযানুতি অথবা প্রাট্রিকি হাসিক প্রাণী হবে প্রতিনি। তাঁরও কোনো কোনো লেখা একটানে নির্ভুলভাবে বেরিরে এসেছে।

नक्षक देशनाम पत्रिवर्टन यथवा पत्रिवार्कनाम बाच बाजरङन ना—यदे बाका क्षणहा। यात्राम ''नक्षणन-

माधिष्ठा विठातें' श्राप अ-कथात्र छितार्थ कृत्विह्—श्रिमाण मह। आनम्म काणित्र मारहब्छ এबीरम

করেকটি দুটান্ত দিয়েছেন। দু'একটি টেলাগুল। গ্রন্থ-পরিচয়ের একস্বানে তিনি বলছেন।

>. 'আনুগত' ১৩৪৮ সালের জৈটি নাসে ১ম বর্ণের ৭ম সংব্যা 'শ্লপারণ' পত্রিকার

'আর জিজ্ঞাসা করিব মা কোন কথা' শিলোনামে মুজিত হট্যাছিল; কিছু সেই সংব্যাম্ব
'শ্লপায়ণ' সম্পূর্ণ মুজিত ও বাজারে বাহির হয় নাই। আতংপর কবিতাটি ১৩৪৮ মানের
'সওপাত' পত্রিকার 'সাপবের চেট' শিরোনামে প্রকাশিত হট্যাছিল। 'সওপাতে' মুজিত কবিতাটিতে ২৪ সংবাক পংক্তির পরে আছে এই শ্লোকটিঃ

বোৰ কৰিতাৰ কৰুত্বগুলি তোষাৰ জ্বছাকাশে উভিতে বৰ্ণৰ চাৰ, কেন সেধা সেধ ধনাইয়া আগে গ এই প্লোকটি ''শেষ সওগাত'' কাৰ্যে নাই। সেধানে কবিতাটিয় শেষ ১০টি পংক্তিয় বুজণেও বিপৰ্যয় ষ্ট্ৰিয়াছে,—শেষের ৪টি পংক্তি তাহার পূর্ববর্তী ৬টি পংক্তির উপরে সন্মিৰেশিত হইয়াছে।

উক্ত ১০টি পংক্তি 'সওগাত্ৰ'-এ প্ৰকাণিত 'সাগৱের চেউ' কবিভাটিতে নাই। সে ছলে আছে নিশ্ৰোদ্বত ১০টি পংক্তি—

त्थन नित्त এक भूर्न भन्नम त्थनमत्त भाखना यातः ।
नजन भाग ना नाननीत्त तथन नित्त द्यान पृतिनाम।
तथन त्य कि हान, तथिनक्छ जातन ना, नित्य जातन ना क्छ;
तिष्ठत नित्न तिष्ठ नाम दम ना, किन छठ जातन रहे।

प्ति ठाव (पर, बन ठाव बन, ष्याचा ष्याचा ठाव; थिय उनु बला माणिका निज्ञ-निष्ठु भाष्टेन ना श्वा। विवरदत वसु बक्षती जुनि थिया,

নহ বিলনের মধুবালা;
কা'বার তীর্ধ-পথে কেন এত মক্স-তৃফার জ্বালা।
কে বলিতে পারে কেন জনুবাগ 'লোহিত সাগর'-তীত্তে
তৃষ্ণা-কাতর গোবী-সাহারার মক্সতুমি আছে বিরে!

উপরত্ত 'সাপত্মের চেউ' কবিতাটিতে 'মনেক পংক্তির পদ পরিবতিত।

একটা কথা মহস্যমন। উদ্ভিতে সম্পাদককে 'মুদ্রণেও বিপর্যন ঘটনাছে' লিখতে দেখছি। 'বিপর্যন' বলতে তিনি কি বুঝিয়েছেন? "লেখ সওগাত" কবির অনুপদ্বিতিতে প্রকাশিত হয়েছিল—পরিবর্তনটা তা হ'লে কি কবির হাতে হয়নি? "লেখ সওগাত" সম্পাদনা করেছিলেন প্রেম্কে বিত্র। এই পরিবর্তনে তাঁর কি কোন হাত আছে? অথবা তিনি কবির হয়নিখিত মূল পাঙুলিপি খেকে "লেখ সওগাতে" কবিতাটি তুলেছেন—বার অনো এই ওলটপানট। নজকল ইসনাম অনেক সময় তাঁর লেখার প্রুফ দেখতেন এবং প্রুক্তেও পরিবর্তন করতেন ব'লে বনে হয়। আমালের মত অনেকের, বাঁলের মুদ্রপালরের সংগে সম্পর্ক আছে, তাঁরা প্রুক্তের উপের রচনা পরিবর্তন করেন অনেক সবর প্রুক্ত-সংলোধনে আমুল পরিবর্তন ঘটান। সে-জন্য তাঁর পাঙুলিপির সংগে মুদ্রিত কবিতার বেশ কিছু পরিবর্তন লক্ষ্য করা যায়। এই চতুর্থ খণ্ডে তার একটা বান্তব প্রমাণ আছে। 'ঝড়' কাব্যের মন্ত্র কবিতা করিতা 'কর্য্যতায়'র পাঠ এই:

क्कां जात करेल नाति छक्षं कथा जिन्न त्नजात जाति निन्न वनि (कात्रप) छ्लां वनि छिन्न ॥ त्नांनारेटक करे त्नार्थानी, जारे वनारेटक त्नार्थानी। वानटक वनि बन्ना, जात्र कानटक कन्ना करे जाति॥ जावात्र जाति छन्प वनि, जानात वनि जन्न॥ दक्षेटक वनि दक्षेत्र, जात्र नानात वनि नना॥ नेनारत करे निया जाति, छावारत करे छीवत।
निरित्त करे निर्देक जात नानीरत बाविया।।
नूकूतरक करे नुष्कितिनी, कूकूतरक करे कूषू।
यमनरक करे वष्ना, जात शाहरक छहुषु।।
ठीछानरक करे ठछात्र, छारे जाछानरक जछात।
नानारत करे नेनाका, जात कानात विन कवान।।
नुष्कृतरक करे मृत्यु, जात शांवारक करे वछ।
वांवारत करे वयू, जात कांवारत करे कछ।।
जाता जरनक वांजा खानि, वृंबरन छाता विन्तु।
रहरवछ अव निर्द्ध रास्व वर्गछ रम जांब किछ।।

ক্ৰিডাটির একটি পাণ্ডুলিপি এবানে ছাপ। হ'বেছে তার পাঠ বুদ্রিত ক্ৰিডাটি বেন্ধে অনেক্রাদি পুর্বক। এবানে ভারও উদ্বৃতি দিলাম:

হাসির পান

पायि श्वीया जाया करेट गावि मःष्ठ जिम्। रन्डाग्र बनि निगु, काबन रहेंडाव बनि हिगु॥ र्शामाक्ष्टक करे रमर्थामी, जारे बनार्टक करे बाब्यामी, कानरक नित्त कन्ता, कांत्रभ बानरक बन्ता करे जायि। **চাষায় চৰুণ बन्धि व'स्म खानाग्र बन्धि जन्**य शामाम बनि हिम्दमा चात्रि ভाषाय बनि ভीष्य।। होकाव विन हैका व्यावि काकाव विन कका छाई। बाग् बन्दं देक बिक है। क्रिक बिक छोरे। नगान करे निभू वाति, ननात्त्र करे निया, भिनिद्य करे भिटेक चात्र वानीद्य वाणिया।। श्कृत्रक करे शुष्टकविनी, कुक्तरक करे कृत् वजनारक करे वज्ञा जात गाइ एक कर् ।। ठीष्ठामहरू करे ठशाम जान जासामहामहरू करे जनम, नामाय यमि नमिना, खानाय यमि अक्षाम। मुबदक बिल बुर्भ ज्ञानि, त्वाकात विन त्वाका, शक्रक बीम बक्रका जानि कार्यक बीम क्रका।। नानारव करे मक जानि नानारव करे नवू, बाबरक बान बन्धा चाबि, लाबरक बान नव्। चारता चरनक बाजा चानि युवरण खामा विणी ? **ज्यान्य क्षान्य क्**

এটাই সন্তৰত: প্ৰথম ৰস্ভা ছিল। তারপম প্রেসে যাওয়ার আগে তার চেহারার যে যথেষ্ট পরিবর্তন হয়েছিল, কবি যে তাকে ওলটপালট ক'নে বুল্লিড কবিতার রূপ দিরেছিলেন তাতে আর
সন্দেহ নেই। এর থেকে প্রমাণিত হয় যে নজকলও তাঁর লেবার বস্তা করতেন এবং অনেক সমর
নাজাববাও করতেন। চতুর্দ বঙ্গে যে-সব কাবা গ্রন্থ ছাপা হয়েছে তাঁর উপস্থিতিতে সে-সব ছাপা হ'লে
তার পূর্বল পংক্তিগুলোকে তিনি নিশ্চয় সবল ক'রে তুলতেন। সে-রকম সবল ক'রে তোলার
দক্তির তাঁর অভাব ছিল না।

এর প্রমাণ নজকলের 'রুনাইরাড-ই-ওমর-বৈরাম'। 'রুনাই'গুলো 'বোহামদী'তে বে-ভাবে প্রকাশিত হচ্চিল গ্রন্থক 'রুনাই'গুলোর অনেকগুলি তেমন আর নেই। প্রথম রুবাইটিও সম্পূর্ণ ভিনু। এটা আমি আমার প্রবন্ধ 'ওমর ধৈরাম ও নজকল ইসলাম' প্রবন্ধে দেবিরেছি, সম্পাদক তার ''অনুবাদক নজকল' প্রবন্ধেও এই ধণ্ডের 'গ্রন্থ পরিচয়ে'' তা বলেছেন।

এই সংগ্রে বলি অনেকের মতে নজকল ইসলাম ১৯৪০/৪১ সালের দিকে মানসিক ভারসাম্য হারিরে ফেলেছিলেন। তাই তাঁর তপনকার লেখা কবিতায় ছলপতন হয়েছে এবং তাঁর চিম্বায় অস্কৃতার ও বিপর্বয়ের স্ষ্টি হয়েছে। এঁরা নজকলের আধাদিক ধাানধারণাকে তাঁর অসম্বতার লক্ষণ ব'লে তাঁর তথনকার চিন্তা ও চেত্রনাকে গৌণ ব'লে চিহ্নিত করতে চান। আসলে এটাও প্রত্যেকের নিজম দৃষ্টিকোণকে প্রমাণ করার একটা চেন্তা মাত্র। কবি তাঁর অসম্বতার পূর্বে মান্তমণু হয়েছিলেন, আধাদিক চেত্রনাণুরী হ'য়ে পড়েছিলেন। তাঁর রচনার ভারসাম্য নই হয়েছিল—বলা যায় না। ঐ সময়কার কিছু রচনা যা এই চতুর্ধ বিশ্বে মুদ্রিত হয়েছে তা অত্যন্ত তীক্ষণৃষ্টিসম্পনু সঞ্চাগ সমাজসচতন লেবকের রচনা ব'লে আমার ধারণা। সম্পাদক যে ভ্রিকায় বলেছেন:

পৃথিৱীর বিভিন্ন দেশে বিভিন্ন কালে যাঁরা পরমান্তার সহিত সাযুক্তা লাভের আনন্দ সংবার দিয়েছেন, সামান্তিক ঐক্য ও আর্ত-মানবভার প্রতি স্থগভীর সহানুভূতি ওাঁদের অনুলা শিক্ষার এক বড় অন্ধ। নজকল-সাহিত্যের চতুর্ধ শুরে স্বভাবতংই তাঁব সৌন্দর্যপ্রিয়ভা ও প্রেম বিহলতা পেয়েছে প্রগাচ্তর রূপ, কিন্ত উদাসীন শিক্ষীর সেই প্রসন্ম বানের আসন্বে ব'সেই নিপীড়িত মানবভার জন্য তাঁর বেদনাবোধের প্রকাশ হয়েছে পূর্বের চেয়ে আরও তীক্ষ ও প্রভাক। নজকল রচনাধনীর চতুর্ধ বন্ত এই বৈশিষ্টেরে দাবীদার।

আবদুল কাদির সাহেবের এই কথার সঞ্চে আমি সম্পূর্ণ একষত। একেবারে মেদইনি অভিজ্ঞতাকে যথোপবুদ্ধ শব্দ ও উপমা ও চিত্রকলেপর সাহাযো নজরুল তাঁর এ-যুগের কবিতার তুলে ধরেছেন। মানুষের প্রতি তাঁর গতীর ভালবাসা, বাঙলার বুসলমানদের অবংপতনের জনো তাঁর দরদী মনের তীব্র ব্যাকুসতা, আবাদ্বিক জীবনের নিবিড় উপলক্ষি তাঁর এই বুগের কবিতাকে নতুন বৈশিষ্ট্য ধান করেছে।

भणानम् जानमून काभित्र गारश्यक जात्र এकि वक्कवा श्रीभिनात्वाभा। এই চতুর্থ খণ্ডে 'রাঙাজবা' । (নামটি প্রকাশকের দেওরা) ও 'দেবীজতি' নামে শুটি গ্রন্থ ছাপা হয়েছে। 'রাঙাজবা' গীতি-কাবা গ্রন্থ এবং 'দেবীজতি' তল্পাজের ব্যাখ্যা গ্রন্থ। 'দেবীজতি' হিন্দু দেবী কানির মহাকান্ধি, মহানন্ধি, মহানন্ধিতী, মহানন্ধিতী, মহানন্ধিতী, মহানন্ধিতী, প্রভাজিকা, শতাক্ষী ও নামরী অবতার মপের ব্যাখ্যা।

শ্বাবোন্দোন কোন্দানীয় সংগীত রচরিতা ও ট্রেনার হিলাবে এবং লেবের বিকে কর্মবাতা বেতার কেন্দ্রের সংগীত রচরিতা হিলাবে নজকনকে এক সরব কোন্দানীর বাবসার পাতিরে নানা বর্ণের ও সম্প্রদারের নোকের বনোপবাসী গান নিবঁতে হরেছে। এ-গুনো রচনার পিছনে তাঁর বাজিগত বিশ্বাসের প্রশু অভিত ছিল কি না সেটা অনেকের মিজাসার কারণ। বিশেষ ক'রে নজকন বাজিত লামা সংগীত, নিব সংগীত ও বৈক্ষরগীতি বিবাতে ব'লে বিবেচিত হরেছে। কারও কারও বালবা অনুত্তিতে আশ্রর না নিলে এবন চিন্তাকর্ত্বক গান নেবা কেরন ক'রে সন্তবং কান রাজ্যা সক্ষেদ্র বেবন আগরণের গান, বিশ্ববের গান, স্বদেশী গান, প্রেবের গান, প্রকৃতির গান, সেবার চরর সাক্ষয়ে অর্জন করেছিলেন তেবনি একদিকে ইসলারী সংগীত, শামা সংগীত, নিব সংগীত ও বৈক্ষর গীতি ইত্যাদি ধর্মীর গীতি ও অনাদিকে কুমুর, ভাটরালী প্রভৃতি লোকসীতি রচনার অসামান্য পারণশিত্য দেবিরেছেন। তাঁর রচনার ও স্বর সংযোজনার অপূর্ব শৈল্পিক সিদ্ধি দেবে বোখা ক্ষিন হয় বে কোন্টা তাঁর বিশ্বাসের অন্তব্যর বেকে উদ্গত আর কোন্টা নয়, কোন্টা আসল ও কোন্টা নয়ন। বিশ্বর বালে বিশ্ববি এমন উচ্চাজের বে মনেনা করা প্রার অসম্বর হ'য়ে ওঠে বে তিনি শামা ভক্ত নন।

পাঠকের মনে এই জিল্ঞাসা জাপার কারণে কোন কোন বোর শরীয়তপদী মুসলমান যেমন নজকলের মুসলমানর নিয়ে প্রশা ভোলেন তেমনি একদল ভাঙ্কি ছিল্ম তাঁকে 'মাতৃসাধক' ব'লে আধ্যাত্বিত করেন।

षानम्न कानित्र नारश्य ज्यिकार्छ निर्धरङ्गः

নজকলের 'দেবীপ্ততি' নামক রচনাটির অপকাশ্রিত ভারতত্ত্ব ব্যাব্যাচ্চলে ভার 'জুরিকা'র অধ্যাপক ভক্তর গোরিক্সগোপাল মুবোশাগ্যায় বলেছেন: 'নজক্ষণের খাসল পরিচয়: কাজী নজকুল ইসলাম স্বভাবে ও স্ক্রপে মাতৃসাধক বা পরম শাস্ক।''

व्यावनुम कानित्र भारद्य এड मरङ्ग धिङ्गाम क'रत्र बरमर्छन:

এ-প্রন্তে একটি ঘটনার উদ্ধেশ করব। ১৩৬ সালের প্রারণ-আপ্রিন সংখাক 'জরতী' পত্রিকার সম্পাদকীয় হুল্ফে আমি নির্বেছিলার: 'নজকল ইসলাম বাঙলার মুসলিম ক্রিনেসাসের প্রথম করারই শুরু নহেন, কাব্যচ্চীর ইসলামের নিরম কঠোরতা উপেক্ষা করিয়া neo paganism-এর সাহায্য প্রহণেও অগ্রণী।'—মামার সেই লেখাটি প'ছে নজকল ইসলাম বৃদ্ধ হুরে মন্তব্য করেন নে, তার কবিতার ও গানে বাহ্যতঃ neo-paganism বলে যা আমানের কাছে প্রতিভাত হ'ছে: তা প্রকৃতপক্ষে pseudo paganism।

वर्षे बक्कवा बाबाय शव याश्यून कावित गार्थ्य बनाक्तः

नवकरत्तत्र कान कान बहनात्र देशभीत्र मीनायाम ७ रेनवज्ञाङ पक्ति वात्रायमा पार्व वीत्रा छीरक पून क्यांत्र श्रेडीक-शृक्षात्री यनएड होन, छीरमत्र कार्य्य क्यांत्र यक्षमा (य, छिनि क्यमहे भागाम वा निश्व भागाम नन, हिनि क्यनेश क्योंनेश कार्यायम्बर्य व्यूमतर्भ श्र व्यवस्थ जन्थानिक ভাৰ-প্ৰকাশের প্রয়োজনে পরেছেন pseudo pagan-এর (नकन প্যাপানের) সাব্যিক কবি বেশ।

धरे विवर्ति नित्य भगारमाठकरम्य मर्था न्निष्ठ मञ-नार्थरकात्र न्हिष्टि हर्दित । शानराज्ञ करहानावाच धक्कम हिन्दु राज्ञ । किन्न जांत्र मञ्ज्ञ विकृति वावमून कामित्र मारहरवत्र काहावाहि। ध-वानारव जांत्र मखना छेद्द्र कर्ममाम:

কালী নজকন ইসলামকে উপুর প্রেরিত বা তান্তিক সাধকের আশীর্বাল-পূত কবি বা সাধক ব'লে প্রচার করবার একটা বোঁক দেশের এক শ্রেণীর মব্যে দেশতে পাওরা বাক্তে। ১৩৭৭ সালের (ইং ১৯৭০) নজকন-সংখ্যা "কথা সাহিত্য" পত্রিকার ১২২৫ পূর্চার "তারাক্ত্যাপা নজকল" নামক প্রবাহের নের্থক শ্রীসমীরকুমার বোষ মাহাশর লিখেছেন:—"তারাশীর্কের তার। মানের আশীর্বাদে এক মুসলমান কালী পরিবারে আছভোলা সন্মাসী নাজুসাধক নজকলের জন্ম হয়।" এ তথা বোষ মহাশর কোখার পোলেন । আমরা নজকলের পুরাতন বনুরা যতদুর জানি, চুক্রসিয়ার খানদানী কালী পরিবার বর্ধ বিষয়ে পুরাতনকালে এবং একালেও অতান্ত গৌড়া এবং বহির্জাগত থেকে বিচ্ছিনু। তাবেন্ডোলা নজকলের ঐ পরিবারে জন্ম হয়েছিল এবং নির্বাতনের সজুবীন হ'তে হয়েছিল। সেইকনাই তাঁকে তের বন্ধর বন্ধসেই (১৯১২) গৃহছাড়া ও লক্ষ্মীড়াড়া হ'তে হয়েছিল। এমন কোন তথ্যই নেই বে তিনি বা তাঁর মাতৃদেবী কোন সময়ে তারাপীতে গিরেছিলেন।

थानंदजांच हरो। भाषाय बाभावहात बाचा फिरवर्डन এই जारव:

কৰির ননোজগত স্ফটিকের মত আছে এবং নিম্কলন্ধ দর্পপের মত। তাই বানককাল থেকে ১৯৪০ সাল পর্যন্ত যখনই যে রাজার বোড় বুরে গেছেন তাঁর রস প্রহণ করার ক্ষমতা তাঁর ছিল ব'লেই তিনি মুসলমানের সন্তান হ'রেও উদার মন নিয়ে নানা ভাবদর্শন প্রত্তি অতলান্তিকের তলে ভুব দিতে পারতেন। তাই ইসলামী সাধনা থেকে বৈক্ষর, সহজ্যিয়া, স্থামী ও তাত্রিক সাধনার ভাবমগু হ'রে তার স্থামু রূপ মুটিরে তুনতে পারতেন। তাঁর এই শক্তিতে কোন অনৌকিক ছিল্পু-সাবকের কোন আলীর্নাদের প্রতাক্ষ জিয়া ছিল্ না। এর কোন তথ্য নেই। কট কল্পনা হারা প্রমাণ ক'রে কবির জীবনকে লোকসমাজে বোলাটে ক'রে তোলা উচিত নর।

बृक्ति। भूताभूति जावमून कामित गाश्यत बक्तयात गर्बार्थक नह । এवः এक्ट्रे भरत शाभरजाब हर्ष्टाभावात जात के विकास कामित गाश्यत कामित गाश्यत कामित गाश्यत के शाभरजाब हर्ष्टाभावात बक्तवा कि विकास कामित का

যুক্তি—আন্দোলনের বছুরা প্রায় সকলেই স্বন্ধ ও দীর্ঘদিন কারাগারে আৰম্ভ ছ'রে পাকার কিছু ডক্তিপথের বছুরা তাকে পোরে বলেন। এই সময় বাংলালেশের দুর্ভাগ্য, তাঁর বেল ছেলে বুনবুলের বৃত্যুতে নজকন নোকার্ত হ'লে নাজির পথ বুঁলতে থাকেন। তথ্য তীর ভটিনার্সের বন্ধু কালিপদ গুহরার (বোলীরাজ) ও জড়াৎসাহী বিপুরী ও বোলবালি কবি জ্বলেন্দু দাশগুর তাঁকে এই পথে শান্তি সন্ধানের জন্য প্রয়োচনা দিলে বোলনার্থার পথে টেনে জানেন। বিপাকে পড়েই নজকন যোলনার্থনার পথে গিরেছিলেন। কিছ সাধনা তিনি নিষ্ঠার ও জাত্তরিকতার সজে করেছিলেন, এটা অধিসংবাদিত সভ্য তথা।

এই বোগনাধনা peganiem-এর ব্যাপার কি না। Paganiem প্রদার্থে প্রকৃতিবাদ অর্থাৎ এক কথার প্রকৃতি উপাননা। অভিবান-এর অর্থ নিক্ট ধর্ম বা ধর্যাচারণ বা অ-লার্থনিক প্রকৃতি উপাননা। অভিবান-এর অর্থ নিক্ট ধর্ম বা ধর্যাচারণ বা অ-লার্থনিক প্রকৃতি উপাননা। আবদুন কাদির নাহের peganiem অর্থে পৌতানিকভা বা প্রভীক-পূজা বুলিরেজেল। এবং তিনি বল্পছেন বে তিনি বর্ণন নেথেন যে নজকন নব) প্রতীক্ষাদের উষোধক তথন সক্ষমণ বলেন যে তাঁর কাবো বে প্রতীক পেবা বার—তা নবা প্রতীক্ষাদ নর তা নকল প্রতীক্ষাদ। আবালের প্রথমে দেখতে হয়ে যে নজকন প্রতীক পূজা বা পুতুন পূজারে সমর্থন কর্মজন কা । আবালের প্রথমে ক্ষেত্র বাবিয়ার আব্দা কেবজি নজকন পূতৃন পূজার সমর্থক নন। অববা ক্রিবিজিতি বৈত্র বাবিয়ার সমর্থক নর। [নেবী-ছভির ভূরিকার প্রীনিতাই ঘটক সংকলকের ত্রিকার নিবেছেন—''১৯০৮ সালের জানুরাধী বাসে আবার ঐকাভিক আগ্রহ ও অনুরোধে ক্ষরি 'দেবীন্তিত' নেবেন।'' (ঐকাভিক আগ্রহ তা হ'লে নজকলের ছিল নাং)] মহানক্ষ্মী পরিজেদেশ নজকন বাবিয়ার বলছেন:

তোরবা রাঙতার ঐপূর্য দিয়ে যে যাড়পুর্যবরী শ্রীপুর্গার বছর পূজার অভিনর কর। তিনি ভিবারিনী হ'বে হারে হারে তোরাদের জন্য শক্তি ভিক্রা, কল্যাপ কার্যা ক'ছে ক্যেতিহন। তারই পূজা বস্তপে শিবপঞ্জি আনেন ভিবারী-ভিবারিনীর ক্লপে। তোরবা বাটির প্রতিয়া পূজা কর। তাই প্রাণের প্রতিয়াকে দেবিতে পাও না, বাকে পাও না।

ি উদ্ভ অংশ নক্ষক রচনাবলীর বর্তমান চতুর্থ ববে সংক্ষণিত লেবীয়তি থেকে বাদ যাওয়ার কারণ বুবতে পাবনাব না। আবসুল কানির সাহেবের কাছে যে বই আছে তা কি অসম্পূর্ণ ?]
উপরের উদ্ভির ''তোহরা বাটির প্রতিষা, পূজা কর, তাই প্রাণের প্রতিষাকে দেবতে পাও লা।''
ক্ষমইভাবে বলে না কি । ব্যাপারটা পুতুর পূজার ব্যাপার নর।
বলা বাজনা 'বাগমা' নক্ষক-কাবো পরুর সুষ্টার প্রতীক হিসাবে অর্থাৎ ভান্তিক মতে বিনি সকল বজিল বজি সকল ক্ষরি সুষ্টা—তার প্রতীক হিসাবে ব্যবহাত হয়েছেন।
বর্মীর বিশ্বাস থেকে নর, নজকল ইসলার তার কাব্যের উপাদান হিসাবে নেমন একদিকে প্যামা, প্যাম, বিন, ক্ষরাম, পরভাষান, কাব, মানণ, সীতাকে প্রতীকার্যে ব্যবহার করেছেন ভোষানিকে তিনি একিল,
বালেল, ক্ষুক্তিয়ার, ক্ষেত্রেন, বুলু, নমন্ত্রেন, ইন্যায়ীয়াকে প্রতীকার্যে বাবহার ক্ষরেছেন। এর কারণ নম্বান্তাবে তিনি বিশ্ব-কুলস্থানাককে সাম্য, আধীনতা, পোষণ বঞ্চনার অপটিকে বুবিরে নিজে চেরেছিলেন।
আর্থাও একটা ব্যাপার, ক্ষপক ও প্রতীক্ষের অসভারে কবিতা বস্তা। কাবা হয়— অন্য কিছুতেই ভা ইন সা।

रकीन रकीन क्षित्रिक बर्जन-नवकरनत रेगमारी भारतम एएस छीत्र नामानी काना विरम्दर छैरन्छ।

কথাটা খাংশিক সতা। নজকলের সব শ্যামাসংগীত উচ্চাচ্ছের কারা নর—খাবার ইসনামী গানের খনেকগুলি অবশ্যই উচ্চাচ্ছের কারা। ''রাগ্রাজ্বা'' কারোর ১ন গান বল্ রে জবা বল' ভাবগত বিক থেকে উচ্চাচ্ছের কবিতা। 'রূপক'-এর উৎকর্ষের জন্যে কবিতাটি একটি অমুন্যা রম্ম বিশেষ। তেমনি 'নজীতাঞ্চলি' কারোর ৩৫নং গান ''কুলে পুছিনু—নল্, বল্ ওরে জুল'' (ছাপা হ'রছে ''বলো, বলো ওরে জুল''। আমার বারণা ''বলো' হবে না, কেননা পরবর্তী পংক্তিতে জিল্লানা হ'ল—''কোবা পেলি'' বিত্তীয় শুবকে ''কে তোরে'' 'কোবা পেলি''; তৃতীয় শুবকেও ''কোবা পেলি''। এখালে সমন্ত সন্ধোরন অতি আদরার্থে।) আজিকগত ও কার্যায়ত দিক বেকে উচ্চাচ্ছের কবিতা—মন্ত। প্রতীক ও ক্লপক বাতীতই কবিতা সরল প্রত্যক্ষ বাকা ও শব্দবিন্যাসের অপূর্ব কৌশলে শ্রেষ্ঠ কার্য হ'রে ওঠে—সেই সংগে উচ্চাচ্ছের ভাবনার যদি সংমিশুণ গাকে। কিন্ত বলা বাজন্য এ-কার্যেও সূক্ষ্যু কৌশলে প্রতীকের ব্যবহার করা হরেছে। স্ক্রীন্সের ধারণা স্বন্ত প্রাণী মাত্রই, জড়, অঞ্চ্ছ সমন্ত কিছুই প্রবেশ্বরের অংশ বিশেষ। প্রকৃতির এই ব্যাংশসমূহ সেই জ্ব্যুরের প্রতীক। দিব্যবৃত্তী-সম্পন্ন বানুষ সেই নিরাধারকে এই আকারের মধ্যে দেখান। এই গীতি-কার্যের অন্তনিহিত ভাবে সেই দার্শনিক উপলব্ধির প্রকাশ ঘটেছে। কবি বন্সছেন:

''अरम स्वि-भनी, अरम अ श्रष्ट जाता, काषा भिन्न अ स्वभनी क्याजिःशाता?'' करण, ''आनमा जीशांत्र ऋभिन्न रेमाना मूना वहाँ में शंदना श्रित य बुनम।''

"রবি-শবী" "তাঁহারি রূপের ইণারা"। কার ? অবশাই আনাহ্র। অতএব "রবি-শবী" সেই আনাহ্র খণ্ড রূপাংশ। স্ক্রোং রূপকের আশুর এগানে আছে। বলা বাছলা বেখানে কবিতা কাবা সেখানে কবিতা শাস্ত্র নয়। শাসা সংগীতে নছরুল যেখানে বলছেন:

*

সিমুতে বার বিশু খানিক— তার ঠিকুরে পড়ে রূপের বাণিক।

তথ্য উমিখিত 'হান্ধ'-এর সংগে এর কাবাগত অর্থের কোন পার্থকা থাকে না। ঠিক এইজন্যেই ব্যুসুদ্দ বৃদ্ধ রাজনারারণকে বলেছিলেন —When you sit down to read poetry, leave eside all religious bias. বেতার বাংলার ১৯৭৫-এর জালুরারীতে প্রকাশিত জারার 'বাঙালী জাতীয়তাবাদ ও কালী নজক্ষন ইসলাব' প্রবদ্ধে (পরে জারার 'নজক্ষন সাহিত্য বিভার প্রয়ে সংক্ষিত) এই উদ্ভি বিরে জাবি বলেছিলায়—''শিলপীর জাবর্ণ সৌদর্ব। কোন বর্ব, জাতি, সম্প্রদার জবরা পাত্র

শিল্পীর আবর্দ নর। আববুল কানির স্থাহের ধর্তবান সংকলনের ভূমিকাতেও সে কথার উর্জেশ করেছেন। (নজকল ইসলাম জনাব আনওরার চোসেনকে লিখিত এক পত্রে বলেছিলেন বর্ষের বা শাজের মাপকাঠি দিয়ে কবিতাকে মাপতে পেনে তীবন হাইপোনের সন্তী হর।') বলা আহ্বান নজকল ইসলাম ১৯১৯ সালে এলবাট হলে নাঙালী ভাতির অভিনলন পত্রের জ্বাবে বলেছিলেন : ''স্থানের ধেরানী দুলাল কীট্সের মত আমারও মন্ধ—''Beauty is truth, truth beauty.'' ''স্থানরই সভা, সভাই স্থানর,''—এটা কবির কাব্যাদর্শের মন্ত্র ব'লে বিশ্বাস করলে মনে হর কবি সর্বন্ধে আমানের যাবতীয় সন্থোহ বুচে বাবে। কবিকে যদি আম্বান কবি হিসাবে দেখি তাহ'লে তার বিধা আমার। বৈশাদ্শোর অবস্থান দেখতে পাব না—বৈশাদ্শা আমানের চোখে পভ্তৰে তথান বৰ্ধন আমার। তাঁকে কোন বিশেষ সম্প্রদায়নভুক্ত ক'লে দেখার। কিন্তু নজকল ইসলাম নিজেকে কোন সম্প্রদারের একক সাবগ্রী হিসাবে বোধ করি দেখতে চাননি। সে-জন্যই তিনি উল্লিখিত এলবাট হলের ভাষণে বলেছিলেন:

আৰি এই দেশে এই সৰাজে জন্যেছি ব'লেই শুধু এই দেশেবই, এই সৰাজেরই নই। আৰি সকল দেশেব, সকল ৰানুদের। স্থানরের ধানি, তাঁর শুনগানই আনার উপাসনা, আৰাম ধর্ম। যে কুলে, যে সনাজে, যে ধর্মে, যে দেশেই জন্যাহণ করি, সে আনার দৈন। আনি তাকে ছাড়িয়ে উঠুতে পেরেডি ব'লেই কবি।

किंद मरणहरू भर्मा डाटाउ बुहरव ना ब'रम जिनि डाँव मामाजिक पासिरदत वााचाा करवरहम और ब'रम:

কেউ বলেন, আনার বাণী যবন, কেউ বলেন, কাফের। আনি বলি ও দুটোর কিছুই নয়। আনি বাত্র হিন্দু বুসন্মানকে এক আরগায় ধ'বে এনে গ্লাগুলেক করাবার চেটা করেছি। সে চাত্তে-ছাত নিলানো যদি গ্লাগালিকে গলাগলিতে পরিণত করার চেটা করেছি। সে চাতে-ছাত নিলানো যদি ছাতাহাতির চেয়েও অশোভন হ'বে থাকে, তা হ'লে ওরা আপনি আলালা হ'বে বাবে। আনার গাঁট ছভার বাঁবন কাট্তে তাদের কোন বেগ পেতে হলে না। কেননা, একজনের ছাতে আছে নাঠি, আর একজনের আজিনে আছে চুরি।

नककरनम श्रेटिश नार्थ हरबिक्त। "क्या" लिय अर्थन धानामा छ या अना। क्या धीन श्रेटिश कार्ष ह तमक रमित या निम्मनीय, रकान मान्तिकानी बानूय रम-क्या यनस्य गा।

প্রকৃতপক্ষে নজকন ইসনান শালিকানী। কিন্ত একদিকে সম্পদের পাছাড় ও'ছে, েবে সম্পদ নুষ্যু শোষপ্রছের নিম্পেরণে কটি হয়,—অন্য দিকে শালির নাণী প্রচার কংগলে সে পালি কোন দিন বাজবারিত হয় না। ক্ষম বনবণ্টনের স্বাহাই পালির নীয়ে নুকানো আছে। সেটাকে বাজবারিত করার জন্য নজকন ইসনাম সাহা জীবন বুজের জন্য সকল মন্তনুম বানুসকে আনোন করেছেন। আৰ এই যুদ্ধ-কার্য রচনার তিনি ক্বনো মালীর স্বাহা, ক্বনো ইসনানিক স্বাহা, ক্বনো গীতার স্বাহার ক্রেনো তালের স্বাহার ক্রেছেন। এই চতুর্ব বতে 'দেবীভাতি'তে সেই বয় বীজ বেমন সুকানো সাছে, তেমনি আছে "নতুন চাঁলে"র "ক্রেকের ইদ", "ইদের চাঁদ,"

'কেন লাগাইলি ভোনা', 'লাজাল', ''নতুন চাঁল', ''ওঠৈ যে চাবী,'' এবং ''লেব সওপাডে''র বছ কবিভার; এননকি কিছু কিছু ইসলাবী পানে। বিশেষ ক'বে কবির ''লেব সওপাড'' কাবো কবিছ নানবিক ভাবনা গভীর বেলনার ভাবা নিবে লাগপ্রকাশ করেছে। বিশ্রুষ ও প্রেম, নজকবের কাবো প্রথম থেকেই পাশাপাশি বিরাজ করছিল। এই প্রেম বেমন ব্যক্তিগত তেমনি বিশ্বপত। চতুর্ব বিশ্বেগত গেই ব্যক্তিগত ও বিশ্বপত প্রেমের গভীর উপলব্ধির পরিচর প্রকাশিত। বিশেষ ক'বে কবির লাখাবিক চেতনা ও উপলব্ধির গভীর জটিল প্রকাশ হরেছে করেকটি কবিভার। যা পভ্লে বোঝা বায় যে নজকন নানব জীবনের গভীরতম জিলাগার শেষ বিগতে পৌছানোর ভাতিহীন সাবনার নিবগুছিলেন। এই তারে সজকন যে বোগসাবনার আত্মন্ত হওরার চেটা করেন ভা ভাতিহীন সাবনার নিবগুছিলেন থোগ। 'লৈ বে আমি', ''অভেনন'' ও ''আম কডিনি ।'' এই তিনাট কবিভার জপুর্ব শিল্প ক্ষমানর ভাষার সজকন ভাঁর স্থানী ধ্যান-ধারণার গভীর অনুভূতিকে ক্ষপনয় ক'বে তুলেছেন—বেশীকে স্থিটী সংগে বিজ্ঞের অভেন ক্ষপে কলপ্যা করে। যনে রাবতে হবে কবির beauty বেমম ধ্যাধা স্থীর beauty তেমন পর্যর আদির সভ্জান্তরত। এই ভার-কলপ্যার কবি ও স্থবী অভিয়।

এ-খণ্ডে নজকলের গদ্য রচনার বধ্যে তাঁর 'কুছেলিকা' উপন্যাসটি (আকর্ষণের দিক হ'ল বাজারে প্রকাশিত উপন্যাসটিতে যে পরিচ্ছেদটি ছাপা ছয়নি গ্রন্থ-পরিচয়ে সম্পাদক সেই পরিচ্ছেদের পুরেটি এখানে ছাপিয়ে দিয়েছেন। এটা "নওরোজ" পত্রিকার ভাস্ত সংখ্যার ১৩৩৪ সালে ছাপা ছয়েছিল)। "ববুমালা" নাটকটি ও পাঁচটি প্রবন্ধ ছাপা ছয়েছে। প্রবন্ধতিল হ'ল 'লাঙল', 'পোলিটিকাল তুবড়ি-বাজি,' 'নজকল ইসলাবের পত্র', 'গণবাণী ও মুজফকর আহমদ' ও "গঙালীর বাঙলা'। সমগ্র নজকল ইসলাবের জানতে তাঁর এই গণ্য রচনা যে বিশেষ সহায়ক সে-কথা বলা বাছলা।

পরিশেষে বলি থার্থাছ মহলের প্রবল অপচেষ্টার কলে নজকল ইসলানের বিনুপ্ত হওরার সামরিক সভাবনা আজ অবনুপ্ত। আজ প্রবাণ করা আদৌ দুরুহ নর যে পৃথিবীর মহন্তব কবিদের অন্যতম দজকল ইসলাব—ভাষার, চিত্রকরলার, ভার-ব্যঞ্জনার, অমল করনা-প্রতিভার, দুরুল্টসম্পনু ভবিবাং-ক্রটার প্রকার এবং বিবাদবিশৃত্ত সীতরস সংযোজনার মহাকালবিজ্ঞরী সকল মহাকবিদের তিনি সহবাত্রী। বিংশ শতাক্ষীত্তে আবরা বে অত্যন্ত সিকটে থেকে তাঁর কাব্যের রসামাদন করতে পেরেছি—এ আমাদের অতি বড় সৌভাগা; এবং নিশ্চরই সেই সৌভাগ্যের অবিকারী হবেন আমাদের ভবিবাৎ বংশধ্যেরা। প্রভূত্বকে "নজকল রচমাবলী" সংকলিত হ'ল ভাষের জনো। আর এই সংকলন যার ভক্তি-প্রশৃত চিত্তের নিবেদন সেই আবশুন কাদির সাহেব হলেন আমাদের সংগে তাদেরও নবস্য।

-नाराकृतिन चार्यन

সংকলাत तकरून रेजनाय

সহজাত আবেগের অকৃত্রির ও অবলীগারর বডোৎসারণে দজকন ইসলার কৰি। তাঁর প্রতিক্রা ছিল বছরাত্রিক। বিপ্লব ও বিজ্ঞাহ, শান্তি ও সংবাত, সার্য ও শ্রেণী-সচেতদতা, প্রের ও অপ্রের, বিলন ও বিল্লহ, হিংসা ও ভালোবাসা, বাবিকভা ও অধানিকভা, আভিকভা ও বান্তিকভা, ইসলার ও অলৈসলার, হিন্দু ও বুসলবাদ নজকল-সাহিত্যে পাশাপাশি বর্তনাম। প্রতিভার এই বছরাত্রিক ভাই নজকল-বাদসের বর্গার্থ বুল্যারণে অন্তর্গার স্কৃষ্ট করে পাকে।

'मक्कन नवीक्ष'* श्राद्ध एकएउ नन्नानक छ: व्याद्यात्रक विक्रकानाम बरमएका:

এ বাবৎ নজকন সম্পর্কে বিচিত্রবিধ আলোচনা প্রকাশিত হবেছে। নানা দিক বেকে নানা বর্ণের আলো পড়েছে; সে আলো উৎসভেদে সরন, তীর্ক, মৃদু, তীব্র, মন্ত্র, প্রথম । তার বব্যে জিলাবাদ দিলাবাদ উভয় প্রসদে সমুৎস্কে শিক্ষিত বধ্যবিদ্ধ বাঙালীস্থলত কর্মমা তারিক প্রাবন্য, আবেলের আতিশব্য, বিশেষপের বাছলা, কর্মদা অনর্গন দিলা, অসহিচ্ছু বিজ্ঞান, ধর ক্রীক্ষ বেশ প্রাচুর্বে বিদ্যানা—সম্পেছ সেই। বস্তুত বুব ক্ষ চিন্তই সেই মধ্যবিশুভে উপনীত যোবানে সরল নিলা-প্রশংসা, কি ব্যক্তিগত সাধারণ ভাল-লাগা। মল-লাগা বুবা মর, বুবা কবি-প্রতিভার বদাদক বুল্যারনের প্রবাস। তবু, বনা বাছলা, সেই প্রয়াসই বিবল হলেও প্রাবিত।বর্তনান গ্রহ...কালী নজকল ইসলাবের সাহিত্যকর্ম সম্পর্কে বিল্লেখণব্যী, স্বন্ধ, ধনারক প্রবাননীর নির্বাচিত সংকলন। (প্—১৫)

'मककन गर्ने,क्न'-এর পরিচয়ের জন্যে এই প্রাক্তক্ষণট যথেষ্ট। সাধারণত এ ধর্মের সংক্ষান্দ প্রায়ই সম্পাদকের সীমারক ব্যক্তিগত বৃষ্টিভঙ্গী এবং একটা গতাসুগতিকতা পরিসন্দিত হয়। ক্ষিত্র জালোচা সংক্ষম সেদিক থেকে উল্লেখযোগ্য কার্থেই ব্যতিক্ষম।

প্রথমতঃ প্রবন্ধ নির্বাচনের ক্ষেত্রে বছটিতে একটি পরিজ্ব, নিরপেক ও ক্ষর চিন্তার পরিচর বিশৃত। বিভিন্নতঃ একটি ক্ষণুখন বৈজ্ঞানিক ধারাবাছিকভার প্রবহনসূহের বিদ্যাস ধইটিকে বিশিষ্টতা দান করেছে। "নজকনের সাহিত্যিক সামাজিক রাজনৈতিক পটভূমি, নজকন-প্রতিভাষ মুল্যার্থের প্রদু, নজকনের বহুমাত্রিক কবিমানস, নজকলের কবিভার বিবিধ প্রস্ক, শব্দ, উপনা, জনভার, জ্ল, নজকলের উপন্যাস, গল্প, নাটক, শিশুসাহিত্য, গাদ ও প্রবহ্ব—এই বিচিত্রবিধ বিষয়ের প্রত্যেকটির পৃথামূপুথ বিশ্রেষণ এইসব প্রবহু বিশ্বতা (পূ—১৫-১৬)

সক্ষ বহৎ প্রতিপ্রাই দেশ-কাল ও ইতিহাস-ইতিহোর পটজুনিতে পূর্ণতা লাভ করে। প্রথম বহাবুছোন্তর সামাজিক অবক্ষর ও বিক্ষোন্ত এবং ঔপনিবেশিক সমাজবারস্থার আবা সামস্তভারিক আবহাওরাকে বারণ করে সাহিত্যক্ষেত্র সক্ষরণের আবির্তাব। ইসলাবের প্রবন্ধ মাদবতাবাদী আবর্ণ ও ইতিহা, করাসী ও রূপ বিশ্ববের ইতিহাস, শেলী-কইটমাাস-সোক্ষি-ম সাহিত্যটিন্তা এবং বেগাফত ও অসহবোস আন্দোলনে বিক্ষুত্র স্বংগণ ও স্বকালের পশ্চারপট প্রভৃতি তাঁর মানস-পরিষ্ঠল, গঠনের

क्ष्यक्षम मरीक्ष्य ॥ हः याशक्षम मनिक्षकायान मन्त्राविष्ठ । श्रवेद श्रकान : ১১९৯ । श्रकानक : चानच श्रकानम,

প্রপাদান। দলক্ষনের সহলাত প্রতিত। এই বিশ্বত পটভূমিকে লাভসাৎ করেই বছরাত্রিক লাভপ্রকাশের পত্তি লাভ করেছে। 'বাংলার কাব্য ও নজকুল ইসলান '(ছবারুন কবির), 'নজকুলের রাজনৈতিক ও সামাজিক চিন্তাধারা' (আতাউর রহমান), প্রভৃতি প্রবদ্ধ এই পর্বাধে উদ্দেশবোগ্য।

নামবতার চারণ-কবি রেনেগাঁনের অথপুত চির-বিভ্রান্থী নম্বন্ধন ইসনার বাংলা মুহিতো এক নতুন বুল ও নতুন ধারার পবিকৃৎ। অসভোদ, অতৃতি, অন্তিরজ্ঞা, উরেজদা, প্রচও আশাবাদ আর অদন্য স্বতঃস্কৃতি তাঁকে প্রতিনিধত স্ট্রনীল রেবেছে। তাঁর বিজ্ঞান একাধারে ভাবনাদীও বন্ধবাদী। প্রথম দৈনন্দিনতাকে তিনি কান্যে প্রতিষ্ঠিও করেছেন। কানের প্রকাজন নিটিরেই নম্বকলের কবিজ্ঞানোত্তর মহিনান ভাগের। 'নম্বন্ধন নান্দের এক দিক: একটি প্রপূ' (হাসান হাক্সিমুর রহমান), 'পিরীসভার লালন ও নম্বন্ধন' (আহসান হাবীব), 'নম্বন্ধন সাহিত্যে নতুন ধারা' (বেগ্র স্বন্ধিরা কানান), 'নম্বন্ধনের কবি-প্রতিভা (মুর্ম্মণ এনামুল হক), 'নম্বন্ধন কার্যে বিজ্ঞান্তের স্বন্ধপ' (কবীর চৌধুরী)। 'নম্বন্ধনের কবিতা: কালের অবীরাংসিত প্রশাবলী' (ম্ব্যান্ধন ইসলাম) প্রভৃতি প্রবন্ধে নম্বন্ধন-প্রতিভা মুলারনের প্রপূ এবং তাঁর বহুনাত্রিক কবিনাদাসম্পদর্কে পুথানুপুথভাবে আনোচিত হরেছে। মানুষের প্রতি বিশ্বাস ও ভালোবাসায় নম্বন্ধন ছিলেন অকৃত্রির। তাঁর প্রবন্ধ মানবতারোই ঐতিহাপ্রীতিকে জীবন সম্পৃত্ত করেছে এবং বর্তনাদকে পরিপত করেছে পুননির্মাণের হাতিয়াসের। ''সামানাদের অনুপ্রেরণা ও মানবতারোবাসাত হিন্দু-মুসলমান সম্প্রীতি কামনা নম্বন্ধন মানব্যান্ধর উর্বোধনই কবির বিশেষ ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশ্বের ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশ্বের ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশ্বের ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশেষ ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশেষ ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশেষ ক্ষমা।' (পুর্বোন্ধ, প্লের্ডার বিশেষ ক্ষমা।' (পুর্বান্ধ, প্লের্ডার বিশেষ ক্ষমা।'

'দলকল ইসলামের ধর্ম' নামক প্রবাদ্ধ কবির ধর্ম সম্পর্কে বন্ধনিষ্ঠ সালোচনা করেছেদ ড: আহমদ পরীক। তিনি বলেন: ''দলকল ইসলামকে কোন বিশেষ ধর্মের অনুরাগী বলা চলে না।'' (পৃ: ১১৬) তাঁর ''কার্য সাধনা ছিল একাজভাবে মানবিনিষ্ঠ। দলকলের ধর্মও ছিল তাই মানবিন্ঠা। (পৃ: ১১৫) আধ্যাত্মিক বা অতীন্দ্রিয় বোধ মহৎ প্রতিভার অন্যতম লক্ষণ। দলকল-মানসে আধ্যাত্মিক বোধ বিজ্ঞাহী চেতনার সঙ্গে বৈপরীত্য স্ফান্তর পরিবর্তে সম্পূর্ণ নিবিরোধ সাবুজো বর্তমান। এই আধ্যাত্মিকতাই কবির আত্মোপনজির নিয়ামক। জনাব আবুল ফজল 'নজকলের কাব্যে আধ্যাত্মিকতা প্রবাদ্ধে এ বিষয়ে স্থাত্ম আলোচনা করেছেন।

কবিতার ভাব ও শরীর গঠনে শব্দ দির্বাচন ও এর স্থাৰ্ছ প্রয়োগ অপরিহার্ষ। নজকল ইসলাম অভ্যন্ত সাবলীলভাবে শব্দকে একটি প্রবল শ্রোভধারার প্রবাহের মত্যে ব্যবহার করেছেন। এই প্রোভের বেগে আরবী, কারসী সংস্কৃতি প্রভৃতি শব্দ সহজ্ঞভাবে মিশে গেছে। 'নজকল ইসলামের কবিতা: শব্দের অনুষদ্ধে' (সৈরদ আলী আহসাদ), 'নজকল কাব্যে শব্দ ব্যবহার: আবেগ-উদীপনার অনুষদ্ধ' (আবু হেনা মোত্তকা কামাল) এবং 'নজকল কাব্যে আরবী-কারসী শব্দ' (সৈরদ আলী আশরাক)—এই প্রবছ ভিদটি দজকল ইসলামের শব্দ প্রয়োগের শক্তি ও বৈশিষ্ট্যের আলোচনার পরিস্কৃট।

নজকলের ছল ও উপনা-অলভার প্রয়েগের বিশিষ্টতা সম্পর্কে আলোচনা করেছেন কবি আবদুল কাদির ও মোহাম্মদ আহকুজউলাহ যথাক্রমে 'নজকল ইসনামের কবিতার ছল' ও 'নজকল কাব্যে উপনা: শেষপর্বি প্রবছরে। এ বিষয়ে আলোচনা আরো পূর্ণাক্ত হওয়া উচিত ছিল।

मजनम रेगनाय जिपित याज जिपमाग उठमा करत्रक्य। किन्छ अत्र यरवारे जीत श्रेरकृतिज वास्तिरक वाक्य बरवर्ष्ट। 'लेपमागिक मञ्चल श्रेयक स्थाप व्यवक जावनून राष्ट्रे मिविरवर्ष्ट्य—''मजकरनत्र উপদ্যাসত্তেহীতে কাহিদীর গাঁচ বিদ্যাস এবং উচ্ছুল চরিত্র-চিত্রণ আমরা পাইদে সভা, কিছ তাঁর কবি-জীবদের স্বপু ও সাব, কবিভা ও সংগীতে বেমদ, এগুলোতেও ভেমদি বিশৃত হংমছে। (পু: ২৬৪)। বেম ও সৌশর্ষ-চেত্রলা নজকলের কাব্য-ভাবদার এক যুলীভুত উপাদাদ। ছোটগছেপর কেত্রে নজকল নাদস যুলতা প্রেমের বাধা-বিশুর পরিমণ্ডলে আবাভিত। জনাব আতোয়ার রহমাদের 'নজকলের ছোট-পদপ' প্রবৃত্তে এই সভাই ব্যাব্যাত হরেছে।

শিলপ সম্মত ও স্বীকৃত লজিকের অভাব থাকলেও সঙ্গীত মাধুর্য এবং কাবারসের সমৃদ্ধিতে নজক্ষের নাটকসবুহ উপভোগা। ভ: নীলিমা ইবরাহীম ও জনাব আবদুল হক 'নজক্ষণের দানিক' দামক পুটি প্রবদ্ধে নজকলের দাট্য-প্রতিভার সক্ষপ বিশ্লেষণ করেছেন।

निष-माहिएडात त्करज्ञ गळकरनत मान नित्नम উत्तर्नराक्षा । तरनत निष्ठ-िष्ट-स्नड मात्रमा अवर निष्ठ-बन्डरख् मदक ६ बाडाविक व्यविकात अरक्षरा छीत मक्कडात कात्रन। त्नित्र नीवक्षमाहित्र बाह्यूण छीत 'निष्ठ माहिएडा नक्कन' धन्य व्यादा (प्रविद्यार्ष्ट्न-प्रक्रमण्डात निष्ठ माहिएडा छीत कीनम ६ माहिएडात धन्न स्वतंत्र मरक मनावतान।

नक्षकालक किन्छिडिडा शक्कनगारभव द्वारम गर्नाबिक भनिष्कृते। 'नाःमा शारमत वया भारक भव क्षित्रादक रुद्धिकर्डा' हिरगरन नक्षकरमञ्ज जनमान ६ कृष्टिक गम्मरक जारमाहना करतरक्ष क्षान क्षान्याग-डेकीम जाश्यक ''मीडिकान मक्कम' मायक श्रमकः।

শ্বকাল-বিদ্ধ প্রাথম্ভিক নাজ্যল ইসলাবের প্রবন্ধ সাহিত্যের অসাংগ্য প্রশাধার তুলগায় শ্বন্ধবিদ্ধিত। কিছে 'আবেসসভারী প্রাণমর পৌক্ষরভারে এগুলো তাঁর কবিসভারই নিকাভাষা। 'নজক্ষনের প্রবন্ধ চেত্তনাপ্রবাহ ও শিল্পমান' প্রবন্ধে জনাব আক্রম হোসেন প্রাণমিক নাজক্ষণের মানস-পৌষ্কের সঠনপ্রকৃতি আলোচনা প্রসাদে প্রবন্ধগুলোর শিল্পমূলা পরীকে। করেছেন।

ছত্রিশ জন প্রাৰম্ভিকের ৩৭টি প্রবছের সংকালন 'নজকাল সনীকণ' গ্রাহে আমন্ত্রা নজকাল-প্রতিভাগ একটি পূর্ণাজ বিল্যেবন উপায়াপিত জেবতে পাই। সংকালনে অন্তর্ভুক্ত প্রবছসমূহে কবি-প্রতিভাগ ধনামক বুল্যারনের প্রবাস বইটির অপর বৈশিষ্ট্য। একেত্রে সম্পাদক ডঃ নোহাম্মণ মনিক্ষক্ষামান বে নিষ্ঠা নিরপেক পৃষ্টিভালীর পরিচয় প্রিছেন ভার জনো ভিনি প্রশংসার্চ ও ধনাবাদাই।

बाःनारम्पन मक्कन-ठर्ठाव त्करज 'नककम मनीकन' निःमरम्पर এकि मूनाबाम ५ छैरमबर्गाणा मःश्वाकत । बना बाहना, श्वरत्नकन त्वेठावाव मानर्जाष्ट वेष्टि खबीमनारक, बिरमघटः मक्कन-४५।य यनुत्राजीरमन कार्छ चीकुछ अवः बामकछारव श्रेठाविछ हरत वर्श यानारम विद्याम।

विक्रित श्राप्त व्यक्ति व्यक्ति विक्रित विक्र विक्रित विक्रित विक्रित विक्रित विक्रित विक्रित विक्रित विक्रित

-द्याद्यांच्या सारम्य

जिय जाजाय

वाश्मामित्म तककृषाः जात सङ्गाक्षयाव

वानक्रम मुकीछ टार्भुती

কৰি নজকল ইশনানের বাঙলা সাহিত্যে আৰিঠাৰ ছওৱার সময় খেকে লক্ষ্য করা বার একটা বিশেষ সম্প্রদায়কে লক্ষ্য করে তাঁর বন্ধবা প্রকাশিত হচ্ছিল। ''বোসনেম ভারতে'' প্রকাশিত তাঁর কবিতা 'পাত-ইল-আরব', 'কোরবানী', 'নোহররম', 'ফাতেহা-ই-দোরাজ লহম্', 'থেরাপারের তরপী', 'রপডেরী' প্রত্তি কবিতায় যে সাধারণ অনুভূতি প্রকাশ পার তা ছিল উপনহাদেশের মুসলমামণের মুক্তি-কামনার ও জাগরণের আকাঙক।। পরবর্তীকালে নজকলের দৃষ্টিতিজ বৃহত্তর পরিষপ্রলে প্রারিত হ'লেও শিকাদীকার হীনবল এবং পশ্চাপল, এবং পরাধীমতার জলো বন্ধিত সর্বহারা মুসলমামণের পাধিব উপুতির জনো তাঁর প্রচেটা তাঁর রচনায় বর্তমান ছিল। তাঁর কবিতার, তাঁর গালো, তাঁর মতিভাঘণে ও গানে নিরন্তর সে পরিচয় কুটে উঠেছে। মুসলমানের, বিশেষ ক'রে বাঙালী মুসলমানের, আশা ও ভাষা তাঁর কাবের, তাঁর সাহিত্যে সার্থকভাবে ক্ষপারিত হওয়াতে বাঙালী মুসলমান তাঁকে জাতীর কবি হিসাবে বরণ ক'রে নিয়েছে।

১৯৪৭ সালে পাকিন্তানের জন্ম হ'লেও পূর্ব পাকিন্তানের বাঙালী বুসলবাদ গজকল ইসলাবের অবলাদ বিস্মৃত হন নি এবং তিনি পশ্চিম বজে ধাকলেও (তিনি সেখানে ছিলেন কারণ ১৯৪২ গ্রীস্টাক্ত থেকে জীবিত থাকলেও তিনি বোধশক্তি হারিয়ে কেলেছিলেন।) পূর্ব বজের বুসলবাদগণ তাঁকে নিজেদেরই জাতীয় কবি ভাষতেন। সে-ভাবেই প্রতি বছর তথানীতান পূর্ব পাকিন্তানে এই জাতীর মহাকবির সম্মানার্গে পূর্ব বজরাসীরা ''নজকল-জরত্তী'' ক'বে শ্রহ্মা নিবেশন করতেন নিজুঠে চিতে। তথু তাই দায় বাঙালী নুসলবানের জাতীয় কবির স্বীকৃতি স্করপ তাঁকে পূর্ব পাকিন্তান সম্বভার পরবর্তীকালে মাসিক ভাতা পানের ব্যবহা করেন।

बना बाह्याः उपमधात पूर्व भाकिशाता नशकवित्क कत्यकवात नित्य जामात প্রচেষ্টাও ছয়েছিল किন্ত बाह्यचित्रक कात्रभ छ। मन्नव १व मि। व.डार्नी मुमनवान छात्र श्रीरभव कवित्क गिर्छाणत कार्छ भाजवात रहेहे। क'रत्र अकत १वि।

२७१२ मारम वाःनारमम चाबीम इत्राम भग्न बाःनारमभ्य मार्गविष्य कविरक कार्छ भाउत्राम क्रमान घर्छ। २२१२ मारमग्र य गरम बाःनारमम गन्नकारमम बनुरमक्ट्य खान्छ मन्नकार कविष्क होकात नांहाएक नवाल हम। ५०६ टिकाई, २८८म या अकृति विष्मा कार्यात कार्यात व्यवनीन विनाम कविष्क मिला नकाल ५५-८० विकित्हे होका विनाम बन्दर व्यवस्थ करवा।

गरबर्वमा कानटमब कमा नकाम विद्यार विद्याम बन्दव जील क्षत्र हम हम। निवाम-बन्द लबटमब लाम अवद बाम जिल्ला क्ष्या नकाम ५०० विद्याम विद्याम क्ष्या भारति न्यू प्रत्य क्ष्या । अवदम हाएक किम कूटमब बामा ७ क्ष्या। कवित्र याग्यम छन्नाटक (म-म्या निवाम) विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम व्यामिक हम जान क्ष्यकृति छेक्कि:

বৈনিক বাংলা/১০ই ছোষ্ঠ, বৃহস্পতিবার, ১৩৭৯ সাল। প্রধান সংবাধ শিরোনান: "নজক্ষন বাঙালীন্ধ স্বাধীন সন্তার ক্ষপকার":

"অবিরাষ কুলবর্দণের মাঝে কবি বাংলাদেশে পদার্পণ করবেন। বাঙলার নিপীড়িত বঞ্চিত মানুষের কণ্ঠবর 'অগ্রিবীণা'র বিদ্রোহী কবি কাজী নজক্ষণ ইসলাম গড়কাল দুখবার সকালে চাজার এসেছেন। সকাল ১১-৪০ মিনিটে বিদ্রোহী কবিকে নিরে বাংলাদেশ বিমানের একটি কোকার ক্রেণ্ডলীপ দাকা বিমান কলবে অবতরণ করে। কবিকে বহনকারী বিমানটি বিমানলারে অবতরণ করার সাপে সাপে অপোক্ষান বিশাল জনতা গণানবিলারী লোগানে মুখরিত হারে ওঠে। জনতা আবেকে নিরাপত্তা-বেইনী ভেঙে বিমানেক চারপাশ বিবে বরে। কলে কবিকে বিমানের ভেডর থেকে বাইরে আনা দুংসারা হারে পড়ে। নিরাপত্তা পুলিপ বিশ বিদিট চেটা করেও জনতাকে দুরে সরাতে পারেনি। কাজী স্বাসাচী মাইক্রোকোনে বলেন, 'কবি অভান্ত অকম্ব। আপানাকের বুলী করার জনো তবুও আমরা তাঁকে বাংলাদেশে এনেছি।' চাত্র-দেতারাও অনুরোধ জানান। এরপর বিমানের সামনের পরোজ্য লিয়ে কবিকে কোনমাত একটি এাম্বালেনে চোলা হয়। জনতা এম্বালেনের উপর অবিরাম পুদ্পর্বেণ করেন।

এবুলেনসাট কবিকে নিবে স্থাসনি থানমণ্ডিতে কবির জন্য নিনিষ্ট বাজীতে চলে আসে। সাম্ট্র-প্রবান বিচারপত্তি আৰু সাইদ চৌধুরী ও প্রধানমন্ত্রী শেব বুজিবুর বহুষান কবিকে ওবানে দেবতে থান। বুববার কবির বানমন্তি বাসভ্রবন কবির সাক্ষাৎপ্রাণীদের ত্রীড়ে পরিপূর্ণ হয়। কবি এই আপে ১৯৩৯ সালে শেববার চাকার একেছিলেন। সেবার তিনি বন্যানে স্থানীন বাানাজীয় বাসভ্রবনে উঠেছিলেন। পাকিস্তান আমলে একবারও অনুস্থানি।

বিষান্ধলয়ে দর্শনাধীদের ভেতৰ ভিলেন বাজনীতিক, সাহিত্যিক, কণ্ঠশিল্পী, ছুল-ক্ষেজ নিশ্ব-বিধানিকে ছাত্র-ছাত্রী, ছাত্র-নেতা। আর এনেছিলেন নতকল একাডেমীসত নিভিন্ন সাংস্তিক প্রতিষ্ঠানের ভক্ষণ নিল্পীরা।

কৰিকে তাঁৰ ৰাস-ভৰনে মালাভূষিত কৰতে গিৰে বাদুপতি ৰিচাৰপতি আৰুলাইদ চৌৰুৰী ৰলেন, 'আমি এগেছি সাড়ে সাত কোটি ৰাঙালী আৰ ৰাংলাদেশ সৰকাৰেৰ তাক থেকে বছান কৰিকে শুদ্ধা জানাডে। কৰি মজজনেৰ ৰাংলাদেশে আগমন একটি ঐতিহাসিক দটনা। এই ঘটনা চিৰসুৰশীৰ হবে থাকৰে।' ডিনি আছে। ৰলেন, 'আৰীনতা সংগ্ৰামকালে আমন। সক্ষানেৰ কাছ থেকে অশেৰ জনুপ্ৰেৰণা লাভ ক্ষেতি। তাঁৰ 'দুৰ্ধ্য গিছি' গান চিন্তিন মানুষ্টে

সংগ্রামের অনুপ্রেরণ। ধেষে।' বাংলাদেশ সরকার কনিকে বাসে এক ছাজার টাকা ভাতা স্কুর করেছেন। এ বোষণার পর থেকে ভা কর্ষিকরী করা হবে। প্রধানমন্ত্রী শেষ বুজিবুর রহমান ভাঁকে ধানমণ্ডী বাসভবদে দেখে জাসার পর এই সরকারী সিম্বাজ্যে কথা যোগণা করেন।"

रेपनिक नाःनात () २वे रेकार्ड,) ७१२ नान) धरे नःबाप पितारिक इतः

'तार्विश्वनान विठात्रपिक जनाव जावू नाजेष ठोयूनी विद्धादी कवि नजकरणव मुन्ध बठनावजीत श्ववाप व्याप्त जानाव जानाव जावू नाजेष श्वना का निर्माण का न

शक्त-शक्तिमात्र कवि-ज्ञान मृज्यात्रमः

वना एय:

জীবিত কৰিকে শৰ্মন নিয়ে সাধীন বাংলাদেশে যে প্ৰথম 'নজকল-জন্মন্তী' উদ্যাপিত হয় সে সময়-কাম অনুভূতি ধরা পড়েছে নাকার দৈনিক পত্রিকাগুলিতে। এবানে পত্রিকাগুলিতে প্রকাশিত কয়েকটি সম্পাদকীয়ের সাংশিক উদ্বৃত্তি দেওয়া হ'ল। ১৯৭২-এর ১১ই জোর্ছেব ''দৈনিক বাংলার'' সম্পাদকীয় 'নজকলের প্রেরণাৰ সাথে'। এই সম্পাদকীয়তে

"ৰাংলার মানির পলির রসে, বাংলার সান্ধার রক্তের হরকে উৎকীর্ণ তাঁর নাম। তিলে তিলে নিজেকে উলাড় করে তিনি ভালবেসেছেন এ দেশের মানিকে। মানুষের দুংথের, ব্যাপার, সংগ্রাবের এত বড় শরীক হতে পেরেছেন বৃধ কম কবি এবং শিবপী। বাংলাদেশের মানুষ এবং প্রকৃতির সক্ষে অড়িয়ে আছে তাঁর কৈশোর আর গৌষনের স্মৃতি। তাঁর বছ শ্রেষ্ঠ কবিভার জন্য এবানে। এ মানির সংগো সংযোগ তাঁর নাড়ীর। আনাদের স্বচেরে বড় সান্ধনা, তাঁর কবিভার, অগ্রিবীশার, গানের লিও সরোবরে নেঁচে আছেন তিনি। তাঁর এ আলোর পথ বরেই যাত্রা করছি আবরা। তিনি আছেন আমাদের সংগো। চিরকান পাকবেন।---"

"दिनिक हैएडकांदक" त्र मुन्यानकी ग्राट्ड बना इस :

''বসা বাছলা, কবি নজকালের নামের পুরোডাণে সংযোজিত 'বিদ্রোষ্টী' বিশেষণ বেষন তাঁছার সামগ্রিক ক্টীডির পরিচয় বছন করে না. একটা বিশেষ কর্টি বা রূপকেই ভাষর করিয়া ভুলে,—ভেমনি তাঁছার বিশ্লোছ কোন বাজিবিশেষ, শ্রেণীবিশেষ বা সম্বক্ষার বিশেষের বিশ্লুছে ছিল দা। জীহার বিশ্লোছ ছিল অসতা, অনাায় ও নিপীড়নের বিশ্লুছে। বে কবির জীবন ও বৌষনের জরব্দনি দুংসহ প্রহর অভিক্রমের অনাত্র প্রধান প্রেরণা ছিল এবং বাছা আধারী বিশেষ ক্রমার পর্যের বালার্যাইবে, সেই কবি আছা আনালের সধ্যে থাকিয়াও নাই।''

"रिमानिक गःबारम'त 'समागड रा बिराहारी कवि' नीर्धक गण्मामकीयराउ बना रव :

''পৃথিবাদ্ধ জ্যোৎসুদ্ধ ভাগা ভোৱালের সভো আবর। আনশিত। বিজ্ঞানী কবি কাজী সক্ষণ ইসলাবকে পেরেছি আবাদের সধ্যে । - - আজ আবর। ধনা। মাজ আবর। বাংলাদেশের সাড়ে সাড়ে কোটি সানুষ ফ্লবের সমন্ত ভালবাসা উজাড় করে দেলে বনের সম্ভ জবিরে রাখী কর্মা কবিকে পোনাতে বাহা। - - সামোর নাবে, সভিকোর স্বাধীন গ্রার নাবে আবর। সভিকোর বোনার বাংলা পড়ার পাপর নিজিছ। বাঁস কবিজ্ঞ গাঙ পঁচিশ বছলে বারবার আবাদের এই পপর্বকে নালিত কবেছে, তাঁকে একেরারে সামনে পেরেছি। কবির কবিজা আর গানের অগ্রিবীপাতেই তাঁকে আবরা বর্প করে নিয়েছি।''

''देनिक अनकर्ण्ठ''त मन्नामकीय—'सूध विस्वित्रारम्य मानिवा'ः

'দাঁত থাকতে দাঁতের নর্যাদ। যে আমর। বুঝি না, গুজ নভক্ষল তার আজ্বলা প্রমাণ হিসাবেই আমানের মাঝে উপন্থিত। অভাব, অন্টান, লাখনা, উপোক্ষার মাঝেও যথন তিনি বাঁপের বাঁপেরী ও রণত্র্য বাজিরেছেন, তর্বনও তাঁকে শোধন করা ছরেছে অতি নির্মভাবেই। চৈতনা সেদিন আমানের আসেনি বলেই আমর। বুঝাতে পারিনি, কি অনুনা রয় আমর। চারাতে চলেছি। --- তবুও জিমি আছেন তবু মেহে নর, আপন স্টের নধ্যে এবং সেই স্টের নাধানেই চির্দিন বেঁচে পাক্রেন। কার্মণ, বহাকাল সর বাহ্যিক স্টেকে গ্রাস করনেও অন্তবের স্টের কাছে সে পরাভূত। সম্প্র মানক্র্যাতির লয় না হওয়া পর্যন্ত এই স্টে অবিনশুর গাক্রেই। তাই, তেমনি অবিনশুর এক স্টের অধীপুরকে আজ আর্রা অন্তবের অন্তব্য বর্ধকে স্পুজ অভিনশন জানাই।—ক্রয়ত্ব নজক্রন ব্যে '

Morning News-4व शामकीव :

A prodigal son of nature—he gave with both hands... ... It is natural that the rebel poet should be close to the hearts of the people of Bangladesh Some of our dreams have yet to be realised. Nazrul Islam, who stood for the down-trodden and oppressed, has a message for us as we move forward.

'रियानिक পूर्वराया'त 'कृत्सन खनगात्र सीवन एकन कवि ?' नेर्विक मण्यापकीय :

"নজকন সম্পর্কে বছ জানী গুণী ব্যক্তি বছ ক্ষণনের মন্তব্য করেছেন। কিছ সন কিছু বাদ শিবে নজকন সম্পর্কে যে সভা সধার মুখ দিবে বেবিয়েছে, তা ছলো নজকন মানবভার কনি। লাজিত বানবভার আবের জনা ভিনি প্রভাক্ত সংগ্রাবে জনতীর্ণ ছয়েছিলেন। - - প্রকৃতপক্ষে কনি বিজ্ঞান করেছিলেন জনার, অবিচার, অনাচায়ের বিজ্ঞান। তাঁর লেখনীর কপাবাতের বারা তিনি ভবু শাসক-শোকবণাজীকেই জাগান্তে চান নি, সাথে সাথে জনস্পক্ষেও জাগান্তে চেয়েছেন। - - জাপোর চারচ মুখে দিবে ভিনি প্রিবীতে জাসেননি। জীবনে বছ মুখেকট ভিনি প্রেক্তেন। ভাট সর্ক-জাবার বাবা তাঁর ক্ষিত্রক মধ্যে মূর্ত্ত হবে উঠেছে।"

The People-अस Homage to Nazrul नीर्व क मन्नावकीत :

Nazrul sang of man, of man groaning in tyranny and oppression. The profound vigour and vitality of his forceful poetry and charming songs inspired the enchained people to rise against the Britishers and the historic liberation movement which led to the emergence of Bangladesh owed much to the spirit of freedom pervading his poetic creations. Endowed as he was with creative vision, he dreamt of a society based on equality and free from exploitation, tyranny and oppression. Nazrul can inspire us now as much in building an ideal society as he did during the liberation movement.

.....The message of Truth and Beauty Nazrul's poetry and songs convey will continue to captivate and vitalise the present as well the future generations.

''नाःनात नानी''त 'बाहात आहीग नखकन' नीर्षक नन्नावकीतः

'নানুষের কৰি নজকল, বিপুসানহতার কবি নজকল তাই দেশের হয়েও বিশুক্ষনীম আবেদনে বরা দিয়েছেন। 'ঘাট ফর ঘাটল সেক' এর মহান পূজারীর চেয়ে তিনিই একরাত্র প্রতিতা বিনি নাজির গোকির ভাষায়, 'আট ফর মেন্য সেক্'—এর চূড়াত্ত বৃষ্টাত্ত রাপন করতে চেরেছিলেন। ----বাংলা ও বাঙালীর জন্য নিবেলিতপ্রাণ নজকল তাই আবহুমান রূপনী বাংপার প্রাণের প্রিরতম কবি, ক্বহেলিত মানবাছার পূর্জয় নিনাদ। সাহিত্যের সাধনা করে কারাগার বরণের ইতিহাসে বাংলা সাহিত্যে তিনি জননা। --- সভ্যাভাষাণ এমন নিতীকতার আর তুলনা হয় না। --- আমরা বলব বাংলার প্রত্যেকটি মানুষের প্রাণের মন্দিরে যে নজকল আসন পেরেছে, তার কোন কর নেই--- বাংলার আবহুমান সংস্কৃতি আর নজকল অবিক্রিয়ু সন্তা। নজকল চিম্নকানের। জন্তু নজকল।''

১১ই জোঙে মহাসমারোহে চাকায় বিদ্রোহী কৰিব জনাদিবস পালিত হয়। পরের দিন পত্রিকা সমূহে সেই উদীপনাময় জন্ম-জয়ন্ত্রীর সংবাদ যে-ভাবে প্রকাশিত হয় তার করেকটি উদ্ভিতঃ

''विस्तारी कवि नक्कन गकन भाषा निर्वाजन ও व्यविठात्त्र विक्रम पूर्व शिज्याम" निर्वानीत्व 'देरङकाक' लिथन :

''স্থানি কৰিব মহাশালান'—এই দৃদ্ধ প্ৰভাৱ লইয়া গতকাল (বৃহশান্তিবার) চাকাস্থ বিশ্বন্ধ স্থানীন বাংলাদেশের সূর্ব্ধ 'অগ্নিবীণার' চিরবিজােছী কৰি কালী নজকল ইসলাবের ৭০তন জন্মবানিকী উন্যাপিত হয়। বিজ্ঞােছী কৰিব অপু পােষণমুক্ত বাংলাদেশের মুক্ত পরিবেশে ওাঁছার ৭০তন জন্মবানিকী উন্যাপনেল লকল কর্মসূচীতে রামেটুর কর্ণধারস্থ কৰি, সাহিত্যিক, শিল্পী, বৃদ্ধিনীনী, শিশানিক, ছাত্রে, রাজনৈতিক নেতা ও কর্মী ছাছাও মুক্তচিছে সর্বশ্রেণীর নাগনিক এইবারই প্রথম বাংলাদেশে কবিব জন্মাৎসবে জাতীর বর্ণালার সহিত্ত জংশগ্রহণ করেন। এই উপলক্ষে নাকার জারোক্তি বিভিন্ন অনুষ্ঠানে বৌবনের কবি, জীবনের কবি, এবং সর্বোপারি মানুবের কবি কালী নজকন

रेगनाद्या गाहिजा-कर्दम नूजन नूनामित्य श्रिष्ठ **अक्ष** बार्सान क्यान मागाद कवित्र श्रिष्ठ व्यक्ष्ये भुष्ठा निरम्बन क्या रह।"

'करबक्षि पूर्वेख यूर्ड 'निर्द्यानारव "गःवान" वरनन :

'পতকান (বৃহস্পতিধার) সকালে কৰিব বর্তমান বাসভবন ধান্মতীর আটাল নবর বোডের বাড়ীটি বাংলার চারণ-কবি নজকলের জন্মতিথি উপলক্ষে একটি পুণাতীর্থে পরিপত হরেছিল। সমবেত দল্মার্থীয়া নির্বাক কবির কতকগুলো দুর্লন্ড মুহূর্তের সান্মিধা লাভ করেন। বাকহারা কবি সমানত শিল্পীদের পান তনে একসময় হেসে ওঠেন আবার কাঁবেন, আলম করে শিল্পীদের পিঠে হাভ শুলিয়ে সেন।...

मूर्णातत फिट्क बिटीय वर्षाराव व्यम्बारित वर्षण भक्कण औरित व्यम्बान उन्हिर्ण एकन 'कुर्णव क्रिना क्रिक्त क्रिक्

बागरनंत्र डेक्डि जिस्स Morning News/Over 50,000 visit Nazrul' निस्तानि जिस्स नरमन :

Over fifty thousand visitors men, women and Childern of all ages defied inclement weather yesterday, greeted the rebel poet Kazi Nazrul Islam at his Dhanmondi Residence on the occassion of the poet's 74th birthday,

2

महिट्या छैत जनत जनमारमंत्र बीकृष्टि चक्रण ১৯৭৪ श्रीमितिस्म ५६ छित्रमत हाका विश्व-विद्यासित कवित्व मचानमूहक छक्रेरबर्गे छिश्री श्रमान छैपनरक এक मित्रम ममाबर्छन छैपमरम जारबाजन कर्रबन। कवित्क छिपाबिरछ छृषिष्ठ करब—১৯৭৪ श्रीमोत्रास्मत ১७६ श्रीक मिछिरको विद्यविद्यास्त এकारछिक्क काछिरिमरम व्यथित श्रीमित्र अद्य करबन निर्माणिक श्रीमारम ।

Extract of the Minutes of the Syndicate held on the 13th April, 1974. Conferment of degree of Honoris Causa on some distinguished persons: With reference to the recommendation of the Academic Council (23.3.74) RESOLVED: That the Degree of Honoris Causa be conferred on the following persons has noted against each:

- I. Professor Setyendranath Bose (D. Sc)
- II. Dr. Muhammad Shahidullah (D. Litt)
- III. Kazi Nazrul Islam (D. Litt)*

- IV. Ustad Ali Akber Khan (D. Litt)
- V. Hirendra Lai Dey (D. Sc)
- VI. Muhammad Qudrat-Khudai (D. Sc)
- VII. Dr. Kazi Motahar Hussain (D. Sc)
- VIII. Prof. Abul Fazal (D. Litt)

Sd/-Registrar

এक मण्डामभरत नित्राक्त ভाষার ভাষা कवित्र कहित बुलायिन करत्रम:

''দেশকানের জরা-শোক-মবক্ষর-সম্কারকে নীলকণ্ঠের মত ধারণ করে প্রজ্জনন্ত আকাংকার, আনক্ষের, সংগ্রামের আনোকিত চেতনাকে নাঁরা বিশ্বলোকে পৌছে দিতে সক্ষর, তাঁরাই মহাম। তেম্বি এক মহাম প্রতিতা আপনি, কাজী নজকুল ইসলাম।

গ্রিটিশ সাম্রাজ্যবাদী শাসন ও শোষণ নিয়ন্তিত বাংলার অসম্পূর্ণ পুনর্জাগরণে আছুত সকল বাঙালী মধাবিত প্রেণী যথন নষ্টবপ্রে মঞ্চমাদ, তাদের চেতনায়্যেত যথন অন্ধরণর বৃত্তে আবভিত, বাংলা সাহিত্যে তথন আপনার আবিভাব প্রমিধিউদেশ মত।

बाजनात बड़ाब्हुन वानिर्द्धात नात्मा गाहिएडात धार्प छ महीरत मक्षत्र करत्रिन निश्न डाक्स्पात

আপনি কৰি; এবং আপনার কবিপ্রহিতার প্রাণশক্তি বাঙালী জীবনের বৃহত্তর ঐতিহ্যিক ঐক্যে ছিল প্রতিষ্ঠিত। সে-কারণেই আপনার স্টি নিপীড়িত জন-মানুষের আকাংক্ষার, সন্তাবনার, প্রতিবাদের, বিদ্যোহের ব্যক্তিক্রমী উচ্চারণ। আপনার সাহিত্যকর্ম সতাস্থ্যকর আরু মানবতার উচ্চক-ঠ লিকপর্যাপ। আপনি ছিলেন আপোষহীন সতাস্থ কবি। ব্রিটিশের রাজরোম, কারাগার আপনাকে ক্রমী করেতে, ক্রিন্ত অকুতোভয় আপনি ছিগুণ আনলে প্রজ্বুলিত হরেছেন সতোর অপকে। আপনি সর্বহারার সামাবাদী কবি, কল্যাণ আর প্রেম-সাধনার কবি। তাই আজ পর্যন্ত আপনি ক্রমগ্রধার ক্রমি, এবং আপনিই সমকার ও শির্মীতির সাথে ষ্টিয়েছেন বিস্বাধ্বন একান্ত সমন্ত্র।

(क्थनबाज जीवरगत बहितक ग्रःनार्थ नता, जसतक जिस्हर जानिश जिर्जन यगान्धनितिक। बानुरवत्र बार्च, जावनिक्षित बाद्यनाजिक्छात छेदू क शरा कविछात, धवरक, गर्मीर्ड बार्थिन एकंथ ग्राजरक बामक्छात छेनात जाकर्र धानिङ इउतात जाकान जामिरत्राङ्ग। बाढानी जाङिक गान्धनितिक ग्रन्थि जाथगात राथगी जिन ग्रमाग्डकं, श्रष्टिभीन खेकाबक आवनकित উष्वाबरम नित्रत्य।

বাংলা সাহিত্যের ইতিহাসে আপনিই একমাত্র কৰিস্প্রতিতা বিদি ঐতিহ্য স্থানে এবং নির্বাণে ছিলেন স্বজ্বল, নির্বাণ। ছিলু ও মুসনমাদ, জাতিক ও আন্তর্জাতিক উত্তর ঐতিহ্যকেই আপদি আপদার সারস্ত্রশাসিত চেত্রনার শক্ষরণে ব্যক্ষার করেছেন। আপদার জীবন সম্পৃত্ত ঐতিহ্যকোর, ধর্মকথার সীমীবদ্ধতা থেকে ঐতিহাকে মুক্তি দিয়েছে। আপদি বাঙালী ঐতিহ্যের পুন্দির্বাত্য, দ্বভাষাকার।

जानिम फिरमम नरमम श्वभित्र वावशायम विमायम मामनिम्मी। श्रेष्ट्र धवः जिल्लाड नम्मन्थिति मीमानारक जानिम श्वमित्र क्याहम सोविक नक्य-मञ्जारमम धमानेम, क्याना मा विद्यनी खाराब गीमानाव। चानमाव कविष-शिष्ठ्यांच श्रेषण चारवरण विश्वित-छेश्याद नेवानमी बार्डमीय सरबर्द्ध पृथ्लिख।

गर्नीछ वर्षण्ड वांगमिय वर्षाम व्यूवनीय, विक्रियनी छ यज्य। यांगमय एमायरवांग्य मधीछ गर्नवांग्य वांगमिय क्यर छ्योनिछ, छराबिछ। वांगमि स्वयम विभूत मःबाद नार्रात वर्षाक्षी मन, यर्ष्य मुक्ती पंकरिष्ठ वांगमि मकीछ वर्षाख्य मङ्ग भव-भिर्द्रभव। वांगछ वांगमि यांगा-रात्म विक्रियन्ती मकीएड वर्षाख्य विक्रियन्ती मधीएड वर्षाख्य विक्रियन्ती मधीएड वर्षाख्य विक्रियन्ती मधिक वर्षायां।

আনালের পূর্তান্য, নীর্ষ বজিপ বছর অপনি শুদ্ধ। আপনার সাহসী অভিযাত্তী-নানসের সৃষ্টি উপুর্ব বেকে আনরা বঞ্চিত। আপনার পূ'বপকের স্ক্রীসভারের বৈচিত্রা, বৈশিষ্টা এবং অভিনক্তর উত্তরাধিকারের সৌভাগো চিরকৃত্ত বাঙালী জাতি নিরত প্রার্থনা করে যে, আপনি আখার স্কৃত্ত হবে উঠুন। আজ আপনাকে সম্বান জাগাধার স্থবোর্গ পেয়ে আনর। নিজেদের ধনা মনে কর্মছি।"

S

মঞ্জল প্রথমত অতিবি ছিলাবে এলেও বাংলাদেশের মানুষ তাঁকে মাপনজন ছিলাবে নিজেলের মধ্যে দেবতে চেছেছিলেন। ভারত সরকার এ-নেশের মানুদের মনোভাব বুবো তাঁকে কিরিয়ে নেওবার তেমন কোন চেটা করেননি। বাংলাদেশে থাকাকালীন কনির স্বাস্থাও প্রথম দিকে উপুতি লাভ করে। তাঁর স্বাস্থ্যের জন্য স্থাচিকিৎসার ব্যবস্থা করা হয় এবং একটা চিকিৎসক কনিটির তত্ত্বাধবানে তাঁকে, রাবা হয়। এ-ক্ষরতার বাংলাদেশের মানুষ মাপা করে যে কবি তাঁকের দেশের নাগরিকত্ব পাবেন এবং জীবনের পেব দিন পর্যন্ত বাংলাদেশ সম্বন্ধর তাঁকে ১৯৭৬ খ্রীস্টাকের জানুরারী মানে বাংলাদেশের নাগরিকত্ব দান করেন।

১৯९७ दे: त्विनीय अकूष्म रक्ष्यायी नदीन निवन डिलनएक मत्रकांत्र मार्टीक आडीव शृतकांत्र अकूष्म भारक जुविड क्रायम यद्याम अदे कविरक।

১৯१७ मारमस २८१न त्य बारमारमन त्यनावास्त्री कविरक बारमारमन त्यनावितीत "वाधि-तक्रमी" स्थान त्यना १८१६ त्यारमेस बायम-अस बद्यान विरव Bangladesh Times-এ वेबसी अदेशारम समाजित स्व:

Major General Ziaur Rahman Chief of Army Staff and Deputy Chief Martial Law Administrator visited the rebel poet Kazi Nazrul Islam at the P. G. Hospital on Tuesday and presented him the Crest of Bangladesh Army.

कथिएक किकिश्नकरम्य विस्ति छञ्चावद्यास्य कना कथिएक देखिन्द्रशा छै। वास्तिकीन गृष्ट (पर्टक काना भि. कि. बानाधिक कथा वय। ১৯৭৫ नाम (पर्टक कथि भि. कि. बानाधिक वया वया अवद्यास क्यक्टियम। बानाधिक व्यापास भव (पर्टक कथिय व्यापा वीट्स वीट्स भविविष्टि प्र'टि पर्टिश कथिय व्यापा वीट्स वर्षका व्यक्तिम। छीन भारत विष्टु क्यू भारत क्यक्तिम।

क्षीया नहीं। ३७४८

मधकम जकारहरी भजिका । २०५

১৯१७-अत्र जागरण्डे अरग कवित्र चारणात्र जात्रक जनगण्डि बढ़े अवर जागरण्डेत २**० छात्रियो द्**राम ১०छ। ১० विनिष्टि कवि अध्यक्तान करवन। शिक्षकात्र गःवात्र वनुवाती कवित्र वाहाः व्यक्तिका कानरे वाव्यिन। एक्स्थान (२९८न जानग्रे >३५%) निर्देशन हान्हीन निर्देश कीय नीर्देश माणानह खुब चारम। भमिनाब (२৮८म चार्नम्ड) मकाम ১১हाब भन खुब बाहरू छन करव*े खुब ५*०० क्थि वर्ष ७८५। छाज्य छीटक त्यत्यं बरजय, कवि ग्रह्मा विद्यानियात पावनक करताह्य। जेवव দেয়া হয়। রাতে তাঁকে শূব ও পাউকটি থেতে থেয়া হয়। রোকনার (২১পে আপদী) সভাজে **ब्रुव बार्त्वा बार्र्फ। এकमं माँठ छित्रीविद (बनी। कवि बश्चिक्छार्ट्य क्क्रबेर्ट्टार्ट्य कार्ट्य रबर्ट्या** व्योरक्षन। कवित्व छवन विकासन भिन्ना एक। कवित्र कुनकुत्र वित्य क्या क्यान कना नाक्यान দেয়া শ্বন্ধ হয়। বিগত বছৰের ২২শে শুলাই গঠিত যেডিক্যাল বোর্ড ও কৰিব ব্যক্তিগত চিকিৎসক श्रीकात माजिनुत्योगा छोत्री पाराम गर्माम ৮-२०७। गर्माम स्मीर्प कीव निग्हान मानपुनादान कवित्र ষুখে চার চারচ পানি তুলে দেন। এরপর কবি আর কিছু খাননি। সোরা ৯টার বোর্ড কবির খাখা আবার পরীক। করেন। জুর করাবার শেষ চেষ্টা হিসাবে তাঁর পরীয় একবার শান্ত করা एत। এর আনে কবিকে জীবনরক্ষাকারী ঔষধও দেরা হরেছিল। কিন্তু কবির অবস্থা শুড-गेलिएल पार्त्रा बीबार्ग वएल बार्ट्स । जनम कार्के जकरमन पदालिक छएलकाम । किकिरजक्सा कवित्र जाना एएएए रमम-- यास्त्रित युष्ट्रार्डन जरभका कन्नराड बारकन डीमा। मनोमेन मिरक कवि चारता निरक्षक हरत भरछन। এकमबत द्यामान अवाधिमछ्याह जूँरेवा छिटिय बरमम, 'कविन भाग-र्थांग वह हरा (१८६।' छोड़ावना त्यवातन वड भन्नीका करन त्यावना करन : कवि बान बीविड (महै। जर्मन नमन पर्ना पर्न निनिते। (भीकार्क करण्ठ नमारे केकान्य करनन: 'हेन्नानिकारह खना हेमा हेनाहरह बारक्टम।

রেডিও, টেলিভিণনের নির্মিত প্রচার বছরেবে কবির বৃত্যু সংবাদ বোষণা করা হ'তে থাকে। অপ্রভ্যালিত এই সংবাদে সারা নগরী পোকাভিত্ত হরে দিশেরারা হরে পঞ্জো। আবালবৃদ্ধবিত অপুণডেলা চোঝে তীড় অবাতে ওরু করলো পি. জি. হাসপাতালের আঙিনার ও কবির অতিব দিনগুলোর আপুর পোস্ট প্রান্ধুরেট হাসপাতালের ১১৭নং কেবিনের সারনে। বাত্র পনর বিনিটের বব্যে হাসপাতালে ছুটে এলেন প্রাক্তম প্রেসিডেণ্ট বিচারপতি আবু সাবাত হোহাত্রণ নারেব, এলেন বেকর জেলারেল জিরাত্তর রহরান, রিরার এডবিরাল এব, এইচ, বান, উপলেটা পরিষদের সমস্যবৃদ্ধ, বাজনৈতিক নেতৃবৃদ্ধ, কবি, শিল্পী, সাহিত্যিক, শিক্ষবিদ, ছাত্র, সাংবাদিক, দিনবলুর, রিক্সাওরালা তথা সর্বজ্জের বানুষ—আপারর জনসাবারণ। বর্ণপাতীত সেই উবেল জনসমুক্রের উচ্ছাস প্রবাধ করলো, এবেশের বানুরের ছবরে কবির জন্য কী বিপুর প্রভার আসন পাতা বরেছে। জনতার হাতে ভুল, গোবাল, আগরবাত্তি—আর চোধভর। অপুন-আপন্তান হাতে ভুল, গোবাল, আগরবাত্তি—আর চোধভর। অপুন-আপন্তান হাতার বির্বাস।

य, विकासन

भि. जि. शामभाजारम क्यिम मार्थ अक्यहरमम यथुम माश्कर्यम म्यृज्जितार्थ जरमक विकिथमक छ क्रिजीय क्रिये जन्ममिक श्रम छर्ड। क्यिम जायाम भिरे क्यिमिक, रायीरम क्यि अक स्ट्रा,

२५० | नवकन जकारखरी नविका

र्क मही अने महिला

बाक बाक बाक करना किरानिया किरानिया किरानिया किरानिया किरानिया के किरानिया के किरानिया किरानि

नि. कि. हामनाजारमय में होर्ड रेम्यन मामिय कामी बरमम, 'कामि स्वित्म कामाय मार्थ मार्थ कि कीमराजम। कामि जय रनाजम। कि स्वय कीमराजम-कामि जा बु बाजाम मा। कामि स्वाम कीमर्थ देगावी मा। कामि स्वाम कीमर्थ देगावी मा। कामि कि कर्यना सामी हिमारम रामिकित (मर्थिक मास्वर मामिक हिमारम। कीम कि बिजा, नीम, जिल्ला कामारमय मामिक कामानिक कर्यना कि कि कि कामिक कामारम कामाया कामारम कामाया कामारम कामाया कामारम निर्माण कामारम कामाया कामारम निर्माण कामारम निर्माण कामाया कामारम निर्माण कामाया कामारम निर्माण कामाया कामारम निर्माण निर्माण कामाया कामा

कवित्र गांधी छ छ्छा किर्मात्र गांध बरनन, 'बारत। बछत बरारन कवि निविद्यार असन कवित्र व्याक्षंद्रविष्ट व्याप्त अर्थ निविद्यार अपने व्याप्त व्याप

কৰিব কেবিদেয় প্ৰবিধে নিৰ্ক স্টাক নাৰ্স বিস্কিস বেগৰ ধৰ্ণেন, 'আৰি আৰাৰ সক্ষৰী ও জুনিয়ন্ত্ৰ। কৰিকে পাপু বলে ভাকভাৰ। পাপু আৰাপেৰ চিনতে পাৰতেন। আৰবা তাঁকে বাওৱাভাৰও। তাঁৰ প্ৰবেশ কাপড় কালিয়ে দিভাৰ। বিছানা পৰিপাটি ক্যভাৰ। গাপু আৰাপেয় আপনজন্মে ৰজ্ঞে ভালবান্তভৰ। আৰম্ভ আৰাকেয় ছুটিয় দিনেও তাঁর পৰিচৰ্য। ক্ষভাৰ। কৰিও আৰাকেয় সক্ষ পঞ্জ ক্যতেন।

कवि चडाछ मडीर्षकाडम हिरमन। चाराराम मण गर्यन डांस शहण मा शरहा छ्यम छिमि विद्याछ वाथ कवरछम। এक्षिन चामि এक मधास कथा नमास कवि चूलि शरम चारास शिठ छाशरह निरहिस्सम।

किन्छन्तम क्रिक्नि मूक्ति महामान महामान महामान क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षित्र क्षित्र महामान क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र महामान क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र महामान क्षेत्र क

भूरिको स्मात्व मीको सामग्रे त्यान कवित्र समा निर्म बारोशकार्ग श्रामात छवावित्रकार् पृष्टित्रक मार्च देवनिक बारमात श्रीकिरक्टकर मानाम वय मि. बि. बाग्माकारम्। छिति बरमम, माना বাংলাদেশের মানুষ ছিলেন কৰির অজন। আবদ জীবন বনা আবি কৰিকে লেবা ক্রছে। পেরেছি।' তিনি দু:ব করে বলেন, 'কবি এতদিন হাসপাতালে ছিলেন, কিছ তাঁব কোন আবীর তাঁকে দেবতে আনেননি। পিতাকে দেবা করে বেষদ আবদ পার সন্তান, তেরদি প্রির কবিকে সন্তানের বত্যে সেবা দিতে আপ্রাণ চেটা করেছি স্বাই।'

8

SHE-STOTE

গৰাই যাতে কৰিকে শেষ দেখা দেখতে পায় তান্ত জন্য লোকা এপানোটায় তাঁৰ বৰণেছ ছাসপাতান খেকে বেন কৰে এনে নাখা হন আউটভোৱেৰ গোতনাৰ হলৰবেৰ উটু বছে। কিন্ত কিছুক্ষণেৰ মধ্যে এখানেও উড়েন চাপ বোকাবেলা কৰা অসম্ভব হয়ে পড়ে। লোবানের খোলৰু আন আনন-বাজিন গছেন পৰিত্র পনিবেশে তাঁৰ নপুৰ গেছেন পাশে চলছিল পৰিত্র কোৱান পাঠ। পুলিপ জনতাকে লাইন করাতে গিরে হিনসিন খাজিল। অবশেষে অন্তরীন লোকের বিছিল করেই দুর্বার হয়ে ওঠে। দুঃসাধ্য হয় শুংখনার ব্যবস্থানা। কবিন শবদেহ তবন বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্র-শিক্ষক কেন্দ্রের পোলা চন্বরে নিবে বার্থার সিদ্ধান্ত নেরা হয়। ইতিনধো অন্যাপক আবুল কজলকে সাথে নিবে প্রেসিডেণ্ট সামের নিজে বিশ্ববিদ্যালয় নসজিল এলাকার গিরে বিজ্ঞাহী কবির কবরের স্থান নির্বাচন করেন।

বেলা আড়াইটার দিকে কবির লাশবাহী ট্রাফ টি, এস, সিব পথে রওরানা হর। জনসমুদ্রের নিছিল ঠেলে এই সারাদা পথ অভিক্রম করতে সকর লাগে পুরো আববণ্টা। পথের শুপাপে অশুসনিক্র চোথে উম্বেলিভ জনতার মুথে ছিল কলেনা শাহাদাত।

কৰিব প্ৰতি শেষ শুদ্ধা নিবেদনের জন্য দলে দলে জনপ্ৰবাহ তেঙে পড়তে থাকে ছাক্ত-শিক্ষ কেন্দ্ৰ । কৰিব বর্ষদেহ নিয়ে সেথানে পৌড়ানোর আপেই সেথানে স্টেছর বিরাট ভীড়। কুলের ভোড়া, বালা কিংবা কুল নিবেদন করে ভারা শুদ্ধা জানার কৰিব প্রতি। ক্রমণ: সেথানেও ভীড়পু নিবাহ হবে ওঠে। বিকেল সাড়ে চারটার বিরাট শোক-বিছিল লাশ নিরে রওনা হর সোহ্রাওরাদী উপ্যানের দিকে। নাথে। বানুবের চল নাবে সারা উদ্যান কুছে। বিকেল পাঁচটার সর্বভরের বানুবের সেই ব্যাবেশার অনুষ্ঠিত হয় কবির নাবাজে জানাজা। লকাবিক লোকের স্বাবেশে ও জানাজা সাম্প্রতিক্ষাণের বৃহত্তব নাবাজে জানাজা।

প্রেসিডেন সামেন, সেনাবাহিনী প্রধান ও উপ-প্রধান সামন্ত্রিক আইন প্রশাসক নেজর জেনারেন জিয়াউর রহমান, নৌবাহিনী প্রধান ও উপ-প্রধান সামন্ত্রিক আইন প্রশাসক বিভান একনিবার এইচ. খান, বিবান বাহিনীর সহকারী স্টাক্ত প্রধান এবার ভাইন বার্ণান এ. জি. নাহবুন, উপনেটা পরিবদের স্থানাবৃদ্ধ, জন্যানা উচ্চপদম্ব নার্বিক ও বেসামন্ত্রিক কর্মকর্ত্তাবৃদ্ধ; রাজনৈতিক নেজুকুল ও বিপুল সংখ্যাক কবি সাহিত্যিক শিক্তী জানাজার উপন্তিত ছিলেন। খাংলাকেশে নিবুক্ত পাকিতানী রাষ্ট্রণ্ড জনাব বোহাত্মক খুর্নীতিও জানাজার অংশ দেন। খাং মুর্নীতির কেশের ভূট্নীতিবৃদ্ধ উপন্তিত ছিলেন উক্ত জানাজার।

जानांका त्यंत्र मान वाकरनम जना जाना यह नियुनिकानम मनकिन श्राजत्व विदेशिक जारम । क्षित्र जनमान वाकरनम करवर्षन मनकिन श्राजन विदेशिक जीवन विदेशिक विदेशिक वाक्ष्म निर्माण मार्थिक मनकिन मार्थिक वाक्ष्म निर्माण मार्थिक विदेशिक वाक्ष्म निर्माण वाक्ष्म निर्माण मार्थिक व्यवस्थित वाक्ष्म वाक् वाक्ष्म वाक्ष

আসংৰত্ত নামাজের পত্ন কৰিছ সহলেহ পূর্ণ হাত্রীয় স্বাগায় স্বাহিত করা হয়। নাশ ক্ষরে নামানার আসে কিছুক্ষণ অপেক্ষা করা হয় কবিপুত্র কান্ত্রী স্বাসাচীয় আসমল প্রত্যাপার। কিছ ভার আসতে বিনয় ঘটে।

জুনিরর টাইগার নাবে পরিচিত সেকেও বেজন রেজিনেণ্ট বিউগলে পের বিধারের ক্ষণ বুর্ত্বনা ভোলে। একুশ বাম ভোপথবনির সাথে সাথে বাংলার এই মহান ক্ষরির মপুর দেয় ক্ষরে নারাক্ষে হর। ক্ষিকে স্বাহিত ক্যার সময় পাকিতান ও আক্রানিভানের রাষ্ট্রবৃত্তরে উপস্থিত ছিলেন।

đ

त्नाक्नाव

कि काकी मक्कि देग्वादिन महाद्यार वार्यादार वार्यादार द्याक्षण द्याक्षण द्याक्षण मान्य वार्यादा माद्याव वार्यादा वार्यादा वार्यादा वार्याद्या वार्या वार्याद्या वार्याव वार्याद्या वार्याव वार्याव वार्याव वार्याव वार्याव वार्याव वार्

रामावादिनीय ग्रीक्शवाम ७ हैन-श्वाम मायक्रिक कारेन बनागक स्वया क्यादिक कार्याम नहीत त्याक श्रक्तान करत वरणम, 'विद्यादी कृति नवाक्रम हिस्सून मायक्रम ७ गार्याम कृति।' 'विद्यादी कृति कीत कृतिका नाम श्रक्तम ७ क्याना क्ष्यमनीय माहिकाक्टर्सन यथा विद्या क्षय द्वास वीक्र्यम।'

(मर्त्या विखिन्न नारकृष्टिक शिष्ठित नारक्क प्राथिक प्राथिक प्रम अवश्या विखिन्न निर्देश परित्य प्राधिक वर्ष गर्छीय राष्ट्रिक वर्ष पर्छित प्राथिक प्राथिक प्राथिक प्राथिक प्राथिक प्राथिक प्राथक वर्ष । विखिन्न प्राथिक रम्बून्य कर्मक, 'यम्पाक वन्नाय विश्वम विभिन्न प्राथक प्राथक वर्ष ।' (मर्त्यम विखिन्न प्राथक प्राथक परित्य परि

विकिन् (नर्भन नार्देशवान ७ नार्देश्याः जीव ववाधवार्य स्नाक्यांनी शक्षाः

खारका प्राप्ति विकास जानी जानक त्यांक्यांनीएक यरमय, 'कवित्र म्यांटश्य अरः विश्वकी छाउमा खांबक अरः यांनारमराचा काणि क्यांकि क्यांनीएक जनुरक्षांना क्यांनीएय।'

ভাষতের প্রধান মন্ত্রী বিলেন ইন্দিরা পানী তাঁর বৃদ্ধাতে পতীর পোন্ধ প্রকাশ করে বলেন, "তাঁর সক্রিয় জীবনে কবি বা নিবেছেন তা তাঁকে বাংলা সাহিত্যে জবর করে রেবেছে। তাঁর বৃত্যু ভারত এবং বাংলাদেশকে রিক্ত করে দিরেছে।"

वान्द्रिनितात्र द्यारे क्यिनात्र जनार रेग्यारेन जाविया । यान्द्रिनितात्र नार्गितक्या कवि नजक्रान्त्र द्यक्ति गढीत्र भूका निरंत्रम क्द्रम।

यूर्गाञ्चाछित्राच वार्युम्छ छः छिष्णम चम्हिन এवः बार्गारमप्य वगवागवछ यूर्गाञ्चाछ नायविक्या विद्यारी कवि मणकरम्य मृष्ट्रारछ भछीत्र त्यान श्रकार्य करवन।

চাখার গোডিয়েট ইউনিরনের দূতাবাস বাংলাবেশে বসবাসরত গোডিয়েট নাগরিককের পক বেঁকে বিয়োহী কবি নজকলের বৃত্যুতে শোক প্রকাশ করেন। দূতাবাসের এক শোকবাণীতে বলা হয়, 'নজকন গোডিয়েট ইউনিরনে স্থারিটিত কবি। তিনি ছিলেশ আবুনিক কালের অসাতন শ্রেষ্ঠ কবি।'

याःशारम्पा निवृक्ष निविद्यात्र बार्युम् खयाव चानी द्यारम् चान्-त्रीमावत्री 'त्रदान बूत्रनिव कवि' कानी मकक्रम रेमनात्क्य मृजूर्ड वाक्षानी चांछित श्रेष्ठि यदानुष्ट्रिड श्रेकान करवन। डिनि कविद्य करवन बानरक्यांड कानम करव कविद्य त्याक्यक्रक निविद्यात्मक श्रीक्ड यदानुष्ट्रिड चानान।

जाराज्य कविडिणिट नार्ड नि. नि. जारे. गर्डीय त्याक श्रक्ता करत्य। नायावय नन्यावक प्रात्मानुब बाठ बरमभ, 'कवि विरमम रिणू-नूननिय नक्यीखित धवका।'

शीनिवार्ष परंत्र प्राप्त वरणम्, 'कवित मृत्युरक अको। मृत्युरिव मृत्युरिव परंदा प्रमाण महिला ।--अनुवार वरणात वरणात कवित्र मृत्युर्ग करूर मा, पांचावत मृत्यु रामानिव केर्य मृत्युर्ग करूर ।
अवाक रार्यात विकिन्न अवाक रार्या विकिन्न मर्थाय वर्षा वर्षाय कर परंदात पांचावित करणात राम्युर्ग पांचावित करणात राम्युर्ग पांचावित करणात राम्युर्ग पांचावित करणात वर्षाय वर्याय वर्षाय वर्

गेंडकान वाक्ति वाडीय गंडाका वर्षमिड वाटम। बाब लाग्यशंबर बाडीय गंडाका वर्षमिड वाक्ति। डेट्सवा हाइटकार्ड गर गर्क निर्म बाबावड, बाःबाटको बाःक, वाडका मिर्चित गर्क वाकित गर्क गरका गरकार्थी छ दिश्व कार्यो विकास कुन, कटनक, बाह्यांग क्या कार्यांची छ दिश्व कार्यो विकास कुन, कटनक, बाह्यांग क्या कार्यांची विकास क्या वाटक।

वसंबोधार्यत भवः भव-भविकात वकारणत प्राप्ति

বহাকৰির বহাকুত্যুতে বাংলাদেশী জনবণ পোধে অভিজুত হ'বে পজেন। তাঁদের অভয়ন পর্যন্ত বহাবীদের বহাপ্রবাণে অপান্ত হ'বে ওঠে। কবির প্রতি তাঁদের প্রভা ভালবানা ছিল শীনারীন। সেই শীনারীন প্রভার বহিঃপ্রকাশ ঘটে ভালীর দৈনিক সমূহে। সেরিদের সংখ্যান শিরোনায়াঞ্জি ছিল নিমুক্তপ:

रेननिक वारमात्र श्रवान वेवत्र क्रिम ''क्रिय निशास विद्यादी कवि मक्कमा।'' कीरमय मन्नानकीय निरक्षा-मात्र क्रिम, 'क्रिय-विद्यादी दीव।' এতে कीमा बरमन:

"बारमा माहिएछ।त्र मिहे विहम भूक्ष्यम्य छिनि महावर्षः त्यव श्रीकिनिवि विनि माहिएछात्र मरण बीवम, चारमिक्छा, जात्र मरश्रीमरक निष्ठराष्ठ मरबूक करब्रिहरमम।...

बारबा माशिएछात्र चक्राम कामरम-कर्फारत विश्विष धवम बाक्रिय चान कार्ष भए मा।...

नवक्रम हिरमन यमान्ध्रशिक्षां प्रमा ध्रीक—याःमा गर्थिष्ठा वेष्टिश वर मर्व्हणि यांचरिक छिनि दिनम भविभूटे करत्रहरून, स्थामि भण्ठारभय यांचामी मूममान मनावरक छिनि ध्रीकिष्ठ करत्रहरून हैक्ट्रभ परिमाण्युरह !...

गक्न गीनावक्का चिक्क करत्र शिराहिन छीत्र वस्तु, छेनार्व चान वानवरधेन।...

जाशास्त्र गांचना, कवि नवक्रम जनक, कवि नवक्रम जिन्हार्त्तव, जनव छीत वांचीमठा जांच विद्वारिक वांची।... जांचीन वार्नार्थन छात्र मचूर्वमध्यस नवक्रमा कांच व्यव्य कुँव्य व्यव्य निक्त, मांचम जांच जनुरक्षमत्री।... जांकि हिमार्थ जांका छीत्र कार्य वंची।"

নজন্দন বিরোগে বাঙারী আন্দ হস্তবাক। বিরোধী কবিকে তীর অনমধানকে বারার শেব প্রমানিবাদন করে আমরাও বনি—'কে বলে মরেছ তুরি হে অমর আছে। চিরমিন।''
কবিম ইন্তেকালে ''আলালে''র সম্পাদকীর 'আনালের কবি আর নাই'। তীরা বলেন : 'গ্রুইডের ক্লেন্তে নজন্দনের অবদান তবু বাংনা সাহিত্যাই নয়—বিশু সাহিত্যাও বিসান স্কৃত্তির নাবী রাবে।'
তীরা তীকে 'যুসনিব সমাজের আগরণের চারণ কবি' বলেন। তীরা আরও বলেন : ''নজন্মন আমালের আতীয় কবি। তীর প্রতিটি স্কৃত্তিই আমালের আতীয় সম্পাদ। এই আতীয় সম্পাদের উপযুক্ত সংরক্ষণ আতির কন্য একটি গারিত্বপূর্ণ কাল। অনুবালের মাধানে নজন্দন সাহিত্যকে বিশ্বের সাহিত্যকারীলের সম্বাদে উপযালিত করাও আমালের একটি প্রধান গারিত।''

Bangladesh Times "Undying Flame" नीर्बन जन्मामनीशस्य स्टब्स :

'The Rebel Poet is deed. But the flame will burn undyingly. "Blood, imagination and intellect" ran together in him to produce one of the finest artisans of words. The brevity of his stay did not stand in the way of making him an immortal figure of Bengali literature. As long as Bengali is spoken, Kazi Nazrul Islam will be remembered with appropriate reverence. His melodies will ring in our minds eternally. A brilliant era in Bengali literature has come to an end the sparks from which will inspire posterity for earning new laurels in literature.

कींच नदाविचारत 'गण्णामरकम मक्कन त्यरक' गांखादिक 'किजानी' बरमन :

"বিংশ শতাব্দীর বাঙালীর ইতিহাসে ও জীবন-চর্চার যে বানুষটি ছিল উজ্জ্বলতর নক্ষত্রের মতো দেশীপানান, সূর্যের মত তেজন্বী সেই বিদ্রোহী কবি কালী নজকল ইসনাম জার নেই।...
বাংলাদেশের ইতিহাসে নজকল বুগগুটা। রবীশ্রেনাথের সম-সামরিকলালে জন্য নিয়ে রবীশ্র-প্রতাবের কালে পদচারণা করেও নজকল ববিবলয়ের বাইরে নতুন চিক্র ছাপান করে জনন্যভার ভাষর বৈশিষ্ট্যে উজ্জ্বন। বাঁছা নজকলকে বুগের নর হজুগের কবি বলে আধ্যারিও করতে চান, তাঁরা মান্ত। নজকল কোন অর্থেই হজুগের কবি নন, সর্বজর্মে ভিনি বুগগুটা এবং স্বব্রুগের। বুগে বুগে বলি আম্রা বিপশ্র হই, বলি আমানের জবিকার নিয়ে কোন শুক্তি ছিনিবিলি বেন্তে চার, তবন আম্রা জানি, নতুন সংগ্রাবের শ্রেণা হিসাবে তবনও নজকল আমানের জবলছন।"

कवित्र त्यं विशास्त्रद श्रिकित्य 'क्रिकीय क्रिकिस्टारी' गुणानकीत्र निर्धानास्य 'गूर्वापी' यस्त्रनः

"वारात्तव गाहिण वर्गालव कीर्जिमा यहांगूस्य वारात्तव केलिरहास भरत निर्हारात वहर्गालिय, वारात्तव गार्ष्ट्रिक ठिलमार तोल वारात श्रेमांह ग्रहीरमी पक्षि विद्वाही कवि काकी नवकम हैनसाय पानिकी, वार्मारम्य त्यांग गाहिए हिन्निसात पानिल हरवाहन। कवि नवकम, गाहिल्यिक पवकम, गार्गिक पवकम, मान्वरश्चिक सवकम, जीव हिन्दा, जीव ठिल्या विद्वाह विद्वाह विद्वाह व वार्मायहीय। मीमकरण्डेस मान्न मनत हमाहन भाग करत कवि वाकीयम सन्दर्श महाद्वाह हिन्द्राह । कवित्र कवित्र कवित्र नामक्छारांनी वार्मा वारात्वत कमा भरवत विना हर्द्य वाकरव।"

रेटकांक. डीटबर गणांवकीय 'विद्यारी कवित बराबंदान'न्य बराबन:

'ভোৰেৰ কাপুৰ যত আৰু প্ৰতিজনেৰ স্পৰে জ্পন্নে ৰাজিতেছে একটি কৰুণ বেছাৰ। 'ভোৰাদেশ পানে চাহিন্না বহু আৰু আৰি জাগিব না' কবিৰ এই ৰাখিত উচ্চাৰণ আৰু শাব্দিক অৰ্থেই সভা হইয়া উঠিয়াছে।

क्षि काकी नव्यक्रम हेमनान त्यवीरन मछा, मिर्चारन नृजुत्र हिल मोह। भाषक भिषात्र मछ छिनि जुनक ७ मिनीभारान।--- हिनानरबन्न मछ छें हू ७ जहेन भिन्न हिन छीन वयः भीति जाखिरक छिनि हार्यमञ्ज माहिया हिन्नी ७ कविया निशास्त्रम मिर्ह स्वाहरनात्यम भर्षारम।

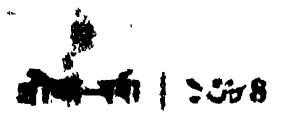
তোলপাড় করা এক কীতির তিনি সম্রাট। বলিষ্ঠ জীবনবোধের নায়ক। শতাবলীর **অবজার তাঁ**র হাতে ছিনুতিনু হইয়াছে। আলোর দীপ্ত মশান উচ্চে তুলিয়া ধরার অন্যতম প্রধান ভূমিকা **তাঁরই।** --- গাহিত্যের মেধানেই হাত নিরাছেন, কলাইয়াড়েন সোনার ফসল। -----

বাংলা নাহিত্যে এমন বর্ণাচ্য বাজিকের এমন উচ্চকিত প্রাণস্কৃতির নালীর আর বিতীয়টি মাই।
--- নজকল বলিতেই শুঝার বেদনা-বিজ্ঞান থাওয়া একটি চিরস্কনী প্রেমিককে, শুঝার সংসাম
বিরাগী এক পুরুষকে। শিশুর মতো সমল-স্থলর চোর্ব, সিংছের কেশবের মত বাবরি, মন্ত্রের মত
কর্ত—এই ইমেজও নজন্মদের। বাংলা সাহিত্যে তিনি তবু নৃত্রন বাবীই সংযোজন ক্ষেম নাই,
নৃত্রন সাহিত্য-বাজিকেরও প্রতিটা করিয়াছেন।

উপৰহাদেশে ৰুসলবান ভাতির অন্ববোধের বিকাশে কবি আতীর কবির ভূষিকা পালন করিয়াছেন। নজকল কর্বনো আপোদ করেন নাই। কণ্ঠের সমস্ত শক্তি দিয়া অন্যায়, অবিচার, পোষণ ও নিপীজনের তিনি প্রতিবাদ করিয়াছেন। এখানেই নজকল সত্য ও অবর।

कित्र मृत्रु वाछ्। किनशक्षिक ७ छाँक म्हित बृद्धा गाँ। यष्ठिम मुक्षा ७ भाष्टिक व्याध्य व्याध्य एक व्याध्य व्याध्य एक व्याध्य व

১৯৭২-র ১০ই নে বেকে ১৯৭৬-এর ২৮শে আগস্ট পর্বন্ত বাংলাদেশে ক্ষিয় আগমন, অবস্থান, নাগরিকর, নৃত্যুববণ এবং শুদ্ধা ও প্রীতি লাভের এই হ'ল সংক্ষিপ্ত ইতিহাস। এই ইতিহাস আমাদেশ এই ক্থাটি বার বার সারণ করিয়ে দিতে চির-উচ্ছল হ'যে থাকবে—জনপ্রিমতার, প্রেইত্য ক্ষির্ম মর্বাদায় এবং ব্যক্তিকের সমৃত্যুত মহিনায় তিনি চিরুক্তানের চির-উন্নত শির মহাক্ষি ক্ষেত্রী ক্ষেত্রল ইসলাম।



विषय अकार्या शिवका नित्रव स्थापन

যীম, বর্ষা, শরৎ, হেরন্ত, শীত, বদত্ত—বছরের এই ছর বতুতে—অর্থাৎ প্রতি দু'রালে "নম্মন একাটেরী প্রিকা''র একটি করে সংখ্যা প্রকাশিত হয়। বিদ্রোহী কবি নম্মন ইসলানের জীবন, জুবিকা, বাদস, প্রতিত্তা, সাহিত্য, সজীত ইত্যাদি বিষয়ে খননশীল, বিশ্বেষণার্থী ও প্রেষণার্থক প্রবন্ধ ও আলোচনা এ প্রিকার প্রধান উপলীবা। নম্মনের অপ্রকাশিত বা বিস্কৃত রচনা ও পাতুলিপি এবং তাঁর গানের স্বর্গাপি এতে প্রকাশিত হয়। এ-ছাড়া সাহিত্য, শিল্প, সংস্কৃতি, ইতিহাস, দর্শন ইত্যাদি সংক্রান্ত পাত্তিত্যপূর্ণ আলোচনা এ প্রিকার অন্যত্তর প্রধান আকর্ষণ।

পত্রিকার প্রতি সাধারণ সংখ্যার দাব ১০:০০। বাৎসরিক চাঁদা ডাক্সান্তল সহ ৭৫:০০ চাকা। পত্রিকা ডাকে পেডে হলে মণি-অর্ডারে অগ্রিম চাকা পাঠিরে অর্ডার দিতে হবে।

বিক্রেডাদের শতকরা ২৫'০০ টাকা ক্ষিশন দেওয়া হবে। বিক্রেডারা যত কপি পত্রিকা চান, ডার প্রতি ক্ষপির জন্য ৫'০০ টাকা হিসাবে অগ্রিম পাঠালে তাঁলের নামে ডি: পি: পাঠানো হবে।

माधात्रव मश्थाम विखाशतित राज

শেষ কড়ার পৃষ্ঠা ৩,০০০:০০ ২য় কড়ার পৃষ্ঠা ২,০০০:০০ ডিডরের পূর্ণ পৃষ্ঠা ১,০০০:০০ ডিডরের অর্থ পৃষ্ঠা ৫০০:০০

অর্থ পৃষ্ঠার কমে কোন বিজ্ঞাপন নেওয়া হবে না।

लाबक, श्रोषक, এक्किने ও विकालनवाजागन निर्मुत्र ठिकानाम वागायात्र कन्नर्वन।

क्वीधाक: वक्का क्वांटक्वी वृद्धिका रक्तांवांवांव करवांची नग्नवांवांव, क्वांचा। नन्नांवक/गारभवांव

किनिर्मान: २००००



क्षकाएयो मश्वाम

तककृत रेजलाय ७ तककृत अकार्डियो

ভাগিম হোসেন [সাধারণ সম্পাদক]

[40]

নজকল ইসনাম বাংলাদেশের গপনানসের কৰি, তার সাংখৃতিক ঐতিহাের রূপকার। একই সঙ্গে, তাঁর কবিতা সর্বনান্যের কবি—কণ্ঠ, তাঁর গান চির-নানুষের প্রাণের স্থর। সাধারণ মানুষের, সকল আশা-আর্কাঝা, বেদনা বিক্ষান্তকে তিনি নিজের জীবনে আরম্ব করেছেন, নিজের কণ্ঠে ধ্বনিত করেছেন। তা করতে গিয়ে তিনি প্রতিভাত হয়েছেন একই সঙ্গে বিশ্লোঘীরূপে এবং প্রেমিকরণে। বিশ্লোঘীও প্রেমিক মুটির নধাে ভারও নেজাজের বে আপাত:-বিরোধিতা তা সাধারণ মানুষের চিহারাতেই জলকা থাকে। এই অলক্ষাের প্রকাশ-মুডিই বারণ করেন তার কবি, তার জীবন-শিক্ষী। নজকল ইসলান সেজনাে সাধারণ মানুষের সতিনিধা, তার সাধ্র বাণী-মুডি। কেবল অসাধারণ বাজিবই এভাবে সর্ব-মানবের জন্তর-সভাকে নিজের বধাে আলীভূত করতে পারে।

মানবভার কবি-কঠ

নজকল ইসনাম নেমে এসেছেন জীবনের ক্ষণা কঠিন যাঠে. উঠে গিরেছেন তার অধ্যান্তর উর্ধেন্দি, প্রনেশ করেছেন তার রোমাণ্টিকতার নির্জন প্রদেশে। কিছু তাঁর এই সধ বাত্রার, সব অবস্থানেরই সজী চিরন্তন মানুধ। নৈর্নাক্তিক অনুভূতির ভূরীয় মার্গে আন্বর্নতি-মপুতা তাঁর স্বভাবে জিল না। ভাই তার হাত্তানি তাঁকে চরিত্র-এই করেনি। তার আক্রমণ থেকে তিনি বার্বার পালিরে এসেছেন। বানবভার বেলীতে সব অর্বা দিয়ে আপন চরিত্র-লগু অতি মানবভাকে তিনি নিমুধ করেছেন। নির্বিত তাঁকে সর্ব করিবের মানবভার করি-কর্ণঠ করে বার্বান্ত চেরেছে বলেই হয়তো এমনটা মটেছে।

बाइना खाबा छ बाडानीय खाना त्य गर्य गर्मात्र बनायय-एडं अरे यामबरावामी कवि खात्रय यथा खना-बाख करहरून। बनायाना धारेक्ट्रार्य मध्यम परमान निरक्ष यथियारक विकित छ धरिडिछ करब- ছিলেন ৰটে, তবে তাকে বিশ্বসম ছড়িয়ে দেবাম আরোজন বা সজতি তাঁর নিজের করামন্ত ছিল না। আন এখন পর্যন্ত বাংলাতাবা ও বাজালীর লক্ষা এই যে, তারাও তালের এই জননা অপুর্যকে বিশ্ব-সভাম পরিপূর্ণতাবে উপন্থিত করতে পারেনি।

হিন্দু-মুসলমান

নজকল নিজের অবদানে ধন্য করেছেনতার লেশকে, দেশের সমপ্র মানুবকে। তাঁর গুপ-মুগ্ধ ও প্রের-সিক্ত বাঙালী ছিল্ম ও মুল্যবান উভর সম্প্রধান। বাঙালী ছিলাবে তালের বে ঐক্যবদ্ধ ও মিনিত সন্তা, নম্মকল তার একমাত্র প্রতিনিধি। আবার উভরের শ্বতম ও বিলিপ্ত সাংস্কৃতিক মাননেরও তিনিই একমাত্র দরদী রাপকার। ইগলানের ঐতিহ্য, আদর্শ ও মুল্যবাধকে নতুন কালের প্রেক্তাপটে শ্ব-মহিবার উপস্থাপিত করে তিনি বেনন বাংলার মুগনির স্মান্তকে আর্থবিস্কৃতি ও হীন-মন্যতার অবকার পেকে গোরবোজ্বন নরজীবনের পথে তুলে দিয়েকেন, তেমনি আপন অলোক-স্মান্য প্রতিভার অকুপপ পর্শে দিয়ে হিল্ম সমান্তকও তিনি তালের নিক্ষম সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যের স্ক্রীবনী প্রেরণায় উদার মানবতার পথে উদীপিত করেছেন। তাঁর গাবলা ছিল—ক্ষুদ্রতা ও ভেদবৃদ্ধির করন থেকে উদ্ধার করে প্রত্যা সম্প্রধানের বালের প্রথাকে আর্থবানির রালনীতিতে তিনি উপসাচবোধ করেন নি। তাই সাম্প্রদায়িক উপপ্রবের বড়ের নাগ্ন প্রশ্ন করেছেন—"হিন্মু না ওরা মুগলিয়—ওই জিলাসে কোন্ জন।" কিছ তাঁর বাক্রর প্রশ্ন গদ্ধুর গ্রুকে পারনি। বাংলাদেশের ছিল্ম আর মুলনান পৃথক পৃথক তাবে তাঁকে তালোবাগনেও তাদের রাজনৈতিক প্রাক্তিত তাঁর অসম্য মানবিক বিলনের বাদীকে উপেক্ষা করেছে। উপমহাদেশের সামগ্রিক রাজনৈতিক প্রেক্তিত তাঁর অসম্য মানবিক বিলনের অন্যে আপাত-ব্যর্শতার প্রয়া রচনা করেছে।

'हिंद्र-कवि नक्कन'

নিত্ত বার্থ হবার বত পৃতির পশ্বা নিবে নমকল আসেননি। তিনি সেই হাতের এক অনর ব্যক্তিত্ব, সমকালীন মানুনের গ্রহণ-বর্ধনে বাঁর নুলা ও উপবােগ নিংলের হবে বার না। 'পরােরা করি না বাঁচি বা না-বাঁচি/গুলের হজুও কেটে গেলে '—তিনিই বলতে পারেন, বাঁব হাতের মুইতে পারে কালের বেয়াছা বােড়ার বুটি। তারই জােরে তিনি ঘােষণা করেন—'বানি বুলে বুলে আদি, আদিয়াছি পুনা মহানিপুন-হতে।' সেই 'মহা-বিপুন' কি অতিকাল্ত হয়েছে । হবে কবলাে । 'ববে উইডিতের কল্যা-বােন আনালে-বাতালে হবনিবে না/সভাাচারীর বঙ্গ-কুলান ভীম বন্তুমে হবিবে না —লেদিয়ের আগে তাে তাঁর চুটী নাই। দেলিন কি কবনাে আস্বােন হবা আবাবে । মানুষের এই পৃনিরীতে বেদিমতাে চিরায়ত, অথবা মহাধানরের কাল পর্যন্ত প্রসারিত। কাছেই বার্যভার নানা গ্রাায় দিরে কে তাঁকে বিনায় লানাতে পারে। তিনি বে বলেছেন, তিনি 'বর্তমানের কবি,'যে বর্তমান তাে অসত্ত । বিনাজ কবিন, সমকান ও অনাগত্ত কালে প্রসারিত সে বর্তমান। সেই চির-বর্তমানকে তিনি ভাষা দিরে বুলর করেছেন, হব দিরে আপর করেছেন। যে অতীত অন্যিনের যানের বাক্তর, ভারই বানীয়াহক সম্বান্ধন; যে বর্তমান চিরজন সংখারে আলোনিত ভারই ভুর্ত-বানক নজরেল; বে ভরিষ্যত

विवायत जानाय क्रेकिक टावरे निक-निर्दानक मकसमा। मकस्रात्तप्र निराम क्रिस त्यरे जाना शताय। द्वारे दुवि क्राय-क्रिके क्रिटमाय धरमारयक दीय क्रिन्ड क्याय क्रियांकि व्यवस्थित-"क्रिन्यि महस्रम" —এই जरकारी जासरमध्य।

'वाडामी वमरण अक्यन चारह'

त्रीयम्नानक बाह बक्ता क्का क्का क्का क्का क्का क्वा

खून इता भिष्ठ विजयूस—
चात्र नविष्ठ जान शता भिष्ठ ।
जीन इतिया मणकन।
जी जुनहुष (वैष्ठ चाय,
वाडानी बना अवस्य पार्छ—
पूर्वि जात्र पुष्ठ वाक्।

जात नविक् छात्र इता त्याल 'मबकन' त्य त्यान छात्र इति छात्र कात्रन छिनि बर्गम गि। कावने अदे त्य, 'जिंव-कित' कर्वामा छात्र इता मा। भीत्राय बर्माएक, ''बार्डामी बनाए अक्कन जाएक।'' छीरन जात्रात्र वजार देख्या करत —'आएक' नय, बार्डानी बनाए छिन्दे बाज अक्कम; छिनि नक्ष्मान। तमा छात्र इवात नात्र नव वा छीत्र अपन बार्डानिक छ्छा कावात्र कार्टाह छन् मध; ज्ञालां, ज्ञाने क्ष्मान वाक्षात्र छ्छा कार्यात्र छात्र त्यात्र प्राप्त कार्टाह छात्र व्याप्त कार्टाह छात्र व्याप्त कार्टाह छात्र व्याप्त कार्टाह छात्र व्याप्त कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह जात्र कार्टाह अने कार्टाह कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र अने कार्टाह कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र अने कार्टाह कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र कार्टाह छात्र अने कार्टाह कार्टाह छात्र छात

ভোষাদের পানে চাহিম বন্ধু, আর আরি তাপিধ না, কোনাহল করি' সারা দিনবান কারো ধানি ভাঙিধ না।

जनगणानी जामन् भविनिध्य अने भएनरे कि छीत्र निष्या वानी निष्या कार्या (कामार्ग महाम हराहिन । बहर छारे कि बडे यवन-नन षडियान !

ৰাংলা সাহিত্যের দান এক সহান দিকপান ব্রবীশ্রনাথ ওাঁর 'কানান্তর'-এব প্রবন্ধে এই পরিপতির ব্র শিয়ারী ইচ্চারণ করেছিলেন বলৈ, কিছ আদল বাঙালী, সভার ক্ষপায়নে সমাজ, সাহিত্য ও সংকৃতিতে লক্ষণসের নৈত্রী সাধনার যে পথ তা ভাঁরও চহণ-শর্শ পায়নি। পায়নি স্ব্দুদ্দন বা ব্যবিষ্ঠশ্রে বা ভাঁতের পূর্ব বা ইন্তবসূবী অন্য কোন বহাপ্রাধের। ভাই সমান্তরান পথে পদ্যার্থ। কবে হিন্দু বাঙালী এবং মুস্নমান বাঙালী ভালের নিজ নিজ পর্বেধা পৌছেছে, পার অন্তর্গের সাধনা নিয়ে নজকল ইস্পাম হাবিষে পিতেত্ন এক অন্তিয়ে—বার নাম 'তার্ল্প বাঙালিয়'।

त्रवीत्यनाव ७ हेकवारमद विख-बब्न

क्षि नककरमा परिष्ठ एक छन् जामर्ग गांकानिएक मांबागा जन्छ्या मय। छीत्र मांबना छो मून्छः भागवानक मांबन। मांबन विमुन्यू मांबनामा पट्य मखाएक जनीकात्र वरसमित, छाराव विभिष्ठे গাংশুভিক পরিচয়কে বানধিক বহিবার উপরাপিত করে তিনি তালের আমানধিক বৈধী সম্পর্কী তবু অধীকার করতে চেরেছেন। তবু তাঁর কি এনন কোধাও জুন হরেছিল, বেবানে ব্রবীক্ষণাধের জুন ধরনি, ইকবানের ভুল হরনি? সভবতঃ তাই। অভতঃ কাজির ইতিহাস তাই চনাবিত করেছে। নজকন তাঁর একক ব্যক্তিয়ে ধনীক্ষণাধ ও ইকবানের হৈত-সক্রপকে বার্থ করতে চেরেছিনেন। সেনা থিল সংস্কৃতি, ইতিহাস ও থাতি-চেতনার দিক থেকে ব্যক্তি-সন্তার এমন এক সংকট-সন্ধি, বার উত্তরপের সীমানা বিভূত ছিল বাঙালিয়কে ছাভিয়ে সম্বর ভারতীয় জাতি-সন্তার মধ্যে। তাই, মধ্য ভারত বিভক্ত হলো তার ফলশুভিতে বাংলাদেশও দু'ভাগ হলে তার অনুগামী হলো; আর বিবতিত দুই নতুন দেশের দুই পৃথক জাতিসন্তা ভাগ করে নিন রবীক্ষণার ও ইকবানকে আপন আপম মুগপাত্র স্থাপ। বেখা গোল, 'গোনার বাংলা'র কবি হরেও রবীক্ষণার হলেন ভারতের এবং 'ছিম্টো হাবারা'র কবি হয়েও ইকবান হলেন পাকিভানের। নম্বন্ধন করি, তার সীমান্যে এইলো নুন্তুবী।

नजून वांशामिण ७ नज्जन

কিছু মাত্র সিকি শতাবদীর বাবধানে উপমহাদেশের স্বাজনৈতিক পৃথিভিতেত আর একবার পরিবর্তন बंधिला। छेपेनशामित्व लांकापेलाच मुनलूबी देलिशांग लांख लांबाच भट्टा এन लोटगोनिक बाहिन्द्रार्हे षष्टि करत्राष्ट्र---यात्र नाम वाःनारम्प। এ এक मञ्ज वाःनारमनं, या त्रवीन्त्रनार्यत्र ভावङवर्ष (धरक अवः हैकवारनम भाकिसान (धरक এक मजून जरशारा निष्णरक हिस्डि करत्रछ এवर एक चडम ५ विनिष्टे मखारा निर्प्याक प्रक्रिकेड करबार्य। ध मखाब विवर्जनात्र थावारे बरम म्बर, कारक रम ग्रंबर्ग कवरव আতীয় কৰি ক্লপে। উপমহাদেশের ভূগোল, ইতিহাস, সংখৃতি ও বাফ-নীতির যে চতুরাপুনের পরি-क्रमात्र नय-व्यक्ताषिष्ठ बारना प्राप्ति उखत्रने, फात्रहे धाषिक श्रक्तिवि नक्षक्रन। व्यानता व्यानि नक्ष्मन मबान-यमन ब्रवीखनाचे नवाब, देकवान'७ नवाब। किन्न नवाब ब्रवीखनाचे यमन छ। ब्रट्ब ब्राडीय कवि, म्यात्र हेक्बाम य्यमन पीर्विस्थारभन्न खाँडीय क्यि, एडमिन ग्रवाद नक्सन खांक खनिवार्यसारव बार्जारनरमत्र बाजीय कवि। कात्रम व्यापना এए कानिया, व्याप्तःमानिक भन्मर्कित कात्र छ जात्र ए लाकिकारने विज-मुखान मार्गन-मान्य वाःनाम्म। निग्नि-कर्षुक मिरे ख्यिकारे जान जना निमिष्टे श्रायक्त्। टार्ने नवक्रानन मधा सरीयानाथ ७ रेनवालाच रेप र-चक्राणाच एप छाडिनिधिष्ठक अक्कारन विद्याचिक्य मरन रूपाछ्न, ভাই আজ বাংলাদেশের অভ্যাপয়ে এক নতুন সভোর মহিমা লাভ করেছে। বাংলাদেশ মুসনিম-পর্ণ-প্রধান, তাতে कि इस्साए ? बांशारमन यपि कोनियन ने उन्ना अकर्म जाने मुग्निय नन-ज्यि इय, जार जे वा कि इत्य ? नवक्रम यपि धारकन व्यामार्थिय मुक्त्राय ५ अध्यापर्यक, जावज ६ भाकितान बारनार्धित कार्छित्रे जरलम मानविक मन्त्रदर्भ भांठ अवस रहरव।

[इवे]

১৯৪२ मार्ज्य निर्क शिंडिंग भोक्ष मूर्य नक्ष्यन बाह्यक हरत পर्छम अवः बाश्मारमध्य महिङा, मर्प्रि श्र बाद्यनी एत राजनाड़ व्यक्षम स्थरक श्रीम जाक्ष्य व्यवसारम नीयर विद्या श्रीम करवन। ১৯৪५ मार्ज छेन्यवारमध्य विरम्पी मामन्यूकि अवः रमनिखारमय वानूपिक कवन्यारिखाल बार्णायन्छ विद्यक हत। विद्यक रमन्त्र छात्रजीय व्यर्ग काम-शांवि-क्ष्यनिक कवि निर्म्ह में बहर स्थरम।

बन्दित लिक्किम वहे या, विस्ति नामान निकास विद्वार विद्वार कि विद्वार कि वहे वहान कि सामि नामान कि नामान स्थान कि सामि कि सामि

नवक्रम अकाएजीव टार्डिंग

त्म वाहे रहान, मन रहरा नह पूर्शन निषय थहे रा, कनित्र मुख्याय रेखन पिएएय मूल्टन गरहानम रिहारनात्र नावण रान्नीत्न वाहेन्। हरला, डांव महान्य रहिनीत खीनरात्र वर्गानक। भारत्व पूर्व पूर्व भरवार हर्णया राज्य रहिनीय दिन प्राप्त रहिन भारत्व प्रमान राज्य राज्य रहिनीय जानकुछ थवर छेख्वन मन्तार नावरात्र लाग छेस्त्र वर्गाण छिन गर्भ राज्य राज्य राज्य छेस्त्र प्रमान जानरात्र कान्य राज्य छेस्त्र प्रमान राज्य राज्य प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान विद्यार विद्यार प्रमान किया प्रमान किया प्रमान प्रमान छेस्त्र प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान विद्यार विद्यार प्रमान प्रमा

कृभिका ७ व्यवसान

তবু আবরা মনে করি, চাকায় নজকল একাডেমী প্রতিষ্ঠান ঘটনা একদিন ইতিহাসে তাম ঘণামূলা পারেই। ইতিমধ্যেই তার যে কলশুনতি, তাও কি দৃষ্টি এড়াবাম মত? নজকল একাডেমীর প্রতিষ্ঠা তার উদ্যোগ-আয়োজন এবং প্রারম্ভিক কার্যক্রমেই তার অন্তিবের মূল্য অনেকণানি প্রমাণিত করেছে। এদেনে, এবং ভারতেও, বিশারপ-ও-অবহেলার-কবলে-পড়ে-পাকা কবির প্রতি সরকার ও স্থবীসমাজের মনোযোগ বৃদ্ধি, তাঁর ভুমিকা ও অবলানের চর্চা ও মূল্যায়নে ব্যাপক উৎসাহ কটি এবং তাঁর সমৃতিকে আগরুক রাবার উদ্দেশ্যে বহু ওক্তরপূর্ণ প্রতিষ্ঠান ও প্রধান জনপথ তাঁর নামাজিতকরণ—এর প্রায় স্বাই ১৯৬৪ সালে চাকায় নজকল একাডেমী প্রতিষ্ঠার অনুগানী ঘটনা। তাই বলা বেডে পারে, নজকল একাডেমীই উপ্রহাদেশের বনোজগতে নবপর্যায়ে নজকল আলোলনের লোভক।

कवित्र वाः नामित्व पागमन

३३१२ मार्त चांबीन बाःनाम्हान ध्रवम मनकात किनिक होकात निरम चारम। मध्रवछः मिहि इन मिन्नवकार्य मर्वालका स्निक्तिक केस। होका विवान बन्दम किया विमानमु स्वयमिक कान मन्त्रि लोलन बांचा मृद्धु मिन मिनाद पर्नाची स्वयमित य विमून मनादन इर्माध्रम छ। दिन्दमान मिनाद विन्दान किन्द्र स्वना मुश्लिव विवास। मनकात किन्दम बानमधीय अक्षि स्मिक्छि वृद्ध मुश्लिक बाँगिक स्थित स्वित्र स्वान्द्रम स्वर्थक स्वर्यक स्वर्थक स्वर्यक स्वर्यक स्वर्थक स्वर्यक स्वर्थक स्वर्यक पारक रगरे कवि-छीर्ष षाङ्गिर्ष। भगा-याबीन बारमारमन रवन बहवूना भाव क्रिस भारता छात्र ध्रवानी धित्रछमरक निरम्भ कुरक---भवनक याबीमछात्र ध्रवय छेनदात्र ऋरम।

चात्री शामभाषाम भगा

কিছ পরিতাপের বিষয় সেই সরকারের আমলেই কোন কোন মহলের প্রথম পরাবর্শে উপযুক্ত চিকিৎসা ও ডলুমার নাম করে কবিকে ধাসমন্তীর বাড়ী থালি করে ছারীভাবে হাসপাতাল-শব্যা বরাদ্ধ করা হয়। সে ব্যবদ্ধা অনেকেরই মনপুত হয়নি। নজকল একাডেমীর তরকে আমরাও তার প্রতিবাদ আনিয়েছিলাম। হাসপাতালে লতা চিকিৎসার বিশেষ স্থবিবাদি কবি-ভবনেই আয়োজন করা যেতো, অবচ কবি-ভবনের মুক্ত ও অন্তরক্ত পরিবেশের আবহ হাসপাতালে লতা নয় এবং সেটা তাঁর বিশেষ বর্যাদারও পোষক নয়,—এই ছিল আমাদের যুক্তি। কিছ কর্তৃপক্ষ তা মেনে নিতে পারেননি। কলে হাসপাতালের বছরুরে অপরিচিত ও শক্তমহীন পরিবেশে শভাবতাই কবির আছোর ক্রত অবনতি ঘটতে থাকে আর সেটাই নির্দিষ্ট করে দেয় তাঁর জন্য আমৃত্যু হাসপাতাল-বাসের নিরতি।

উया काबी

ইতিপূর্বে পারিবারিক বিপর্যমের শিকার হয়ে কবির বছদিনের নিবিষ্ট মেবিকা ও পুত্রবধু উষা কাজী স্বামীর সংশ্রম ভ্যাগ কমে চাকার জন্য বিবাহ করেন। কবিন্ধ জ্যেষ্ঠপুত্র স্বাসাচীর সংজ ৰিবাছের আপে থেকেই তিনি বোদ কৰির শেৰিকার্যপে নিযুক্ত ছিলেন, এবং স্বাসাচী অথবা ক্ষবি পরিবারের অন্য কেউই ঢাকায় কবির কাছে থাকেন না—এই যুক্তিতে নতুন পরিস্থিতিতে উমা কর্ত্রপক্ষের কাছে কবির সেধার তথিকার তব্যাহত রাধার তাকুল তাবেদন জানান। উসা কাজীর বৈবাছিক সম্পর্কের এই বিপর্যয়কে আমরা সমর্গন করিনি; কিন্ত বেছেতু জানতাম যে দুনিয়াডে विषे विक्रि मानुष्ठे चार्छ विक्रमांव यात्र कार्छ कर्श ७ व्यायन्ता कवि, वर्-माटा-कनान्न चक्राच ७ पार्किक ग्रावारण পिতে পারেন, সেজনা কহিন প্রতি ভালোবাসার নির্দেশেই আমরা স্থপারিশ करबिद्याम क्षेत्राच व्यादिषराज्य भरण। किन्न करि-एष ए द्वियाराज्य व र्जुभकीय क्रिक्सिय क्रिक्सिय क्रिक्सिय अमन পরিস্থিতির স্টি হয়েছিল যার সুরাহার সব পথই হয়েছিল বছ. এবং পরিপতি হয়েছিল উমার চ্ড়ান্ত विषाय, कवित्र यावक्षीवन द्यारणीठान वाग এवः बोष कवि-ज्यस्त्रदे व्यवनुष्ठि। दन ना चानिতा—>०।०৫ वहन त्रागंभगाश्रक कवि भौगृशिन धक्षिन विषास निर्वन; चानता उँदिक धरन वार्थए भावन मा-चरव्य मा, हारभाषात्मध ना। किंह एर्ड एिनि शिलन, एर्ड भिलन हारभाषात्म পু বছর বদীদশা ভোগ করে। তাঁকে বরাদ করা বাড়ীনি ছাত বশুলে কোবা ছতে কোবার পেল; ष्पात्र पामत्रा कवित्क हात्राचात्र गाप्त गाप्त हात्रानाम काटीय बेकित्हात्र गञ्जाना এक बहाबुना गण्यम 'कवि-छवन'।

धकारख्यीत उन्नत्रन

निक्षित पात्रम (यदम बारमायम पात्रम नर्वस मन्नकात नवामनात पात्रम नामित वाणि कित्राह्म । पानात वाणि कित्राहम। पानात व्यक्ष प्रकार मान्य वाणि कित्राहम। पानात व्यक्ष व्यक्ष प्रकार वाणि कित्राहम। पानात व्यक्ष व्यक्ष प्रकार वाणि कित्राहम। पानात व्यक्ष व

नवकावी नाज़ा

वर्जनान मदकारम् व्यापक मवक्कन अकारखरी कविदक वाश्मारम्भ नामीविक्य द्रामान अवः छाँदक ब्याजीय कवि विमारन व्यापनीय द्राचान मिरविष्ट्रम । मदकान रम छाएक माछा भिरव व्यमुक्तानिकछारन कविदक वाश्मारम्भ नामीविक्य द्रामान करत्र क्ष्मान करत्र क्ष्मान व्यापनीय व्यापनी व्यापनीय व्यापनीय

अकाएडमीरक गृश वदाम

স্বাধীনতার পরে বছ বাড়ী-বর পরিত্রাক্ত সম্পতিরূপে যোগিত হয় এবং বিভিন্ন ব্যক্তিও প্রতিষ্ঠানকে তা এন্তার বরাদ করা হতে থাকে। তদানীন্তন সম্বধারের কাছে নকক্ষন একান্ডেনীর জন্য আবরা একটি উপযুক্ত বাড়ী বরাদের আবেদন জানিবেছিলার। কর্তৃত্বানীয় কেন্ত কেন্ত তা সহানুভূতির সজে বিবেচনার আপাস্ত দেন। কিন্ত প্রশাসনিক তারে বাঁদের উপরে সে আপাস কর্বিকরী করার ভাষা, ভাঁদের সহযোগিতা লাভে আবরা বার্ষ হই। অবশেষে বর্তমান সম্বকারের কাছ থেকে ১৯৭৬ সালের আনুরামী বাসে আবরা একান্ডেনীর জন্য সপ্রবাজার বেলালাবাদ কলোনীর বর্তমান বাড়ীটের বরাদ্ধ লাভ করি।

नषून जानावाम

কিছুদিন আগে বজতবনের এক জনুষ্ঠানে বহাবানা প্রেসিছেপ্টের সজে আবার ক্ষণিক আলাপের স্বােগ্র হ্যেছিল। আবার তো প্রসঙ্গ একটিই: নজন্মল একাছেনী। দু'এক কথা হতেই তিনি বল্লেল, "আমি জানি। এ-প্রতিষ্ঠানকে উনুত করতে হবে।" শুনেছি প্রেসিছেপ্ট জিয়া এক কথার মানুষ। তাঁর এই সংক্রিপ্ত কথাটা আবাকে নতুন আশার তেভিৎ-শর্শ দিরেছিল। ভারণ, ইতিমধ্যেই আবাকের আশারাদে আবার কিছু অবশতার ছোঁয়া লেগেছিল। এখানে সে-বিবরেও কিছু আলোকপাত করতে চাই।

ৰাভীয় নৰফল স্বৃতি কমিটি

কৰিন্ন মৃত্যুৰ কিছুদিন পৰ তাঁৰ সমৃতিৰক্ষাৰ উপৰুক্ষ ব্যৰহা বিষয়ে অ্পারিশ করাৰ জন্য সরকারী উদ্যোগে 'জাতীয় নজকল সমৃতি কমিটি' গঠন করা হয়েছিল। শিক্ষা ও সংস্কৃতি মন্ত্রপালরের ভূতপূর্ব উপদেষ্টা অধ্যাপক আবুল কজল ছিলেন সে কমিটির গভাপতি। সরকারী-বেসরকারী অনেক বিশিষ্ট ব্যক্তির সজে নজকল একাডেনীর সাধারণ সম্পাদক হিসাবে আনাকেও সে কমিটির জন্তর্ভুক্ত করা হয়। কমিটির প্রথম বৈঠকে এর কর্মসূচী নিয়ে যে আলোচনা হয়, তাতে ছিল কবির মাজারে উপযুক্ত স্বৃতিনৌধ নির্মাণের ব্যবদ্ধা। এ উদ্দেশ্যে সেই সভাতেই প্রয়োজনীয় অর্থসংগ্রহ ও সমৃতি-সৌধের নজা প্রথমন বিষয়কে দু'টি সাবক্ষিটি করে দেওবা হয়। কিন্তু কিছুদিন পরে অনুষ্ঠিত কমিটির হিত্তীয় সভায় একটি নতুন বিষয় কমিটির কর্মসূচীর জন্তর্ভুক্ত করা হলো। কবির সাহিত্য ও সজীতের উপরে গ্রেমণা, সংকলন প্রধাশনা, ইত্যাকার সব কাজ—যা নজকল একাডেনীর বিয়োঘিত কর্মসূচীর জন্তর্ভুক্ত—এই ক্রিটিই করবেন বলে সিদ্ধান্ত নেওবা হলো।

नषून विष्यना

একাডেমীর আরক্ষ এবং উদিট এসব কর্মনূচী ও তার বার্যবারনে সর দারী সহায়তা বিষয়ে ইতিপূর্বে আমি একাথিমবার মাননীয় উপদেশ্রর সজে কথা বর্লেছি; তা ছাড়া প্রথম সভাতেই আমি একাডেমীর কর্মনূচী, সম্পন্ন ও আরক্ষ কাল এবং উন্নয়ন পরিকল্পনা সংক্রান্ত কাপক্ষ-পত্র সভাপতিসহ সংল সদস্যের কাছে পেশও করেছিলার। কিন্ত বিত্তীয় সভার উপন্থিত হরে তার এই ক্লাক্ষল দেশে আম্বর্ট হলায়। আমাকে সামনে রেখেই নক্ষক্রল একাডেমীকে এভাবে উপেন্দ। করা হলো, এমম কি, কেউ তার নামাট পর্যন্ত উচ্চারপ করলেন না দেখে আহতও হলায়। এই নতুন কর্মসূচীয় জন্ম বে পৃথক সাব কমিট গঠন করা হলো তাতে অবশ্য অনুগ্রহপূর্তক আমার নামটাও রাখা হলো। দু' একজন সদস্যই এ বিষয়ে উল্যোক্তার ভূমিকা নিলেন, এবং অন্যানের কোন বক্তব্য ছিল না বলে অনারাসে বব কিছু পাস হয়ে পেল। একাডেমীর বিষয়ে আমালের এতদিনের সকল আবেদন-নিবেদনই অরপো-রোদনে পর্যবস্তিত হয়েছে এবং তার দু'ব ও হতালা আমালের রজন করতে হয়েছে। কাজেই আন্ধর্কের সভার একট্ট প্রতিযোগী প্রভাব পাস হলেই যে তার কলে নজক্ষণ একাডেমী বার্তে মারা যাবে—এমন কোন মাতুন আশিক্ষা অবলা আমানেক আক্রমণ করলো না। তবে লোকে যে বলে—যাভালীর অভাবত এই, কাজের কাল কাল করা বলে ভাবেন্ত তাকে ভবুন করার লোকের অভাব হবে না,—সে বিষয়ে আর একটা নতুন অভিক্রতার সাক্ষাৎ পাতরা গেল।

স্থতি-ক্ষিটির সিদ্ধান্ত

বাই হোক, আনের প্রণক্ত কিনে আয়ি। প্রেসিডেন্ট জিয়ার সংক্ত আনাপের করের দিন পরেই নিজ্যান্ন সংস্কৃতির উপনেটা পদে অবাপিক আবুল, কলনের ইলাভিবিজ্ঞ হলেন অবাপিক হৈবল আনী আহ্যান। তাঁর সভাপতিকে অনুষ্ঠিত করিটির প্রথম সভাতেই আবার একটি নতুন খাইনা খাইনো। সমৃতিনৌর নির্মাণের কাজই করিটির মূল লক্ষ্য, অবচ সেদিকে কোনেই মগ্রপতি হয়নি ছেনে তার উপরেই ভিনি জলব দিলেন। তাঁর স্থানারি জিজানা হিল—সমৃতি কনিটি কি নজ্যাল বিষয়ে চর্চা ও পরেষপার জন্য সকুল একটি প্রতিষ্ঠান হাপিন করতে চান গ শেজনা তো বাংলা একাডেনী, নজ্যাল একাডেনী প্রকৃতি প্রতিষ্ঠান, রবেছে।—বেশ্বনান একপার কোন জ্বাধ এলো না। নতুন করে সিছান্ত হলো: করিটি সমৃতিনৌর নির্মাণের কাজ বর্লানিত করার বাপোরে মনোযোগী হবে; বাংলা একাডেনী, নজ্যাল একাডেনী একাডেনী এবং বিশ্ব-বিদ্যালর সমৃত্যের বাংলা বিভাগে করির সাহিত্য-কর্মের উপর পরেষণা চালিয়ে বাবে; এবং নজ্জন একাডেনী কনিব পানেল অসলিপি প্রকাশের বাবের বাবে। সর্কার এস্থ কাজে প্রয়োজনীর আধিক স্থায়ে পিতা প্রেন।

नदून উপদেষ্টার বাছবন্ধী দৃষ্টিভালীতে উৎসাধিত হতে, পরে তার সংগ্র দেখা করে আমি একাডেনীর আশু সমস্যাদি এবং উর্বন পরিকলপনা নিয়ে মানুপুরিক আলাপ-মালোচনা করেছি। মজন্মলের ব্যাপারে সর্বোচ্চ ও কেন্দ্রীর নর্বাল সম্পন্ন প্রতিষ্ঠান হিসাবে নিয়েই নজন্মল একাডেনীর বাছিত উনুরন বাবন করা যায় কিনা, সেলিকে, মামি তার দৃষ্টি মানুধ্বের চেটা করেছি এবং সেলপ্রশ্রে বার্ত্তিশীলই দেখতে পেরেছি।

८मश निर्वयन

একটি স্বল্পিত, পূর্ণাল এবং খরংসপূর্ণ লাতীর প্রতিষ্ঠানের পরি চলপনা নিরেই বেশ্বকারী উল্যোপে আবরা নকজন একাডেনী প্রতিষ্ঠা করেছিলাব। বাংনালেশে নলকানের লাতীর কবিব বর্ষালা পাও এবং বৃত্যুর পর তাঁর ব্রহদেরের প্রতি সর্বোচ্চ নারীর স্থান প্রপণ্ডির বাংনাবলী এবন স্পত্তাবেই নকজন একাডেনীর পরিপূর্ণ রাষ্ট্রীর বাঁক্তিও পৃষ্ঠপোৰকাতা পানী করে। খতানতাই কে-শ্বকারী প্রয়াস আর এপ্রতিষ্ঠানকে কর্মিকরী অভিভাবকর বা প্রয়োজনীর আপির স্পতি পিতে পারে না। তার লামির এবন জনসংপ্রের স্বর্কারকেই নিতে হবে। আবর্ষ শুরু এই লাগা করব বে, স্বর্কারী চ্ত্র-ছারায় নালক্ষণ একাডেনীকে ভার খতর ও বিশিষ্ট বর্ষালার একটি সমন্ত্রিও কেন্দ্রীর প্রতিষ্ঠানজনপেই বর্গানোগ্র উল্লাক্তের আপ্রতার আনা হবে; কোন বহুলের আর্থিছে বা অবিবেচ্না-প্রসূত্র পরাবর্গে এর বিভিন্নও বালাক কর্মকাওকে বিভক্ত করে অন্যান্য স্বর্কারী সংখার অস্তীভূত্র করা হাছে না। কেননা, ভাতে এই বছান ভাতীর কবিব অবর্ষালা হবে। এ হবু আনানের অভিনত নর, আব্রা বিশ্চিত বে ক্ষি-ভক্ত স্বর্প্ত করেই ছার। কেননা ন্যান্সন্তর্কার ও সংবাদ্ধর উল্লাক্ত করে ভাতীর প্রবিদ্ধর অব্যান্য স্বর্গান ও সংবাদ্ধরেই উল্লাক্ত করে আনান্য ব্যান্ত্র করে ভাতীর প্রতিষ্ঠান—ক্ষেত্র তাঁর অব্যান্তর অব্যান্তর অব্যান্তর তাঁর স্বর্গান করের বিশ্বত স্বৃত্তির অব্যান্তর বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত অব্যান্তর অব্যান্তর হিলিক বিশ্বত আনান্তর হিলিক বিশ্বত বিশ্

२२१ विकास क्यांटियी पश्चिमा

वषक्व प्रकार्ण्यो

छाष्मण ७ कम जुलो

काशीम डिविटिंड गळकम-दक्षिक अनि गरियुंड गिर्क्षिक शिर्डिंग वामराम मेन्निकंभेश छ क्रमर्त्वमे गिर्त ১৯৬८ गोरम्त स्य गोरम् गक्कम अकार्डिंग गर्गिंगी भविषक मिर्डिंड इस । ১৯৬९ मारम अशिर्डिंग अकी मिर्टि विमार्ट विविद्ध क्या इस । अकार्डिंग मर्विवास गिमुक्कम छर्डिंग छ क्रम्मूरी मिर्निक्ष इस:

- उ। नक्षक्र मन गम्य ब्रह्मा ५ कीवनीत खेलक्ष्म ग्राथक, ग्राक्षम, श्राव्यक्षा ६ धकानना ।
- २। गष्टका गीडित वांनी ७ खून गःथर, गःकतन, वन-राजन ७ धकानना।
- এ। নজকল গীতির চর্চা, প্রশিক্ষণ, প্রচার ও প্রসারের দায়ির প্রহণ এবং নজকল-সীতির নতুন রেকডিং।
- 8। সাহিতা ও সংগীতে নজকলের অবর স্টিসন্তার অনুধাদ, সাংস্কৃতিক ঘোণাযোগ ও অন্যান্য মাধ্যমে দেশে ও বিদেশে তুলে ধরা।
- ৫। गणका महिन्छारतम मुनामिन छ छात्र मर्क मःश्लिक शर्मान। हिचाबाता ७ महिनीनछात्र निव्यविक धनान-माधान विमारिक धनारकमीत्र मूचलज छनान।
- ৬। বিশেষতাবে নজকলের অবদান তিন্তিক এবং সাধারণতাবে দেশের সাহিত্য, শিলপাও সংস্কৃতির ঐতিহানির্ভর সামাজিক ও সাংস্কৃতিক জীবনের প্রগতিশীল বিকাশের উপধোষী কার্যক্রমাও সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানাদি পরিচালনা।
- १। এकाष्टिमीत छेन्समा ७ जामर्पत ग्रामक श्रेषाणि धन्यन ७ धकान এবং এकना भूनाक मूक्रम ७ धकानमात्रत धिर्फा।
- ৮। অধ্যয়ন, গবেষণা, প্রশিক্ষণ এবং সাংস্কৃতিক কার্যকলাপের স্থবিধাবিধানের জন্য নাইব্রেরী, পাঠাগার, বিদ্যালয়, নিলনায়তন নাট্যক্ষ, প্রেক্ষাগৃহ, টুডিও ইত্যাদিশহ দ্যান্তি সাংস্তিক কেন্দ্র, 'নজন্মন ভবন' নির্মাণ।
- अकारक्रमीत छःष्मा ७ कार्यक्रस्य गरायक यया एव क्षांच अर्थन अर्थन ।

जिल्ला ७ व्यावक काक

गर्दार, मरक्मन ७ शरवर्गा

- * ১০০০ অপ্রচলিত ও ৰুম্প্রাণ্য গান, ৪০০ গানের আদি রেকর্ড এবং কবির বছস্ত-দিখিত কিছু সংবাক বচনার পাঞ্জিপি সংগৃধীত হয়েছে।
- * विजिन्न मूज ७ नज-निजिका (भेटन कवित्र कीयमी ७ व्यवणाम मन्नदर्भ मारमाहका ७ गरवयभीमृत्रक वहमरनीक श्रेयक, श्रीजिरवयन, बारमांकिक ७ उपाणि मरभृतीज स्टाराह्य।
- े श्राप्त २००० शीरनम् वर्षानुक्रमिक गृष्ठी এवः श्राप्त ४०० शीरनम् चम्मिलिव वर्षानुक्रमिक गृष्ठी श्रीड शरतछ।

चत्रनिभि ज्ञान्त्रम ७ मः श्रद

* शाब ८०० गारमन चननिभि धङ्क्रहरूरहरू वदः भारतः ४०० गारमव चननिभि नःश्की छ हरतरः।

व्यकानिक भूकक ७ भजिका

- * नक्ष्मण अकारक्त्री अधिका (विशामिक): এ अर्थप्र 58ि विश्वनाकांत्र मःचा श्रकानिक।
- नक्कन भीडि: ६ वंड। প্রতিবর্তে মপ্রকাশিত অপবা অসংকলিত ১০০টি করে গান ছাপ। হরেছে।
- * नरमधानुकी मरूकत देशलान: नाहादुकीन घाष्ट्रमण श्रीए मक्काल-कारवात नरमरेनेनी विषयक श्रम्भ नृष्टक।
- * मक्कन कार्या निर्मक्रम: याद्यायम मेदक्छिताष्ट्र श्रीए गळकम-कार्याय निरम्भादकर्य-मःक्राय भारताहना श्रष्ट।
- * नवकत देगजाय/कवि '७ कविद्या: यानमून यानुगि रेगबम धनी'ड शयकत कारमान मुमासम यूनक प्रवह मःश्रह।
 - * मन्द्रम करती (भृष्टिका) एहि।
 - * विकरी बां:बाडाबा : अकृत्न (क्युग्याबी (भृष्टिका)
 - * ब्रुजिनि (टार्य : निषय पिनम (পুডिका)

वकारनम चरनकाम वाष्ठ भाकृतिभि

- * मक्कन रव्हिक्षा: (मःकान) नक्कात्तव छीनन ३ माहिङाक्व मन्दर्भ नक्कात्तव स्तू ७ मुबनाविक रन्दरक्त रवृष्टि-हावप।
- * नवका वर्षान 'मकान:' भागांत्रीन वाड्यप धनी छ धवह भूषन। गणकाणा कीवन छ यानीय मुक्त भवका-मंहिरछात्रं व्यागाहित।

- * नकक्षम-माधिरणात्र नित्रीक। (श्रवह मःक्षमन): श्रवाणि क्षिक्षम्य नक्षमम-माहिष्ण मन्नार्क गारवहणीम्मक ब्रह्मात्र मःक्षमन।
- * गमकान-कार्या छल : प्रामन काणिय श्रेणी ए। ममकान-कार्याय छल-मुल्लिक निर्मित्री केले
- * मक्कन भी डि: ৫ वड। প্রতিখন্তে অপ্রকাশিত ও অসংকলিত ১০০টি কমে পান।
- * गजकन उन्निमि: ১० वछ। शिविवेटक उठाँहै काट्य प्रयोगिमि।
- * महाकारतत देशनानी भीतः ग्रामना)।

षाल धकाणना धक्दा:

- * नशक्तनशीडि मधात्र: कनित्र मनदा गीउ-प्रदन्ता मध्यदः। धन्य पूरे चंद्र २००० शीन पीक्रवः।
- * नकक्त-कीवगी: २ वेटल विशेषज्ञारव निषिष्ठ कवित्र धावांना कीवनी।
- * নগকল-গীতি সনীতা: নজকল-গীতির বাণীও সুরেব ঐপুর্ব সম্পর্কে গরেবশাসুসক প্রবদ্ধ সংকলম।
- * मक्करतम (पृष्ठं कविष्ठा: निर्वाष्ठित एष्ट्रं कविष्ठाम मःक्सन।
 - * The Rebel Poet of Bengal: ইएक्की ७ वावनी जापात नाइक्टनम किन्मिकिटि ७ निर्वाधिक क्रमान थगुनाम।

এত্বাগার

नकका जनाएँ मैत्र श्राणांत প্রতিষ্ঠার কাজ एक क्या १८५८७। नश्करान्त এবং नश्कान-विषयक ভাবৎ গ্রহাদিস্থ ক্ষেত্র হাজার বই-পত্র সংগৃহীত १८३८७।

স্থুর সত্যায়ন পরিষদ

নজন্দ গীতির সন্ধন্তি বোধ এবং গানের প্রারাণ্য শ্বনিপি প্রস্তুত ও প্রকাণের কাজকে শ্বাম করার জন্য নজন্দ-গীতির 'কর-সভ্যানন পরিষদ' গঠন করা হয়েছিল। এ পরিষদের সন্ধান-ভূক্ত হণেছিলেন—কর্মদাণ্ডপ্র, লাবলা আর্দুরিশ বানু, ফিরোণ্য বেগম, গোহরার হোসেন, বেগারউশীন কাহরদ, শেপ লুকের গ্রহ্মান, স্বীন লাগ, মফিজুল ইসলাম, ফের্মেনিসী রহমান, বোক্তকা ভাষাণ বাহরাসী, এ, এডিচ, সাপ্তের রহমান, আবদুস সান্তার হক প্রস্তুত্ব। বিভিন্ন কার্মের পরিষদের কাজ বেশী শুরু অগ্রস্তুর পারেনি। সম্প্রতি সক্কার কর্ত্ত্ব নজন্ত্র একাডেরীকে নজন্ত্র-গীতির শ্বর্দিপি প্রকাশের লাগ্রিব প্রদিশতে বর্তমানে সে পরিষদ্ধ পুনর্গঠন ক'রে পুর্ণোল্যমে কাজ করার জন্য প্রস্তুতি দেওয়া হচ্ছে।

সম্বানিত জীবন সদস্ত

कवि वाकात्यम कक, रेन्याकीय का, वाकायम मानियकियोग, वाक्यकियोग, काकी वाकायम व्यक्तिया, वाक्यकिया वाकायम व्यक्तिया,

व्यानपूत्र काणिय, वजीवहिकीम, रामकीय व्याह्मक, व्याद्यम क्वाम, एकिया कायाम, व्याप्तम वाराकीम, रामायम रामायम, युवियुष व्यायाम वी, एमिय रामायम, এ, रक, अय, मुक्रम रेममाम श्राप्तक मक्कम अवार्ष्ट्रीय मुखामिङ कीरम मनमा रोम श्रामः क्या रामायः।

नकक्रम धकार्डियी वर्गमक

मक्त्रस विश्वत गर्यस्थात जानरून वाण्यिक, मक्त्रम कीयमी ब्रामात थान स्थानक व्यक्तिमात अवः मक्त्रम भी दिष्ठकार राष्ट्रमाय रहारमात्म विश्वय क्षित्यम पीक्षित्रक मक्क्रम क्ष्मात क्ष्मात

वायायाकाव (त्रक्षिः

একাডেনীর উলোগে বাংলাদেনের নিল্পীদের দিয়ে নজকল গীতির নতুন প্রাযোগেশ রেসর্ড করার উলোগে প্রত্য করা হয়। শেব বৃৎকর মহনাদের পরিচালনার প্রথমে একাডেনীর শিল্পীদের দিয়ে 'চল্চল্চল্', 'পূর্গর গিবি কাছার রক', 'কাবাল ঐলোহ কপাট' ও 'লিকল পরা ড্ল'—এই চারাটি কোবাল গান কেওঁ করা হয়। মুক্তিবুজ চলাকালে রেবর্ড ওলো সাধীন বাংলা বেতার কর্তৃক বাবজ্য হয়।

নজকুল-গীতির প্রশিক্ষণ

मण्यम वकारहतीय श्रीहिंशकाम (भरवने वसारहतीय राष्ट्रीत राष्ट्रीत विमानित्य वित्यय स्थादिक रार्ष्य नण्यम ११. हि ह है। हि है है। हिन्द्र स्थादिक रार्ष्य स्थादक रार्ष्य स्थादक राष्ट्र है। हिन्द्र है। हिन्द्र स्थादक स्थादक राष्ट्र है। हिन्द्र स्थादक स्थादक स्थादक राष्ट्र है। हिन्द्र स्थादक स्थादक स्थादक स्थादक राष्ट्र है।

সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান

विषक्ष प्रकारियी भाष्माला छेत्रशत भविकस्ता

गमा

श्रभावः काठीय किन नवकल हैमलाभित यनपान्ताकि अनः होन हानपृष्टिय माभिक होता, छैनेपानिन मूलायन, श्रीत्रभणे। महक्तान, श्रीत्रभणे। महक्तान, श्रीत्रभणे। महक्तान, श्रीत्रभणे। महक्तान, श्रीत्रभणे। महक्ति श्रीत्रभणे। स्वीत्रभणे श्रीत्रभणे। स्वीत्रभणे। स्वीत्यभणे। स्वीत्रभणे। स्व

বর্তমান অবস্থা

माठीराज्य मनकात भनुराय काष्ट्र (शांक डिलागुक धर्म माद्याया এवः श्ररमाद्यानीय श्रनामिक পृष्टेरभावकाता वा भीक्ष्मात्र करन वाक्ष्मल अकारडमें ज भावर विद्यास कर्ममूली এवः लक्ष्माभरण (शांक्मारोता भाकता विरास स्वीतवार पश्चिद तथा। अस्त्र माराका।

আশাবাদ

বর্তমান সৰকার বাবির প্রতি তাঁক মৃত্তের পূর্কে এবং পরে অভ্তপূর্ব ভালনাসা ও শুছার নিদর্শন বেশেছেল। এ বালিপেরে তাঁর। যা করেছেল, তাতে আতীয় ইফ্যাও আবেপেকট প্রতিক্ষন মটেছে। সে মান্য আনা ক্ষা মান্য হৈ জাতীয় কবির ভারনুতিকে প্রাধীরূপে জাগ্রত স্বাধার উদ্দেশ্য প্রতিষ্টিত নক্ষল একাডেনী বাতে তার উদ্দিষ্ট ক্রিসুটা পুরাপুতি বাহ্যনারিত করতে পারে ভার জন্য সম্বর্জারে জরক থেকে সনম্বর্জন সালেয়াও সহলোগিতা হ্যার কড়া হবে।

প্রয়েশনীয় সরকারী সহযোগিতা

सम्बद्धम अमारक्रमीरक जात পूर्व जनगरन नर्फ रजानात नरका महकारम जनक रचरक विम्ननिविक्त कर्मक्रम जनस्वराजन कना समुर्गात'। उन्धातिन नमा नार्फ्:

১। छाठीग्र कनित्र नात्त्रत्र छेछ दर्शाना, डेलरमाती रणस्य अकरि श्यान भाष्क्रिक क्ट्रिक श्रिक्छ । इट्ड इट्ड नक्ष्मत अमारक्ष्मीत छना छल्युक गृह-मःशान श्रामाक्षम। असना अकारक्ष्मीत्क विनामक्ष्मत, स्थानाव, महिन्याक्ष, नामक्ष, वक्ष्मानक, महिन्य, श्रामान, श्रामान, महिन्य, विमान्त, बुक्षानक, श्रामानी, महिन्य, नामक्ष, वक्ष्मानक, वक्ष्मानक, श्रामानी, श्रामानित, महिन्य, व्यापनित, श्रामानी, स्थानित, स्थानित, श्रामानित, स्थानित, श्रामानित, स्थानित, स

क्क, विकार क्या ऐडार्गिय सान मधुमारमा बामा मर्शिय 'नवक्षण उनन' ियारना छन्याणी धनस स्वि मंत्रोक क्या नवकात्र।

সন্ধতি নগৰাজারত্বিত বেলালানাল কলোনীর একটি গংশ নজক্রন একাডেনীকে ধন্দক কৰা ছবেছে। বেলালানাল কলোনী একটি পরিতাক্ত সম্পত্তি। এতে প্রায় এক একম কমিন্ন উপত্তে ক্ষেকটি পূর্বনা দালান মরেছে। এই পূরা সম্পত্তিটি নক্ষণ একাডেনীকে স্বায়ী নক্ষেণ একাডেনীকে স্বায়ী নক্ষেণ একাডেনীকে স্বায়ী নক্ষেণ বিভেগ্নীকে স্বায়ী নক্ষেণ বিভেগ্নীকে স্বায়ী নক্ষেণ বিভেগ্নীক কেনের ক্ষেণ্ডাল ভিত্তিতে নীজ পেওনা বেতে পালে। পর্যন্তের ক্ষেণ্ডাল সাধারণ সভ্তন পরিব্যানার ক্ষিণ্ডাল এলাকাডি কিন্তু জ্বিতে এন সম্প্রায়াক্ষের স্বায়োল ক্ষেণ্ডাল বিভেগ্নীক বিভেগ্নীক স্বায়োল ক্ষেণ্ডাল ক্ষিণ্ডাল বিভেগ্নীক বিভেগ্নীক স্বাহানীক ক্ষেণ্ডাল ভিন্নীক বিভাগ্নীক বিভেগ্নীক স্বাহানীক ক্ষেণ্ডাল ভিন্নীক বিভাগ্নীক স্বাহানীক বিভাগ্নীক স্বাহানীক বিভাগ্নীক স্বাহানীক বিভাগ্নীক স্বাহানীক স্বাহানীক বিভাগ্নীক স্বাহানীক স্বাহা

२। এकार भीठमाना उत्तान असिकक्षणांत अविद्या क्रताएकील अधिन छ शावावण कार्यक्षण भिक्रामनात वाम नाम क्रान्ट 50.00,000 00 (पण भक्ष) तिका स्मिनाय्यान धार्ने क्रवः क्रत छन्त्रन क्रवन्त ममुख्य वाद्यवागःन वर्ष मः हात्त्र छन्। त्याने ३,००,००,००० ०० (धिनद्वार्ति) तिकाव छन्। क्रवन्त व्याप क्रवा धार्माक्रव।

७। निश्चित्रिक लका धक्रांत्र खना भवनात्र नक्ष्मत अक्षांत्रिक श्रांत्रिक श

- (ক) সাংলাদেশের মাওতান নজকারের সকল দেখা ও স্বচনান স্বস্ত সম্পূর্ণভাবে মুক্তরত একা-ভেনীর কর্ত্যে ও ভল্লানধানে পাকলে। সেজনা নজকানের স্বপ্তকার স্থানার প্রকাশনা, উপজাত উৎপাদন, পরিবেশন, উপস্থাপন ইত্যাদির মাধ্যমে যে-কোন স্কন স্পর্করী ধ্যম্যান নজকান একাডেনীর পূর্ব অনুযোগন এবং আধিক চুক্তি-সাপেক ধ্যমে।
- (व) वाःनारण्य नक्षण-गीष्टित्र सर्वनिषि श्रष्ट, मःक्षण, सून महाग्रमण श्रक्षण वावणापि पर्वरण्यात्व सक्षण जकारक्षणीत्र कर्ष्य श्रक्षणासङ्ख्य हरन।
- (গ) প্রানোজোন, রেন্ডিও, টেনিভিনন, বিনেনা প্রভৃতিসহ সকল বাজি, প্রতিষ্ঠান ও সংস্থা বারা বাংলাদেশে যে-কোন ভাবে ন্যায়াল গাঁজির প্রনিক্ষণ, পরিবেশন, উপলাত উল্লাখন এবং বারি চ পুনক্ষণেশন প্রভৃতির সঞ্জে যুক্ত, তাঁরা সকলেই নজন্মল-গাঁজির বাণী ও স্বের বাপারে নজন্মন ক্যাভেনিঃ কর্ত্রমূলক নিনমণের অধীন ঘবেন।

यखवा

विश्वत असम्बन्ध् [गःक्षित्र क्रमद्वयः]

(क) धकामना		वानुशनिक वाव
५० वर्ष वर्ष मार्गुर्व नक्षम्रम महमासमी	6,	00,000,000
२। भीड बर्क मणूर्व मक्कन भी दमका	8,	00,000,000
७। विन भटक मन्पूर्व सक्कम-स्वितिन	· B ,	co.000,000.0c
४। मूरेबार भूषात्र ७ शामाना मकका की बनी	5,	€,00,000,00
৫। ইংরাজী ও মার্বী ভাষার নির্বাচিত রচনার মনুধাল সহ		
मक्त्रम्-भनिष्ठिः : २ष्टि धकानम	t,	00'000,00,0
७। कनित्र व्यवनाम ७ हिन्तामान म्नाराम, भरवयमा, बार्या ७		
जूनमञ्चक चारमाठनात जिन्दे वर्षे	ē,	9.60,000
। मणकन-४ठमात्र विस्तित् विमन्न मण-डिशिक निमार्क मर-इसन	F,	00,000,000
(খ) সংগ্রহ ও গবেষণা		
১। कवित्र कीवन'ও চিতাबाता সংক্রায় উপাদান-উপকরণ সংগ্রহ		
२। कवित्र पंडक शिथिङ পাণুशिभि मः प्रद	5,	0,00,000,00
अवित्र यमःकशिक तहना मःधः		
(গ) স্বর্জিপি প্রণয়ণ		
১। मक्रमन-गीडिय अवनिधि गःश्वर ६ धर्यन	,	
२। गणकन-गौजित यापि धार्यारकाम स्त्रकर्छ म्:श्रंथः	5.	9,30,000,00
 अक्रम गीडित ख्र-गडागन: गक्रमन निडिमिन (बार्ड 		
(भ) द्वक्षिः हे छि छ		
दिल ७ शाद्मादकान एक ग्रंड छ इटडब गाय-गत्रकान	5 ,	000,000,0
(६) नारे दबरी ७ भाठाभात		
मचक्रतस्य नश्चमन-विषय् अतः अन्याना न्दे-न्य	ò,	00'000,000,6
(5) नक्षण छवन भारत प्राप्त कर्मा कर्मा अवस्था अवस्या अवस्था अवस्		
विनवाबाङ्ग, वस्डायक, नाव्यक, ध्यक्षागृह, हेडिंड.		
लारेरजुरी, भांठात्राव गःत्रकथात्राव, व्यक्ति कक, विमानव,		A
मूजनामक প্रकृष्टि विजान नह 'नक्कम-जनन' निर्वान	8, 3,	00'000,00,00
असार्डिंग । २.७८	बी	वय-वर्षा । ३३५८

(ए) नाच-नवधाय

दिनिमध्य, बाबाबब, माच-मच्छा, जामबाब, किहि: ७ किक्ष्डाब है, २०,००,०००°००

(क) मूखनानव

बूजनानद (अुक टेडरी ६ नगरक्षिः वावशा नव) .. है, ६०,००,०००'००

(क) चुि-नाना ७ সংরক্ণাগার

श्यक्तिनि, भागु निर्मि, भाग्नाकित्व, तेल, श्रारवारकान द्वक्ष्ठं छ न्यु डिनिनर्भमामि नःवस्थ

F, 2,00,000'00

(क) व्यन्तिक ७ भविद्यमन

मधी छ, मृत्रा ७ नाष्टा श्रीनिकन, निवासनम अवः नाःष्ठिक जनुष्टीम छनुत्रन

0,00,000'00

(ह) यान-वादन

बाइरकाबान, लिक्बाल खान ७ किन कांत्र ..

¥, c,00,000'00

(ठ) शिमान रहिन्द्र उ ७ वटिनिक ...

\$, 0,00,000'00

गर्नरमार्छ : है, ७,००,००,००० ००

ভিন কোটি টাকা বাজ]

बदक्व अकार्ष्या अचाविष्ठ आणिष्ठातिक क्रथ-(त्रथा

মহাপরিচালক

প্রশাসন ও বাবস্থাপনা বিভাগ

मक्जिन, शिगान, उद्दिन, विज्ञा । विजन गानवाइन ७ 'नवकान **ভৰনের'** বিভিনু বিভাগ] **ভা**ষি-কারিক, তত্ত্বাবধায়ক, হিসাব রক্ষ गश्यात्री, क्राणिक, मुजाकतिक, ৰমী, নিম্ৰী, গাড়ীচালক, পিয়ন, क्यांन, मात्रख्यान।

সাৰিক ভত্তাবধান

[गःगठम धक्य, निर्माप, পরিচালনা, निर्माग এবং স্বস্ব ও সম্পত্তি उद्योवधान] जिथकातिक. धरकोपनी, वास्त्रिगंड সচিব, ব্যক্তিগত সহকারী, गरकाती, कत्रभिक, मुजा-कविक, शिवन।

পরিচালৰ সাহিত্য ও স্থীত বিভাগ

शिरवंघना, गःश्रष्ट, यनुवान, धनवन, गःकनम, <u>युन-</u>मखाायन (विडेसिक (बार्ড), चन्नलिभि धनमम, नणीउ विमानय (मबीख, नृजा ७ नाहा প্रশিক্ষণ)] याबिकात्रिक, यबाक, विरम्बस, निकक, शंद्वयक, गःशोदक, धनुवादक, गःकलक, मदकारी, कदनिक, युजाकविक, **পित्रम, मक** ठती।

পরিচালক

मुज्ञप ७ धवापना, विजात

थिकानना, बुखार्यना, है फिल ल नामक्रम একাডেমী পত্ৰিকা] আধিকান্নিক, সম্পানক, ৰীডার, প্রেস ও ইডিও কর্মচারী, করণিক, मुजाक विक, नक्छबी, निवन।

পরিচালক

गःषुष्ठि ७ भन-गःयोग विजाग

[जनुष्ठीन धरवाजना, छेपशोपना पदिरवणन, मज-मर्जनम्, धर्मनी, माःष्ठ्रिक योगायाभ, ব্যবস্থাপক, জন্ত্রাবধায়ক, সহকারী, প্রক্ষ- গণ-সংযোগ, গ্রন্থাগার ও পাঠাগারী আধি-काविक, श्रीराधक, वावदार्थक, श्रामीविक, गहकारी, क्यापिक, बुझाक्य दिक, शियन।

बस्या : अव्वत्तान धोषेनिक यत्र (बंदक भर्वाक्रक्रात्र ७ धारांचन चनुवाती विভिन्न विভान ७ पोषीय कर्वछाड़ी निरतांगं क्या घरन। जनगा श्रीकन्नेग्राह्य कार्यंत्र जना यह श्रीत्व निर्मिश्का कार्य भार्<u>ठ-होरे</u>न जिजिएज अवः गत्रांनी ७ भावि<u>भ</u>िनिद्य विभिन्द बारेद्व विल्विस्ट विद्या विद्या क्वारज भीता बादव।

गांबावर् ७ निवर्षिङ कर्वगृठी वर्षा गर्बीङ विशानव, गांकुङिक चनुष्ठीम, गडा-रगिनाव, नवक्रम अवार्डिंग পত्रिका এवः मीनिङ खरत मःबंध, गरवयमा, मःकत्वन, चत्रनिनि श्रवहन, भूषक श्रवानमा, ब्रह्मानीह देखाहि পৰিচালনার জন্য প্রয়োজনীয় কর্বচারী, অধিস, বাড়ী ভাজা ও জন্যান্য আনুবজিক ব্যাপারে পাঁচনালা পरिकल्पनाव शिंख वहन प्रस्त ३०,०००,०० (वप वप) होका वाब वहा हरतरह ।

चलानकारे अकारक्रीन निकिन्न नर्नगृहीन পरिहानन-नात शानक्रनानीन वनका (नर्क क्रेन्सरमन करन करन बाजरू वाकरव। बाविक गञ्ज विमारक बन्ना भन जाने होका बारतक उनरत विजिन्न नारक दारताकनीत व्यक्ति बारम बना बाइडि एश्रिन উनुम्रान्त्र विजिन्न संक्रमन बना संपनिङ ब्याह (बर्क शीख्या बादि।

विषक्ष धकारिया

বর্ডমান নির্বাহী পরিষদ

गडांপडि : कांबी पारनाबाक्रम एक

मह-मुखाभि : यावून कानाम गामस्योग

यावण्य क्षिय

যোহান্তৰ আজন্ত

সাধারণ সম্পাদক : তালিম হোসেন

: नुनंडाकृत त्रश्याम निक्षांत (काषांशाच्य

: ज्रक्त बद्यान ग्रकात, भाषका कार्याल (यात्र-७४-न), छ्डेन भाषाचन वनिक्रकार्यान, ममगा

वाशायन बाहक्ष्यक्रियार्, क्रकेत जिन्द्रम रेगमान, ब्रायन चानक्रक्रियोगा, मातना चात्रच्यान नान्, चारानाता चात्रच्, नायकरा छोपुरी, बाटनरा हारीय,

जिक्तिकृत्वेष्ट्रहर्यान, र्यान्यकांत्र माधावर ছোলেন, এরতাজ আলব, নৈরণ আকর আলী,

बारेखछेकीन जारमन ।

विक्रित्र नगरत योत्रा निर्वाष्टी পविनामत नात्रिय भागन करतायन

क. (क. क्य. मुक्त क्षेत्रमाञ्च আৰণ্ড ৰওপুণ, ৰোহাম্মণ বৰকজ্লাছ, আকৰ্ম উদীন, কাজী ৰোতাহাম ছোগেন, নিকানুগাৰ আৰু ভাকৰ, विनवीय जायम, वादायम वादाव्यव, यूजीयून न्यान मा, वादायम मानित जानी, नायम्म सन देन ब. बग. नृत्र त्याराचम, काकी मक्त्रम एक, ब. चात्र. पुरेशा, बय. ब. बाती, गावित चाराम छोत्री वि. (क. भन्ती, जानी क्लार्सन, जानानुक्कांबान, कुन व्यादांबन, व्यादांबन नुक्रन देननाव । जनाना।

तककुल अकार्डियोग अकानता

मानस्म मात्राम जिल्ला व्यविष्ठ मण व्यवाभिष्ठ मलक्रम रेमसाम ३ कवि ३ कविछ।

[न्ना : २०:०० होका]

भाराक्षीय पास्त्र धनैड भाराक्षी सङ्ख्या देशसाय

[मूना : ५० ०० होका]

वारायन गरम्बद्धार, व्योख सक्तराय ज्यास्य जिल्लाकान

[ब्ना: ১৫.०० होका]

विषे अहि गरिवष्यीयूनक जारनाहना श्रष्ठ नक्षण्य-कारवात्र नव यूनाग्रहन्ये छ्यू श्रीयावष्ठ नव, वर्णक जूबिका जायूमिक गर्यारनाहना-गाहिरजात्र नव जिक-श्रम्भरकत्र ।

नक्रकन-भीजि

'সজক্ষণ-গীতি'র প্রথম পাঁচটি বজের প্রত্যেকটিতে কবির বিভিন্ন ধরনের বছ অপ্রকাশিত গাম ছাপা হয়েছে। প্রতি বজে একশ কুরে গান আছে। প্রতি বজের দাম: ৫,০০ টাকা। একত্রে পাঁচ বজ: ২০:০০ টাকা

नकक्रन अकारण्यी পত्रिका

नवकालय माहिला, मजील, बीननी ७ हिसाबात विषयक अन्याज পजिता। वहाद हव बिलूल हव मरना। धनानिल हव। मूना: धिल मरना ५०:०० होना। पूरे ल्ल्यूट्स विकास बीबार २४ ७ २४ वर्षत बढ-मरनाक पजिना विकास बना यशकून बरहाइ। धिल ल्ल्यूट्स गान: ४०:०० होना।

CTIT: 20 00 00 80 00 00 क्वीशुकः नक्कन क्वारकी रक्तानाम करवानी, मध्याकात, एका।

সমস্যা দুর করতে হলে আপনার চাই একজন নির্ভর যোগ্য



উত্তরা ব্যাংকে সঞ্চয় করুন। সন্মিলিত প্রয়াসই আমাদের উন্নতির মূল উৎস।

उंड वा वाशक

[बावस्माम बाबमात्र केव्टिस माणिक]

नसका वकारक्यी नविका नवका मुनिक गःवाः

তীত্র প্রতিবোগিতা-মূলক ও উষ্ত বিশ্ববাজারে আমাদের উৎকৃষ্ট পাটজাত জব্যের চাহিদা সর্বত্র

विषयी गाययगारा कृतिम उत्तम छित्र गाउँम उश्कृष्टिल। श्रमाविल

অধিক পাট্টচাব ও পাট্টভাত ক্রব্য উপোদন ভাতীয় সমৃতি প্রতিষ্ঠায় অপরিহার্চ

वाश्वामिन कुष्ठे विव्न कदाशादानव

विष्याभित्र ५८८৮

वाश्नादमन शांछेम विम् ि कारेनान कटर्नादमन कर्ज् क वश्वा विनिष्ठ वार्ष विश्वापद क्या

परण्या । या नह पाण । वस । (पद ज्य) वित्यम मुविधा समान

- * सूर्वत रात: नतन वार्यिक भक्कता १ है। का।
- * अन नित्रिलाय त्यन्नामः २४ वर्णना
- # अन मञ्जूतीत निर्तान: निर्मान वारत्रत निर्कता ३० (थरक ३१ जान।
- अ शिकि यगर मण्यूर्ण कमा जनवा क्रांटित जट्य भट्यत मर्ट्याक भिनान : ५ मज १० साज्य भका।

विचाविण विवदापदा जाता जादा कार्गादामातदा तिक्छेच चक्तिजद जात्य (सामारसम्बन्ध)

मक्कन क्रमार्डियो निक्या । निक्कन मृश्विक म्राया

वस्त्र (थटक वस्तु श्रिकात्र महात्र हरण वार्गात्र जाराटक

नीमारीन पिश्रष्ठ (भितिद्य वस्त्र ।

प्यंदिक वस्त्रद्र भएगात मखात हम्द्र ।

वि- अन- नि-त बाराटक, वाशिएका ।

व्यनिर्कत वाश्मा गढ़ात स्त्र निर्म ।

मूमावान देवर्यानक गृज्ञा खेलाक व ।

न्यंद्र करत वि- अन- नि- निन्छ कत्रद्र ।

पामारयत बाजीत मयकि । जारे वि-अन-नि

राष्ट्र पामारयत काजीत पर्यक्ति । जारे वि-अन-नि



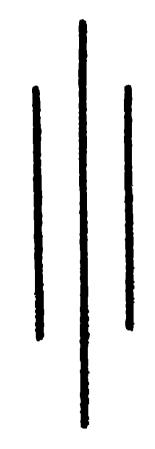
'अधिवीगा'त कवित्र अভि आभारमत्र आखात्रक अजाजनि

মননশীল তায় জাতি আরও ধন্য হোক

विवागणाव वगव वाष कीत्व तीया कत्र तार्था दियम्।

श्रधान कार्यानग्न, छाका।

विद्धारी कवित्र अवस्य स्पूर्गिकि



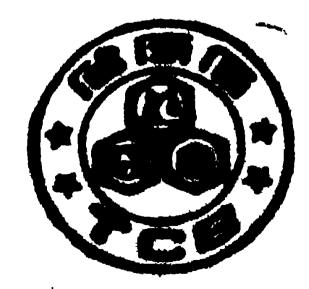
व्याप्रमासी कुछ मिलम लिमिएछ ।

नक्कन बकारख्यी भविका/नक्कन मुद्रिक ग्रांची

वन वैत्र-वन डेन्न मम भिन्न!

বে শির সকল শোষণ ও নিপীজনের বিরুদ্ধে ছিল হিমাজির স্থায় অটল, সভ্যের স্বরুদ্ধা উড়াতে বে শির নত হরনি কখনও মৃত্যুর হিমশীতল কোলে তাকেও আশ্রয় নিতে হরেছে।

विकाष (महे यहा विकाशे कवि काणी तकरूत हेमतायह अध्य मृष्ट्रा-वार्विकीरण जामार्क्त जास्त्रिक खडार्च।



किंछिर कर्पारवमन व्यव वाश्लारम्

पाननारपत्र काकीत्र वानिकाक व्यक्तिम।

विका बनाटकी निविका/नवका नावक गरका

खेल्लामन वृक्तित्र मोशाटम मिटलंब वर्ष टेनिकिक खेल्रानिके जामाटमंत्र कामा

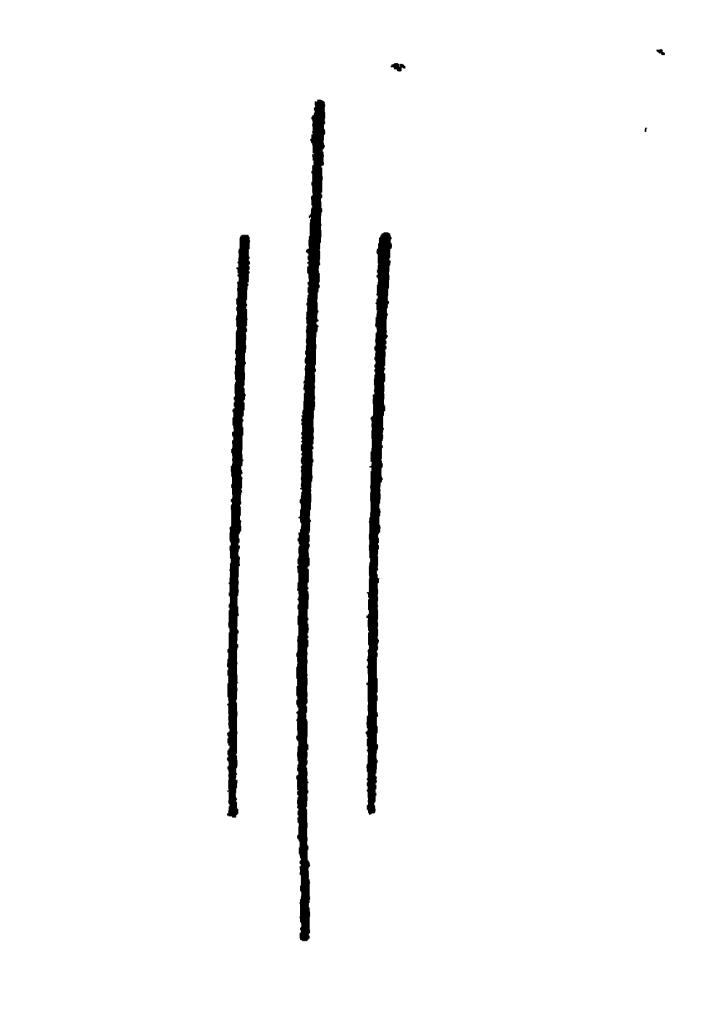
वाश्वामिन हिवि ७ थाम् निन्न मश्हा

বস্তা প্রতিরোধ, নিষ্কাশন ও সেচ ব্যবস্থার মাধ্যমে স্থনির্ভর বাংলাদেশ গড়ে তোলাই স্থামাদের সংকল্প

वाश्लाएन भावि छैसग्रव (वार्छ

भागि—५৯/डिम/११:१४ वक्कन अकारकरी भविका/नवकन गांवर गर्या।

जनम्बात जिन्न दिवास करण्ड दिक्या नुमाकत्वर श्रीदित जानून



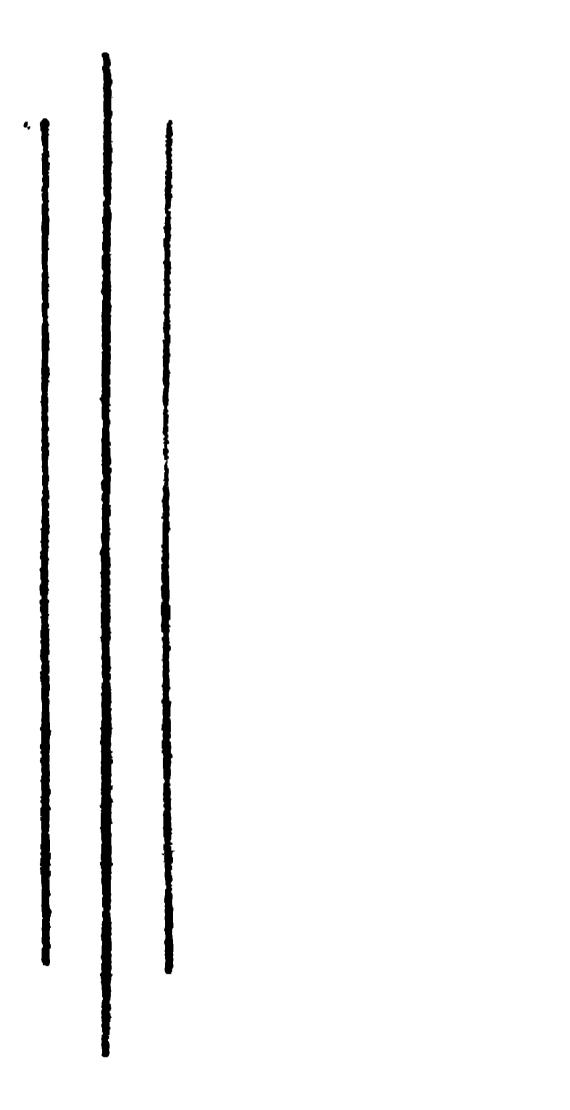


वाश्वारित अग्रिताशियात्रव क्र उवाकीयी हितिवाशिक्तत्रव बाकी वर ५००, मक्क वर ५०/६ बावमिक बावाजिक बनाका

याःमाध्याम् वानिष्

काकी नक्तम्म रैमनास्य

विश्वक्रमीम मामयङायांकी कृषिकाम श्रवि वासारिय महाक्ष मावास



श्वीव वाम्य नियिष्ड

यिनि वानिनिक अनाका। जाका



TIBET SNOW Best.

makes every face look more beautiful.

Regular daily use of Tibet Snow nourishes your side, making it soft, smooth and sleek. It is ideally suited to your requirement for a tasteful make-up...

TOTAL



्राष्ट्रे द्वारे जिन्न स्थानहें नाम या ग्राह्म जिन्हित्स स्थानामा अर्थ या स्थापन जार्थ अर्थाहरू करन

> चार गम्हतम नहर्गात्म, क गाराम स्टब्स



The series

न्यका करून-भक्त वाख्यित बीवटन बादन मश्रीक बाधित बीवटन बादन मश्रीक बाधनात भक्तत बन्ध बाधनात वादक

जा ना ना रक

And animally since man anyone there were

14

স্ক্য



नक्षर जाननात विशदमत वक्ष

मकायुव साधासिक जाम स्रथ ७ जस्कि

वा वा वा रक

দেশ ও জাতির সেবায় নিয়োজিত